50 nP

फिलिपाइन में कृषि-सुधार

एल्विन एच. स्काफ

फिलिपाइन में कृषि-सुधार

(The Philippine Answer to Communism by Alvin H. Scaff)

मूल लेखक

एल्विन एच्. स्काफ

अनुवादक

व्रजानंद वर्मा

पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई—१

मूल्य ५० नये पैसे

स्टेन्फ़ोर्ड यूनिवार्सिटी प्रेस, स्टेनफ़ोर्ड, केलिफ़ोर्निया
यू. एस. ए. की स्वीकृति से
भारत में प्रकाशित।

मूल ग्रंथ का प्रथम हिन्दी-अनुवाद

प्रथम संस्करण : १९५८

प्रकाशक : जी. एल. मीरचंदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड
१२, वाटरलू मेन्शन्स (रीगल सिनेमा के सामने) महात्मा गांधी रोड, बम्बई—१
मुद्रक : वि. पु. भागवत : मौज प्रिन्टिंग ब्यूरो खटाववाडी, गिरगांव, बम्बई ४

प्रस्तावना

हाल के वर्षों में स्वातंत्र्य एवं प्रजातंत्र के सुखद स्वप्न देखनेवाले मानव-समाज को निराशा ही मिली है। कोरिया में युद्ध की ज़िच के पश्चात् शान्ति की ज़िच शुरू हो गयी। युद्ध के तीन वर्षों में संपूर्ण विनाश के बाद भी कोरिया अभी तक आधा साम्यवादी और आधा स्वतंत्र है। फ़ारमोसा में चीनी राष्ट्रवादी, उस सँकरे जलपथ के उस पार से लाल चीन के आक्रमण से प्रायः आतंकित ही रहते हैं। आन्तरिक विग्रह के कारण प्रजातन्त्रीय चीनी सेनाओं में विभक्तियाँ आ गयी हैं और लाल चीन के प्रमुख विरोधी के रूप में उनका प्रभाव नष्ट हो गया है।

हिन्द-चीन में ज़ेन बेन फू के पतन ने, जिनेवा कांफ्रेंस में समझौते की बातों में संलग्न पक्ष को बड़ा निर्बल बना दिया। फ्रांसीसी सेनाओं ने अपनी प्रतिष्ठा खो दी है और अमरीकी सहायता के प्रभाव में लोगों के विश्वास को बड़ा धक्का लगा है। यद्यपि मलाया में अभी कम्यूनिस्ट शक्तियों की प्रगति रोक दी गई है परन्तु यदि पूरे हिन्द-चीन का पतन हो गया तो उसके दक्षिण की ओर के देशों पर इसका दबाव काफ़ी बुरा पड़ेगा। इन्डोनेशिया में सरकार एक सुदृढ़ साम्यवादी अल्पमत के समर्थन पर ही शासनारूढ़ है। भारतवर्ष की भाँति इन्डोनेशिया की वैदेशिक नीति भी तटस्थतापूर्ण रही है। पूर्व और पश्चिम में शान्ति बनाए रखने के भारतवर्ष के निष्कपट प्रयत्नों का परिणाम प्रायः कम्यूनिस्ट आक्रमण सुदृढ़ करना और संभवतः प्रोत्साहित करना ही हुआ है।

वस्तुस्थिति दुर्भाग्यपूर्ण ज़रूर है; किंतु एकदम बुरी नहीं है। यद्यपि कोरिया में हमें विजय नहीं मिली तो जो मिला उसे हार भी नहीं कह सकते। ज़ेन-बेन फ़ू का पतन, विशेषकर जिनेवा कांफ्रेंस के अवसर पर, महान् क्षति का विषय था; किन्तु अभी पूरे हिन्द-चीन का तो पतन नहीं हुआ है। इन्डोनेशिया और भारतवर्ष द्वारा अपनाये गये स्वतन्त्र मार्ग ने, यद्यपि किसी-किसी अवसर पर कम्यूनिस्टों का पक्ष लिया है; किन्तु अन्य कितने ही अवसरों पर कम्यूनिस्टों के प्रसार को रोकने के लिए उसने एक दुर्ग का काम किया है।

किन्तु दक्षिणपूर्व एशिया के एक राष्ट्र, फिलिपाइन, से स्वतंत्र विश्व आशा का

नया बल प्राप्त कर सकता है। यहाँ गत चार वर्षों में इस नये गणतन्त्र ने अपनी साम्यवादी समस्या हल करने में द्रुत प्रगति की है। सारे क्षेत्र में यही एक ऐसा प्रदेश है जहाँ सशस्त्र कम्यूनिस्ट विद्रोह असफल हुआ है। सफलता की यह कहानी स्वतंत्र विश्व को नया साहस प्रदान करनेवाली है और इसने ऐसे सबक हमारे लिए उपलब्ध कर दिये हैं जिन्हें सीखना बड़ा ज़रूरी हो गया है। दीर्घकालीन एवं कटु अनुभव द्वारा फिलिपाइन ने प्रभावशाली फौजी शक्ति तथा रचनात्मक कल्याणकारी योजनाओं के अभूतपूर्व मिश्रण के रूप में साम्यवाद को मुँहतोड़ उत्तर दिया है। नई नीति के प्रतिनिधि-वक्ता रेमॉन मैग्सेसे ने, जब कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा सचिव थे, बटान-दिवस पर एक भाषण में कहा था :—

"इसका क्या कारण है कि एक विदेशी शक्ति ने हमारे भोले-भाले फिलिपाइनी कृषकों को अपने भ्रमजाल में समेट लिया? यहाँ इसका पूरा स्पष्टीकरण हो जाना चाहिए। मूल कारण यह है कि हमने अपनी इस भोलीभाली जनता की समस्याओं पर ध्यान न देकर केवल अपनी कार्यपूर्ति को ही सर्वोपरि महत्त्व दिया है। अब जब कि सरकार के अध्यवसायी कार्यक्रम ने आपस की यह गलतफ़हमी खत्म कर दी है और उनमें नया विश्वास जाग्रत हो गया है एवं जबकि उन्हें इस बात की प्रतीति हो गयी है कि सरकारी अधिकारी उनकी मुक्ति के लिए ही अपनी सत्ता का प्रयोग करते हैं, तो वे भी निश्चित उत्साह और श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं। यदि उन्हें सहारा न मिलता तो वे उन चालाक अन्तर्राष्ट्रीय ठगों की बलि के बकरे बन गए होते जो कोरे वचनों से मनुष्य की आत्मा खरीद लेना चाहते हैं।

"आजकल 'एडकोर' के द्वारा आपकी सेना इस तथ्य को प्रमाणित कर रही है। उन्होंने हुकों से कह रखा है कि, 'राष्ट्र-व्यवस्था के संरक्षक होने के नाते हमारा यह कर्तव्य है कि—यदि तुम आत्मसमर्पण न करोगे तो हम तुम्हारा पीछा करके तुम्हें मार डालेंगे। परन्तु यदि तुम सहकारी फिलिपाइनी नागरिक के रूप में अपने-आपको व्यक्त करोगे, तो हम तुम्हारे सुखद जीवन के नवनिर्माण में पूरी-पूरी मदद करेंगे'। अधिकांश पुराने हुकों ने इसे स्वीकार कर लिया और वे आज मिन्डानाओ की भूमि पर अपने-आपको नये और कल्याणकर जीवन में ढाल रहे हैं।

"इसी समुदाय-केंद्र में हमारे थोड़े से देशवासियों को प्रजातन्त्र का एक अति उपयोगी पाठ पढ़ाया जा रहा है। सेना के व्यक्ति बस्ती के लोगों से मिलकर मैत्रीपूर्ण सहयोग के साथ काम करके प्रत्यक्ष रूप से यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि

एक प्रजातन्त्रीय सेना जनता की सेना होती है। यह उनके सभीत झुके हुए सिरों के ऊपर आतंकदात्री गदा नहीं है, बल्कि हमारे गणतन्त्र के प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा और कल्याण के संकल्प में लीन जनता की अपनी सेना है।

"सम्पूर्ण बल और सम्पूर्ण मैत्री की इस नीति से हम लोग अच्छी प्रगति कर रहे हैं, यों कहिये कि हम विजय-युद्ध लड़ रहे हैं।"

आगे के पृष्ठों में इसी विजय युद्ध की कहानी है। युद्ध के बाद की निरुपायता एवं व्यापक विध्वंस से ऊपर उठकर फिलिपाइन को हुकों से संघर्ष करने के साथ-साथ पुनर्रचना का कार्य भी अपने हाथों में लेना पड़ा। अतः इसकी महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है। फिलिपाइन को भी उसी प्रकार के कृषि और राष्ट्रवादिता-प्रेरित साम्यवादी आन्दोलन का सामना करना पड़ा है जिसने चीन, कोरिया, हिन्दचीन तथा दक्षिणपूर्व एशिया के दूसरे राष्ट्रों को रौंद रखा है। सच तो यह है कि वीतमिन्ह द्वारा हिन्दचीन में आक्रमण के समय, हुक-युद्ध बहुत बढ़ चुका था। यदि सुरक्षा की दृढ़ व्यवस्था न की गयी होती तो फिलिपाइन को भी १९५१ में वैसी ही गम्भीर स्थिति का सामना करना पड़ता जैसी चीन-सागर-पार स्थित उसके साथी देश को करनी पड़ी है। योजनाओं को उन्नत करके तथा कमियों को दूर करके फिलिपाइन ने, अंततः, आधुनिक साम्यवाद की धमकी के पूर्ण ज्ञान पर आधारित एक हल का पता लगा लिया है। जब इसकी सब से अधिक आवश्यकता पड़ेगी, फिलिपाइन मुक्त विश्व की सेवा के लिए अपना सहयोग देने के लिए सदैव प्रस्तुत रहेगा। उसकी यह देन है हुकों पर विजय-प्राप्ति के रूप में दक्षिणपूर्व एशिया में साम्यवादी समस्या का सफल हल। इस अनुभव को उन लोगों तक पहुँचाने के लिए, जो लोकतंत्र के लिए संघर्ष में लीन हैं, यह पुस्तक हम सादर समर्पित करते हैं।

फुलब्राइट शोध अनुदान द्वारा ही एक वर्ष के पूर्ण शोध और अध्ययन के पश्चात् इस पुस्तक का लिखा जाना सम्भव हो सका है। फुलब्राइट नियुक्तियाँ करने वाली राष्ट्रीय संस्था संयुक्त राज्य एजूकेशनल फाउन्डेशन की फिलिपाइन शाखा की उदार सहायता के लिए लेखक अत्यन्त आभारी है। जिन व्यक्तियों ने और जिन संस्थाओं ने तत्सम्बंधी लेख-पत्रों की खोज करने तथा घण्टों तक घटनाओं का वर्णन करने तथा समझाने का कष्ट किया है उनमें से मैं फिलिपाइन सेना का विशेष आभार मानता हूँ। शिक्षा तथा सूचना-विभाग, जन-कार्य-विभाग, तथा विशेषकर एडकोर के अधिकारियों के सहयोग और मैत्रीपूर्ण सम्बंध लेखक को चिरस्मरणीय रहेंगे। पुराने हुकों को पुनःस्थापित

करने में संलग्न इन व्यक्तियों के साथ लेखक उस समय तक लगातार घण्टों जंगलों में घूमा है, नदियाँ पार की हैं, बाँस के तख्तों पर सोया है, जब तक कि उसने फिलिपाइन में साम्यवाद की प्रगति को उलटने वाले, इस प्रजातंत्रीय भ्रातृत्व के नाड़ी-स्पंदन की अनुभूति नहीं प्राप्त कर ली। लेखक, सर्वोपरि, उन फिलिपाइनी भाइयों का आभारी है जिनके प्रयत्नों से असफलता के वर्णन की अपेक्षा यह सुखान्त कहानी लिखना सम्भव हो सका है। लेखक फिलिपाइनी जनता के अनुपम सत्कार को वर्षों तक याद रखेगा और उनका चिर ऋणी रहेगा।

मनीला, १ जून, १९५४
क्लोचर मोन्ट, कैलिफोर्निया,
१५, अप्रैल, १९५५.

गल्विन एच स्काफ़
पैयोना कालेज में समाजशास्त्र के
सहप्राध्यापक; फुलब्राइट शोध-
प्राध्यापक, फिलिपाइन १९५३–५४

सूची

फिलिपाइन-गणतंत्र तथा लुसोन और मिन्दनाउ द्वीप। छाया-युक्त प्रदेश हुक सेनाओं का प्रमुख केन्द्र, 'हुकलेन्डिया' है।

अध्याय १

हुकबलाहाप

१९४६ में, फिलिपाइन गणतंत्र का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जन्म हुआ और उस समय से ही उसको चीन, कोरिया, हिन्दचीन और मलाया की तरह साम्यवादी विद्रोह से अपनी रक्षा करनी पड़ी। यह कोई मामूली दंगा नहीं था। इसको हम निराशा से उत्तेजित लोगों द्वारा जल्दी में किया गया बलवा या स्थानीय असन्तुष्ट लोगों द्वारा बिना विचारे फैलाया हुआ आतंक नहीं कह सकते। यह तो एक देशव्यापी उपद्रव था जिसमें फिलिपाइनी सेना, हुक गुरिल्ला, शिक्षित और देहाती वर्ग, राजधानी के निवासी और दूर-दूर गाँवों के किसान भी शामिल थे। वाक्-युद्ध के साथ साथ वह गोलाबारी का भी युद्ध था। इसके दुःखद अवशेष युद्धोत्तर फिलिपाइनों के भस्मसात् मकानों, शोक-संतप्त परिवारों, कठोर शत्रुता और राजनीतिक कलह के रूप में दिखाई देते हैं।

इस विद्रोह का संगठन साम्यवादी सशस्त्र दल द्वारा हुआ जिसे हुक कहते हैं। यह नाम एक लम्बे शब्द हुकबलाहाप (हुक बोंग बायान लाबान सा हैपान अर्थात् जापान विरोधी जनसेना) का संक्षिप्त रूप है। इस सेना का जन्म जापान से गुरिल्ला-युद्ध करने के लिए हुआ था। फिलिपाइन द्वीप-समूह में इस प्रकार की अनेक टोलियाँ थीं। परन्तु यह संगठन मध्य लूज़न में सबसे बड़ा और सबसे ज्यादा सक्रिय संगठन था। १९४५ में जापान के साथ सन्धि होने के बाद हुकों ने राजनीतिक स्रोतों द्वारा फिलिपाइन सरकार पर अधिकार प्राप्त करने के प्रयत्न किए। इन कोशिशों में असफल होने पर उन्होंने १९४६ में गृह-युद्ध छेड़ दिया। उन्होंने अपना नाम रखा—पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (हुक बौंग मैगपालायान्ग बायान या एच. एम. बी) लेकिन आम प्रयोग में प्रचलित स्वरूप 'हुक' ही रहा।

जिन कारणों को ले कर हुकों की स्थापना हुई वे देश के जीवन में बड़ा महत्त्व रखते हैं। वे कारण उन लोगों की पृष्ठभूमि और प्रभावशाली हितों में दिखाई देते हैं जो २९ मार्च, १९४२, को मध्य लूज़न के एक दूर गाँव के जंगल में 'हुकबलाहाप' के प्रारम्भ होने का विधिवत् उत्सव मनाने के लिये जमा हुए थे। प्रधान

सेनापति लुई टारुक एक दृढ़, प्रभावशाली और आकर्षक नेता था जो पैम्पाङ्गा के एक गरीब परिवार का था। लेकिन स्कूल छोड़ने के पूर्व उसने मनीला में कानून प्रशिक्षण के पूर्व के दो वर्ष पूरे करने का प्रबन्ध कर लिया था और १९३० के मध्य में समाजवादियों से मिल गया था। देहातियों में टारुक एक बड़ा सफल और लोकप्रिय संगठनकर्त्ता था। उसका मित्र, उप-सेनापति कैस्टो एलिज़ैन्ड्रिनो, मध्यम वर्ग के एक जमींदार परिवार का था जिसने थोड़ी सी स्थानीय राजनीतिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी। जापानी आक्रमण के समय कैस्टो एलिज़ैन्ड्रिनो पैम्पाङ्गा में अरायात का नगरपति था। वयोवृद्ध और स्वतंत्र विचारवाला समाजवादी बर्नेर्डो पाब्लेट अपने गुरिल्ला लड़ाकुओं के सशस्त्र दल के साथ सभा में आया। पाब्लेट उर्फ़ बैनाल की रुचि केवल जापानी आक्रमणकारियों के विरुद्ध लड़ने की थी। वह देशभक्त [illegible] के राजनीतिक उद्देश्यों से वह कभी प्रभावित नहीं हुआ। लीनो डिज़ोन काना, अक्खड़ और पुराना देहाती संगठनकर्त्ता था। उसने दरिद्रता और क्लेश के अतिरिक्त कुछ देखा ही नहीं था। इन बातों ने और उसकी कवित्व और वक्तृत्व की विलक्षण प्राकृतिक देन ने उसे अपने साथियों में प्रिय बना दिया था। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में वह जापानियों द्वारा पकड़ा गया और मार डाला गया।

एक महिला नेत्री [illegible] उर्फ़ डायंग डायंग अपने दल के सौ मनुष्यों सहित वहाँ पर उपस्थित थी। वह डीलडौलवाली, रूखी और रोबीली स्त्री थी। उसके विषय में टारुक ने लिखा था, "लोगों को उससे डर लगता था, और वह किसी से नहीं डरती थी।" सैन्ट्रल लूज़न के भीतरी भाग में मीलों तक फैले हुए कन्डाबा स्वाम्प के पूर्वी किनारे के पास जापानी पहरुओं का उसके दल ने सफलतापूर्वक पीछा किया था। उसके आदमियों ने पानी के निकास के किनारे-किनारे, त्रिकोण में, खाइयाँ खोद रखी थीं और वे तब एक प्रतीक्षा करते रहे जब तक जापानी अपनी फिलिपाइनी कठपुतली पुलिस के साथ उनके जाल में फँस न गए। समीप से ही गुरिल्लाओं ने गोली चला दी। जब लड़ाई समाप्त हुई, उन्होंने शत्रुओं के लगभग सौ आदमियों को मार डाला था और अड़तीस बन्दूकों को हथिया लिया था। किन्तु पहली हुक वीराङ्गना, डायंग डायंग, जिस प्रकार का आन्दोलन साम्यवादी चला रहे थे, उसके लिए पैदा नहीं हुई थी। कुछ महीनों बाद उसे निकाल बाहर किया गया। पार्टी का अनुशासन मानने के बजाय अपने ही हितों पर चलने के लिए दोषी ठहराए जाने पर, गोली चलाने वाली एक टुकड़ी के द्वारा उसे ले जाकर गोली से उड़ा दिया गया।

नितान्त भिन्न मान्यताओंवाला विंसेंट लावा था जो शिष्ट, सुसंस्कारपूर्ण, महान् शिक्षित और मनीला के ब्यूरो आफ़ साइन्स का रसायन-शास्त्री था। लावा साम्यवादी पार्टी का महामंत्री और हुकबलाहाप का सलाहकार था। वह बुलाकाम प्रान्त के एक कुलीन ज़मींदार परिवार का था और कुछ वर्ष पूर्व ही उसने न्यूयॉर्क नगर के एक प्रमुख विश्वविद्यालय से रसायन-शास्त्र में पी. एच. डी किया था।

जंगल में हुई सभा में कुछ नेता उपस्थित नहीं थे। समाजवादी-वकील-विद्वान पेड्रो अवाड सैन्टोस जापानियों द्वारा हिरासत में ले लिया गया था। मनीला पर अधिकार करने के प्रारम्भिक दिनों में पकड़े गए लोगों में फिलिपाइन साम्यवादी पार्टी का संस्थापक, पुराना और प्रमुख श्रमिक-नेता क्रिसैन्टो इवैंजिलिस्टा भी था। उसने मुद्रण व्यवसाय से ही उन्नति की थी। उसी समय और उसी स्थान पर दो और पार्टी नेताओं को जेल हो गई। सुदृढ़ साम्यवादी तथा पैम्पाङ्गा प्रान्त की राजधानी सैन फर्नोन्डो के मेयर अवाड सैन्टोस के भतीजे, अगैपिटो डेल रोज़ैरियो, को जापानियों द्वारा कई महीनों तक यातनाएँ दी गयीं और बाद में मार डाला गया। १९३२ में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के अनुसार साम्यवादी होने के नाते राजद्रोही कार्य करने के लिए दण्डित, श्रमिक नेता गुलिर्मो कैपेडोशिया ने कई महीनों तक जेल भुगती, किन्तु बाद में वह छोड़ दिया गया।

आरम्भ से ही हुक नेता भिन्न प्रकार की पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व करते थे। कुछ तो प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जो देहाती संगठनों में काम कर के ऊपर उठे थे, कुछ श्रमिक नेता थे जो "नागरिक श्रमिक वर्ग" पर ज़ोर डालते थे। दूसरे लोग, जैसे टारुक, ग़रीब किन्तु काफ़ी शिक्षित थे। उन्होंने देहातियों के हितों के लिए अपने नेतृत्व का सफल प्रयोग किया था। लावा जैसे थोड़े ही व्यक्ति बुद्धिनिष्ठ थे। वे मनुष्य की स्थिति की अपेक्षा आदर्श सिद्धान्तों की बात सोचते थे—उनकी दृढ़ता ने हुक सेनाओं का मार्गदर्शन किया जिसका पिछले यत्र-तत्र हो रहे कृषक-विद्रोहों में अभाव था।

हुक की स्थापना का उत्सव मनाने के लिए जंगल के एक निर्जन स्थान में एकत्रित नेताओं के पीछे कुछ सिपाही खड़े थे। वे बिल्कुल फटेहाल थे—कोई वर्दी नहीं, कोई बिल्ला नहीं, किन्हीं के पैरों में जूते तक नहीं थे। उनके चौड़े पैर, मैदानों पर धान के खेतों में वर्षों की मेहनत के साक्षी थे। उनके ऐंठे हुए हाथों में विभिन्न प्रकार के हथियार थे। उनमें से कुछ अपनी

उगलियाँ राइफ़ल की नली पर फेर रहे थे, कुछ लोग अभिमान के साथ पुराने ढंग की बन्दूकें लिए हुए थे और कुछ के पास पिस्तौलें थीं। कन्डाबा स्वाम्प के किनारे जापानियों से हुई मुठभेड़ की कहानी वे बारबार सुना रहे थे। उन्होंने भाषण सुने। बूढ़े और जवान, सभी, गम्भीर और कृतसंकल्प थे। ये वे आदमी थे जिन्होंने हुक गुरिल्ला लड़ाई के भार को वहन किया था।

इसलिए जिस तात्कालिक परिस्थिति को ले कर हुक की स्थापना हुई थी, वह जापानी आक्रमणकारियों को मार कर भगाने के विचार से युद्ध की भावना थी। परन्तु संघर्ष की जड़ें युद्ध की आवश्यकता की अपेक्षा, अधिक गहरी हो गई और हुक का लक्ष्य जापानियों को हराने से ले कर फिलिपाइन पर पूर्ण रूप से अधिकार करने के लिए संघर्ष तक बढ़ गया। हुक संगठन कोई अवसरवादी गुरिल्ला संगठन नहीं था; वह तो क्रान्ति के सुनियोजित प्रचार का परिणाम था। यह पृष्ठभूमि क्या थी और हुक के पीछे यह संगठन क्या था?

पीढ़ियों से फिलिपाइन-निवासियों ने, विशेषकर लूज़न में, विद्रोह के रूप में अपना असन्तोष प्रकट किया था। श्रम-विभाग के अनुसार एक विद्रोह तो १६६२ के आसपास का मिलता है। एक दूसरे साक्ष्य के अनुसार १७३९ में बटांगास प्रान्त में विद्रोह का प्रमाण मिलता है। जैस्यूट इस्टेट के काश्तकार, यह दावा जताते हुए कि उन्हें गालियाँ दी गईं और उनकी जमीनें छीन ली गईं, बग़ावत के लिए उठ खड़े हुए, उन्होंने मारकाट की, आग लगाई और लूटमार की।

फिलिपाइन का इतिहास इस प्रकार के कई बलवों से भरा पड़ा है। कुछ में नौकरशाही की खिलाफ़त थी, कुछ बलवे मूलतः राजनीतिक और राष्ट्रीयता-प्रसूत थे। उनके व्यक्त उद्देश्य चाहे जो हों, किन्तु सभी में कृषकों की अशांति का अंदरूनी प्रवाह निश्चित रूप से था। और उन्हें व्यापक सहयोग भी किसानों से ही मिला—उन किसानों से जिन्होंने ग़रीबी के संताप, ज़मींदारों के अत्याचार और एक परिपूर्ण रूप से केंद्रित सरकार की एकांत दूरी को अनुभव किया था जिसने स्थानीय शासकों के हाथ में नाममात्र के निर्णय छोड़े थे। कृषक वर्ग ज़मीन चाहते थे, स्कूल चाहते थे, साहूकारों के चंगुल से मुक्त होने के लिए रुपये उधार पाने की सुविधा चाहते थे और सरकार में अपनी आवाज़ चाहते थे। लूज़न के इस ग्रामीण अंचल में भूमि-सम्बंधी इन उद्देश्यों का प्रादुर्भाव पीढ़ी दर-पीढ़ी के अनुभवों के बाद हुआ था।

१७ वीं शताब्दी से ले कर १९३१ में टैंगुलान और १९३५ में सैकडल्स

तक ये सब विद्रोह यत्र-तत्र-बिखरे और सुसंगठित नहीं थे। उनमें जनता की व्यापक अशान्ति का आभास था मगर सरकार के लिए वे कभी गम्भीर चुनौती नहीं बन सके। इनमें से किसी विद्रोह का सीधा सम्बंध हुकबलाहाप से नहीं था। अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने विद्रोह की परम्परा को बनाये रखा, उन्होंने जनता में संगठित विद्रोह की आदत डाली और भूमि-सम्बन्धी ग्राम्य-अशान्ति की आग को भड़काया। लेकिन ये विद्रोह जैसे वे उठे, वैसे ही असफल हुए और खत्म हो गए।

इसलिए लड़ाई के प्रारम्भ के दिनों में जब हुक क्रांतिवादियों के विद्रोह की चिन्गारी फूटी तो यह प्रत्याशित ही था कि जो व्यक्ति वहाँ एकत्र हुए, जिन्होंने शस्त्र उठाये और जो लड़े, वे सब लोग किसान ही होंगे। यह फिलिपाइन क्रांति की पुरानी परम्परा के अनुरूप ही था कि आन्दोलन के उद्देश्यों में भूमि-सम्बन्धी समस्याएँ प्रमुख रहें। लेकिन गहरे असंतोष के अलावा, जिसके कारण हुक जनता का व्यापक विश्वास और सहयोग प्राप्त कर सके, भूमि-सम्बन्धी समस्याएँ ही एक आन्दोलन और उसके पूरे उद्देश्यों को समझाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। भूमि-व्यवस्था-सम्बन्धी पुरानी समस्या में दूसरी बातें, जैसे प्रभावशाली संगठन, नेतृत्व और सारे आंदोलन को पोषित करनेवाली विचारधारा, भी जोड़ी जानी चाहिए। ये उपादान, जो परिपक्व क्रांति के कारण थे, जापानियों के साथ लड़ाई छिड़ने से बीस वर्ष पूर्व विकसित हुए थे। १९२० के बाद के दशक में, कृषक और श्रमिक-संगठनों में साम्यवादी आंदोलन के आरम्भ से और १९३० के बाद के दशक में लोकप्रिय समाजवादी प्रवृत्तियों से ही इनका प्रादुर्भाव हुआ है।

रूस में बोल्शेविक क्रांति के सुदृढ़ीकरण के तुरन्त बाद साम्यवादी प्रभाव फिलिपाइन में तथा सुदूर-पूर्व के अन्य भागों में दिखाई देने लगा। १९२४ में, एक अमरीकी, विलियम जेनक्वेट ने मनीला के श्रमिक-संघों को चीन के कैन्टन में होनेवाली ओरियन्टल ट्रान्सपोर्टेशन वर्कर्स (पूर्वीय ढुलाई-मज़दूर संघ) की पहली काँग्रेस में प्रतिनिधि भेजने के लिए आमंत्रित किया। डोमिन्गो पोन्स के नेतृत्व में पाँच प्रतिनिधियों ने अधिवेशनों में भाग लिया। बाद में पता लगा कि वे कम्यूनिस्टों द्वारा संगठित थे। उनके लौटने पर, डोमिन्गो पोन्स ने मॉस्को की 'थर्ड इन्टरनेशनल' के निर्देशन में मनीला में एक 'सचिवालय' की स्थापना की। इस प्रारम्भकालीन सचिवालय का सही रूप स्पष्ट नहीं है; सम्भवतः वह कम्यूनिस्ट सदस्यों अथवा उनके शुभेच्छुकों की एक बीजरूपिणी संस्था रही हो।

दूसरे वर्ष, १९२५ में, फिलिपाइन लेबर कांग्रेस (कांग्रेसो ओब्रेरो द फिलिपाइन्स) को, जो १९१२ से संगठित थी, कैन्टन में होने वाली रैड इन्टर नैशनल लेबर यूनियन (रिलू) की बैठकों में प्रतिनिधि भेजने के लिए निमन्त्रण दिया गया। भाग लेने वाली संस्थाओं में 'आल चाइना लेबर फ़ैडरेशन', 'आस्ट्रेलियन कौंसिल आव ट्रेड यूनियन्स', 'ट्रेड यूनियन लीग आव युनाइटेड स्टेटस', 'इन्डोनेशियन लेबर फेडरेशन', 'कन्फैड्रेशन', 'जनरल डु ट्रेवेल युनिटाइर फैंकाइस', निपन गेडो कुमाई हैगीकुई सिट्सी डोमी; नेशनल माइनारिटी मूवमेंट आफ़ इंगलैंड, कोरियन वर्कर्स एण्ड पेजेंट्स फ़ैडरेशन, आल रशियन कौंसिल आव ट्रेड यूनियन्स और कांग्रेसो डि ओब्रेरो द फिलीपाइन्स थीं। ये संस्थाएँ उस समय इन देशों के संगठित श्रमिक आन्दोलन में साम्यवादी प्रवृत्तियों का स्रोत बनी हुई थीं अथवा बनने वाली थीं। संसार के अधिकांश देशों में विस्तृत कम्यूनिस्ट—प्रसारण इसी समय से प्रारम्भ हुआ था।

इस सभा के लिए निमंत्रण सम्भवतः कथा-प्रसिद्ध मिस्टर टान मलाका द्वारा दिया गया था, जो २० जुलाई, १९२५, को "एस. एस. एम्प्रेस आव रशिया" द्वारा हांगकांग से मनीला आया था। देशान्तर्वास अधिकारियों को धोखा देकर—अपने को फिलिपाइनी करार दे कर—वह इलियास फ्युंटीज़ के छद्म नाम से देश के भीतर घुसा। इन द्वीपों में उसका दो वर्षीय प्रवास फिलिपाइन की उग्रतावादी राजनीति के इतिहास का एक मनोरम प्रसङ्ग है।

अनधिकृत प्रवेश के लिए पकड़े जाने पर देश-निष्कासन-सम्बन्धी सुनवाई के दौरान में मलाका ने यह साबित करना चाहा कि वह एक इन्डोनेशियन निवासी है और डच सरकार उसे पकड़ना चाहती है। असल में, वह एक जावानी था, जिसने हालैंड में शिक्षा पायी थी—शायद मास्को में भी उसने कुछ न-कुछ अध्ययन किया था। जब वह यूरोप से लौट कर जावा गया, तो वहाँ की लोकप्रिय राष्ट्रीय सरेकत रय्यत पार्टी का अध्यक्ष चुना गया। उसने दावा किया कि जहाँ कहीं भी वह गया, डच जासूसों ने उसका पीछा किया। इस पर्यटन के दौरान में वह सुमात्रा गया, फिर दुबारा जावा; हॉलेण्ड से देशान्तरित किये जाने पर वह एशिया में भाग आया और फिलिपाइन में आने से पहले पीकिंग, शन्घाई, कैन्टन और हांगकांग की भी उसने यात्राएँ कीं!

वह अवश्य ही प्रतिभाशाली आदमी रहा होगा। केवल ३० वर्ष की आयु में ही वह डच, जर्मन, अंग्रेजी, मालायी, जापानी और थोड़ी-थोड़ी चीनी,

फ्रेंच, टैगालोग और स्यामी भाषाएँ भी बोल लेता था। व्यवसाय के बारे में जब उससे पूछा गया, तो उत्तर था—"समाचारपत्रों में लिखना।" जावा में वह एक श्रमिक संघ का अध्यक्ष और एक पत्र का सम्पादक था।

मलाका की राजनीतिक प्रवृत्तियाँ उसके देशनिष्कासन सम्बन्धी मुकदमे में स्पष्ट हुईं। सरेकत रय्यत पार्टी के उद्देश्य के बारे में पूछे जाने पर उसने उत्तर दिया, "प्रत्येक संभाव्य साधन द्वारा डच उपनिवेशों का स्वतन्त्र करना। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मैं जनता द्वारा अपनाये गये प्रत्येक साधन—राजनीतिक, आर्थिक और आवश्यकता पड़ने पर शस्त्र-विद्रोह में भी विश्वास करता हूँ।" जब उससे पूछा गया कि बोल्शेविज्म के बारे में आप के क्या विचार हैं? तो उसने कहा—

"यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके द्वारा संसार का श्रमिक वर्ग किसी भी उपाय द्वारा वर्तमान पद्धति में परिवर्तन लाने के लिए आपस में संगठित हो कर, अपनी सामाजिक व राजनीतिक मुक्ति प्राप्त कर सकता है।"

प्रश्न : "क्या आप इसी सिद्धान्त को मानते हैं?"

मलाका : सिद्धान्ततः मानता हूँ; लेकिन लक्ष्य का निर्णय देश-विशेष की मर्यादाओं के अनुरूप होना चाहिये।"

मलाका फिलिपाइन में बहुत घूमा। हर जगह मज़दूर-नेताओं, पत्रकारों और राजनीतिज्ञों से उसने मैत्री कायम की। एक समय तो वह नीग्रोस ऑक्सीडैन्टल के प्रतिनिधि रैमन टारैस के साथ भी रहा। मनीला विश्वविद्यालय के अध्यक्ष अपौलिनेरियो द' लास सैन्टास तथा मज़दूर नेता और 'एल डिबेट' पत्र के सम्पादक फ्रान्सिस्को वैरोना ने भी मनीला में उसे मित्र बना लिया। देश-निष्कासन-सम्बन्धी सुनवाई के समय जज जोस अबाड सैन्टोस ने उसके वकील के रूप में काम किया। सदन के तत्कालीन अल्पसंख्यकों के नेता क्लेरो रैक्टो ने दान-मलाका-फन्ड का प्रस्ताव पेश किया। धन की वर्षा होने लगी। यद्यपि मलाका फिलिपाइन से निष्कासित किया जा रहा था, तथापि वह उस जनता की नज़रों में 'राजनीतिक हीरो' बन गया था जिसके देश को उसे मजबूरन छोड़ना पड़ रहा था। उनके लिए वह एक शहीद था जो अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए दुःख सह रहा था। सहानुभूति के जोश में ऊँचे राजनीतिक पदवाले तथा मज़दूर वर्ग में से किसी ने यह नहीं सोचा था कि जिन विचारों और सिद्धान्तों का मलाका ने प्रचार किया था, वे आगामी वर्षों में विकसित हो कर अन्त में हुक विद्रोह के रूप में फलीभूत हो जायेंगे।

कैन्टन से प्रतिनिधियों के लौटने के बाद १९२७ में फिलिपाइन लेबर कांग्रेस की पहली सभा में कम्यूनिज्म के मसले पर खुले आम चर्चा हुई। सभा ने अन्ततः फिलिपाइन लेबर कांग्रेस को रेड इन्टरनेशनल लेबर यूनियन से सम्बद्ध होने के पक्ष में मत दिया। प्रतिनिधियों ने एक मजदूर-सभा संगठित करने का प्रस्ताव भी पास किया। इवैंजिलिस्टा और अन्य लोगों (जो कम्यूनिस्ट हो गये थे) के नेतृत्व में १९२८ में मजदूर सभा (पार्टिडो ओब्रेरो) संगठित हुई। वर्ष के अन्त में क्रिसैन्टो इवैंजिलिस्टा और सिरोलो ब्रोग्नाट ने शंघाई की सभाओं में भाग लिया जहाँ उनकी चौ-एन-ली और अर्ल ब्राउडर से भेंट हुई। फिर वे प्रशिक्षा के लिए साइबेरिया होते हुए मॉस्को तथा यूरोप में अन्य सम्मेलनों में भाग लेने के लिए गए। मॉस्को में उन्हें एक दूसरा देशवासी जैसिन्टो मनाहन मिला जिसने अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी किसान संगठन क्रिस्टिन्टर्न, या क्राइस्ट इन्टर-नेशनल, द्वारा दिए गए धन से अकेले ही यात्रा की।

उनके लौटने पर इवैंजिलिस्टा ने फिलिपाइन लेबर कांग्रेस को सूचना दी कि रेड इन्टर्नेशनल लेबर यूनियन द्वारा कांग्रेस के सम्बद्ध होने की स्वीकृति मिल चुकी है। जब इस सम्बद्धीकरण की आम घोषणा हुई, तो समाचार पत्रों, सरकारी अफसरों तथा ज़मीदारों ने विरोध का तूफान खड़ा कर दिया। मॉस्को में शिक्षित होने के कारण क्रिस्टैनो इवैंजिलिस्टा को रूस और कम्यूनिज्म का अधिकारी विद्वान् होने की ख्याति प्राप्त हो गयी थी। फिलिपाइन विश्व-विद्यालय में दिए गए तीन भाषणों में उसने स्थानीय श्रमिक संगठन के कम्यूनिस्ट रूप और कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल के साथ उसके सम्बद्धीकरण का समर्थन किया।

जिस समय साम्यवादी मनीला की संगठित मजदूर यूनियनों की स्थिति सुदृढ़ कर रहे थे उसी समय वे मध्य लूज़न के किसान संगठनों में एक मजबूत गढ़ भी स्थापित कर रहे थे। प्रारम्भिक प्रयत्न ज्यादातर जैसिन्टो मनाहन, जो फिलिपाइन के पहले साम्यवादियों में से था, द्वारा निर्देशित किए गए थे। लेकिन बाद में पार्टी नेताओं के प्रशिक्षण के हेतु मॉस्को भेजने के लिए उसे जो रकम सौंपी गई थी उसके दुरुपयोग के अभियोग में उसे पार्टी द्वारा निन्दित किया गया।

१९१९ में मनाहन ने फिलिपाइन का कृषक संघ (यूनियन अपैर्सरास द' फिलिपाइन्स) संगठित किया। तीन वर्ष बाद इस संघ का विस्तार किया गया और उसका नाम दुबारा 'किसान और खेतिहर मजदूरों का राष्ट्रीय संघ' (कन्फ़ैडे्र-

शन नेशनल अपैर्सेरास इ ओवेरास एग्रिकोलास द' फिलिपाइन्स) रखा गया। कास्तकारों के हित में विधान बनाए जाने के लिए इस यूनियन द्वारा किए गए प्रयत्नों का ज़मींदारों ने विरोध किया। १९२४ में मनाहन का यह संगठन नेशनल युनियन आव् पेज़ैन्ट्स इन द फिलिपाइन्स (कटिपुनन पम्बान्स ङ्ग मा मगबूब्यूकिड सा फिलिपाइन्स या के. पी. एम. पी.) बन गया। यही यूनियन विशेषकर बुलाकान और न्यूबाइकीजा के मध्यवर्ती प्रांतों के देहातियों में, कम्यूनिस्ट प्रवृत्तियों का आधार बन गया। संक्षेप में, 'के. पी. एम. पी' के नाम से लगातार गतिशील रही यह युनियन १९४२ में हुकों साथ एकाकार हो गयी।

मई, १९२९, में फिलिपाइन लेबर काँग्रेस के अधिवेशन में कम्यूनिस्टों और अनुदार नेताओं में नीति और नियंत्रण को लेकर तीव्र मतभेद हो गया। परिणामतः, संगठन में दो दल हो गए। इवैंजिलिस्टा के नेतृत्व में एक दल ने प्रतिरोध में बाहर निकल कर अपनी अलग सभाएँ कीं और काँग्रेस आव् फिलिपाइन वर्किंग मैन (कीटपुनन ङ्ग म्ग अनक पाविस ङ्ग फिलिपाइन्स) नाम की एक संस्था संगठित की। इस कम्यूनिस्ट-प्रचुर सभा में श्रमिकों को अपने राजनीतिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता के संघर्षों में मार्ग दिखाने के लिए एक मज़दूर दल की स्थापना का प्रस्ताव भी पास हुआ।

अगले वर्ष इवैंजिलिस्टा के साथ काम करने वाले कम्यूनिस्टों की एक समिति ने नये दल के औपचारिक मसविदे तैयार किये। २६ अगस्त, १९३०, को विधान स्वीकृत किया गया। ६ अक्टूबर को उपनियम स्वीकृत हुए और ७ नवम्बर, १९३०, को मनीला में कम्यूनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम सार्वजनिक रूप से प्रारम्भ हो गया। यह समारोह रूस की बोलशेविक क्रान्ति की १३वीं वर्षगांठ के दिन ही किया गया।

एक सार्वजनिक सभा में डोमिनैडोर ऐम्ब्रोशियो ने नये दल के विधान को पढ़ा। इसमें श्रेणी-संघर्ष-मूलक मार्क्सवादी सिद्धांत और कम्यूनिस्ट पार्टी के नेतृत्व सम्बन्धी लेनिनवादी विचारों का समावेश था। "फिलिपाइन को, परतंत्र राष्ट्र के रूप में, स्वराज्य की स्थापना के लिए मज़दूरों के नेतृत्व में विद्रोह करना पड़ा है। हम को सुधारवादी दल के बजाय एक क्रांतिकारी दल—कम्युनिस्ट पार्टी—चाहिए। केवल क्रान्तिकारी साधनों द्वारा ही हम एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति पर तथा एक राष्ट्र की दूसरे राष्ट्र पर आरोपित गुलामी का नाश कर सकते हैं। फिलिपाइन सरकार को चलाने की मंशा में कम्यूनिस्ट पार्टी के मुख्य आदर्श अन्य बुर्जुआ पार्टियों से एकदम भिन्न हैं। इसका उद्देश्य पूँजीवादी सरकार को

मज़बूत करना नहीं बल्कि अनिवार्य श्रेणी-संघर्ष को जन्म देकर उसे पराभूत करना है। यह नाममात्र का कम्यूनिस्ट एवं केवल स्थानीय दल नहीं था; बल्कि मॉस्को से सम्बद्ध एवं मार्क्सवाद और लेनिनवाद से लैस वास्तविक, आधुनिक कम्यूनिज़्म था। विधान को पढ़ कर क्रिसेन्टो इवैंजिलिस्टा ने भाषण दिया। दूसरे देशों के कुछ उपनिवेशों का हवाला देते हुए उसने रूसी सरकार की खूबियाँ और उन उपायों को समझाया जिनका उपयोग रूस के श्रमिक वर्ग ने वर्तमान सरकार की स्थापना के लिये किया था। पर्चे बाँटे गये। उनमें से एक में फिलिपाइन्स के श्रमहारा संघ (प्रोलेटेरियन यूनियन आव दि फिलिपाइन्स) का घोषणापत्र इन शब्दों में था, "सोवियत रूस में क्रांति की सफलता के फलस्वरूप संसार भर में क्रान्तियाँ जाग्रत हुईं। क्रान्ति का विचार तो स्वभावतः अपने-आप ही फैलता है, संघर्ष अधिकाधिक गम्भीर हो जाते हैं परन्तु श्रमिक आन्दोलन रूसी श्रमिकों—बोलशेविकों—द्वारा बतलाये गये मार्ग पर जारी रहता है। वह मार्ग क्या है? वह मार्ग है बुर्जुआ वर्ग के हाथ से शासन की शक्ति छीनना और श्रमिकों की सरकार स्थापित करना।"

कम्यूनिस्ट पार्टी ने ज़ोर-शोर से और खुले आम नये सदस्य बनाने का प्रचार किया। प्रारम्भिक समारोह के बाद दो महीने तक लगभग प्रतिदिन जनसभाएँ होती थीं। दल ने पर्चे बाँटे, अपना एक समाचारपत्र "टिटिस" (ज्वाला) प्रकाशित किया, हँसिया-हथौड़ा अंकित अपना लाल झंडा सार्वजनिक रूप से फहराया और मनीला में एक पुस्तक भंडार चलाया।

इन कार्यों ने नागरिक तथा सरकारी नेताओं में चिन्ता और विरोध उत्पन्न कर दिये। दल के अधिकारियों को सार्वजनिक सभाएँ करने के लिये अनुमति प्राप्त करना बड़ा ही कठिन हो गया। इस मामले को लेकर ही बातें चरम सीमा तक पहुँच गईं जिनके परिणामस्वरूप 'पार्टिडो कोम्यूनिस्टा' को अवैध घोषित कर दिया गया। दल के नेताओं के मुकदमे की सुनवाई के समय निम्नलिखित विवरण न्यायालय द्वारा कानूनी साक्ष्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। मनीला शहर की सीमा से क़रीब दो मील दूर कलूकन में कम्यूनिस्टों ने १९३१ में 'मई दिवस परेड' का आयोजन किया था। परेड करने की अनुमति पहले तो मिल गयी थी, लेकिन बाद में वह रद्द कर दी गयी। पुलिस का एक दल यह देखने के लिये कि सरकारी आज्ञा का पालन हुआ है, परेड के स्थान तक गया। अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई थी। क्रिसैन्टो इवैंजिलिस्टा ने पुलिस अफ़सर से जनता के सामने यह स्पष्टीकरण करने के लिये कि परेड नहीं

हो सकती, दो शब्द कहने की अनुमति माँगी। किन्तु लोगों को चले जाने के लिए कहने के बजाय उसने अपना घूँसा ताना जिसकी स्वीकृति जनता ने 'माबुहे' (पक्की स्वीकृति का सूचक-चिन्ह) चिल्ला कर दी और फिर उसने कहा, "साथियो अथवा भाइयो, म्युनिसिपल प्रेसीडेन्ट मि. एक्विनो ने परेड करने की अनुमति हमें दे दी थी; परन्तु न जाने किन कारणों से वह रद्द कर दी गयी। इससे स्पष्ट होता है कि ये बड़े लोग हम छोटे लोगों को सता रहे हैं और दबा रहे हैं यद्यपि ऐसा करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है।" तब भीड़ में से आवाज़ें आईं—"हमें उनसे लड़ना चाहिए"। अभियुक्त अबेलैर्डो रैमोस जो जन-समूह में था, चिल्ला उठा—"हम उनके साथ मरते दम तक संघर्ष करेंगे।" इवैंजिलिस्टा ने कहा, "मेरे हृदय को मार्मिक आघात लगा है...", परन्तु वाक्य को वह पूरा नहीं कर पाया क्योंकि पुलिस अफ़सर ने उसे रोक दिया और इवैंजिलिस्टा और रैमोस दोनों को गिरफ्तार कर लिया। नेताओं को छुड़ाने के लिये भीड़ आगे बढ़ी लेकिन पुलिस ने पानी डाल कर उन्हें तितर–बितर कर दिया।

फिर 'पार्टिडो कोम्यूनिस्टा' के अन्य नेता भी पकड़े गये और उन पर विप्लव और राजद्रोह के अभियोग लगाये गये। २७ अभियुक्तों में से ७ छोड़ दिये गये और २० को सज़ाएँ दी गयीं। सज़ा की अवधि अलग-अलग थी—सबसे लम्बी थी ८ वर्ष की। २६ अक्टूबर, १९३२, को सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) के निर्णय के अनुसार दल अधिकृत अवैध घोषित कर दिया गया और इसके बहुत से नेता जेल में ठूँस दिये गये; परन्तु उसकी कार्रवाइयाँ छिपे रूप से तथा विभिन्न वैध कृषक और श्रमिक संगठनों द्वारा जारी रहीं।

बाद के कुछ वर्षों में ही, जब कि कम्युनिस्टों को दबा दिया गया था, समाजवादी दल, विशेषकर पैम्पाङ्गा के मध्य लूज़न प्रान्त में, आकार और प्रभाव दोनों में तेज़ी से बढ़ चला। वामपक्षी आन्दोलनों की इस शाखा का प्रभावशाली संयोजक पैड्रो अबाड सैन्टोस नाम का एक दुर्बल-गात संन्यासी था। वह पम्पाङ्गा के एक नामी ज़मीदार परिवार का सबसे बड़ा लड़का था। उसका भाई, जोस, युद्ध काल में सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश था और जापान के अधिकार के समय जापानी सरकार को किसी भी प्रकार का सहयोग न देने के फलस्वरूप शहीद होने वाले सरकारी असफ़रों में से एक था। उसका छोटा भाई क्विरीनो अबाड सैन्टोस, जो अभी भी जीवित है, न्यायाधीश और वकील तथा १९४६ के कृषि कमीशन का सदस्य रहा।

पैड्रो अब्राड सैन्टोस अपने अनुयायियों के बीच 'डॉन पैरिको' के सुपरिचित नाम से प्रख्यात था। उसका जीवन परिपूर्ण सादगी का प्रतीक था। पेट की बीमारी के कारण वह बहुत कम और दिन में दो बार ही भोजन करता था। वह प्रायः बीमार रहता और रोगशय्या से ही अपने मुलाक़ातियों का स्वागत करता था। वह अविवाहित था और उसकी दलील थी कि चूँकि उसकी कोई पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं है और उसकी इच्छाएँ भी अत्यल्प हैं, अतः श्रमिक वर्ग का नेतृत्व करने के लिए उसमें पूरी-पूरी पात्रता है। कठोर संयमित जीवन व्यापन के कारण लोग उसे 'फिलिपाइन का गांधी' भी कहते थे।

यद्यपि डॉन पैरिको के अनुगामियों की संख्या बहुत बड़ी थी परन्तु उसमें उन विशेषताओं का अभाव था जो एक लोकप्रिय नेता में होनी चाहिये। वह जन साधारण के स्तर से नहीं आया था। इसके विपरीत वह असाधारण धनिक परिवार से आया था। वह घर पर एकान्तवासी की तरह रहता था। यदि लोगों को उससे मिलना होता तो उन्हें उसके घर पर ही आना पड़ता था। राष्ट्रपति क्वेज़न से लेकर निम्नतम किसान तक के लिए यही नियम उसने बना रखा था। उसका व्यक्तित्व भी कोई खास प्रभावशाली नहीं था और वक्ता भी वह कोई विशिष्ट नहीं था। लोगों के साथ उसका व्यवहार भी प्रायः रूखा और संक्षिप्त होता था।

१८९६ की क्रांति के कारण उसका कालेज का काम रुक गया। वह स्पेन वालों से लड़ा। जब अमरीकी आये तो वह उनसे लड़ा। लड़ाई के बाद उसे फाँसी की सज़ा हुई; परन्तु यह सज़ा २५ वर्ष के कठोर कारावास में बदल दी गई। अपने अधिकारियों के सम्पर्क में यहाँ उसने शीघ्र ही अच्छी अंग्रेज़ी सीख ली और मौक़ा मिलने पर वह दुभाषिये का काम बड़ी योग्यता से करने लगा १९०३ में उसे क्षमा प्रदान कर दी गई। अब पैड्रो फिर क़ानून पढ़ने लगा और कानून की परीक्षा में भी वह उत्तीर्ण हो गया। बाद के वर्षों में उसने वकालत की, एक पत्र प्रकाशित किया, फिलिपाइन विधान सभा में १९१६-२२ तक दो बार सदस्य रहा और "क्वेज़न–आस्मेना स्वतंत्रता आयोग" के सदस्य के रूप में अमरीका गया।

डॉन पैरिको विद्वान था। उसने अंग्रेज़ी और अपनी देशी पैम्पाङ्गो बोली के अतिरिक्त स्पैनिश, जर्मन, ग्रीक, लेटिन और फ्रेंच भाषाएँ भी पढ़ी थीं। एक बार उसने पैम्पाङ्गो बोली में 'न्यूटेस्टामेंट' (बाइबिल) का अनुवाद करने में अमेरिकन बाइबिल सोसाइटी की सहायता की। पैम्पाङ्गा के सैनफर्नैन्डो नगर में

उसके परिवार के पुराने घर में पुस्तकों की आलमारियाँ भरी पड़ी थीं। उसकी अनिवार्य पाठ्य-सामग्री थी ग्रीक भाषा में 'बाइबिल', जर्मन में 'डास कैपिटल', अंग्रेज़ी में 'डेली वर्कर' और विभिन्न भाषाओं की कई कानूनी पुस्तकें! मध्य लूज़न के किसान उसका आदर करते थे और उस पर विश्वास रखते थे। जमींदार उससे डरते थे और घृणा करते थे; उनकी निगाहों में वह अपने वर्ग का विश्वासघाती था।

यह ठीक निश्चय करना कठिन है कि फिलिपाइन्स में समाजवादी दल की स्थापना कब हुई थी। राजनैतिक इतिहासकार, डैपिन लियाङ्ग, के कथनानुसार १९४६ में मैन्युअल कारलोस द्वारा एक समाजवादी दल की स्थापना हुई थी। इस संस्था ने उस वर्ष के सामान्य चुनावों के लिये आइसावेलो डिलास रेयस, मार्टिन ओकैम्प, डोमीनैडोर गोमेज़ तथा कुछ और व्यक्तियों की उम्मेदवारी का समर्थन किया। परन्तु लगता है यह दल बाद में अंतर्धान-सा हो गया क्योंकि अबाड सैन्टोस द्वारा संगठित आन्दोलन से उसके सम्बंध-सम्पर्क का कोई पता नहीं चलता। यहाँ हम केवल उन संस्थाओं अथवा संगठनों के बारे में ही खोज करना चाहते हैं जिनका 'हुक' की स्थापना में हाथ था। अतः पहले के इन छिटपुट आंदोलनों को हम विशेष महत्त्व नहीं देंगे।

क्विरीनो आबड सैन्टोस का दावा है कि उसके भाई पैड्रो ने ही १९२९ में समाजवादी दल का संगठन किया है। चूँकि वे दोनों उस समय तक एक ही मकान में रहते थे, अतः क्विरीनो के दावे को उचित मानना होगा। इसी प्रमाण के आधार पर, अगले वर्ष, पैड्रो ने श्रमिक तथा किसान संघ (एगूमन दिंग माल्देंग टालापेगोब्रा अथवा ए. एम. टी.) का संगठन किया। समाजवादी दल की आदि कल्पना मतदाताओं का समर्थन प्राप्त करने और चुने हुए पदों पर अधिकार करने के लिए एक खुले राजनैतिक दल के रूप में की गयी थी। ए. एम. टी. मूलतः मजदूर दल था, जो किसानों और कामगारों को अधिक वेतन और अच्छी सुविधाएँ दिलवाने के लिए कृतसंकल्प था। ये उपर्युक्त दल एक ही आन्दोलन के विभिन्न रूप थे। उनमें वही अनुयायी, वही नेता, वही प्रचार-साहित्य और वही कार्यक्रम होता था।

पिछले कुछ वर्षों से यह बात काफ़ी विवादास्पद हो गई है कि १९३० का समाजवादी दल वास्तव में समाजवादी था अथवा वह कम्युनिस्ट पार्टी का ही छद्म रूप था। समाजवादी दल की स्थापना की तिथि का महत्त्व केवल इस तर्क के कारण ही है। अबाड सैन्टोस के समाजवादी दल के क्रियाशील सदस्यों से

भेंट-वार्तालाप करने पर पता चलता है कि इसके संगठन की मूल तिथि कोई भी हो, यह आन्दोलन १९३२ के बाद ही सक्रिय, प्रभावशाली और व्यापक लोक-समर्थन का पात्र बना। इससे पूर्व यह मानना ही काफ़ी होगा कि केवल कागज़ पर और डॉन पैरिको के आसपास के थोड़े-से व्यक्तियों के विचारों और भावनाओं तक ही उसका अस्तित्व था।

समाजवादी दल के प्रारम्भ का बिलकुल भिन्न विवरण कम्यूनिस्ट पार्टी के साहित्य में दिया गया है। कम्यूनिस्ट पार्टी के [illegible], जोस लावा ने पैड्रो अबाड सैन्टोस को एक कम्यूनिस्ट के रूप में ही चित्रित किया है या उसे कम्यूनिस्ट पार्टी अवैध घोषित होने पर समाजवाद के छद्म नाम पर श्रेणी-संघर्ष चलाये रखने के लिए कम्यूनिस्ट पार्टी का एक यंत्र बताया है। यदि लावा का मत ठीक है तो समाजवादी दल श्रेणी-संघर्ष जारी रखने के लिए अवैध कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा अपनाई गई एक चाल मात्र था। कम्यूनिस्ट पार्टी का इतिहासकार बिना किसी प्रश्न के इस बात को तथ्य के रूप में रखना चाहता है। परन्तु यदि विरोधी मत को स्वीकार किया जाय तो यह संभव है कि पैड्रो अबाड सैन्टोस वास्तव में कम्यूनिस्ट नहीं था और समाजवादी दल का १९३० के आसपास अपना निजी अस्तित्व था।

कम्यूनिस्ट भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि दोनो दलों की संगठन-व्यवस्था में मार्के का अन्तर था। समाजवादी खुली सदस्यता के सिद्धान्त पर चलते थे। समाजवादी दल तथा ए. एम. टी., दोनों ही, कम्यूनिस्ट पार्टी की अत्यंत नियमित एवं सीमित सदस्यता के विपरीत विशाल जन-संगठन थे। कम्यूनिस्ट नेताओं ने इन भेदों को स्वीकार किया और बाद की कठिनाइओं के कारण इन्हीं विभिन्न मार्गों में खोजे जिन्हें १९३० के आसपास इन दलों ने अपना रखा था।

समाजवादियों ने जिस कार्यक्रम को प्रचारित किया और जिन कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न किया उनके बारे में फिर से विचार करने से पता लग जायगा कि उन दो दलों में कोई उल्लेखनीय भेद था या नहीं। जिनका यह विचार है कि समाजवादी अलग थे उनका दावा है कि अबाड सैन्टोस का दल केवल सुधारक था। इस विचार के समर्थन में कुछ तथ्य भी हैं। उदाहरण के तौर पर, समाजवादी दल मतदान की बैलट-प्रणाली में विश्वास करता था, उसने स्थानीय कार्यालयों के लिए उम्मीदवार भी खड़े किये थे। मध्य लूज़न में शक्कर की मिल के कामगारों और फ़ार्म के काश्तकारों को काम की अच्छी शर्तें दिलवाने में

वे श्रमिक संघ की चालों का प्रयोग करते थे। समाजवादी वैधानिक प्रणाली द्वारा सुधारों के हामी थे। उनकी घोषणा थी कि फिलिपाइन्स में भूमि के पुनर्वितरण के लिए एक कानून बनाया जाय। ११ एकड़ से अधिक सारी भूमि का स्वामित्व सरकार का हो जाय और फिर प्रत्येक भूमिहीन व्यक्ति को अधिक-से-अधिक ११ एकड़ के टुकड़े लगान पर दे दिये जायँ अथवा उन्हें बेच दिये जायें। बड़ी ज़मीदारियों के मालिकों को अधिक से-अधिक एक लाख पेसोस (फिलिपाइन सिक्का) के हिसाब से सरकारी पत्रों (बांड) के रूप में हर्जाना दे दिया जाय। इन सरकारी पत्रों का भुगतान, २० वर्ष तक ५ प्रतिशत प्रति वर्ष के हिसाब से और बाद को २½ प्रतिशत ब्याज की दर के हिसाब से हो। यह सारा कार्यक्रम एक सुधाररूपिणी समाजवादी योजना जैसा लगता था।

यह तो आन्दोलन का सिर्फ़ एक पहलू था। यह भी सत्य है कि समाजवादी दल ने श्रेणी-संघर्ष का डट कर समर्थन किया। श्रमिक तथा किसान संघों ने हड़तालें कीं, गन्ने के खेत जलाये गये, रात में गुप्त सभाएँ हुईं, ज़मीदारों के आदेश पर भूमि खाली करने से किसानों ने इनकार किया और कभी-कभी हिंसात्मक विरोध का हिंसात्मक चालों से मुकाबला भी किया। क्या समाजवादियों के ये कार्य ठीक थे—ज़मींदारों को बर्बाद करना, शक्कर और चावल के खेतों में आग लगाना, काम के जानवरों को मारना, और संस्था में शामिल करने के लिये लोगों के साथ धमकी और बल का प्रयोग करना! कामरेड इवैंजिलिस्टा ने निर्णय दिया कि ऐसे कार्य मूलतः आतंकवादी और अराजकतावादी ही हैं और इनसे दल द्वारा अपनाए गए सिद्धान्तों और प्रजातांत्रिक प्रणालियों का उल्लंघन होता है। दूसरी ओर कामरेड अबाड सैन्टोस का कहना था कि हमें ऐसे सभी उपायों का प्रयोग करना चाहिए जो क्रांतिकारी शक्तियों को मज़बूत करें और जिनसे क्रांति की विजय निकटतर आ जाय। इनमें वे ही उपाय शामिल हैं जिनका कम्यूनिस्ट विरोध करते हैं। अबाड सैन्टोस का कहना था कि इन उपायों को दल का खुला सिद्धान्त नहीं बनाना चाहिए, बल्कि संघर्ष के गुप्त साधनों के रूप में इनका प्रयोग किया जाना चाहिए।

दूसरी ओर, लुई टारुक समाजवादी गतिविधियों का चित्रण अधिक शांतिपूर्ण शब्दावली द्वारा करता है। अपनी आत्मकथा में उसने एक हड़ताल का ज़िक्र किया है जो उसने १९३६ में कराई थी। यह एक पत्थर की खान में 'काम रोको' हड़ताल थी। पुलिस के एक अफ़सर द्वारा उनके ऊपर से रेल के इंजिन को चलाये जाने की धमकी देने पर भी कामगारों ने खान छोड़ने से

इन्कार कर दिया। जब अफ़सरों ने घोषित किया कि वे हड़तालियों को गिरफ्तार कर लेंगे, तो कुछ कामगार अपने औज़ार लेने चले और उनका मुकाबला करने की धमकी दी। टारुक ने डॉन पेरिको को फ़ोन किया और डॉन ने सलाह दी—"एक नई चाल आज़माइये। हर-एक को गिरफ्तार हो जाने दीजिए।" कामगार जेल की ओर चल पड़े। जब तक वे अपने गंतव्य तक पहुँचे, उनके आसपास एक हज़ार मज़बूत रंगरुट और एकत्र हो गये। जेल भर गई और वे हाईस्कूल के भवन में ठूंस दिए गए। टारुक को डॉन पैरिको के ये शब्द याद आये, "धनी लोग धनियों का भला चाहते हैं, गरीब गरीबों का भला चाहते हैं; धनी लोग जो कुछ गरीबों से करवाना चाहते हैं उससे गरीबों का भला नहीं होता। गरीबों को एकता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। गरीब को इस बात का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि जो कुछ वह चरितार्थ देखना चाहता है वह उसे कर सके। प्रत्येक हड़ताल से हमें एक पाठ सीखना चाहिए, चाहे वह असफल ही रहे।" टारुक ने कहा—"हमने हड़ताल को एक सबक सिखानेवाला विद्यालय बना दिया।"

इस बात को देख कर कि मध्य लूज़न में उसके राजनैतिक समर्थन को खतर है, राष्ट्रपति क्वेज़ान ने किसानों के असंतोष को कम करने की कोशिश की और १९३६ में घोषित 'सामाजिक न्याय' के कार्यक्रम द्वारा समाजवादियों के प्रति जनता की सहानुभूति को क्षीण करने का प्रयास भी किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, कामगारों और मालिकों के बीच झगड़ों के निपटाने के लिये एक पंचायत बोर्ड स्थापित करना, जमींदार और काश्तकार के सम्बन्धों के उचित और सन्तोषजनक सुधार के लिए एक विधेयक (कानून) बनाना, बड़ी ज़मीनों को उचित मूल्य पर प्राप्त करना और उस भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े कर काश्तकारों को बेचना, और फिलिपाइन्स के बिना आबादीवाले भाग में सार्वजनिक भूमि पर बस्तियाँ बनाना, आदि बातें शामिल थीं। परन्तु १९३६ के बाद के कुछ वर्षों में 'सामाजिक न्याय' का यह कार्यक्रम कागज़ पर ही जीवित रह गया। मनीला से उत्तर के संगठित किसानों की गतविधियों पर इसके कारण कोई रुकावट नहीं पड़ी। पैड्रो अबाड सैन्टोस ने राष्ट्रपति क्वेज़न और उसके 'सामाजिक न्याय' कार्यक्रम का ज़ोरदार विरोध किया। उसने कहा—"हमें सामाजिक न्याय में विश्वास नहीं है। हम सामाजिक न्याय नहीं माँगते; हमारा विश्वास है कि आम जनता का परित्राण केवल अपने संगठित प्रयत्नों द्वारा ही संभव होता है—एक होकर और एकमात्र हथियार—हड़ताल—से ही हो सकता है। हमारा विश्वास है कि क्वेज़ान के १० वर्ष के सामाजिक न्याय का

उपदेश कामगारों को वह वस्तु नहीं दिला सकता जितना कि एक अच्छी हड़ताल उनको दिला सकती है।" फ़ादर कफलिन भी अमेरिका में सामाजिक न्याय का उपदेश देते रहे परन्तु कामगारों को वह जो दिला सके वह जान एल. लीविस, के. सी. आई. ओ की अपेक्षा में कुछ भी नहीं है।

समाजवादी संघों के विरोध में जमींदारों ने भी अपनी संस्थाएँ खड़ी कीं। उनमें से एक का, जिसका नाम 'सफ़ेद पत्थर' (बटुंग मापुरी) था, ध्येय था : काश्तकारों को रक़म अदायगी की समान प्रणाली बनाकर किसानों की आक्रमणात्मक प्रवृत्तियों को रोकना और उन काश्तकारों को स्वीकार नहीं करना जिन्होंने जमींदार को बिना किसी 'उचित कारण' के छोड़ दिया है। ज़मींदारों के एक अन्य समूह ने एक दूसरी संस्था आरम्भ की जिसमें किसान भी काफ़ी संख्या में थे। वे इसे 'शान्ति के सिपाही' (कवाल सिंग कपायपान) कहते थे। आंशिक रूप में राजनैतिक कार्य करते हुए, इस संस्था ने चुनाव के दिनों में ज़मींदारों के उम्मेदवारों के लिए वोट इकट्ठे किए। 'शान्ति के सिपाहियों' का मुख्य उद्देश्य, जिनके पास कुछ हथियार थे, समाजवादियों का विरोध करना था। मध्य लूज़न में इन दिनों रहनेवाला एक निवासी तथा इन घटनाओं का पर्यवेक्षक लिखता है, "कई बार शान्ति के ये सिपाही समाजवादियों से काफ़ी शक्ति से लड़े जिसके परिणामस्वरूप दोनों दलों के काफ़ी आदमी मारे गये।"

१९३८ के मध्य में यह वर्गयुद्ध इतना उग्र हो गया कि राष्ट्रपति क्वेज़ान ने पम्पाङ्गा प्रान्त के सैन फर्नैन्डो नगर में शान्ति और व्यवस्था के मामले पर विचार करने के लिए एक सम्मेलन आमंत्रित किया। अपने साथ वह न्यायसचिव, आन्तरिक सचिव, श्रम-सचिव, जन-सुरक्षा कमिश्नर और फिलिपाइन सेना के स्थापनापन्न प्रोवोस्ट-मार्शल जनरल को लाया। यह लोग स्थानीय अधिकारियों और प्रतिनिधियों से मिले जिनमें से स्वयं कुछ समाजवादी थे। कामगारों और किसानों की कार्यवाहियों को क्षमा प्रदान की गयी। क्वेज़न को बताया गया कि हर रात को 'तम्बूली' (सींग के बाजे) की आवाज़ पर दूर गाँव में अपने दूरस्थ आवासों से गाड़ियों द्वारा सैकड़ों मजदूर इकट्ठे होते हैं, उनके दल के निकाले गये आदमियों की जमीनों पर अधिकार कर लेते हैं और जमींदारों के प्रतिरोध करने पर भी वे उन खेतों को जोतते हैं। राष्ट्रपति ने गम्भीर कार्रवाई करने की धमकी देते हुए कहा कि यदि वर्तमान कर्मचारियों ने कानूनों को कार्यान्वित कराने की दिशा में काम नहीं किया और शान्ति स्थापित नहीं की, तो वह निर्वाचित नगरपतियों को निकाल कर उनकी जगह पर नये व्यक्तियों की नियुक्ति

करेगा। राष्ट्रपति क्वेज़न ने कहा, "यदि मैं निर्वाचित नगरपतियों से काम नहीं चला सकूँगा तो मुझे मनोनीत नगरपतियों से काम लेना पड़ेगा। शासन करने की ज़िम्मेदारी मेरी है—किसी और की नहीं। मैं चाहता हूँ कि हर व्यक्ति मेरे रुख़ को पहचाने। मैं जनता की इच्छा के अनुसार शासन करना चाहता हूँ, मैं निर्वाचित अधिकारियों का सम्मान करता हूँ, परन्तु यदि मेरी शासन-योजनाओं के अमल में बाधा डाली जायेगी तो मैं ऐसे आदमियों को चुनूँगा जो मुझे सहयोग देंगे।"

युद्ध-पूर्व के इसी काल में, वास्तव में, श्रेणी-संघर्ष आरम्भ हुआ जिसमें फिलिपाइन सरकार एक तरफ़ और पुराने नेता तथा कम्यूनिस्ट एवं समाजवादी नेतृत्व के नीचे संगठित किसान और श्रमिक दूसरी तरफ़ थे। उद्देश्यों की सूची बनायी गयी, संस्थाएँ बनीं, नेताओं की पहचान हुई। ये वही व्यक्ति और नेता थे जो युद्धपूर्व के संघर्षों में किसानों और श्रमिकों की ओर से लड़े और जापानी आक्रमण के समय हुकबलाहाप के रूप में संगठित हुए और इन्हींने १९४६ में स्वतंत्रता मिलने के बाद फिलिपाइन सरकार से लड़ाई जारी रखी।

क्वेज़न-सम्मेलन के परिणामस्वरूप और मनीला की सरकार के दबाव के कारण, कम्यूनिस्टों और समाजवादियों को मध्य लूज़न में सभाएँ करने के लिए अनुमति की मनाई कर दी गई। तब लाचार हो कर उन्होंने दूसरी सभाओं में जाना और अपने कार्यक्रम के प्रचार करने के अवसर प्राप्त करना शुरू किया। ऐसे एक अवसर का निम्नलिखित प्रत्यक्षदर्शी विवरण है:

"हम लोग खुले में एक प्रोटेस्टेन्ट् धर्म-सभा कर रहे थे। नगर का पुलिस अधिकारी भी सभा में उपस्थित था। उपदेष्टा ने उपदेश दिया—'अंधकार में बैठी हुई जनता ने महान् प्रकाश देखा।' स्पेन के शासन-काल में और बाद में अमरीकी स्वामित्व में फिलिपीनों को शिक्षा, राजनीति और धर्म के क्षेत्रों में जो मिला, उसका हवाला देते हुए उपदेष्टा ने ये शब्द कहे थे। विशाल भीड़ जमा थी। लुई टारुक और किसानों के अन्य नेता भी वहाँ मौजूद थे। ज्यों ही उपदेष्टा ने अपना उपदेश समाप्त किया, लुई टारुक ने अपना हाथ उठाया और प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। उसका पहला प्रश्न था—'आप कहते हैं कि अमरीकी शासन द्वारा फिलिपाइन को शिक्षा, राजनीति और धर्म के क्षेत्रों में जागरण मिला, तो यह भी बताइये कि उनको सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में क्या मिला?' उसने आगे कहा 'और कृपया यह भी बताइये कि सताये हुए काश्तकारों और अल्पवेतन पाने वाले मज़दूरों को क्या मिला?' और उपदेष्टा से जवाब पाये बिना

ही टारुक अपने प्रश्नों का अपने आप ही उत्तर देने लगा और इससे पहले कि प्रोटैस्टेन्ट लोग अपनी प्रार्थना बन्द करें, टारुक गरमागरम भाषण करता रहा। आखिर पुलिस अधिकारी ने उपदेष्टा से प्रार्थना-सभा बंद करने की सलाह दी।

कम्यूनिज्म और पैड्रो अबाड सैन्टोस के आन्दोलन के समाजवाद में कितना अन्तर था? मनीला के एक समाचारपत्र-प्रतिनिधि द्वारा पूछने पर अबाड सैन्टोस ने एक बार यह उत्तर दिया था—"कम्यूनिज्म और समाजवाद में अधिक अन्तर नहीं है। वे एक ही लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं—जैसे, पूँजीवाद या लाभ-प्रणाली का अन्त और उसके बजाय एक वर्गहीन समाज की स्थापना। अन्तर केवल विधि में है। विशेषकर थोड़े वर्ष पहले कम्यूनिज्म श्रमिक आन्दोलन में वैधानिक उपायों पर विश्वास नहीं करता था। उसने अपने को श्रेणी-संघर्ष तक ही सीमित रखा। समाजवाद ने श्रेणी-संघर्ष के साथ-साथ ही वैधानिक उपायों का अवलम्ब लिया है।"

यह एक बेकार का प्रश्न है कि क्या समाजवादी वास्तव में दूसरा वेष रखे हुए साम्यवादी थे? दोनों एक ही सैद्धान्तिक लक्ष्य के लिये काम कर रहे थे। १९३० के आसपास मध्य लूज़न में समाजवादी कार्रवाइयों का परिणाम वर्ग-संघर्ष जगाना और प्रशिक्षित गर्मदलीय नेताओं को तैयार करना था। टारुक, फैल्को, एलिज़ैन्ड्रिनो आदि, जिन्होंने पैड्रो अबाड सैन्टोस के साथ काम किया, द्वितीय विश्वयुद्ध में और उसके बाद माने हुए कम्यूनिस्ट और हुक लोगों के नेता हो गये।

१९३८ में फिलिपाइन में गर्मदल के आन्दोलन को बड़ी सफलता मिली। घटनाओं में परिवर्तन तब हुआ जब कि अमरीकी साम्यवादी दल का जेम्स एलन फिलिपाइन आया और उसने राष्ट्रपति क्वेज़न से स्थानीय कम्यूनिस्ट नेताओं को क्षमा प्रदान करने के लिए कहा। उनमें से अन्तिम नेता क्रिसैन्टो इवैंजिलिस्टा को 'पूर्ण क्षमा' प्रदान की गई जिसका अर्थ यह हुआ कि १९३८ के अंत में उसे 'पूरे नागरिक और राजनैतिक अधिकार' वापिस मिल गए। जिन परिस्थितियों में दल के नेताओं को क्षमा प्रदान की गयी उससे यह व्यक्त होने लगा कि कम्यूनिस्ट पार्टी की कार्रवाई वैध है। कम्यूनिस्ट पार्टी के कानूनी रूप का यह संकेत तब और भी दृढ़ हो गया जब १९३९ में न्याय-सचिव ने श्रमसचिव को कई बार अपनी सम्मतियाँ दीं। वास्तव में, इन निर्णयों ने कम्यूनिस्ट-बहुल संस्थाओं की सदस्यता और लगभग खुली अराजकता तक पहुँची कम्यूनिस्टों की कार्रवाइयों को वैधानिक परिवेश दे दिया।

कम्यूनिस्ट नेताओं की रिहाई के तुरन्त बाद ही कम्यूनिस्ट और समाजवादी दलों के एकीकरण की वार्ता आरम्भ हुई। लावा, इन प्रयासों में प्रमुख भाग लेने का श्रेय, अमरीकी साम्यवादी दल के नेता जेम्स एलन को देता है। लावा ने लिखा है—"दोनों दलों में कोई मौलिक सैद्धान्तिक मतभेद नहीं थे।" एकीकरण के लिए तीव्रतम विरोध, दोनो दलों के बीच के और नीचे के स्तरों में दिखायी दिया। कतिपय समाजवादियों द्वारा उठायी गयी आपत्तियों में से कुछ इस प्रकार थीं : (१) कम्यूनिस्ट नास्तिक हैं (२) वे मॉस्को के एजेण्ट हैं (३) के. पी. एम. पी (साम्यवादी किसान संघ) ए. एम. टी. (समाजवादी किसान संघ) को नष्ट कर रहा है (४) एकीकरण से साथी अबाड सैन्टोस की प्रतिष्ठा कम हो जायगी (५) कम्यूनिस्ट लड़ाकू नहीं हैं।

परन्तु समाजवादियों द्वारा उठाई गई इन आपत्तियों के बावजूद एकीकरण हो गया। नए दल का नाम फिलिपाइन की कम्यूनिस्ट पार्टी पड़ा जो फिलिपाइन के कम्यूनिस्ट और समाजवादी दलों का एकीकरण था। पुराने दलों के दोनों किसान संघ (के. पी. एम. पी. तथा ए. एम. टी) पृथक् रखे गए, किन्तु उनका निर्देशन नए दल के किसान-विभाग द्वारा ही रहा। समाजवादी दल की शाखाओं का नए दल द्वारा निर्धारित ढांचे के अनुसार पुनर्संगठन हुआ। एकीकृत दल की प्रमुख समितियों में दोनों दलों ने अपने अपने प्रतिनिधि भेजे। कुछ स्थानों में, जहाँ समाजवादियों का अधिक प्रभाव था, दल की तथा बड़े बड़े संगठनों की देखभाल उनके ज़िम्मे कर दी। एकीकरण पूरा होने में कई वर्ष लगे। क्रिसैन्टो इवैंजिलिस्टा दल का प्रथम अध्यक्ष बना; पैड्रो अबाड सैन्टोस उपाध्यक्ष, तथा गुलिर्मो कैपेडोशिया, जो १९३२ में इवैंजिलिस्टा तथा अन्य लोगों के साथ-साथ दण्डित हुआ था, दल का प्रथम सचिव बना। समाजवादी अपना काम, सैनफर्नैन्डो में अबाड सैन्टोस के मकान के निचले भाग में स्थित अपने प्रधान कार्यालय से, करते रहे। साम्यवादियों ने अपने प्रधान कार्यालय शहर के उस पार खोले। युद्ध के वर्षों और गुरिल्ला लड़ाई ने दोनों दलों का एकीकरण पूरा कर दिया। युद्ध के अन्त तक समाजवादी दल का नाम भी नहीं रह गया। ऊपर से नीचे तक सारा हुक़ दल ही नयी कम्यूनिस्ट पार्टी का नेतृत्व करने लगा।

१९३८ की उस सभा में, जिसमें साम्यवादियों और समाजवादियों का एकीकरण हुआ था, दूसरे दलों को लेकर संयुक्त मोर्चा बनाने की योजनाएँ भी बनायी गयी थीं। केन्द्र के विरुद्ध सब दलों का सहयोग प्राप्त करने के

लिए एक राजनैतिक दल 'फ्रैन्टी पापुलर' (लोकप्रिय मोर्चा) स्थापित करने का मुख्य प्रयत्न किया गया। इसके द्वारा कम्युनिस्ट अपने दो उम्मीदवार, मैरियानो पी. बलोस को मनीला के उत्तरी ज़िले के लिए और गुलिर्मो कैपेडोशिया को दक्षिणी ज़िले के लिए, १९३८ के राष्ट्रीय विधान-सभा के चुनाव में भेज सके। ये दोनों व्यक्ति साम्यवादी दल की स्थापना के लिए बड़े क्रियाशील थे; परन्तु बाद में युद्धोत्तर हुक-विद्रोह में मार डाले गये।

संयुक्त मोर्चे का व्यूह आंशिक रूप से ही सफल रहा। जुआन सुमुलांग के नेतृत्व में इस मोर्चे का दक्षिण पक्ष अलग हो गया और दूसरा लोकप्रिय मोर्चा दल (पापुलर फ्रन्ट पार्टी) स्थापित हुआ। १९४० के चुनावों में चुनाव कमीशन से मान्यता माँगने वाले दो लोकप्रिय मोर्चा दल थे। यद्यपि इस फूट ने सफलता के अवसर कम कर दिए, मध्य लूज़न में जहाँ कि वामपक्षी लोकप्रिय मोर्चादल दृढ़तम था, पैड्रो अबाड सैन्टोस पैम्पांगा के राज्यपाल के चुनाव में, नेशनलिस्ट उम्मीदवार सोटरो बलूयोत द्वारा बहुत ही कम मतों से पराजित हुआ; जब कि समाजवादियों के प्रान्त के बीस नगरों में से राजधानी को मिला कर ८ नगरों में नगरपति चुन लिए गए। टारलक प्रान्त के चार और न्यूवाइकीजा प्रांत में एक नगर में कम्यूनिस्ट अथवा समाजवादी नगरपति तथा सदस्य चुने गये थे।

सीधी राजनैतिक कार्यवाही करने के साथ-साथ कम्यूनिस्टों ने दूसरे संयुक्त मोर्चों को संगठित करने में सहायता दी। इनमें 'प्रजातन्त्र-संरक्षण-संघ (लीग फ़ॉर द डिफेन्स आव डेमाक्रेसी), युवक-कांग्रेस प्रजातंत्र और सामूहिक सुरक्षा-कांग्रेस (कांग्रेस फ़ॉर डेमोक्रेसी एण्ड कलैक्टिव सिक्यूरिटी) तथा चीन के मित्र (फ्रेंड्स आव चाइना) सम्मिलित हैं। प्रजातंत्र और सामुहिक सुरक्षा कांग्रेस विशेषतया जापानी माल के बहिष्कार-आन्दोलन में लगी हुई थी और फ़ासिस्ट-विरोधी भावनाएँ जाग्रत करती थी। इन सब संयुक्त मोर्चों की कार्यवाहियों में 'इंटर्नेशनल प्रोलेतरियत' की व्यूह-प्रणाली का ही अनुकरण किया गया था।

अपने राजनैतिक विश्लेषण के आधार पर साम्यवादियों ने यह परिणाम निकाला कि दक्षिण-पूर्व एशिया में जापानियों के बढ़ने से फिलिपाइन अपदस्थ हो जायगा। अक्टूबर १९४१ में, फिलिपाइन और पर्ल हार्बर पर प्रथम आक्रमण के लगभग दो महीने पहले, दल ने छोटे-छोटे समूहों को जापानियों के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध के लिये तैयारी करने के लिए आदेश भेज दिए।

१९४२ की जनवरी के प्रथम सप्ताह तक, जब जापानी मनीला में घुसे, एक ग्राम संयुक्त-संरक्षण सेना की योजना बन चुकी थी। यह एक स्थानीय ग्राम

अथवा कस्बे का संगठन था जो शान्ति कायम रखने के लिए, लूट और गुण्डागीरी रोकने के लिए, फसलों को बचाने और जापानियों के हाथ में न पड़ने देने के लिए, हुक लड़ाकुओं को लगातार आदमी देने के लिए और जापानियों से सहयोग का प्रतिरोध करने के लिए बनाया गया था। योजनाएँ दल के नेता विसेंट लावा द्वारा लिखी गई थीं और ब्यूरो आव साइन्स में उसकी डेस्क पर रख दी गई थीं। उसने उनके ऊपर पेपर-वेट के रूप में पिस्तौल रख दी थी। उसे आशा थी कि वह वापस लौट कर उन कागज़ों और पिस्तौल को ले जायेगा। परन्तु मनीला में जापानियों के अप्रत्याशित प्रवेश से उसका मनोरथ सिद्ध न हो सका और उसे भागना पड़ा। सिपाही कार्यालय में घुस गए। उन्होंने पिस्तौल ले ली किन्तु और कागज छोड़ दिए। ब्यूरो आव साइन्स में एक साथी द्वारा उनका पता चला। जब उसने इन्हें पढ़ा तो वह डर गया और उन्हें जला डाला गया। फिर भी हुकों द्वारा गाँवों में अपने समर्थकों के बीच ये योजनाएँ तत्काल कार्यान्वित की गयीं।

कम्युनिस्ट संयुक्त मोर्चा सम्बन्धी कार्यवाहियाँ वहीं तक करते थे जहाँ तक ख़ुद का स्वार्थ सिद्ध होता था, इसके आगे नहीं। जब जापानी आक्रमण हुआ तब उन्होंने फिलिपाइन-अमरीकी सेना की फ़ौजी कार्यवाही के समर्थन के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया। बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने यह अनुमान लगा रखा था कि आक्रमण का प्रतिरोध बेकार जायगा। लड़ाई के प्रारम्भिक दिनों में पेड्रो अबाड सेन्टोस ने जनरल मैकआर्थर को एक पत्र लिखा था कि जनता को गुरिल्ला युद्ध के लिए हथियार दिये जाएँ। यह प्रार्थना ठुकरा दी गई। कारण यह था कि फ़ौज को जितने भी हथियार मिल सकते, उतने की बड़ी सख़्त आवश्यकता थी। दल के नेता, सदा की भाँति, वर्तमान अवसरों का लाभ क्रांति के अंतिम उद्देश्यों को सिद्ध करने में ही लगाने का प्रयत्न कर रहे थे।

२० दिसम्बर, १९४१, की सुबह को लुई टारुक और एक परिचित के अचानक मिलन ने दल की योजना और कार्रवाइयों पर प्रकाश डाला। लुई टारुक .४५ चौड़ी नली की पिस्तौल ले कर सैन फर्नैन्डो स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। परिचित ने उससे पूछा कि क्या वह फिलिपाइन सेना में भर्ती होने के लिए बटान जा रहा है क्यों कि वहाँ अभी भी भर्ती चालू थी। टारुक ने 'न' में जवाब दिया और बताया कि वह शत्रु को आगे बढ़ने से रोकने के लिए ठीक पैम्पाङ्गा में जनता की एक सेना संगठित करने जा रहा है। जनवरी के अंत तक, बटान के पतन के तीन महीने पहले, मध्य लूज़न में

हुक गुरिल्ला संगठन का केन्द्र स्थापित हो गया था।

जापान के साथ युद्ध ने कम्यूनिस्टों को छद्म प्रवेश और जटिल राजनैतिक दावपेंचों से परे ले जा कर प्रत्यक्ष क्रान्तिकारी कार्य-प्रणाली अपनाने के लिए अच्छा अवसर प्रदान किया था। लड़ाई के बाद जो दुर्व्यवस्था हुई उसमें उन्होंने अपने हाथ में नेतृत्व ले लिया। [illegible] संयुक्त-संरक्षण सेना नागरिक नियंत्रण और नागरिक कार्यों के संचालन का यंत्र बन गई। हुकबलाहाप इसका लड़ाकू अवयव था। कृषि-सम्बन्धी सुधारों के पुराने प्रश्नों के साथ-साथ जापानी आक्रमणकारियों के विरुद्ध, देशभक्ति के आधार पर जनता के व्यापक समर्थन की दृढ़ मांग को भी शामिल कर लिया गया।

इन्हीं दिनों हुकों ने गुरिल्ला युद्ध लड़ना सीख लिया था। रणस्थलों और बटान के जंगलों से उन्होंने एक ऐसी गुरिल्ला सेना बनाने के लिये काफ़ी हथियार इकट्ठे कर लिए थे जो बड़े-बड़े जापानी दस्तों को छोड़ कर किसी भी सेना का मुकाबला कर कर सकते थे। मार कर भागना, अस्त्र और गोलाबारुद के लिए लड़ना, चावल की खेती की रक्षा करना, स्थानीय समर्थन प्राप्त करना और देशद्रोहियों को खत्म करना वे सीख गये थे। अपने ही द्वारा एकत्र आंकड़ों से हुक यह दावा करते थे कि युद्ध में उन्होंने २५००० से अधिक आदमी मारे जिनमें करीब ५००० जापानी थे और शेष ऐसे फिलिपाइनी थे जिन्हें हुक वर्ग-युद्ध में रोड़ा समझते थे। गुरिल्ला ढंग की लड़ाई की शिक्षा देने वालों में लाल चीन की प्रसिद्ध आठवीं फौज (एट्थ रूट आर्मी आव रेड चाइना) का चीनी कर्नल था। एडगर स्नो की 'रेड स्टार ओवर चाइना' का प्रशिक्षण पुस्तक के रूप में प्रयोग होता था। १९४५ में जब मुक्ति मिली, तो मध्य लूज़न में फिलिपाइन सरकार को केवल कृषि-सुधार-आंदोलन वाले किसान संगठन का ही नहीं बल्कि गुरिल्ला युद्ध के लिए प्रशिक्षित और अनुभवी सेना से सुसज्ज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन का सामना करना पड़ा।

फ़ौजी संगठन के साथ-साथ इस क्रान्तिकारी आन्दोलन ने युद्धकाल में प्रशासकीय अनुभव भी काफी प्राप्त कर लिया था। हुक कई क्षेत्रों पर नियंत्रण रखते थे, नागरिक अधिकारी नियुक्त करते थे, संपत्ति काम में लाते थे, कर वसूल करते थे, न्याय करते थे और विद्यालय भी चलाते थे। हुक नेता विश्वास करने लगे थे कि ये तो उनके अर्जित अधिकार हैं। वे बिना संघर्ष के उनका परित्याग नहीं करेंगे और यह संघर्ष १९४५ में जापानियों के बहिष्कार के तुरन्त बाद ही आरम्भ हो गया।

दूसरा अध्याय

सामाजिक चैतन्य से प्रेरित सेना

१९४५ में मुक्ति के बाद, फिलिपाइन द्वीप युद्ध के ध्वंसावशेषों से अपने-आपको ऊपर उठाने लगा। मनीला नगर विनाश का श्मशान बना निरुपाय पड़ा था। पुराने गिरजाघर, विधान सभा भवन, कार्यालय भवन, होटल, कारखाने, घर और जहाज़ी माल बन्दरगाह नष्ट कर दिये गये थे। डूबे हुए जापानी जहाज़ों से बन्दरगाह अवरुद्ध हो गया था। शहर के, एक ज़माने के, चौक में खड़े हुए किसी भी व्यक्ति को मीलों तक पत्थरों के ढेर ही दिखायी देते थे। कहीं-कहीं एकाध इमारत ही आश्चर्यजनक रूप से बम और गोलाबारी से बची नज़र आती थी। विशाल दक्षिण की ओर जहाँ करीब १० लाख आदमी रहते थे, एक भी परिवार ऐसा नहीं बचा था जिसने एक या अधिक आदमी गँवाया न हो।

लूट और उच्चक्केपन ने जीवन और संपत्ति की सुरक्षा ख़तरे में डाल दी। बाहर जो राहत मिली थी वह सब मुद्रास्फीति हड़प गई और असली आमदनी पैसे भर भी नहीं रही। काला-बाज़ार खूब फला-फूला। ले-बेच के मायावी धंधों की अपेक्षा ईमानदारी के धंधों में कम मुनाफ़ा होने लगा।

युद्ध ने योग्य नेताओं का अभाव पैदा कर दिया। सरकारी दफ्तर पूरी तरह से असंगठित हो गये थे। वहाँ न उपकरण थे, न कर्मचारी और कहीं-कहीं तो कोई कागज़-पत्र भी बाकी नहीं रह गये थे। राष्ट्रीय पुस्तकालय नष्ट हो चुके थे। स्कूल खुले; परन्तु वहाँ न पुस्तकें थीं, न कागज़ और न ऊष्ण कटिबंधों की वर्षा से बचाव के लिए छत। मगर इतनी राष्ट्रीय क्षति होने पर भी लोग अवसाद के शिकार नहीं हुए, अपने नुकसान की शायद ही किसी ने शिकायत की हो और सब ने भरसक मन का उल्लास कायम रखा। भौतिक अभावों की जगह शायद ही कभी इतनी अच्छी तरह उदात्त मानवीय विशेषताओं ने ली हो।

धीरे-धीरे, युद्ध की अशांति के बाद, किसी प्रकार की व्यवस्था आरम्भ हुई। परन्तु नई व्यवस्था ढुलमुल तथा विस्फोटक थी। युद्ध-पूर्व की किन्हीं भी समस्याओं का अन्त नहीं हुआ था। वे युद्ध के वर्षों में अव्यवस्था के

कारण सैकड़ोंगुना उलझ गई थीं। ऐसे ही अनिश्चित वातावरण में ४ जुलाई, १९४६, को फिलिपाइन गणतन्त्र का अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व में समारम्भ हुआ।

हुकों में भी विप्लवी परिवर्तन हुए। अमरीकी सेना के आने के कुछ दिन बाद, हुकों ने उन प्रान्तों और ज़िलों में, जहाँ उनकी स्थिति सुदृढ़ थी, नागरिक अधिकारी नियुक्त किए। उन्हें ऐसी स्थिति बनी रहने की आशा थी और इसका लाभ वे युद्धोत्तर वर्षों में अपनी शक्ति को बढ़ाने में लेना चाहते थे। ओस्मेना के नेतृत्व में बनी सरकार ने हुकों के दावों को अस्वीकार कर दिया और आगामी निर्वाचन तक के लिए अपने ही राज्यपाल और नगरपति नोयुक्त किये। संयुक्त राज्य काउन्टर इन्टैलीजैन्स दस्ते ने टारुक, ऐलिज़न्ड्रिनो तथा अन्य नेताओं को हर प्रकार के गृह युद्ध को रोकने के लिए स्पष्ट आदेशों का उल्लंघन करने तथा फिलिपाइन के अधिकृत राज्यतन्त्र को क्षति पहुँचाने के अभियोग में पकड़ लिया। ये व्यक्ति विभिन्न जेलों और २२ फरवरी से ३० सितम्बर, १९४५, तक अधिकांशतः इवाहिग पीनल कॉलोनी में रखे गए। किंतु पूर्ण स्वतन्त्रता के लिये अंतिम तैयारी करने की अवधि में हुक नेताओं को जेल से छोड़ दिया गया। यह गल्ती बड़ी मँहगी पड़ी, परन्तु किसी ने हुक षड्यन्त्र में छिपे हुए रहस्यों को उस समय तक नहीं समझा था। यद्यपि शीघ्रता अनिवार्य थी, परन्तु इसने नए गणतन्त्र के लिए नई समस्याएँ उत्पन्न कर दीं। कुछ ही महीनों में संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने प्रशान्त महासागरीय आक्रमण को समाप्त करने, फिलिपाइन को उसकी स्वतंत्रता देने और अपनी सेना वापिस स्वदेश भेजने के निश्चय कार्यान्वित किए। यह वस्तुतः आश्चर्य की बात थी कि इनमें से कुछ कार्य तो बड़े बेढंगे और गैर-जिम्मेदारी से ओतप्रोत थे। उदाहरणार्थ, पुनरुद्धार-प्राप्त सैनिकों (रिकवर्ड पर्सनेल डिवीज़न) में पिछला वेतन दिलाने के घोटाले ने अब तक के अमरीकी-फिलिपाइनी सम्बंधों में अमरीकियों के प्रति बड़ी बुरी भावना पैदा कर दी। इधर जब कि बहुत-से देशभक्त और क्रियाशील गुरिल्लाओं को युद्धकालीन सेवाओं के लिए मान्यता और हर्जाना तक नहीं मिल पाया, दूसरे लोगों को, जिन्होंने आर्थिक अधिकारियों की खुशामदें कीं अथवा इच्छुक गुरिल्ला नेताओं के राजनैतिक तन्त्र में काम करने का आश्वासन दिया, मुक्तहस्त से अमरीकी डॉलर दिये गये थे। इससे ऐसी कटुता फैल गई जिसका लाभ हुकों ने बड़ी चतुराई से युद्धोत्तर काल में रंगरूट भरती करने में लिया।

अच्छी-खासी साम्यवादी क्रांति का बहुत कम सन्देह करते हुए, अमरीकी

फ़ौज ने अस्त्र-शस्त्र बाँटने में बड़ी असावधानी बरती। बहुत-सा सामान जो हवाई जहाज़ों से गिराया गया था अथवा गुरिल्लाओं को दिया गया था, वह सब हुकों के हाथ लग गया। सहानुभूतिपूर्ण अमरीकी सैनिकों ने नये हथियारों और यादगारों के बदले पुराने हथियार खरीद लिए। दूसरे हथियार भी भूखे सिपाहियों ने फल और मुर्गियों के बदले में दे दिए। असावधानी से रक्षित अस्त्र-भंडारों में हथियारों की चोरी भी आम हो गई थी। इस प्रकार जब कि हुक अपने आपको नये शस्त्रास्त्रों तथा गोलाबारुद से सुसज्ज कर रहे थे, तो १९४६ की स्वतंत्रता के बाद नई-संगठित फिलिपाइनी सेना के हक में पुराने हथियार ही आये थे। "फिलिपाइन की सशस्त्र सेना के प्रमुख अधिकारी के वार्षिक विवरण" में यह अनुमान लगाया गया कि पूर्व निर्णय के अनुसार फिलिपाइन की सेना को दी जानेवाली सामग्री में से जून, १९४८, तक ५० प्रतिशत ही वस्तुतः मिली थी। [illegible] तथा फिलिपाइन सर्प्लस प्रॉपर्टी कमीशन द्वारा विनिमय की गयी संपत्ति में से फिलिपाइन सेना को मिलने से पहले ही वह गायब कर दी गयी थी। अमरीकी फ़ौज फिलिपाइन की मुक्ति के लिए बड़ी बहादुरी से लड़ी; परन्तु हुकों को निःशस्त्र न करने और फिलिपाइन सरकार को दुर्बल एवं आत्म-रक्षा में अशक्त बनी रहने देने में उसकी उदासीनता उसकी करारी असफलता ही है।

फिलिपाइन सेना संगठन-संबंधी समस्याओं से पीड़ित रही। स्वाधीनता से पांच महीने पूर्व, इसे अपनी शक्ति १,३२,००० से घटा कर ३७,००० करनी पड़ी। इस काम में विघटन-कार्य करने वाली एजेन्सियों पर बड़ा भार पड़ा और उन लड़ाकू सेनाओं में से बहुत से योग्य आदमियों की कमी हो गई जो आन्तरिक विभाग के अन्तर्गत मिलिटरी पुलिस कमांड और सुरक्षा विभाग के अन्तर्गत आर्म्ड फोर्सेज़ के बीच विभाजित थीं। सबसे अधिक सेना मिलिटरी पुलिस कमान्ड—३७,०००—में से २४,०००—में से थी और जिसकी जिम्मेदारी हुक समस्या को हल करने की थी। फिलिपाइनों को यह बात समझने में कई वर्ष लगे कि हुक क्रान्तिकारी हैं और उनका मुक़ाबला सेना से होना चाहिये था न कि पुलिस के सिपाहियों से।

जापानियों के साथ सहकार करने के प्रश्न को लेकर, सशस्त्र सेना के लिए योग्य अधिकारियों के मिलने की समस्या विशेष जटिल हो गयी। नियुक्ति के पूर्व प्रत्येक अधिकारी को इस दोषारोपण से मुक्ति का प्रमाण देना होता था। जापानियों के साथ सहकार का असली रूप क्या था? इस प्रश्न का कोई भी

निश्चित और कामचलाऊ उत्तर नहीं दिया गया था; परन्तु इधर जब कि इस पर न्यायालयों, कमीशनों और राजनैतिक क्षेत्रों में विवाद चलता था, तो सेना को अपर्याप्त कर्मचारियों के फलस्वरूप बड़ी क्षति उठानी पड़ती थी।

अंततोगत्वा, सब लोगों को दोषमुक्त कर दिया गया, उनका शत्रु के साथ सहयोग चाहे जिस मात्रा में रहा हो। फिर भी युद्ध के एक दम बाद के वर्षों में इस शत्रु-सहकार के विरुद्ध लोगों का क्षोभ बड़ा तीव्र था। इस तथ्य ने कि फिलिपाइन का प्रथम राष्ट्रपति मैनोएल राक्सैस और सरकारी कार्यालयों में उसके बहुत-से आदमी जापानियों के अधिकार के समय उच्च पदों पर थे, हुकों को सरकार-विरोधी आन्दोलन के लिए जन-सम्पर्क-हेतु तैयार मसाला मिल गया। मिलिटरी पुलिस कमान्ड के कई सिपाही और अधिकारी जिन पर हुकों को निकालने का दोष लगाया गया था, जापानियों के अंतर्गत पुलिस-विभाग (ब्यूरो आफ कान्स्टेबुलरी) में काम कर चुके थे। दूसरे लोग मध्य लूज़न में कृषि सम्बंधी आन्दोलनों के विरोध से सम्बंधित थे। नई सशस्त्र सेना का प्रमुख अधिकारी जनरल रफायल जालन्डोनी फिलिपाइन कान्स्टेबुलरी का मेजर रह चुका था जिसने मई, १९३१, में एक सार्वजनिक सभा मे इवैंजिलिस्टा और कैपेडोशिया को राजद्रोह और गैरकानूनी सम्पर्कों के अभियोग में पकड़ा था। उतने पुराने और गहरे विरोध के होते हुए, लड़ाई का सामंजस्यपूर्ण अन्त सम्भव नहीं था।

नये राक्सैस प्रशासन का दावा था कि हुकों का ६० दिन के अन्दर सफ़ाया कर दिया जायगा। फौजी कार्यवाही द्वारा उच्छेदन आधारभूत उद्देश्य था। पैब्लो ऐंजिलिस डैविड ने पैम्पाङ्गा के राज्यपाल पद को स्वीकृत करने से पहले, हुकों को निकालने की नीति की शर्त रखी थी। जोस लिंगड ने, जो उसका उत्तराधिकारी था और इत्तिफ़ाक से टारुक का स्कूल-साथी था, तने हुए घूंसे को प्रतीक बना कर रखा। मामूली शिक्षाप्राप्त, कम वेतन वाले और दीन-हीन सैनिकों से युक्त सरकारी फौज हुक आतंक का सफ़ाया करने के लिए भेजी गयी। हुक टुकड़ियों को शरण देनेवाले गाँवों पर गोलाबारी की गई। कभी-कभी सूचना प्राप्त करने के निराश प्रयत्नों में, सशंकित व्यक्तियों के साथ, उनसे बात निकलवाने के लिए, फ़ौजियों ने दुर्व्यवहार भी किया। इस अविवेकपूर्ण आतंकवाद से लोग सरकार के विरुद्ध हो गए और परिणामतः हुक आन्दोलन ने और भी ज़ोर पकड़ लिया।

हुक अपने को जनता का रक्षक बताने लगे। वे कर तथा चावल की फ़सल

का एक भाग वसूल करने लगे। कभी–कभी तो उन्होंने दिन दहाड़े सरकारी अधिकारियों और ऐजेंटो को मार डाला। १०० से लेकर १००० आदमियों की हुक टुकड़ियाँ मध्य लूज़न में इधर-से-उधर घूमती थीं। मुठभेड़ो में प्रायः वे सरकारी फ़ौजों पर छा जाते थे। फिलिपाइन सेना का अनुमान था कि उनकी चरम शक्ति के रूप में हुकों के पास १ लाख आदमी थे, जिनमें १२ हजार सशस्त्र तथा कर्मठ सिपाही थे। संख्या, संगठन और छोटे हथियारों के मामलों में हुक लड़ाकू टुकड़ियाँ सरकारी सेना के समकक्ष ही थीं। किन्तु अपने आत्म-विश्वास एवं अपने कार्यक्षेत्र में नागरिक समर्थन पा जाने के कारण उनका पलड़ा सरकारी फ़ौज से भारी ही था।

जब सम्पूर्ण शक्ति-प्रयोग से कोई शीघ्र परिणाम नहीं निकला, तो सरकार ने मध्यस्थता के सिद्धान्त की ओर रुख़ किया। तीन महीने के लिए युद्ध-विराम की व्यवस्था की गई। योजना यह थी कि इन तीन महीनों में सरकार और हुकों के प्रतिनिधियों के दल गाँव-गाँव फिर कर विद्रोहियों से हथियार डालने और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए आग्रह करते। किन्तु युद्ध–विराम की शर्तों का कभी भी पालन नहीं किया गया। हुक-प्रतिनिधियों ने साम्यवादी सिद्धान्तों पर जनता के सामने भाषण किए। सरकारी प्रतिनिधियों का गाँव की अनुदार जनता ने भाषणों के बीच अपमान किया—उनके भाषणों में खलल डाला गया। इस युद्ध–विराम के समय में एक हुक नेता, जुआन फेलिओं, सरकारी एजण्टों की सुरक्षा से लोप हो गया। साम्यवादियों का आरोप था कि उसे अपहृत किया गया और मार डाला गया है। फलतः युद्ध-विराम कटु संघर्ष में परिणत हो गया!

राष्ट्रपति रॉक्सेस के कार्यकाल तथा १९४८ में उसके मरने तक कई सरकारी अफ़सरों द्वारा. हर प्रकार की सेना को क्षमादान देकर शान्ति स्थापित करने की चेष्टाएँ की गईं, किन्तु राष्ट्रपति हुक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार का समझौता करने के लिए इच्छुक नहीं था। कांग्रेस के अन्दर और बाहर के थोड़े से मिले-जुले नेताओं ने, क्षमादान पर बातचीत करने के लिए एक आधार ढूंढने के लिए राक्सैस से पत्र-व्यवहार किया। उनमें आजकल के मेग्सेसे शासन के उच्चाधिकारी कार्लोस गार्शिया, न्यायाधीश जीसस. सी. बरेरा तथा एन्टोनियो अरानेटा भी थे।

मध्यस्थता की चेष्टाओं की उपेक्षा करते हुए राक्सैस ने सरकारी सेनाओं को दुबारा संघर्ष के लिये आदेश दे कर झगड़े को और भी बढ़ा दिया। मार्च

१९४८, में अपनी मृत्यु के एक महीने पहले, उसने हुकों तथा उनका समर्थन करने वाले संगठन 'राष्ट्रीय किसान संघ' को ग़ैरकानूनी तथा राजद्रोहात्मक घोषित करते हुए कहा—

"भली प्रकार विचार करके और आन्तरिक सचिव, न्याय-सचिव, राष्ट्रीय सुरक्षा सचिव, पुलिस दल के प्रमुख और मध्य तथा दक्षिणी लूज़न के राज्यपालों की (जो गैरकानूनी तत्त्वों द्वारा सताये जा रहे हैं) सम्मति से मैंने आज हुकबलाहाप, जिसके प्रमुख लुई टारुक हैं तथा 'राष्ट्रीय किसान संघ' (पी. के. एम.) जिसके प्रमुख मैटियो डेल कैस्टिलो हैं, दोनों संगठनों को गैरकानूनी घोषित कर दिया है, क्योंकि ये संस्थाएँ राजद्रोह तथा अन्य अपराध के कार्य करने के लिये, कानूनी रूप से चुने गये जनता के प्रतिनिधियों से वर्त्तमान वैधानिक सरकार के शासन की बागडोर छीन कर और उसे उलटने तथा बल और धमकी से अपनी ही सरकार बनाने के लिए संगठित हुई हैं।"

"हुकबलाहाप और राष्ट्रीय किसान-संघ (पी. के. एम.) दोनों संयुक्त तथा पूरक संस्थाएँ हैं। यद्यपि पहली संस्था पर फ़ौजी कार्रवाई करने का सीधा अपराध तथा दूसरी पर राजनैतिक, आर्थिक और प्रचार के अपराध लगाये गये हैं; किंतु ये दोनों सम्मिलित हो कर पूरे सहकार के साथ ही काम करती हैं।" राष्ट्रपति राक्सैस की मृत्यु के समय दोनो दलों में काफ़ी मतभेद था।

एल्पिडियो क्विरीनो के नये शासनप्रबंध ने इस कड़ी फ़ौजी नीति को उलट दिया और समझौते तथा मधुर तर्क के साथ हुकों को सरकार में लाने का प्रयत्न शुरू किया। "मनीला क्रॉनिकल" के द्वारा सक्रिय हुक नेताओं से सम्पर्क स्थापित किये गये। लुई टारुक और राष्ट्रपति के भाई, ऐन्टोनियो क्विरीनो के बीच सुलह की बातचीत कई सप्ताह तक चली। कम्यूनिस्ट पार्टी सोचने लगी कि उसे अब क्या करना चाहिये। राष्ट्रपति के प्रस्तावित क्षमादान की राजनैतिक पहल उनके हाथ से निकल चुकी थी। अन्त में केवल एक के विरोध पर, दल के नेताओं ने टारुक को मनीला जाने की स्वीकृति दे दी, जहाँ राष्ट्रपति ने उसका स्वागत किया और उसका शाही सत्कार हुआ। टारुक को कांग्रेस में वह जगह दी गयी जिस जगह के लिये १९४६ में चुनाव के बाद उसे इस आधार पर इनकार कर दिया गया था कि मध्य लूज़न में मतदान के समय बल और आतंक का प्रयोग किया गया था। परन्तु क्षमादान की शर्तों के अन्तर्गत पिछली बातों को भूलने और माफ़ करने की भी बात थी।

यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि हर पक्ष क्षमादान मिलने पर क्या क्या

आशाएँ लगाए बैठा था; किन्तु निस्संदेह सरकार का विश्वास था कि इससे शत्रुता का अन्त हो जायगा। वह विद्रोहियों और उनके अस्त्रों को लेने के के लिए तैयार हो गयी। हुकों की आशाओं में अधिक चातुर्य भरा था। वे सरकार में और सामान्यतः अर्थव्यवस्था में विस्तृत सुधार चाहते थे। उनका कहना था कि जब तक ये सुधार कार्यान्वित न हो जायँ, वे हथियार नहीं डालेंगे। परन्तु जैसा कि राष्ट्रपति ने बताया था सुधारों में तो वर्षों लग जायेंगे। जैसे जैसे समय बीतता गया, दोनों पक्ष के लोग एक-दूसरे पर अविश्वास के आरोप लगाने लगे। केवल थोड़े से ही हुकों ने अपने नाम दर्ज करवाये थे और शस्त्रास्त्र भी थोड़े-से ही समर्पित किये गये थे। कांग्रेस जन के रूप में टारुक अपना पिछला वेतन लेकर हुकलैंड़िया (जिसमें पम्पांगा, न्यूवा, इकीजा, टारलक तथा बुलाकान नामक प्रांत शामिल थे) भाग गया और एक बार फिर लड़ाई शुरू हो गई। सरकार की दमन नीति तो असफल हो चुकी थी, अब यह उदार नीति भी अपर्याप्त सिद्ध हो गई थी।

१९४९ निर्वाचन का वर्ष था और इसमें उपद्रव फैल गए। युद्धकालीन राष्ट्रपति जोस लारेल और राष्ट्रीयतावादियों द्वारा क्विरीनो तथा उदार दल का विरोध किया गया। यह बड़ा कटु संघर्ष था। क्विरीनो अमरीकियों से अपने मित्रतापूर्ण संबंध की शेखी मारता था। लेकिन उदार दल के शासन के पैर खिसक रहे थे क्यों कि वह हुक समस्या को हल करने में तथा शासन से गन्दगी और भ्रष्टाचार निवारण करने में असफल रहा था। लारेल ने जापानियों के साथ के अपने सहकार-संबंधी कलँक को धोने के लिए कई ज़ोरदार प्रयत्न किये। उसके समर्थकों का दृष्टिकोण था कि वर्तमान गतिरोध के समय उसके महान् अनुभव और दृढ़ नेतृत्व की आवश्यकता है। आवेश और हिंसा के वातावरण में हुए चुनाव में क्विरीनो बहुत कम मतों से जीता, फिर भी वह ऐसी परिस्थितियों में जीता जिनसे उसने जनता का विश्वास खो दिया : मत ख़रीदे गये, मतदाताओं को आतंकित किया गया, मतदान पेटिकाओं में वोट भरे गये अथवा उन्हें चुरा लिया गया। मतदान के हिसाब को यों ही भर दिया गया था। किसी जगह तो कुल जनसंख्या से भी अधिक मत पड़े, बच्चों, मृत लोगों, चिड़ियों और फूलों के नामों से मतदाता-सूचियां भर दी गईं थीं। जनता में प्रजातन्त्र के प्रति नैराश्य घनीभूत होने लगा। फलतः आनेवाले अंधकारपूर्ण दिनों में कई लोगों की निगाहें हुकों की ओर गईं और वे या तो उसमें क्रिय रूप से सम्मिलित हो गये या उनके प्रति सहानुभूति रखने लगे।

सामान्य जनता हुक संगठन की शक्ति से प्रभावित थी। प्रांत के मैदानों में ऐसे विशाल क्षेत्र थे जिन्हें हुक-प्रदेश समझा जाता था। इन जगहों में हुक-शक्ति ही एकमात्र शक्ति थी। वे कानून बनाते और उन्हें लागू करते थे, कर वसूल करते थे और क्रांति के समर्थन के अनुकूल जनता का जीवन संगठित करते थे। उन क्षेत्रों में भी जहाँ सरकारी फ़ौज दिन भर पहरा देती थी, अँधेरा होते ही हुक उन पर अधिकार कर लेते थे। संघर्ष का यह एक सिद्धान्त बन गया कि जो भी शान्ति और व्यवस्था का नियंत्रण अंधेरा होने के बाद करता है, वही जनता की राजभक्ति का अधिकारी होता है।

हुकों की शिक्षा-प्रणाली सूक्ष्म एवं व्यापक थी। अशिक्षितों के लिए थोड़ी अवधि वाले स्कूल खोले गए। उच्च स्तर के नवयुवकों को साम्यवादी विचारों और युक्तियों से परिचय कराया जाता था। निम्न सूची से इस कार्यक्रम के परिमाण के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त हो जायगी :—

हुक स्कूलों का पाठ्यक्रम

स्कूल और विषय		शिक्षा के दिनों की संख्या
प्राइमरी स्कूल		
केन्द्रीय समिति सम्मेलनों के प्रस्ताव	...	७
कम्यूनिस्ट पार्टी	...	४
एच. एम. बी. (हुकबलाहाप) : मुक्ति आन्दोलन	...	४
की भरती व संगठन	...	४
(खुफ़िया कार्यों की श्रृंखला)	...	३
इन्टरमीडिएट स्कूल :		
संस्था का इतिहास	...	७
वर्त्तमान आर्थिक प्रणाली	...	७
सरकार की वर्त्तमान स्थिति	...	७
कृषिक और श्रमिक आन्दोलन का इतिहास	...	७
पी. के. पी. मुक्ति आन्दोलन का अग्रगामी दल	...	७
सशस्त्र संघर्ष में एच. एम. बी. का सहयोग	...	७

नया लोकतंत्र	...	७
केन्द्रीय समिति का प्रस्ताव	...	७
बहीखाता और हिसाब-किताब	...	३

हाइस्कूल :

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद	...	१०
राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था	...	१०
साम्राज्यवादी	...	१०
राज्य और क्रान्ति	...	१०
पी. के. पी. का महत्त्व	...	५
राजनैतिक युद्धकौशल और युक्तियाँ	...	१०
फौजी युद्धकौशल और युक्तियाँ	...	५
नया लोकतंत्र	...	५
सर्वहारा-वर्ग के आचार-विचार	...	५
शिक्षा के सिद्धांत एवं प्रणालियाँ	...	१०
नये लेखन-प्रमाण (डाकूमैंट्स)	...	१०

उच्चस्तरीय स्कूल के लिए पाठ्यक्रम

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद	...	७
राष्ट्रीय समस्या	...	७
कृषि-समस्या	...	७
एच. एम. बी से नियमित सेना	...	७
नया लोकतंत्र	...	७
सर्वहारा-वर्ग के आचार-विचार	...	७
महिलाओं की समस्याएँ	...	७
टालने की युक्तियाँ	...	७

शिक्षा की प्रत्येक सामग्री या तो साम्यवादी दल द्वारा तैयार की जाती थी अथवा दल के राष्ट्रीय शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत होती थी। प्रचार और शिक्षण की इस योजना में मदद देने का यह कार्य अमरीकी साम्यवादी विलियम पोमराय के सुपुर्द किया गया था, जो १९५२ में अपने पकड़े जाने तक 'हुक' का सक्रिय सदस्य रहा था।

पहाड़ों की गुप्त घाटियों में हुकों ने गाँव और प्रधान कार्यालय स्थापित किए थे। पोमराय ऐसे ही एक केन्द्र और उसकी क्रान्तिकारी गतिविधियों के बारे में लिखता है।

"हुक–प्रमुख लुई टारुक के भाई प्रेग्रिनो टारुक के प्रबंध में यहाँ पर साम्यवादी दल के राष्ट्रीय शिक्षा विभाग का केन्द्र था। यहाँ कम्यूनिस्ट पार्टी की क्षेत्रीय समिति नंबर ४ का प्रधान कार्यालय था जिसके अन्तर्गत लागुना, क्वेज़न, बटांगास और कैवाइट प्रान्त आते थे। आधे मील की दूरी पर ही दल के फौजी विभाग के प्रमुख कैस्टो एलिज़ैन्ड्रिनो का प्रधान कार्यालय था। उस कैम्प में संगठन-कर्त्ताओं और सिपाहियों की एक बड़ी सेना, नं. ३ फिलिपाइनो साम्यवादी मार्यानो बल्गोस के अन्तर्गत, बिकोल प्रान्तों में दक्षिण की ओर लम्बे अभियान की तैयारी के लिए एकत्र हुई थी। एक क्षेत्रीय स्कूल चालू था और रात्रि में एकदम शान्ति के वातावरण में, विद्यार्थियों को गाते हुए और नियमित सांस्कृतिक कार्यक्रम करते हुए सुना जा सकता था। हाथ से छापने की मशीन दिन रात चलती जिसमें पर्चे, लेख और समाचारपत्र छपते रहते। सामान की कमी थी ही नहीं; छत से एक बोरा बांध दिया गया था जिसमें कागज़, स्टैन्सिल और स्याही रहती थी तथा और सामान निरन्तर हुक सिपाहियों की पीठ पर लदे हुए टाट के बोरों में आता ही रहता। इस प्रकार वस्तुतः कहा जा सकता है कि हुक सिपाही, सारा आंदोलन ही अपनी पीठ पर बिना किसी शिकायत के और बुरे से बुरे मौसम में तथा भीषण वर्षा में भी लाद कर चलता था।"

"हरकारों के लिए ऐसे लड़के और लड़कियों को चुना गया था जिनकी ओर कोई किसीका ध्यान ही नहीं जा सकता था। ये हरकारे शहर से दल की जिला समितियों और विभागीय समितियों में तथा हुक सेना के फील्ड कमांडैन्टों में, निरन्तर आते-जाते रहते थे। कभी कभी, मामूली बाजारू बुने हुए 'बयागों' (ताड़ की पत्ती के बोरे) में इतनी डाक वे अपने साथ लाते जितनी कि डाकिया शहर में ले कर चलता है। हरबार हरकारे या सिपाही, सन्देश लेकर अथवा सामग्री लाने के लिए जब आते-जाते थे तो यह अर्साप्रायः एक दिन से लेकर एक सप्ताह तक का होता था और अपना काम उन्हें गहरे और भयानक पहाड़ी रास्ते से हो कर पूरा करना पड़ता था।"

आन्दोलन का मूल केंद्र मनीला में था। यहाँ 'पोलिट ब्यूरो-इन' (भीतरी राजनैतिक विभाग) स्थित था जो शहर के भीतर से गुप्त रूप में कार्य

करता था। यह वही संगठन था, जो अक्टूबर १९५० के हमलों में, तथा अगले वर्ष सरकारी एजेण्टों द्वारा छापा मार कर नष्ट कर दिया गया था। हुक इस क्षति की पूर्ति कभी नहीं कर पाये। इसी प्रकार एक 'पोलिट-ब्यूरो-आऊट' (बाहरी राजनैतिक विभाग) भी था जहाँ से सारी क्रांतिकारी गतिविधियाँ संचालित होती थीं। मनीला केंद्र की समाप्ति के बाद 'पोलिट ब्यूरो-आऊट' पर ही संचालन की सारी जिम्मेदारी आ पड़ी।

हुकों ने फिलिपाइन को १० क्षेत्रीय समितियों में विभक्त कर दिया था और हर प्रमुख दल-नेता के सुपुर्द एक-एक विभाग था। ये फौजी विभाग थे जिनकी अपनी रसद, अपनी गुप्तचर-व्यवस्था होती थी और सौ-सौ सिपाहियों की एक-एक टुकड़ी उसके लिए तैनात थी। प्रत्येक एकाई कम-से-कम एक दल-सदस्य के सुपुर्द रहती थी। दूसरे लोग सहानुभूति रखनेवाले होते थे, अनिवार्य रूप से दल-अनुशासन में रहनेवाले कम्यूनिस्ट नहीं!

प्रत्येक दल-सदस्य तीन से पाँच सदस्यों की एक टुकड़ी अथवा केंद्र में से होता था। टुकड़ी के इस जीवन में, अनुशासन तथा अपनी इच्छा के सम्मुख दल की इच्छा को सर्वोपरि महत्त्व देने की भावनाएं विकसित होती थीं। इन्हीं टुकड़ियों की सभाओं में सदस्यों को अपनी दुर्बलताओं को आत्मनिरूपण के रूप में स्पष्ट कर देना होता था, और इसके बाद वे टुकड़ी के दूसरे सदस्यों के दोष बताते थे। इन अनुभवों का साम्प्रतिक परिणाम ऐसे सदस्य पैदा करना होता था जो पूरे दलभक्त हों और जिनके भीतर आत्म-त्याग की सुदृढ़ प्रवृत्ति हो।

हुक के उन सदस्यों को भी, जो कम्यूनिस्ट नहीं होते थे, भगोड़ों के समान कड़े अनुशासन के अंतर्गत रहना पड़ता था।

"जो व्यक्ति अपने-आप को सरकार के सम्मुख समर्पित कर देंगे किन्तु जो संगठन के साथ विश्वासघात नहीं करेंगे, उन्हें पकड़ लिया जायगा और उनका 'कोर्ट मार्शल' किया जायगा। यदि वे विश्वासघात के दोषी नहीं पा गये, तो उन्हें कठिन परिश्रम का दंड दिया जायगा। यदि वे हुक में सम्मिलित होने से तथा आदेशों का पालन करने से इनकार करेंगे, तो उन्हें मार डाला जायेगा। जो कोई हुकों के साथ विश्वासघात करेगा, उसे तुरन्त मार डाला जायेगा।"

क्रान्तिकारी कार्रवाइयों के लिए आर्थिक सहायता विभिन्न स्रोतों से आती थी। काफ़ी बड़ी रकमें उपहार के रूप में चीनी समर्थकों से मिलती थीं। कुछ धन हुक द्वारा नियंत्रित क्षेत्रों में व्यक्ति-कर से आता था। भोजन और

दवाई के उपहारों के साथ-साथ माल की जब्ती द्वारा भी ये वस्तुएँ प्राप्त हो जाती थीं। डाका डालने, लूटने और गाड़ियों की डकैतियों से भी काफ़ी रक़म आती थी। १९५१ में हकों ने बजट बनाया जिसमें लगभग १ करोड़ पीसों का खर्च बताया गया था। अर्थ का यह स्तर राष्ट्रीय अर्थसमिति द्वारा कभी नहीं प्राप्त किया जा सका; परन्तु वास्तविक खर्च अवश्य ही अपरिमित था। जुलाई १९५१ के महीने के क्षेत्रीय कमान्ड नंबर २ के हिसाब की किताबों में खर्चा तो १०,०४७·२५ पेसो और रोकड़ बाकी ५१०० पेसो बताई गई है। [२ पेसो = १ डालर]

अपनी शक्ति से विश्वस्त और सरकार की असफलताओं से प्रोत्साहित हो कर हुकों ने निर्णय किया कि अब समय आ गया है कि १९४९ के चुनावों के आधार पर उन्हें समूचे फिलिपाइन पर अधिकार करने दाँव लगाना चाहिए। १९४९ और १९५० में उन्होंने और भी बड़े पैमाने पर हमले किये; १९५१ मे अन्तिम विजय के समय इन हमलों को चरम सीमा तक पहुँचाने की योजना थी। इन हमलों का सामना करने पर पुलिस ने, जो मध्य लूज़न में एकदम निष्क्रिय थी, मलीवालू पैम्पाङ्गा में निरीह नागरिकों को मार कर बड़ी ग़ल्ती की। टार्लैक में भी १७ नागरिक मारे गये। 'अत्याचार' के घोष चारों ओर से आने लगे। नागरिकों ने कहा कि वे पुलिस दल के साथ रहने की अपेक्षा हुकों के साथ रहना अधिक पसन्द करेंगे। स्वयं सेना के एक मेजर ने एक पत्रिका में खुल्लमखुल्ला यह लिखा—"मध्य लूज़न में पिछले कुछ वर्षों से विद्रोहियों और उनके साथ सहानुभूति दिखाने वाले लोगों की संख्या में जो वृद्धि हुई है उसका कारण मुख्यतया उन अधिकारियों तथा व्यक्तियों का बुरा बर्ताव है जिनके हाथ में कानून और व्यवस्था सौंपी गई है।"

अपने आप को बचाने के लिए शासन को तदनुकूल काम करने पड़े। राष्ट्रपति क्विरोन पुलिस दल के स्थानों पर 'भाषणयात्रा' पर गया और ग़ल्ती करने वाले सिपाहियों को तात्कालिक 'कोर्ट मार्शल' की धमकी दी। उसने फ़ौजों से नागरिकों में विश्वास एवं सुरक्षा की भावना पैदा करने के लिए आग्रह किया। 'फिलिपाइन हैरल्ड' के १५ जून, १९५०, के अंक में राष्ट्रपति ने कहा कि वह मलीवाली, पम्पाङ्गा की घटना की पुनरावृत्ति नहीं चाहता। इन अनाचारों का उल्लेख करते हुए एक फिलिपाइनी सेनाधिकारी ने अपनी अप्रकाशित पाण्डुलिपि में लिखा, "यहाँ तक कि सेना को भी विश्वास है कि सभी हुक टारुक के साथ सहानुभूति नहीं रखते, बल्कि वे हुकों में इसलिए

सम्मिलित हुए हैं कि उनके स्वयं या उनके किसी सम्बन्धी के साथ सिपाहियों ने दुर्व्यवहार किया है।"

१९५० में फिलिपाइन सरकार हुक-समस्या को हल करने में असफल रही; लेकिन इन सभी असफलताओं से कुछ समझदारी उसने प्राप्त कर ली थी। सरकार यह समझ गयी थी कि उसे शक्ति का शक्ति से सामना करना चाहिए। इसका अर्थ था लड़ाई के मैदान में विजय प्राप्ति के लिए सेना का एकदम पुनस्संगठन करना। साथ-ही-साथ सरकार यह भी समझ गयी कि वह तब तक हुकों से सफलतापूर्वक लड़ाई नहीं लड़ सकती जब तक उसे नागरिकों का सम्मान और सहयोग प्राप्त न हो जाय। इसका अर्थ यह था कि अधिकारी और सिपाही अपने रुख को बदलें। अन्त में, सरकार यह समझ गई थी कि हुकों के साथ न्याय और मानवता का व्यवहार करने से, हुकों ने जनता का जो विश्वास प्राप्त कर लिया है, उसको क्षति पहुँचायी जा सकती है, अर्थात् सरकार मनोवैज्ञानिक संघर्ष का कार्यक्रम अपनाये और उसके साथ में सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए प्रभावशाली सुधारों का सूत्रपात करे। इस प्रकार नये गणतन्त्र में साम्यवादी शक्तियों के विरुद्ध प्रभावशाली अभियान संचालित करने के लिए मंच पर एक नेता की आवश्यकता थी। रेमॉन मैग्सेसे ने इसी परिस्थिति में फिलिपाइन के राजमंच पर प्रवेश किया!

राष्ट्रीय सुरक्षा-विभाग के इस नये सचिव की नियुक्ति सितम्बर १९५० में हुई थी और वह जाम्बेल्स का कांग्रेसी था। यद्यपि वह कोई अनुभवी राजनीतिज्ञ नहीं था; परन्तु यह नौसिखिया ही फिलिपाइन में एक नई राजनीति को मार्ग दिखाने वाला बना। युद्धकाल में वह गुरिल्ला नेता के रूप में जापानियों से लड़ा था और उसने सफलतापूर्वक एक छोटी यातायात कम्पनी भी चलायी थी। उसका सिद्धान्त-वाक्य था "जब इंजिन टूट जाये, तो उसको जोड़ दो।" इस सरल कर्मदर्शन को उसने हुकों के साथ संघर्ष में राष्ट्रीय सेना के संचालन में कार्यान्वित किया।

उसने इससे भी अधिक किया। वह इस तत्त्वज्ञान के अनुसार जिया। जब फौजों ने अभियान शुरू किया, तो मैग्सेसे वहाँ मौजूद था। जब कोई सिपाही लड़ाई में मारा जाता तो मैग्सेसे अपनी चिन्ता और दुःख व्यक्त करने के लिए वहाँ होता। जब वीरता के काम किए जाते, मैग्सेसे अधिकारियों और व्यक्तियों को प्रोत्साहन देने के लिए मौजूद मिलता। जब फ़ौजों को कुछ आवश्यकता होती, तो मैग्सेसे रसद, और भरपूर सामग्री के साथ, सेना की सहायता के लिए पहुँच

जाता और जब हुक आत्म-समर्पण करते अथवा पकड़े जाते, तो मैग्सेसे उनकी कहानियाँ सुनने और यह देखने के लिए कि उनके साथ ठीक व्यवहार किया जाता वहाँ उपस्थित मिलता। असीम शक्ति-सम्पन्न और मनुष्य की आवश्यकताओं को समझने वाले इस सहृदय व्यक्ति ने राष्ट्र को अपने आसपास एकत्र कर लिया। उसके आदमी दिन-रात काम करते थे और पूर्णतया थकने पर ही सोते थे। देश को प्रोत्साहन मिला, लोकतंत्र में गति आयी।

पहला क़दम सशस्त्र सेना का पुनस्संगठन, पुलिस दल को सेना में मिलाना और चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ के नीचे एक संयुक्त नेतृत्व प्रस्तुत करना था। जनरल ड्यूके की इस पद पर प्रतिष्ठा कर दी गई और उसने तुरन्त ही जनवरी, १९५१, से सेना की आत्मबल-सम्बंधी जांच-पड़ताल आरम्भ कर दी। अवांछनीय अधिकारियों और व्यक्तियों को निकाल दिया गया अथवा पेन्शन दे दी गई; प्रभावशाली अधिकारियों की उन्नति कर दी गई। वेतन और भत्ते बढ़ा दिये गये। लड़ाई के मैदान के शौर्य को विशिष्ट मान्यता मिलती थी। नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार पर सख़्त सज़ा मिलती थी। उदाहरणस्वरूप, एक पत्रकार और एक पुस्तक-विक्रेता के साथ हाथापाई करने पर फ़ौजी खुफिया एजेंटों का तुरन्त ही कोर्ट मार्शल किया गया। नये-नियुक्त नागरिक-कार्य-अधिकारी सेना-क्लबों में जाते थे और सामुदायिक कार्यों में भाग लेते थे। सेना के दृष्टिकोण एवं प्रवृत्तियों की जनता के सम्मुख व्याख्या करने तथा हुकों के विरुद्ध सेना के कार्यों का समर्थन प्राप्त करने के महत्त्वपूर्ण काम उन्होंने अपने ज़िम्मे रखे। धीरे धीरे सेना के प्रति जनता की शत्रुता की भावना आदर और आभार में परिवर्तित हो गई। अनधिकृत बन्दूकों को इकट्ठा करने का अभियान बड़ा सफल हुआ। मैग्सेसे ने एक रेडियो भाषण में कहा "मैं अनुभव करता हूँ कि इससे पहले कि हम शान्ति और व्यवस्था की समस्याएँ हल करें, हमें अपनी सेना के प्रति जनता का समर्थन फिर से प्राप्त कर लेना चाहिए।"

हुकों का पीछा करने अथवा मारने को ही सब-कुछ न मान कर मैग्सेसे सामाजिक सुधार के कार्यक्रम द्वारा हुकों को सरकारी पक्ष में लाना चाहता था। कार्यालय में मिलने आये किसी भी व्यक्ति से बात करने तथा पकड़े गए और आत्म-समर्पण करनेवाले हुकों से भेंट करने की परम्परा शुरू करके उसने जनता की आवश्यकताओं को समझा और अपनी कर्मस्फूर्ति को हुकलैंडिया में बसनेवाली जनता की आधारभूत समस्याओं के हल खोजने में लगा दिया। उसने देखा कि मध्य लूज़न के कृषकों में हुकों के लोकप्रिय समर्थन की

जड़ें कृषि-समस्याओं में है। तो फिर कृषकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्यों न कोई उदार और नाटकीय योजना बनाई जाय? कम्यूनिस्टों ने 'भूमिहीनों को भूमि' दिलाने का वचन दिया था। सरकार के पास वीरान सार्वजनिक भूमि पड़ी थी; फिर भूमिहीनों को भूमि क्यों न दे दी जाय? मिन्डानाओं में नव-स्थापितों के आवास लड़ाई से पहले बन चुके थे; परन्तु युद्धोत्तर-काल के प्रयत्न नौकरशाही के शैथिल्य और भ्रष्टाचार के कारण रुक गये थे। जनरल ड्यूके और दूसरे अधिकारियों ने सेना के अवकाश-प्राप्त आदमियों के लिए एक घर जैसी बस्ती बनाने की योजना बनायी थी किन्तु धन के तथा उच्चाधिकारियों के समर्थन के अभाव में उसे ताक में रख दिया गया।

मैग्सेसे ने बस्ती बसाने के इस प्रस्ताव को मुख्यतः भूमिहीन हुकों के विकास के लिए फिर से प्रारम्भ किया। स्थिरता लाने के लिए सेना के थोड़े से [illegible] को भी उसमें शामिल किया जा सकता था। सेना नव-स्थापितों की सुरक्षा में काम आ सकती थी और फसल लगाने में उन्हें सहायता पहुँचा सकती थी। नव-स्थापितों के आत्मनिर्भर होने तक के लिए भोजन की व्यवस्था हो सकती थी। इस प्रकार योजना चरितार्थ हुई। एक ही नाटकीय चाल सेना किसानों में फैले हुक-प्रचार एवं मान्यता को प्रभावहीन कर देती और साथ-ही-साथ वह पुराने हुकों को फिर से व्यवस्थित कर दूसरे हकों को आत्म-समर्पण के लिए काफ़ी प्रलोभन प्रस्तुत कर देती।

मैग्सेसे ने योजना को कार्यान्वित किया। १९५१ के आर्मी एप्रोप्रिएशन्स एक्ट द्वारा दस अतिरिक्त फ़ौजी दस्ते (बटालियन कम्बैट टीम) के बनाने की योजना थी तथा उसमें इस अधिकार की घोषणा थी कि, "इस व्यवस्था के बाद जो भी रकम बचे, उसे बन्दी बनाये गये या आत्म-समर्पण करनेवाले विद्रोहियों के पुनः स्थापन के ख़र्च में लगाया जाय।" सचिव इस बजट से काफ़ी पैसा एडकोर ('इकानामिक डिवलपमैंट कोर'—आर्थिक विकास सेना) को सेना के एक अंश के रूप में स्थापित करने के लिए बचा सका। शीघ्र ही एडकोर के इंजीनियर पहली बस्ती के लिए जगह देखने, ज़मीन साफ़ करने तथा सड़क बनाने के लिए मिन्डानाओ पहुँच गये। उनके उत्साह में यह प्रेरणा काम कर रही थी कि वे यह सब शान्ति के लिए कर रहे हैं—बरबादी के लिए नहीं।

एडकोर फ़ार्मों ने सेना को एकदम नया दायित्व दे दिया। अब सेना का कर्तव्य राष्ट्र की सुरक्षा और शत्रु के नाश तक ही सीमित नहीं था। सेना को जनता की सेवा—एक नए प्रकार से—रचनात्मक और सर्जनात्मक ढंग से—

करनी थी। उनका काम हुकों को फिर से स्थापित करना और उन्हें सच्चे राष्ट्रभक्त और रचनात्मक नागरिक बनाना था।

कुछ महीने बाद एक विदेशी संवाददाता ने इस बस्ती को बड़े आश्चर्य से देखा। सिपाही खम्भे खड़े कर रहे थे और नव-स्थापितों के घरों तक बिजली की लाइनें ले जा रहे थे। पुराने हुक अपने दोनों ओर 'बोलो' लटकाए हुए, निःशस्त्र बस्ती-अधिकारियों से फ़ॉर्म की समस्याओं के बारे में चर्चा कर रहे थे। संवाददाता ने कहा, "मैंने कई सेनाएँ देखीं हैं, लेकिन यह सबको परास्त कर देती है। यह सेना सामाजिक चेतनाशील सेना है।" यद्यपि फ़िलिपाइनी सेना ने सदा ही शुद्ध चेतना से काम नहीं लिया था, लेकिन गृहयुद्ध के दुखदायी अनुभव से उसने यह सीख लिया था कि वही शक्ति राष्ट्र को बचा सकती है जो जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ होती है।

एडकोर बस्तियों का उद्देश्य जनता के प्रति सरकार की चिन्ता—एक ऐसी चिन्ता जो ग्राम सुधार, स्कूलों की आवश्यकतापूर्ति, नये कुएँ खोदकर पीने की समस्या का हल करना, सरकारी विभागों की निपुणता में वृद्धि करना, निर्दोष निर्वाचन पर ज़ोर देना, राजनैतिक विभाग में सच्चाई का वर्तन कार्यान्वित करवाना आदि योजनाओं द्वारा व्यक्त करना था। इस प्रकार आनेवाले फ़िलिपाइनी लोकतंत्र के लिए एडकोर एक प्रकार का उज्ज्वल पूर्वाभास था।

तीसरा अध्याय

सुसम्भावनाओं की भूमि

मनीला के दक्षिण में पाँच सौ मील के विस्तार में मिन्डानाओ द्वीप है, जो फिलिपाइन्स में दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है और आधुनिक जगत् के सर्वाधिक कथा-प्रसिद्ध सीमाप्रदेशों में से एक। इसकी जनसंख्या अनेकरूपिणी है। इसमें लनाओ प्रान्त के रंगीन मोरो लोग, बुकिडनान और दूर पहाड़ी क्षेत्रों की मूर्ति-पूजक जातियाँ, तटवर्ती मैदानों तथा नये बसे क्षेत्रों जम्बोआंगा, कोटावाटो, डवाओ तथा अगूसन में तेज़ी से बढ़ती हुई ईसाई फिलिपिनो जातियाँ सम्मिलित हैं। खनिज पदार्थों और प्राकृतिक साधनों का यहाँ अब विकास-कार्य आरम्भ किया गया है। अभी हाल ही में उत्तरी तट पर स्थित मार्या क्रिस्टिना में एक विद्युत्-कारख़ाना खोला गया है। फ़िलहाल इस शक्ति का उपयोग खाद बनाने के काम में होता है, परन्तु भविष्य में एक इस्पात का कारखाना भी यहाँ स्थापित होनेवाला है। दक्षिण जम्बोआंगा में कोयला, सुरीगाओ में कच्चा लोहा और डवाओ में सोना की खानें हैं। डवाओ नगर के निकटवर्ती पहाड़ों में यूरेनियम भी काफ़ी परिमाण में उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त पहाड़ी ढालों और घाटियों में, हजारों एकड़ क्षेत्र में जंगल फैले हुए हैं, जहाँ कुछेक किस्म की संसार की सर्वोत्तम कठोर लकड़ियाँ मिलती हैं। और भूमि तो इतनी उपजाऊ है कि किसानों को, फ़सल काटने और नयी फसल बोने के बीच की अवधि में, झाड़ियाँ और छोटे पौधे खेतों में न निकल आयें, इस उद्देश्य से एक अतिरिक्त फ़सल करनी पड़ती है। इसी आशाप्रद भूमि में 'एडकोर' ने १९५१ के प्रारम्भ में अपनी पहली बस्ती की स्थापना की।

सुरक्षा सचिव की उत्सुकता से प्रोत्साहित होकर 'एडकोर' के कुछ नव-नियुक्त अधिकारी और कर्मचारी विमान-द्वारा ओज़ामिस शहर के लिए रवाना हुए, जो लनाओ प्रान्त में उस प्रस्तावित फ़ार्म का सबसे निकट का हवाई अड्डा था।

यहाँ से उन्होंने खाड़ी के पार, पूर्वी तट पर, जाने के लिए एक नौका ली, जहाँ उन्हें सेना की जीपें उपलब्ध हुईं और जिन्होंने उन्हें सड़क के अन्तिम

छोर पर स्थित कपायागान नगर तक पहुँचा दिया। यहाँ से वे कई मील पैदल चल कर बुर्यासने गाँव पहुँचे, जो नाममात्र के लिए ही गाँव था। ये पैमाइश-कार अब तक कितनी ही नदियाँ पार कर चुके थे और इस बार इन्होंने एक अन्य नदी के किनारे डेरा डाला। उनके पास ही घना जंगल था। हरे-हरे पत्रों से घने रूप में ढँके रहने के कारण जंगल के भीमकाय वृक्ष स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ते थे। वहाँ कुछ फुट तक ऐसे रास्ते अवश्य दिखाई पड़ते थे, जिनसे होकर जंगल को पार किया जा सकता था। बन्दर यह समझ कर कि हमारे सुरक्षित क्षेत्र पर धावा बोल दिया गया है, चिल्ला रहे थे। दूसरी ओर, झाड़ियों में चमकदार परोंवाले जंगली मुर्गे बड़ी तेज़ी से भाग-दौड़ मचा रहे थे। झाड़ी में किसी भारी वस्तु द्वारा कुचले जाने के कारण चरपराहट की आवाज़ वहाँ जंगली सूअरों की उपस्थिति की भी सूचना दे रही थी। इस क्षेत्र में दत्तू टवनटावन नाम का एक मोरो लुटेरा रहता था। उसके आत्म-समर्पण और दूसरे मोरों के अधिकार-परित्याग से सरकार के लिए उस क्षेत्र में बसने का रास्ता साफ़ हो गया।

पैमाइश-दल ने घाटी का निरीक्षण किया। मध्य में भूमि लगभग समतल थी और दक्षिण एवं पूरब में जिधर पहाड़ थे, तनिक ढालू। इनिआओं-पर्वत प्रातःकाल प्रथम सूर्य-किरणों को रोक कर घाटी को अपनी छाया से ढँके रहता था। यहाँ की नदियों और झरनों में पानी काफी परिमाण में था। जमीन में कुछ गज तक पाइप डालने से ही एक अच्छा कुआँ बन सकता था। पहाड़ों के समीपस्थ इस मैदान में ही नयी बस्ती बसाने का निश्चय हुआ। एक नयी जाति, एक नये समुदाय के निवास के लिए यह एक सुन्दर क्षेत्र था।

कर्नल सिरिआको मीरासोल के नेतृत्व में लोग काम में लगे। हाथ के औजारों से वहाँ की जमीन को साफ करने का काम रीढ़ तोड़ देनेवाला था। ट्रैक्टर, बुलडोजर और बिजली के आरे बाद में आने वाले थे, परन्तु फिलहाल तो इस अग्रणी सैनिक इकाई के पास काम करने और मीरासोल के संकल्प और उत्साह पर भरोसा करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था।

यहाँ से दस मील तक दूरी में बसे नागरिकों को भी सफाई के काम में मदद करने के लिए आमंत्रित किया गया। पहले तो उन्होंने इस ओर ढिलाई दिखायी, परन्तु शीघ्र ही वे इस बात को समझ गये कि सैनिक टुकड़ी की उपस्थिति और नयी बस्ती से सुरक्षा, चिकित्सा, विद्यालय, यातायात और बाजार की दृष्टि से वे कितना अधिक लाभान्वित होंगे। अतः वे अपने स्वयं

के ही औज़ार और भोजन लेकर आये तथा योजना की पूर्ति में योग देने लगे। ये निःशुल्क सेवाएँ थीं; क्योंकि उस समय तक मीरासोल के पास योजना पर खर्च करने के लिए धन नहीं था। किन्तु जब काम आगे बढ़ा, तब मनीला के निकटस्थ कैम्प मर्फी-स्थित सैनिक प्रधान कायालय से आदमी, यंत्रादि और धन भेजा गया। इसके बाद बस्ती में इमारतें बनाने के लिए नागरिक काम में लगाये गये। नयी योजना के कार्य-स्थल तक एक सड़क बनाने के काल में बुलडोजर लग गये। काफी रात जाने पर लोग थकान से चूर होकर अपने खेमों में सोने के लिए जाते। जंगल की आवाज़ों के साथ-साथ अब यहाँ मोरो लोगों के प्रिय बाजे कोलिनटांग (घंटो) की विलक्षण ध्वनि भी गूँजने लगी। ऐसे वातावरण में बस्ती बसाने का सैनिक प्रयोग आरम्भ हुआ।

इन प्रारम्भिक महीनों में सब काम जल्दी में हुए। यहाँ बसने के लिए २६ परिवारों के प्रथम समूह के आगमन के मुश्किल से तीन महीने बाद, फरवरी में, 'एड्कोर'-टुकड़ियों ने अपना कार्य आरम्भ किया। यद्यपि उस समय तक इमारतें और सड़कें तैयार नहीं हो पायी थीं, तथापि मीरासोल के निर्देशन में नियुक्त फार्म-प्रशासक कप्तान जोंगको ने उन्हें मकान और एक सभा-भवन दिया।

जून और अगस्त में और भी लोग यहाँ बसने के लिए आये। प्रत्येक परिवार को लगभग ६० फुट चौड़े और १०० फुट लम्बे प्लाट पर बना हुआ एक-एक मकान दिया गया। उनका पहला काम मकान से लगे वाह्य क्षेत्र को घेरना और उसमें फुलवारी लगाना था। इस कार्य में एक या दो महीने लग गये और इसके बाद नवनिवासी अपने-अपने फार्मों में काम आरम्भ करने की स्थिति में आ गये।

इसी समय पहली बड़ी समस्या उठ खड़ी हुई। अन्य कार्यों में लगे रहने के कारण फार्मों की पैमाइश का काम पूरा नहीं हो पाया था। अतः नवनिवासी लोग कहने लगे—"यदि हमें फार्म नहीं मिलेंगे, तो हम अपने घर वापिस चले जायेंगे।" परिमाणतः, मोटे तौर, पर लोगों को फार्म दिये गये, पर इससे वे संतुष्ट नहीं हो सके; क्योंकि पैमाइश का काम अन्तिम रूप से पूरा होने पर बहुत से नवनिवासियों को दूसरे प्लाट दिये जानेवाले थे। लेकिन ये कठिनाइयाँ तो केवल योजना की शीघ्रता के कारण उत्पन्न हुई थीं। यथार्थतः सफलता के क्षेत्र में प्रशासन को इस बात का अभिमान हो सकता था कि उसने नव-निवासियों की सुविधा के लिए मकानों, बच्चों के लिए छठी कक्षा तक स्कूल, प्रशासन-भवन, सेना के अधिकारियों और आदमियों के लिए मकान, सुन्दर

और सपाट सड़कें, सब इमारतों और मकानों में बिजली की रोशनी तथा चिकित्सा और एक औषधालय की व्यवस्था कर दी थी। उन प्रारम्भिक दिनों में वहाँ आये एक अमरीकी यात्री ने कहा था—"मुझे विश्वास नहीं होता कि दो सौ वर्ष पूर्व स्वयं मेरे देश में नवनिर्माण के कार्य में लगे हमारे अगुए केवल चार महीने की अल्पावधि में इतना चमत्कारपूर्ण परिवर्तन कर दिखाने में समर्थ होते।"

कपटागान की 'एडकोर'-योजना १६८० हेक्टर्स (१ हेक्टर=२·४७१ एकड़) अर्थात् लगभग ४००० एकड़ भूमि में कार्यान्वित हुई थी। नगर बसाने में लगी भूमि और ईसाई फिलपिनों एवं मोरो लोगो के क्रमशः ६८ और ११ दावों से सम्बन्धित क्षेत्र को बाद देने के बावजूद (उन दावों को युद्धपूर्व के उचित दावों के रूप में माना गया था) 'एडकोर' के पास नवनिवासियों में वितरित करने के लिए ६ से लेकर १० हेक्टर तक के १२६ फार्म-टुकड़ियाँ थीं। इनमें से कुछ को नगर के सम्भावित विस्तार के लिए सुरक्षित रख लिया गया था। इसलिए वहाँ लगभग १०० 'एडकोर'-नवनिवासियों को ही स्थान दिया जा सकता था। इससे एक अच्छे-छोटे-से समुदाय का तो निर्माण हो सकता था, पर इसका आकार भूतपूर्व 'हुकों' की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता था। इसलिए समीपवर्ती कोटाबाटो प्रान्त में नवम्बर, १९५१ में दूसरा 'एडकोर' फार्म खोला गया।

बुल्डोन, जहाँ नयी योजना आरम्भ की गयी, कोटाबाटो शहर के उत्तर में है और ऊबड़-खाबड़ रास्ते से होकर एक घण्टे में जीप द्वारा वहाँ पहुँचा जा सकता है। १५०० फीट की ऊँचाई पर सेना के पैमाइशकारों ने नयी बस्ती के लिए उपयुक्त जगह उस सार्वजनिक भूमि पर पसन्द की, जिस पर से कई वर्ष पहले सरकार ने अपना अधिकार हटा लिया था। यह स्थान नुकीली चोटियों-वाले पहाड़ों की तलहटी में उस स्थल पर अवस्थित है, जहाँ से हो कर सिमुए नदी बड़ी तेजी से समुद्र की ओर बहती है। यह क्षेत्र यद्यपि असम और पहाड़ी था, तथापि काफी, पहाड़ी चावल, केले, कागज एवं कपड़ा बनाने योग्य रेशेदार घास और शाक-भाजी लगाने के लिए सर्वोत्तम सिद्ध हुई है। ऊँचाई पर होने के कारण यहाँ प्रातःकाल बड़ा ही साफ और चमकीला होता है, पर अपराह्न सदा ही बादलों से घिरा हुआ और बरसाती रहता है। रात में काफी ठंडक पड़ती है और आराम से सोने के लिए एक ऊनी कम्बल की जरूरत निश्चय ही पड़ती है।

बुल्डोन-स्थित नये योजना-केन्द्र के विपरीत पहला योजना-केन्द्र कपटागान सम और दलदली भूमि पर स्थित है और वहाँ की जलवायु गर्म और तर है। वहाँ साल-भर पानी बरसता है, किन्तु खुश्क मौसम में वर्षा कम परिमाण में रुक-रुक कर होती है। भूखंड और मौसम की इस विभिन्नता का कृषि के स्वरूप पर भी निश्चय ही असर पड़ता है।

बुलडोन के 'एडकोर' फार्म का नगरी क्षेत्र नदी के एक किनारे बसा हुआ है और फार्म दूसरे किनारे। ये फार्म पहले दो मोरो भाइयों—रोयोड और मलुआग सैंडब—की पैतृक जायदाद के अंग थे। उन्होंने इस जमीन के बारे में कोटाबाटो में दावा भी दायर किया था, परन्तु मिन्डानाओ में भूमि के अन्य दावों की भाँति ही उनका स्वाधिकार तब तक मान्य नहीं किया गया था। सरकारी अधिकारियों और सेनाधिकारियों के निवेदन पर मोरो लोगों ने पहले ६० हेक्टर और बाद में और २४ हेक्टर भूमि 'एडकोर'-नगर बसाने के लिए दान कर दी। उस दान की शर्तों के मुताबिक, जो पहले सैंडबों और फार्म-प्रशासक अलकंटारा के बीच मौखिक ही थीं, सिमुओ नदी के पश्चिमी किनारे पर ३०० मीटर चौड़ी और २ किलोमीटर लम्बी पट्टी प्रदान की गयी थी; लेकिन जब उन्हें लिखित स्वरूप दिया गया, तब उसमें केवल कुल क्षेत्र का ही उल्लेख किया गया और दान किये हुए क्षेत्र के आकार की कोई चर्चा नहीं की गयी। बस, यहीं पर कठिनाई और गलतफहमी पैदा हो गयी।

मीरासोल और जोंगको द्वारा स्थापित नेतृत्व की परिपाटी के अनुसार ही सैनिक इंजीनियर पी. एस. टोरियो था, जिसे नगर की रूपरेखा तैयार करने का भार सौंपा गया था। वह एक बड़ा साहसी, उत्साही तथा निपुण मेजर था। जब उसने नगर का नक्शा तैयार किया, तो उसे नदी-किनारे के ३०० मीटर की पट्टी तक ही सीमित रखने का प्रयत्न नहीं किया। उस पट्टी के दान-सम्बन्धी मूल समझौते के बाद ही बहुत से व्यक्तियों ने प्रस्तावित नगर और मुख्य मार्ग से सटी हुई भूमि खरीद डाली थी। फलतः टोरियो की योजना के कारण उनके क्षेत्र भी कटने लगे और उन्होंने स्वभावतः ही इस पर आपत्ति की; परन्तु उनकी आपत्तियों को अस्वीकार करते हुए टोरियो ने उन लोगों को पीछे हट जाने का आदेश दे दिया। तदनुसार वे हट भी गये, परन्तु उतनी दूर नहीं, जितना इन्जीनियर चाहता था। एक क्रोधी दावेदार ने तो 'अपने क्षेत्र' में बुलडोज़र चला रहे एक आपरेटर का डंडा ले कर पीछा भी किया। अपनी कार्रवाई का पक्ष-पोषण करते हुए मेजर ने सफाई दी— "हमें नगर बसाना था, न कि

हवाई जहाज़ उतारने के लिए पट्टी। लिखित समझौते के अनुसार मोरो ब्रेटस की किसी भी भूमि के ६० हेक्टर क्षेत्र का हम उपयोग कर सकते हैं।" कर्नल अलकंटारा ने, जो एक उदार और दयालु स्वभाव का प्रशासक था, लोगों को शान्ति और संयम रखने की सलाह दी तथा समझौता-वार्ता शुरू हुई। पश्चिमी सीमा के सम्बन्ध में कई सप्ताह तक विवाद चला, किन्तु अन्त में, सौहार्द्रपूर्वक उसका निबटारा हो गया। टोरियो के बुलडोजरों द्वारा जमीन पर चौड़ी सड़कों के लिए लगाये हुए निशानों के अनुसार काम जोर-शोर से बढ़ने लगा। वह विशाल और विस्तृत योजना इन्जीनियर के अथक प्रयत्नों का ही परिणाम थी।

साफ-सुथरे कुटीरों की पंक्तियों के साथ-साथ एक आकर्षक नागरिक केन्द्र का भी विकास किया गया। जब वहाँ निवासियों ने अपने नगर की स्थापना का प्रथम वार्षिक समारोह मनाया, तब वे इस बात का अभिमान करने की स्थिति में थे कि उनके यहाँ एक प्रारम्भिक विद्यालय, एक साफ सुथरा और विशाल खेल का मैदान, अस्पताल और दवाखाना, टेनिस कोर्ट, गिरजाघर, वाचनालय, अधिकारियों के लिए क्लब, आंशिक रूप से तैयार एक सभा-भवन, प्रकाशन-भवन, मोटरों की मरम्मत करने और उन्हें रखने की इमारत, एक पौधाघर और एक सुअरशाला की व्यवस्था थी। संचार-भवन में एक रेडियो-केन्द्र और बिजली-उत्पादन की व्यवस्था थी, जिससे प्रत्येक निवासी के मकान में बिजली पहुँचायी जाती थी। एक झरने का विकास किया गया था और उसका पानी एक ढँके हुए जलाशय में ले जाया जाता था, जहाँ से वहाँ के निवासियों में पानी का वितरण होता था। समय-समय पर इस बात की जाँच भी की जाती थी कि पानी पीने के योग्य है। इंजीनियरों ने सिमुए नदी पर लट्ठों का एक पुल बनाया था, जिससे नगर और फार्म के बीच यातायात-सम्पर्क स्थापित होता था। बुलडोजरों ने फार्म के मध्य और पार्श्व में दो सड़कें भी तैयार की थीं। सम्भव है कि यह सूची पश्चिमी जगत के किसी शहरी निवासी को प्रभावित न कर सके, परन्तु फिलिपाइन्स के गाँवों के लिए तो यह एच. जी. वेल्स-द्वारा किये जानेवाले भावी संसार के वर्णन की तरह है।

कपाटागान के ही समान यहाँ भी प्रारम्भ की सबसे अधिक जटिल समस्या फार्मों के विभाजन को लेकर उठी। पहली बार की पैमाइश नक्शे के द्वारा हुई थी और उसमें २५५ फार्म-टुकड़ियों का अनुमान लगाया गया था। उस समय वास्तविक उपयोग-जन्य क्षेत्र पर बहुत कम ध्यान दिया गया था। फलतः बाद में यह प्रकट हुआ कि एक टुकड़ी तो सम्पूर्णतः पर्वतीय क्षेत्र

में पड़ती थी और दूसरी नदी की रेती पर। ऐसे क्षेत्र में जहाँ एक तीव्र प्रवाहमयी और चौड़ी नदी बहती हो तथा भूमि ऊबड़खाबड़ हो, भली प्रकार पैमाइश कर लेना अत्यन्त आवश्यक था। दुबारा पैमाइश का काम धीरे धीरे गतिशील हुआ; फलतः वहाँ बसे लोगों में अशान्ति पैदा हो गयी और वे असंतोष व्यक्त करने लगे। अब बार-बार कर्नल मीरासोल को भी शिकायतें सुनने के लिए बुलाना पड़ता था। जुलाई, १९५२ में वहाँ के निवासियों ने फार्म-अधिकारियों के विरुद्ध प्रदर्शन किया। अक्टूबर में, जब सेनाधिकारियों का साधारणतः स्थानांतरण होता है, मेजर वी. ओ. वैलिनोवा नया कार्य-प्रशासक बना। जिस समय उसने कार्य-भार सम्हाला, उस समय बहुत-से ऐसे लोग थे, जिन्हें कोई फार्म नहीं दिया गया था। बड़ी चतुरता और धैर्य से यह सैनिक, जो जनरल सैन्टोस के साथ युद्धपूर्व काल में मिन्डानाओ में [illegible] में काम कर चुका था और जो पारग-खाड़ी के पास, आक्रमण के समय, जापानियों से लड़ा था, समस्याओं की जाँच करने लगा और उनको हल करने की दिशा में अग्रसर होने लगा। परिणामतः शीघ्र ही सभी निवासियों को फार्म मिल गये और वे जमीन साफ करके फसल लगाने की तैयारी करने लगे।

जिस समय सेना ने 'एडकोर' (आर्थिक विकास सेना) की स्थापना की, उसने एक कार्यक्रम भी तैयार किया था, पर उसके लिए आवश्यक विशेष प्रशिक्षण अधिकारियों को बहुत कम प्राप्त हुआ था। ये समस्याएँ ऐसी थीं, जिनमें कृषि का ज्ञान आवश्यक था, परन्तु भूतपूर्व 'हुकों' के पुनर्वास के प्रमुख कार्य के लिए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विधियों से भी किंचित् परिचिति की आवश्यकता थी। कुछ अधिकारी तो प्रशिक्षित इंजीनियर और बाकी लास बनास के फिलिपाइन-विश्वविद्यालय के कृषि विभाग से उपाधि-प्राप्त थे। समाज-विज्ञान का प्रशिक्षण किसी को नहीं मिला था। अतएव मानवीय सम्बन्धों के क्षेत्र में उनके प्रयत्न और उनकी सफलताएँ एक नौसिखुए की भाँति थीं, जो अपने काम में लग कर अनुभव से ज्ञान-प्राप्ति की चेष्टा करता है।

वहाँ बसनेवालों का चुनाव मुख्यतः भूतपूर्व 'हुकों' और सेना के संदिग्ध आदमियों में से ही किया गया था। कोई भी व्यक्ति, जिसके विरुद्ध अपराध-जन्य कोई अभियोग न हो, 'एडकोर' में स्थान पाने के लिए आवेदन कर सकता था। सभी बसनेवाले स्वेच्छया आये थे; केवल उन्हीं लोगों को वहाँ स्थान दिया गया था, जिन्होंने इसके लिए इच्छा प्रकट की थी। यहाँ स्थान

पाने के लिए प्रार्थियों को १ पृष्ठ लम्बी प्रश्न-सूची भरनी पड़ती थी, जिसमें पुरानी नौकरी, शिक्षा, आयु, विवाह और आश्रितों के विषय में पूछा जाता था। 'एडकोर' का प्रशासक इस बात की खोजबीन नहीं करता था कि प्रार्थी कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य है या नहीं, अथवा उसने 'हुक' आन्दोलन में कैसा हिस्सा लिया था। ज़ोर तो एक ऐसे समुदाय के निर्माण पर दिया जाता था जिसमें अतीत को विस्मृत किया जा सके। ये आवेदन-पत्र या तो फिलिपाइन-सेना के क्षेत्रीय कमान्डरों द्वारा स्वीकृत होते थे अथवा मर्फी छावनी के प्रधान केन्द्र द्वारा। कुछ मामलों में आवेदन-पत्र सीधे सुरक्षा सचिव द्वारा स्वीकृत होते थे। 'एडकोर' फार्म में उन सभी आवेदन करनेवाले भूतपूर्व 'हुकों' और संदिग्ध लोगों को जगह दी गयी जो वहाँ स्थान पाने की योग्यता रखते थे।

अब इन दोनों बस्तियों में एक-एक सुदृढ़ समुदाय बसा है, जिसमें भूतपूर्व सैनिक, भूतपूर्व छापेमार और नागरिक शामिल हैं। इन सबको अन्य निवासियों के समान ही सुविधाएँ और अधिकार प्राप्त हैं और अपने समुदाय को वफादारी और अच्छी नागरिकता से सुदृढ़ बनाने के लिए ये चुने भी जाते हैं। इस समूह को हजारों प्रार्थियों में से बड़ी सतर्कता से चुना गया था। प्रार्थियों के लिए यह शर्त थी कि वह किसान हों परन्तु उसके पास अपनी जमीन नहीं हो; फिलिपाइन का निवासी हो और उसकी उम्र २१ वर्ष से कम न हो; विवाहित हो एवं फार्म का कठिन परिश्रम करने-योग्य उसका स्वास्थ्य हो। साथ ही, वह गणतांत्रिक सिद्धान्तों में श्रद्धा रखता हो और एक सुन्दर समाज के निर्माण में सहयोग करने का आकांक्षी हो। 'एडकोर' के प्रमुख अथवा उसके प्रतिनिधि से अवश्य ही उसे मुलाकात करनी चाहिये और मुलाकात के समय उसे अपने साथ सेना अथवा सरकारी डाक्टर का अच्छे स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र लाना चाहिये। उसे अपने सम्बन्ध में फिलिपाइन कान्स्टेबुलरी, स्थानीय पुलिस एजेन्सी, नगरपालिका के मेयर, न्यायाधीश या सैनिक सूचना-सेवा का भी प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना चाहिये। यदि मुलाकात सफल हुई, तो 'एडकोर' का प्रमुख इस बात की सिफारिश करता है कि प्रार्थी को स्वीकार कर लिया जाये। यह सिफारिश सैनिक प्रधान के पास जाती है, जो उसे सुरक्षा-सचिव के पास भेज देता है। वहीं अन्तिम स्वीकृति अथवा अस्वीकृति होती है। फिर सफल प्रार्थी, जो अपने-आप को आज तक एक बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी समझने लगता है, मिन्डानाओ जानेवाले आगामी समूह में सम्मिलित होकर जाता है। वहाँ वह

भूतपूर्व 'हुकों' के साथ रहता है और इस बात को प्रकट करने की चेष्टा करता है कि वह एक अच्छा किसान और पड़ोसी है।

सभी निवासी, चाहे वे पुराने 'हुक' हों अथवा नागरिक, फिलिपाइन की सशस्त्र सेना के साथ एक समझौतापत्र पर हस्ताक्षर करते हैं। सेना उसे दी गयी भूमि की प्रारम्भिक सफाई और जुताई में सहायता देने, निवास-क्षेत्र में मकान देने तथा फार्म के विकास के लिए आवश्यक जानवर, औज़ार और अन्न उधार दिलाने के लिए वचनबद्ध होती है। प्रत्येक निवासी का अलग हिसाब रखा जाता है। उसका मकान का वास्तविक मूल्य ही उससे लिया जाता है। यदि दीवालें 'निपा'-सामग्रियों की हों, तो लागत ३०६·३० पेसो (२ पेसो = १ डालर) बैठती है और यदि लकड़ी की हों तो ३५८·९० पेसो। औज़ार, गाड़ी और दूसरे सामान जो उसे दिये जाते हैं, उनका मूल्य भी उसके हिसाब में लिख दिया जाता है। जब तक वह स्वयं फसल तैयार नहीं कर लेता और आत्मनिर्भर नहीं बन जाता, तब तक उसे और उसके परिवार के पोषण के लिए चावल और दूसरी भोजन-सामग्री मिलती है। बिना किसी आश्रित के अकेले आदमी को १·२० पेसो प्रति दिन मिलता है। एक दम्पति को खाद्य सामग्रियों के रूप में दो पेसो तक दिये जा सकते हैं और दम्पति के साथ यदि ४ या अधिक आश्रित भी हों, तो अधिक-से-अधिक ३·५० पेसो तक दिये जाते हैं। यह सब उनके हिसाब में लिख दिया जाता है। जब विस्थापित अपनी फसल काटना आरम्भ करता है, तब वह सरकार को अपना कर्ज चुकाना आरम्भ कर सकता है। किन्तु जो रकम उसे उधार दी गयी है, उसको चुकाने के लिये उसकी फसल का आधे से अधिक भाग नहीं लिया जा सकता। व्यवहारतः उसके पास इतना धान अवश्य छोड़ दिया जाता है, जितना नयी फसल तक परिवार के खाने के लिए और दूसरी फसल के बीज के लिए पर्याप्त हो। इसके बाद जो बाकी बच रहे, वह रकम-अदायगी के लिए काम में लिया जा सकता है। इस व्यवस्था का अर्थ यह हुआ कि वहाँ बसनेवालों को आत्मनिर्भर होने तक बिना सूद के कर्ज मिलता है। वहाँ बसनेवाला समझौतापत्र में वादा करता है कि वह 'एड्कोर' फार्म-स्थित अपने निवासस्थान पर वर्ष में ३० दिन से अधिक अनुपस्थित नहीं रहेगा, समुदाय के नियमों का पालन करेगा और 'एड्कोर'-प्रशासन के सन्तोष के अनुरूप अपने फार्म को विकसित करेगा। वह इस बात का भी वादा करता है कि वह स्वयं ही फार्म का काम सम्हालेगा और किसी भी बन्दोबस्ती-प्रणाली

में भाग नहीं लेगा। लोक-भूमि-कानून के अंतर्गत नवनिवासियों को उनकी जमीन के लिए पट्टा तैयार कराने में मदद करने का सेना वचन देती है। यदि कर्ज-अदायगी से पहले पट्टा तैयार हो जाता है, तो उसकी जायदाद कर्ज के अदा होने तक रेहन हो जाती है। यदि समझौतापत्र की शर्तें पूरी होने से पूर्व ही नवनिवासी मर जाये या बीमार पड़ जाये और खेती करने योग्य न रहे, तो उसका उत्तराधिकारी अथवा उसका कोई भी सम्बन्धी उसकी जगह ले सकता है और अधिकारों एवं सुविधाओं का उपयोग कर सकता है, बशर्ते कि वह उसकी देनदारियों और वचनों का दायित्व ग्रहण करे। इस प्रकार, 'एडकोर' की उदारता व्यावहारिक सीमाओं से आवेष्टित है। यातायात, फार्म की देखभाल, सुरक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, पानी, रोशनी और इलाज जैसी सेवाएँ वहाँ निःशुल्क उपलब्ध हैं। शहरी भाग और फार्म-क्षेत्र भी निःशुल्क है। परन्तु अन्य सब बातों के लिए उन्हें अदायगी करनी होगी; क्योंकि सहकारिता-मूलक प्रयास के कारण उन पर उसका दायित्व है।

२१ अप्रैल, १९५३ को तीन अधिकारी और सेना के दो इंजिनीयर निर्माण-रत तीसरे 'एडकोर'-फार्म की प्रगति देखने के लिए आइज़ावेला प्रान्त को जा रहे थे। जो योजना मिंडानाओ में इतनी सफल हुई थी, उसी का प्रयोग 'हुकों' के मूल निवास-क्षेत्र के अधिक निकटस्थ लूज़न-नामक स्थान में होने जा रहा था। परन्तु मध्य लूज़न के मैदान और कागायान घाटी के बीच, पहाड़ी दर्रे में से होकर गुजरनेवाली चक्करदार सड़क से जब सैनिक जीप गुजर रही थी, तभी एक गुप्त हुक-अड्डे का शिकार हो गयी। सड़क के एक ओर से गोलियों की बौछार हुई और पाँचों आदमी अपनी जगहों पर बैठे-ही बैठे मृत्यु को प्राप्त हुए। एक रचनात्मक कार्यक्रम को कम्यूनिस्टों का यही उत्तर था।

जब तीसरी योजना के उद्घाटन की तारीख १८ जनवरी, १९५४ निश्चित हुई, तब सेना ने आइजाबेला प्रान्त के पड़ोसी गाँवों के लोगों को भी समारोह में भाग लेने के लिए बुलाने का निश्चय किया। चूँकि फार्म चौड़ी कागायान नदी के सुदूर क्षेत्र में और घनी अबादीवाले क्षेत्र से मीलों दूर था, भोजन और मनोरंजन का प्रबन्ध करनेवाले अधिकारियों ने केवल २०० अतिथियों के लिए ही तैयारियाँ कीं। लेकिन 'एडकोर' को जो ख्याति प्राप्त हो गयी थी और भूतपूर्व 'हुकों' के लिए सरकार क्या कर रही है, यह जानने को जनता कितनी उत्सुक थी, [illegible] गया ही नहीं था। उद्घाटन का समाचार देहाती क्षेत्रों में बड़ी तेजी से फैला। नियत दिन के प्रातःकाल से ही अतिथि आने

लगे। पुरुष, स्त्री और बच्चे-बच्चियाँ पैदल या गाड़ी, जीप और ट्रकों से वहाँ पहुँचे। वे ५० मील तक की दूरी से आये थे। नदी पार करनेवालों की भीड़ के कारण तट खचाखच भर गया। जितनी भी नावें और बेड़े उपलब्ध थे, उन सब से काम लिया गया। वहाँ जो अकेली मोटर लान्च थी, उसने इतने अधिक आदमियों को ढोया कि वह खतरनाक अवस्था में पहुँच गयी।

नये 'एडकोर'-नगर में लोग भर गये और कौतूहलपूर्वक लकड़ी के साफ-सुथरे मकानों एवं पानी और बिजली की व्यवस्था का निरीक्षण करने लगे। वे घुमावदार सड़कों पर पहले तो चक्कर लगाते रहे और तब कड़कती धूप में ही उद्घाटन-क्रिया देखने के लिए मंच के पास इकट्ठे हो गये। जिन सैनिक इंजिनियरों की हत्या कर दी गयी थी, उनके सम्मान मे एक स्मारक का निरावरण किया गया और नये योजना-क्षेत्र का नाम कप्तान रोके ए. परेडो के नाम पर 'परेडो एडकोर फार्म' रखा गया। पहले के दो फार्मों का नया नामकरण पहले ही हो चुका था। बुल्डोन के फार्म का नाम लेफ्टिनैन्ट कार्लस ए. गल्येगो की स्मृति में 'गल्येगो एडकोर फार्म' रखा गया था और कपटागान योजना को मेजर पैब्लो वी. अरेवालो के नाम पर 'अरेवालो एडकोर फार्म' नाम दिया गया था। इस प्रकार उस दुर्घटना को सम्मान के रूप में परिवर्तित कर दिया गया, जो कम्यूनिज्म के साथ एक नये ढंग के संघर्ष में शहीद होनेवाले उन व्यक्तियों के साथ घटी थी।

भाषणों के बाद भोजनालय में प्रवेश के लिए बुरी तरह रेल-पेल मची। वहाँ दो सौ आदमियों के लिए तैयार भोजन में हिस्सा बँटाने के लिए लगभग २ हजार से भी अधिक आदमी टूट पड़े। ब्रिगेडियर जनरल बलाव, जो छः फीट लम्बा और समारोह का सम्मानित अतिथि था, उनके बीच में स्पष्ट नजर आ रहा था। इस रेल-पेल में उसे भी अपना प्लेट सम्भलने में कठिनाई हो रही थी। इस अवसर पर चौड़ी किनारी की चटाईनुमा टोपी पहने एक फिलिपाइनी ने मजाक में—किन्तु क्षमा-याचना के भाव से नहीं—एक अमरीकी आगंतुक से कहा भी—"अरे भाई, अन्दर घुसो और खाने को कुछ निकाल लाओ। चुपचाप खड़े रहने से कोई लाभ नहीं है। यह हमारा नया गणतंत्र है। यहाँ कोई भी किसी से उत्कृष्ट या निकृष्ट नहीं हैं।" फिलिपाइन-द्वारा प्राप्त की गयी सफलता की प्रशंसा इससे अच्छे ढंग से नहीं की जा सकती थी। सरकार जनता के पास आयी हुई थी और जनता ने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया था। 'एडकोर' गणतन्त्र का एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक बन गया था।

अध्याय ४

नवनिवासी

जब फिलिपाइन में युद्ध छिड़ा तब फ्रेड्रिको बालूयाब पंपाङ्गा में तीन हेक्टर के एक छोटे धान के फार्म पर अपने पिता की सहायता किया करता था। वे काश्तकार थे और मात्र अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए ही उन्हें संघर्ष करते रहना पड़ा था। परिपाटी के अनुसार फसल का आधा भाग जमींदार के पास चला जाता था। जब अपने भाग में आयी पैदावार से परिवार का पोषण कर सकना सम्भव नहीं होता था, तब बालूयाब जमींदार से ऋण लेता था, जो बड़ी मुस्तैदी से २०० प्रतिशत व्याज के साथ ऋण की रकम फसल कटते समय वसूल कर लेता था। फलतः परिवार ऋण-भार से दबता ही गया। उन्होंने सरकारी सहायता के बारे में कभी सोचा भी नहीं; क्योंकि उनकी दृष्टि में सरकार जमींदारों द्वारा ही चलायी जाती थी।

इसके बाद जापानी आये। वे बड़े कठोर थे। शहर के पास सन्तरियों को सलाम न करने की भूल पर बालूयाब को उन्होंने दो दिनों तक धूप में बैठाया था। जब उसने सड़क से ४ किलोमीटर (ढाई मील) दूर अपने सम्बन्धियों से मिलने के लिए 'पास' माँगा था, तो उसे उद्दण्ड होने के अपराध में थप्पड़ मारे गये थे। बालूयाब जापानियों को कभी नहीं समझ सका। हाँ, उन लोगों द्वारा जीवन भार बना दिये जाने के प्रति उसके मन में विद्रोह सदैव रहा। इसीलिए जब उसके मित्र और चचेरे भाई ने 'हुकबालाहैप' गुरिल्लादल में सम्मिलित होने के लिए उससे कहा, तो उसने बिना झिझक के वैसा किया।

वह घटना सन् १९४३ की थी। १९४५ में जब युद्ध समाप्त हुआ, तब बालूयाब, जो स्क्वैड्रन कमान्डर 'ईगल' बन चुका था, 'हुकों' के साथ ही था। लेकिन उस समय अवस्था ठीक नहीं थी। अमरीकी सेना ने 'हुकों' की कुछ टुकड़ियों को तो मान्यता दे दी थी, लेकिन कुछ को जबर्दस्ती निःशस्त्र कर दिया था और उनके नेताओं को कारावास में डाल दिया गया था। जहाँ 'हुक' अधिकतर रहते थे, उन गाँवों के लोगों को रोक्सास सरकार के सिपाही आतंकित करते थे। बालूयाब ने अनुभव किया कि नयी सरकार जापानी सरकार से भी

अधिक आततायी है। जो सरकार गाँवों में हमारे आदमियों की मारकाट को बन्द करने का कोई उपाय नहीं करती, उसके प्रति कोई वफादार कैसे रह सकता है? उसने अनुमान लगाया कि सरकार को उलटने और फिलिपाइनों में समानता लाने के 'हुकों' के उद्देश्य ठीक ही होंगे।

१९४७ में जब उसकी नियुक्ति जाम्बेल्स में विस्तारवादी आन्दोलन के लिए हुई, तब बालूयाब को पता चला कि 'हुक' संगठन कम्यूनिस्टों-द्वारा संचालित है। अभी तक उसने बिना किसी झिझक के देशानुराग का काम समझ कर यह सब किया था; किन्तु जब मार्क्सवादी सिद्धान्त और कम्यूनिस्ट-कार्यप्रणाली का अध्ययन करने के लिए बैठकें बुलायी जाने लगीं, तब उसका उत्साह ठंडा पड़ने लगा। निर्धनों के अधिकारों के लिए लड़ना एक बात थी और अपने को कम्यूनिस्ट-पार्टी के नियमों में बाँध कर रखना नितान्त दूसरी बात। किन्तु बालूयाब इस आन्दोलन में इतना अधिक उलझ चुका था कि अब इस स्थिति में उसे छोड़ सकना बहुत कठिन था।

एक वर्ष बाद, सेना और 'हुकों' के बीच हुए संघर्ष में बालूयाब की टुकड़ी बड़ी सेना से अलग हो गयी। वह अपने पच्चीस आदमियों को साथ लेकर पहाड़ी मार्ग से टारलक के लिए रवाना हुआ। यह यात्रा क्षीण उत्साह और कम रसद के साथ आरम्भ हुई थी एवं भयानक रूप से लम्बी और कठिन थी। बहुत-से आदमी तो रास्ते में ही भूख और थकावट के कारण मर गये। टारलक में इस दल की सेना से फिर मुठभेड़ हो गई और बालूयाब घायल हो गया। फिर वह किसी भाँति मनीला पहुँचा, जहाँ कुछ दिनों में उसकी हालत सुधर गई और तब वह शहर में ही पार्टी का काम करने लगा। एक दिन उसके एक चचेरे भाई ने उसे पहाड़ों में वापिस लौट जाने के लिए उकसाया। जब वे लौट रहे थे, तब रास्ते में सेना के गश्ती-दस्ते ने उन्हें पहचान लिया और गोला-बारी आरम्भ कर दी, जिसके परिणामस्वरूप भाई तो मारा गया, लेकिन बालूयाब किसी तरह भाग निकला।

मनीला लौटने पर बालूयाब के एक साले ने उसे 'एडकोर' के विषय में बतलाया। बालूयाब ने बाद में बतलाया—"कुछ दिनों तक तो मैं शान्तिपूर्ण जीवन और अपनी जमीन की कल्पना में ही खोया रहा। मैं इसे अस्वीकार नहीं कर सकता था; अतः मैंने कैम्प मर्फी जा कर आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सिपाहियों ने मेरे साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि मैग्सेसे-द्वारा

ही सेना में वह परिवर्तन लाया गया था। 'एडकोर' के विषय में जानकारी मिलने पर और भी बहुत-से 'हुक' आत्मसमर्पण करेंगे।"

'एडकोर' में बालूयाब की भाँति ही बहुत-से पुराने 'हुक' हैं। वे दृढ़-विश्वासी और आदर्शवादी व्यक्ति थे, जो युद्ध के दिनों में उस आन्दोलन में दो कारणों से सम्मिलित हुए—पहला, जापानियों के प्रति घृणा और दूसर जमींदारों द्वारा अन्याय की भावना। युद्ध के बाद से खुले एवं विशाल कम्यू-निस्ट विद्रोह के बीच तक जो कुछ हुआ, वह उन्हें पसन्द नहीं था। कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों की सूक्ष्मताओं का इस व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा; क्योंकि उसने कुछ ही वर्षों तक शिक्षा ग्रहण की थी। फिर भी जब तक वह एक सक्रिय क्रान्तिकारी रहा, एक चतुर और कृतसंकल्प विरोधी बना रहा।

वर्जिलिओ पंगनीबान, 'हुकों' में सम्मिलित होने से पूर्व, अमरीकी मुहल्लों में काम करनेवाले मोची के सदृश पेशेवाला एक फिलिपाइनी था—साथ ही, ग्राम-स्तर का नौसिखुआ राजनीतिज्ञ भी। चावल की खेती के मौसम में, जो लगभग आधे वर्ष तक रहता है, वह पाँच हेक्टर के एक भाड़े के प्लाट पर किसान के रूप में काम करता था और फसल कटने के बाद फेरीवालों के साथ हो जाता था। इस पेशे के साथ-साथ स्थानीय राजनीति में भी वह थोड़ा-बहुत हिस्सा लेता था।

सन् १९४६ के अभियान में पंगनीबान ने राष्ट्रपति आस्मेना और राष्ट्र-वादी दल के लिए बड़े परिश्रम से काम किया। चुनाव के समाप्त होते ही, विजेता उदार दल वाले अपने राष्ट्रवादी विरोधियों को परेशान करने लगे। फिर भी पंगनीबान एक वर्ष तक अपनी जगह पर डँटा रहा। और सन् १९४७ में नगरपति के स्थानीय निर्वाचन में वह राष्ट्रवादी उम्मीदवार का प्रचार-व्यवस्थापक बना। इस चुनाव में भी उसका उम्मीदवार असफल रहा। अब विजेता-दल की ओर से हिंसा-प्रयोग की आशंका से उसने शहर छोड़ दिया और अपने फार्म को लौट गया। किन्तु विजेताओं की उस पर नजर तो पड़ ही चुकी थी; अतः दूसरे वर्ष उसकी २६० बोरे धान की फसल नागरिक रक्षादल-द्वारा ज़ब्त कर ली गयी। यह दल जमींदारों और उदार-दल के नेताओं के आदेशों पर चलनेवाला एक सशस्त्र निजी पुलिस-संगठन था। अब उसे इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि सत्तारूढ़ दल के विरुद्ध राजनैतिक कार्यवाही करना बेकार है और अब उसे शांतिपूर्वक

खेती करने का अवसर नहीं दिया जायगा। साथ ही, यह सोच कर कि उसका जीवन संकट में है, वह 'हुकों' के समीपतम मुख्य कार्यालय पहुँचा। उस दल में उसके बहुत-से मित्र पहले ही सम्मिलित हो चुके थे। 'हुकों' ने उसे एक बन्दूक दी और शत्रुओं से रक्षा करने का भरोसा दिलाया।

पंगनीबान स्वभावतः ही नेता है। वह छः फुट लम्बा एक तगड़ा व्यक्ति है, उसके पैर चौड़े हैं और नंगे पाँव ही धान के खेतों में हल जोतने के कारण काफी सशक्त। वह इस तरह सीधा तन कर खड़ा होता है, मानो जंगल में महोगनी का वृक्ष खड़ा हो। उसकी आँखें बड़ी स्थिर रहती हैं और उच्चाधिकारियों के सामने घबड़ातीं नहीं। यद्यपि उसने कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की है, फिर भी वह फिलिपाइन की तीन बोलियाँ बेधड़क बोल सकता है। उसके मुँह से शब्द स्पष्ट और तीव्र गति से निकलते हैं। एक 'हुक' स्क्वाड्रन के सेनापति के रूप में वह 'काला आतंक' के नाम से विख्यात हुआ।

नवम्बर, १९५० में एक दिन 'काला आतंक' और उसके साथी एक दूरस्थ गाँव में जा रहे थे, जब मार्ग में उन्हें सेना का एक गश्ती-दल मिला। रक्षा के साधन तो बहुत कम थे, किन्तु दोनों ही दल एक-दूसरे को गोलियों से भून डालने को कृतसंकल्प थे। पंगनीबान ·४५ कैलिबर का पिस्तौल चला रहा था। अकस्मात् जैसे ही उसका हाथ ऊपर उठा, बंदूक से चलायी गयी एक गोली उसके कन्धे में आकर लगी। गोली काँख में लगी और बाँह के ऊपर से निकल गई। खून से लथपथ और असहाय होकर वह किसी तरह झाड़ी में जा कर छिप गया। दूसरे लोग तितर-बितर हो गए—उन्हें पता नहीं था कि उनके नेता के साथ क्या बीती। अंत में, दूसरे दिन, बुखार में तलफल, अकेले ही, उसने सिपाहियों के पास जाकर आत्म-समर्पण कर दिया।

सेना के अधीन रहते हुए ही पंगनीबान ने 'एडकोर' नाम सुना और वहाँ जाने की इच्छा प्रगट की। पहले-पहल बुल्डोन पहुँचने और वहाँ बसनेवालों में वह भी था। उस नये नगर का वही प्रथम मेयर भी चुना गया। अभी वह एक पुत्र का पिता है, पी० टी० ए० का सक्रिय सदस्य है तथा एक आदर्श नागरिक है। कम्यूनिज्म ने मानवता के इस रत्न का उपयोग तो किया; किन्तु जब गणतांत्रिक समाज में उसे वास्तविक अवसर सुलभ कर दिये गये, तब उसकी भक्ति कम्यूनिज्म के प्रति एकदम नहीं रह गयी।

सार्टेरो वाल्डेस का स्वभाव तो क्रोधी है, परन्तु बुद्धि बड़ी तीव्र। हाईस्कूल

आयु का यह नवयुवक १९४३ में यूसेफ (यूनाइटेड स्टेट्स आर्म्ड फोर्सेज़ इन दि फ़ार ईस्ट अथवा सुदूर पूर्व में अमेरिका की सशस्त्र सेना) की गुरिल्ला (छापामार) टुकड़ी में सम्मिलित हुआ और १९४६ में युद्ध की समाप्ति पर उसे कार्यमुक्त कर दिया गया। फिर उसने अपनी हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी की, विवाह किया और जूते के एक छोटे-से कारखाने में काम करने लगा।

दो वर्ष बाद उसकी कमाई बहुत कम ही थी, चीजें महँगी थीं और उसे मोची के धन्धे में कुछ अच्छा भविष्य नहीं मालूम पड़ रहा था। एक मित्र ने उससे 'हुकों' में शामिल हो जाने के लिए कहा। किसी अच्छे काम के मिलने की उम्मीद न होने के कारण उसने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। 'हुकों' ने उसे लैगुना प्रान्त के सियरा माद्रे पर्वतों में स्थित स्टालिन के एजेंट के रूप में कार्य करनेवाले अपने एक शाखा-कार्यालय में भेज दिया। वहाँ उसके एक भूतपूर्व अमरीकी जी० आई० विलियम पामेराय के अधीन रह कर कम्यूनिस्ट-सिद्धान्तों का अध्ययन किया। विलियम पामेराय ने फिलिपाइन लौट कर एक फिलिपाइनी लड़की से विवाह किया था, [illegible] में पुनः पढ़ाई शुरू की थी और अंत में 'हुकों' का मार्ग-निर्देशन करनेवाली कम्यूनिस्ट-पार्टी का एक प्रमुख सदस्य बन गया था।

वाल्डेस 'हुकों' में इसलिए सम्मिलित हुआ था कि वह मजदूरों की आमदनी में वृद्धि और कृषकों को भूमि प्राप्त करने के कार्यक्रम में दिलचस्पी लेता था। 'हुकों' के बीच जाकर और कम्यूनिज्म के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के बाद उसने सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में एक नये गणतंत्र का स्वप्न देखा था—एक ऐसा गणतंत्र, जो सबको समानता और निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर सके। उसके देश में क्या-क्या गड़बड़ियाँ थीं, यह सब उसे समझाया गया। पामेराय ने उसे समझाया था कि फिलिपाइन में सारी बुराइयाँ पूँजीवादी प्रणाली से, जो कि निर्दोष फिलिपाइनों पर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने लाद रखी है, उत्पन्न हुई हैं। इन विचारों के विषय में संदेह प्रकट करने के बौद्धिक साधन न होने के कारण बेचारे नवयुवक ने उन्हें ही सच मान लिया।

सैद्धान्तिक शिक्षा की अवधि समाप्त होने के बाद वाल्डेस सप्लाई-अफसर बन कर गुप्त रूप से मनीला वापस आ गया। सितम्बर, १९५१ की एक रात को वह बड़ी सतर्कता से पत्थर के स्मारकों से होकर चीनी कब्रिस्तान में एक गुप्त मिलन-स्थल तक पहुँचा। लेकिन वहाँ जिस 'विश्वस्त' अफसर से उसे मिलना था, उससे नहीं, बल्कि एक गुप्तचर से सामना हो गया। सिपाहियों और

सैनिक गुप्तचरों ने उसे घेर लिया और बन्दी बना लिया। जब बाल्डेस को कैम्प मर्फी में उसके विरुद्ध प्राप्त प्रमाणों की फाइल दिखायी गयी, तब उसने स्वीकार किया कि वह मनीला में 'हुक' षड्यंत्र का एक अंश था।

वाल्डेस ने कहा, "सेना ने मेरे साथ दुर्व्यवहार नहीं किया। मुझ से क्लेश देकर अपराध नहीं स्वीकार करवाया गया। कुछ सप्ताह बाद मुझे 'एडकोर' आने का अवसर दिया गया और मैंने आने की स्वीकृति दे दी। बन्दी होने से पहले ही हमने मनीला कमान्ड में 'एडकोर' के विषय में चर्चा की थी। हमने सोचा था कि यह भी हमें नज़रबन्द बनाने की एक चाल थी; इसलिए हमने एडकोर के कारण आत्म-समर्पण न करने का निश्चय किया था।" बाद में जब वाल्डेस ने कपाटागान 'एडकोर' फार्म के सुन्दर जीवन के विषय में अपने परिवार को पत्र लिखा, तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। उसके पिता और भाई उतनी दूर चल कर यह देखने को मिंडानाओ पहुँचे कि कहीं यह भी कोई सैनिक शिविर तो नहीं था।

वाल्डेस 'एडकोर' फार्म की व्यवस्था से पूर्णरूपेण सन्तुष्ट नहीं है। उसकी कुछ शिकायतें हैं—"हम समझते थे कि हमें निःशुल्क भोजन मिलेगा। हम अपने पास से ये सब बकाये नहीं चुका सकते। यहाँ के असली भूतपूर्व हुकों का यही खयाल है। हमें इस बात की चिन्ता नहीं कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं, परन्तु हम भूतपूर्व हुकों का विश्वास है कि हम निःशुल्क भोजन पाने के अधिकारी हैं।' वाल्डेस उन थोड़े-से निवासियों में से है, जिनकी कम्यूनिस्ट-सिद्धान्त की ओर लगन 'एडकोर' समुदाय में पूर्ण रूप से उनके घुलमिल जाने में बाधक है। ये मुट्ठी-भर आदमी अपने को 'असली भूतपूर्व हुक' बतलाते हैं और अपने को अन्य निवासियों से अलग और उनकी तुलना में श्रेष्ठ मानते हैं। फिर भी वे उत्पात मचानेवाले नहीं हैं; फार्म-स्थित उनका रिकार्ड अच्छा है। किसी आदमी के आधारभूत विश्वास को आमूल बदलने के लिए दो वर्ष का समय बहुत कम है। पर्याप्त समय मिलने पर स्वस्थ गणतंत्र की स्वच्छन्द वायु साम्यवाद के ठोस-से-ठोस सिद्धान्त को भी उड़ा दे सकती है।

मैनुअल पाडुआ एक सुन्दर आदर्शवादी नवयुवक है। उसकी तीव्र अभिलाषा कालेज में भर्ती होने और वकील बनने की है। जब वह हाईस्कूल में ही पढ़ रहा था, तभी वह पनाय द्वीप में स्थित इलाइलो प्रान्त में 'गणतांत्रिक कृषक और श्रमिक संघ' का पहले तो सदस्य और बाद में संयोजक बन गया।

इस संघ का प्रमुख जोस नावा था, जो बाद में साम्यवादी होने के नाते हत्या के षडयन्त्र में अपराधी प्रमाणित हुआ था और उसे आजीवन कारावास का दण्ड मिला था। समय-समय पर लूज़न से आनेवाले कैपेडोशिया, डेल कैस्टिलो, और परैसो-जैसे 'हुकों' के सुपरिचित कम्यूनिस्ट-नेता संघ के सदस्यों के समक्ष भाषण करते थे। वे इसे लेकर ५ सदस्यों तक के कम्यूनिस्ट-गिरोह भी सदस्यों संगठित करते थे।

१९४९ के चुनावों के बाद कैपेडोशिया पनाय में 'हुक'-संगठन को विस्तृत करने और सरकार के विरुद्ध खुला विद्रोह आरम्भ करने के लिए स्थाई रूप से नियुक्त होकर आया। एक-एक करके उसने अपने सहायक छाँटे और उन्हें क्रान्तिकारी चालों की शिक्षा दी। इलाइलो के पास एक गाँव में एक दिन पाडुआ से बातचीत करते हुए उसने कहा—"फिलिपाइन में कानूनी संघर्ष अब फलदायी नहीं रहा। तुम अवश्य ही पहाड़ी-क्षेत्र में आकर हमारे साथ हो जाओ और लड़ाई में हाथ बँटाओ।" इस प्रकार नवयुवक पाडुआ को सक्रिय कम्यूनिस्ट—विद्रोह में घसीटा गया।

उसे सबसे पहले एक 'हुक'-स्कूल में, जहाँ कैपेडोशिया शिक्षक था, भाषण सुनने का काम सौंपा गया। सुधार का एक कार्यक्रम भी तैयार किया गया। 'हुको'ने भूमिविहीनों को भूमि, निःशुल्क प्राथमिक और हाई स्कूली शिक्षा, बेकारों को काम एवं निःशुल्क दवा देने तथा अस्पताल की व्यवस्था करने के वायदे किये, जो पाडुआ जैसे आदर्शवादी जवान के लिए बहुत ही आकर्षक थे। अपने आकर्षक व्यक्तित्व और बौद्धिक योग्यता के कारण वह शीघ्र ही योग्य नेता मान लिया गया। कैपेडोशिया ने उसे निग्रो-द्वीप में विस्तार-सेनाओं के साथ भेजा; लेकिन काम थोड़ा ही आगे बढ़ पाया होगा कि वह बीमार पड़ गया और पकड़ लिया गया।

चूँकि पाडुआ के विरुद्ध कोई अपराधमूलक अभियोग नहीं था, वह 'एडकोर' आने का अधिकारी था। वह बुल्डोन में सर्वप्रथम बसने के लिए आये लोगों के साथ आया और अब वह बड़ा मेहनती एवं आदर्श नागरिक बन गया है। नए जीवन की प्रशंसा में उसने 'नव यौवन की भूमि'-शीर्षक एक लेख बुल्डोन के 'एडकोर'-फार्म की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर प्रकाशित बुलेटिन में लिखा। अधिक भ्रान्त होने से पहले ही नवयुवक पाडुआ का सम्बन्ध 'हुकों से' तोड़ दिया गया था। यद्यपि उसने कम्यूनिस्ट-पार्टी के कार्यों तथा पनाय और नीग्रोस के 'हुक'-अभियान में बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग लिया

था, तथापि उसका आदर्शवाद, कम्यूनिस्ट-सिद्धान्तों से कभी संकीर्ण नहीं हुआ। तीक्ष्ण और सुसन्तुलित बुद्धि तथा सुन्दर यौवन-सम्पन्न पाडुआ ने 'एड्कोर' द्वारा प्रदान किये गये अवसरों का पूरा लाभ उठाया।

'एडकोर'-बस्तियों के निवासियों में लगभग ६१ प्रतिशत भूतपूर्व 'हुक' हैं, जिनकी कहानियाँ अधिकतर वैसी ही हैं, जैसी हम ऊपर कह आये हैं। उनमें से कुछ उस आन्दोलन में सहायक थे। वे लोग या तो रसद ले जानेवाले हरकारे थे या आंदोलन का समर्थन करनेवाले कृषक-संघ, पी. के. एम., से सम्बंधित थे। आर्टिमियो मोरेल्स की कहानी से पता चलता है कि 'हुकों' से केवल सहयोग करनेवाले किसी व्यक्ति के साथ क्या बीती।

१९४६ और १९५१ के बीच मोरेल्स उस क्षेत्र के एक फार्म का ओवरसीयर था, जहां 'हुक' लोग प्रायः आते-जाते थे। वे सशस्त्र गिरोहों में आकर रुकते थे और खाना मॉगते थे। चूँकि वे लोग सशस्त्र होते थे, मोरेल्स उनकी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कर पाता था—विशेषकर उनके यह कहने पर कि उसके पास तो काफी वस्तुएँ हैं, पर उनके पास खाने को कुछ भी नहीं है और वे भूखे हैं, उसे दया आ जाती। उसने कहा—"मुझे उन पर दया आती थी; इसीलिए मैं उन्हें भोजन दे दिया करता था।"

'हुकों' ने मोरेल्स से कभी भी अपने में मिल जाने के लिए नहीं कहा, किन्तु वह उनके प्रचारों को सुनता था और समानता का उनका विचार उसे पसन्द भी आता था। 'हुकों' ने वचन दिया था कि यदि धनी और निर्धन का भेद पूर्णतः मिट जायेगा, तो प्रत्येक किसान के पास अपनी निजी भूमि होगी।

अंततः सेना के पास यह समाचार पहुँचा कि मोरेल्स 'हुकों' को भोजन देता है। अतएव एक दिन प्रातःकाल जब वह कलेवा कर रहा था, सेना के आदमी गाड़ी में आये और उसे कैम्प ओर्ड स्थित निकटतम नजरबन्दी केंद्र पर ले गये। उसने वहाँ सफाई दी कि वह हुक नहीं है, किन्तु उसकी सफाई प्रभावकारी साबित नहीं हुई। प्रश्नकर्त्ताओं ने उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी और उसकी पिटाई की। सेना के बाड़े में तीन महीने रह कर उसने परिवार-सहित 'एडकोर' ले जाये जाने की इच्छा व्यक्त की; क्योंकि उसने देखा कि अब अपने पुराने घर वापिस पहुँचने की कोई सम्भवना नहीं है।

कपटागान बस्ती में दो फसलें उपजाने के बाद अब मोरेल्स बिना किसी सरकारी सहायता के अपने परिवार का पोषण करने में समर्थ हैं। उसका ८

हेक्टर का फार्म उद्योग और सुचिंतित योजना का नमूना है। अपने सम्बंधियों की सहायता से, जिन्हें उसने फार्म पर ही रखा है और लगभग १००० पेसो के खर्च से, जो उसने पहले बचाये थे, वह अब पटुआ और धान की फसल उपजाता है, जिससे उसे वर्ष-भर में १२,००० पेसो तक की आमदनी हो सकती है। कौटुम्बिक श्रम और निजी पूँजी बहुत-से नवस्थापितों को नहीं मिल पाती है, किन्तु मोरेल्स ने प्रमाणित कर दिया है कि भूमि से क्या-क्या लाभ उठाये जा सकते हैं। वह कहता है कि उसके पास अभी भी मवेशी और हल नहीं है। उसका फार्म हाथ के परिश्रम का एक नमूना-स्वरूप है।

छानबीन करने पर पता चला कि लगभग १९ प्रतिशत निवासी, जो भूतपूर्व 'हुकों' की श्रेणी में डाले गये थे, बिल्कुल ही भूतपूर्व हुक नहीं थे। कुछ ऐसी परिस्थितियों और सन्देह के जाल में फँस गए थे कि सेना के साथ उनके सम्बन्ध बुरे हो गये। वास्तव में उन्हें 'संदिग्ध' ही समझना चाहिये। इस वर्ग के बारे में दो दृष्टान्तों से स्थिति कुछ स्पष्ट हो जायगी।

सिम्पिलिसियो हिलैरियो १९४७ में नागरिक रक्षा-दल में सम्मिलित हुआ। असन्तुष्ट लोगों से बागानों की रक्षा के लिए यह जमींदारों-द्वारा आयोजित एक संगठन था। हिलैरिया १९५० में कार्यमुक्त कर दिया गया। अपने श्वसुर के एक पत्र से प्रभावित होकर उसने टारलक प्रान्त के एक गाँव में अपने परिवार के फार्म पर काम करने का निश्चय किया। अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचते ही उसे एक पुलिस के आदमी और एक सफेदपोश व्यक्ति ने हिरासत में ले लिया। उस समाज के लिए वह अजनबी था; उसे 'हुक' समझा जाने लगा और इस बात का तो सबसे अधिक सन्देह किया जाने लगा कि उसने मकाबुलस पर हुए खूनी हमले में भाग लिया था, जो टारलक तथा नगर की सीमा पर स्थित पुलिस चौकी पर हुआ एक बड़ा शरारतपूर्ण 'हुक'-आक्रमण माना जाता था। दुर्भाग्य से अपने श्वसुर का पत्र वह न्यूवाइकीजा में ही छोड़ आया था। पुलिस उसे इस प्रमाण को लाने और अपने आगमन का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए छोड़ने को तैयार नहीं थी। न ही वह उसके सम्बधियों की बातें सुनने को तैयार थी, जो उसकी निर्दोषिता सिद्ध करना चाहते थे। वे एक हुक 'संदिग्ध' को हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। अतः हिलैरियो को कैम्प मर्फी के 'नजर-बन्दी केन्द्र' में भेज दिया गया, जहाँ उसने 'एडकोर' के विषय में सुना और मिन्डानाओ जाने की इच्छा प्रकट की।

हिलैरियो का कहना है कि उसने कभी किसी 'हुक' को नहीं देखा या किसी 'हुक' से इतना परिचय नहीं बढ़ाया कि उससे मिलकर बातचीत करे। सम्भवतः अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने के लिए यह उसकी अतिरंजित उक्ति है। कोई व्यक्ति विद्रोही लोगों से निकट सम्पर्क बनाये बिना, शायद ही 'हुकलैंडिया' के मध्य में वर्षों तक रह कर नागरिक रक्षा-दल के सदस्य के रूप में 'हुकों' से लड़ता रहे, यह बात बड़ी कठिन-सी प्रतीत होगी है। हिलैरियो प्रायः धंधा और स्थान बदलता रहता था। और इसी से सन्देहात्मक परिस्थितियों में पकड़ा गया। वह 'हुकों' अथवा सरकार किसी के भी प्रति वफादारी नहीं दिखाता। 'एडकोर'-निवासी के रूप में उसका रिकार्ड भी मामूली है। दूसरे निवासियों की भाँति अपनी भूमि को विकसित करने के लिए दिये गये अवसरों का लाभ उठाने के बजाय, हिलैरियो की यह शिकायत रही कि वह और उसकी पत्नी अकेले हैं। जैसे-जैसे मौसम बीतता है, वह इस बात की प्रतीक्षा करता है कि सरकार उसको रुपया दे, ताकि वह अपने पिता को फार्म पर सहायता पहुँचाने के लिए मिंडानाओ बुला सके। सरकार को ऐसे भगोड़ों को आत्मनिर्भर किसान बनाने में उतनी ही कठिनाई होती है, जितनी कि पुराने हुकों को वफादार नागरिक बनाने में।

फैलिक्स ओकैम्पो लागुना प्रान्त के सैन पाब्लो नगर में नारियल तोड़ने का काम करता था। एक रात जब वह काम पर से लौटा, तो उसे मालूम हुआ कि सिपाही उसे ढूँढ़ने आये थे। अतः कपड़े बदलकर, वह 'टैलियन कम्बैट टीम' के समीपतम सदर मुकाम पहुँचा। गुप्तचरों ने उससे प्रश्न किये और उससे यह कहलवाना चाहा कि वह 'हुकों' से सम्बंधित है। किंतु जब बार-बार की गयी पिटाई विफल सिद्ध हुई, तो उसे छोड़ दिया गया।

चार दिन बाद उसकी माँ ने सूचना दी कि सिपाही फिर फैलिक्स की तलाश में हैं। वह फिर सेना के सदर मुकाम गया, जहाँ उसे स्वीकारोक्ति के लिए आदेश दिया गया। इस बार काफी पिटाई के बाद, प्रश्न-कर्ताओं ने एक नये प्रकार के दण्ड का प्रयोग किया जिसे 'हवा पर बैठना' कहते हैं। इसमें फैलिक्स को बरबस तब तक भयानक कष्टदायक आधी झुकी हुई स्थिति में खड़ा रहना पड़ा, जब तक कि वह थक कर भूमि पर गिर न गया। यह सब करने के बाद भी जब उसने अपराध-स्वीकृति नहीं की, तब उसे सेना के बाड़े में रखा दिया गया। कुछ महीने बाद जब उसने 'एडकोर' के विषय में सुना, उसने स्वेच्छा से वहाँ जाकर रहने की इच्छा व्यक्त की।

सेना-द्वारा ओकैम्पो से स्वीकारोक्ति कराने के प्रयत्नों के पीछे सन्देहात्मक परिस्थितियों का एक लम्बा क्रम था। यह सब तब हुआ, जब ओकैम्पो ने एक धनी पड़ोसी-परिवार के साथ निर्दोष-भाव से ही मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस परिवार के ३८ वर्षीय प्रमुख को 'हुक' लोग अपहृत कर ले गये थे और धन प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे रोक रखा था। निराश होकर उसके परिवार ने ओकैम्पो से 'हुकों' से सम्पर्क स्थापित कराने में सहायता माँगी; क्योंकि फैलिक्स गाँव के बाहर नारियल तोड़ने का काम करने के कारण जानता था कि 'हुक' किन-किन मार्गों से गुजरते हैं। फैलिक्स और अपहृत व्यक्ति का भाई, दोनों एक सम्भाव्य स्थान पर गये और प्रतीक्षा करने लगे। शीघ्र ही उस रास्ते से सिपाही के कपड़े पहने हुए एक आदमी निकला, जो बाद में 'हुक' साबित हुआ। दोनों व्यक्तियों से बातचीत के क्रम में उसने अपना उद्देश्य बताया और १२,००० पेसो उस व्यक्ति की रिहाई के ऐवज में माँगे। रकम उसे प्रत्यक्ष रूप से ही दे दी गयी और अपहृत व्यक्ति को छोड़ दिया गया। किन्तु लोगों में यह आशंका बड़ी जल्दी पैदा हो गयी कि युवक फैलिक्स एक निर्दोष दर्शक के रूप में ही सही, 'हुकों' और उनकी गतिविधियों के बारे में बहुत-कुछ जानता था। यह एक युद्ध था—एक निकृष्ट कोटि का गृह-युद्ध जहाँ दोस्त और दुश्मन को पहचानना कठिन था। राष्ट्रपति की घोषणा के अनुसार [illegible] वाले क्षेत्रों में न्यायालय में अपराधी का मामला लाने सम्बन्धी कानून के स्थगित कर दिये जाने के कारण मामूली-से सन्देह के कारण भी किसी आदमी को रोका जा सकता था। इस प्रकार फैलिक्स ओकैम्पो एक 'संदिग्ध' व्यक्ति माना गया और अन्त में 'एडकोर' का निवासी बन गया।

'एडकोर' फार्म के सारे निवासियों का १८ प्रतिशत भाग विशुद्ध नागरिकों का है। वस्तुतः उनमें से सभी योग्य नहीं हैं। उदाहरण के लिए, लीटे का एक दम्पति अपने फार्म से संतुष्ट नहीं था, और उसे फार्म में इसके सिवाय और कोई अच्छाई नहीं नजर आती थी कि मिंडानाओ में समुद्री तूफान नहीं आता। उन्हें इस बात की सख्त शिकायत थी कि शासन ने न तो उनकी जमीन साफ की, न उसकी ठूँठें व जड़ें निकालीं और न उन्हें कोई ट्रेक्टर ही दिया, जिससे वे 'आधुनिक' ढंग के किसान बन सकें। किन्तु अधिकांश नागरिक कपटागान-फार्म के भूतपूर्व सर्जेंट की तरह रहते थे। अपने पिता की सहायता से उसने पाँच हेक्टर भूमि साफ कर के उसमें पटसन लगा रखी है,

जो मनीला-पटुआ का मुख्य साधन है। उसकी पहली फसल तो अब कटाई के लिए तैयार है। वह प्रति तीन महीने में एक नयी फसल व्यापार के लिए तैयार कर लेगा। एक ठोस मूल्यांकन के अनुसार सजेंट रेशे अलग करने के काम में आदमी बहाल करके भी, उसका फार्म पूरा उत्पादन करेगा, तो १२००० पेसो वार्षिक की बचत कर सकेगा। इसके साथ ही वह बाकी जमीन में अपने खाने की अधिकांश चीजें भी पैदा कर सकता है।

घने जंगल में, बुल्डोन नगर से नदी के उस पार और फार्म की पार्श्ववर्ती सड़क से दूर, एक मैदान, एक छोटी-सी झोपड़ी और एक भूँकनेवाला कुत्ता है। यह फार्म मेरिया फ्लोरेन्टिनो का है, जो 'हुक' लोगों में कभी कमान्डर 'लूसिंग' के नाम से प्रसिद्ध थी। वह उन पाँच भूतपूर्व 'हुक' स्त्रियों अथवा संदिग्धों में से है, जो 'एडकोर' में बसी हैं। यद्यपि उसकी आयु केवल ३७ वर्ष की है, तथापि उसके बाल सफेद हो गये हैं और उसके चेहरे से अतीत में काफी कष्ट झेलने का भाव स्पष्ट झलकता है। यहाँ इस निर्जनता में वह एक लड़के के साथ रहती है, जिसने उसका साथी और सहायक होने की इच्छा प्रकट की थी। वह शहर कभी-कभी ही जाती है।

युद्धकाल में मेरिया का विवाह एक अमरीकी इंजीनियर और स्थायी सेनाधिकारी के साथ हुआ था। जब वह सक्रिय कार्रवाइयों के लिए पर्लहार्बर-स्थित सेना में शामिल हुआ, मेरिया ने अपने पाँच बच्चे अपने मित्रों के पास भेज दिये और स्वेच्छा से कैवाइट तथा बटान के बीच एम्बुलेंस-गाड़ी की ड्राइवर हो गयी। वह अपने पति को इसके बाद न देख सकी। बटान के उत्तर में जापानियों के विरुद्ध एक सक्रिय गुरिल्ला-सेना संगठित करने के कारण, जब वहाँ जापानियों का अधिकार हुआ, तो वह गिरफ्तार कर लिया गया और उसे फाँसी दे दी गयी। एवं मेरिया भी, जब वह अपनी एम्बूलेंस को अन्तिम बार बटान से वापिस ले जा रही थी, मनीला के उत्तर में जापानी सेना द्वारा रोक ली गयी। यह सोचकर कि उसे महत्त्वपूर्ण फौजी सूचनाएँ मालूम होंगी, जापानियों ने उससे बयान लेने की चेष्टा की। कितने ही दिनों उसे अकेला रखा गया और यन्त्रणाएँ दी गयीं। वह पीटी गयी और टूटी बोतलों के टुकड़ों पर उसे घुटने के बल बैठने को कहा गया। उसकी उँगलियों के नाखून चीर दिये गये।

जापानियों ने दूसरी चाल आज़मायी। मधुर शब्दों में उन्होंने कहा—

"यदि तुम हमारे साथ काम करके पूर्व एशिया में सह-समृद्धि की स्थिति स्थापित करने में सहायता दोगी, तो तुम्हारा जीवन मौज और आराम से कटेगा।" मेरिया ने इसका स्पष्टतः 'नहीं' में उत्तर दिया। तब जापानियों ने उसके तीन बच्चों का, जिनकी आयु ८, ९ और १० वर्ष की थी और जो मनीला के स्कूल में पढ़ते थे, पता लगा लिया और उससे कहा कि यदि वह उनके साथ सहयोग नहीं करेगी, तो उन बच्चों को हानि पहुँचाई जायेगी। फिर भी उसका उत्तर 'नहीं' ही था। बच्चे उसके सामने एक पंक्ति में खड़े किये गये और उसकी आँखों के सामने उन्हें संगीन भोंक दी गयी। उसे भी मृत्यु-दण्ड दिया गया। लेकिन फाँसी पर चढ़ने से पहले उसके सामने जापानी अस्पताल में काम करने का प्रस्ताव रखा गया और उसे उसने स्वीकार कर लिया।

प्रतिदिन सुबह मेरिया को फोर्ट सेन्टियागो जेल की कोठरी से अस्पताल ले जाया जाता और तीसरे पहर वह वापिस पहुँचा दी जाती। ज्यों-ज्यों दिन व्यतीत होते गये, मेरिया जेल का एक परिचित व्यक्तित्व बन गयी और रक्षकों ने उसे थोड़ी आज़ादी भी दे दी—यहाँ तक कि रात में वे अपनी काफी भी उससे बनवाकर पीने लगे। अब उसने चतुराई से भागने की एक योजना बनायी। अस्पताल से वह एक कैंची और नींद की थोड़ी गोलियाँ ले आयी। गोलियों को उसने काफी में मिला दिया और जब दोनों रक्षक गहरी नींद में सो गये, तब उसने चुपके से कैंची से उनका काम तमाम कर दिया और सात अन्य कैदियों के साथ भाग निकली।

कई महीनों तक मेरिया क्वेजन प्रान्त के पर्वतीय क्षेत्र के एक छोटे-से गाँव में छिपी रही। एक रात सशस्त्र आदमी उसकी झोपड़ी में आये और उसे पूछताछ के लिए ले गये। चूँकि वह उस स्थान के लिए अनजान थी, उन्होंने उसे गुप्तचर समझ लिया। वह 'हुक' गुरिल्ला टुकड़ी की बन्दी बना दी गयी। उन्होंने उसे कैम्प के पास काम दिया, लेकिन उस पर तीन महीने तक कड़ी निगरानी रखी। अन्त में उसकी वफादारी से सन्तुष्ट होकर, 'हुक' उसे सेक्शन कमान्डर के सदर मुकाम ले गये, जिसने उसे अपने कार्यालय की मंत्रिणी बना लिया। इसके बाद उसे स्टालिनवादी विद्यालय में ६ महीनों तक सिद्धान्तों का प्रशिक्षण दिया गया।

धीरे-धीरे वह पक्की 'हुक' बन गयी और उसे १२ आदमियों के एक छोटे-से दल का कमान्डर बना दिया गया। एक वर्ष में ही उसने दल में

आदमियों की संख्या १६० तक कर ली। यह एक बड़ा सक्रिय दल था। कमान्डर 'लूसिंग' की मुख्यतः जापानियों की हत्या करने में ही दिलचस्पी थी। छिप कर अचानक आक्रमण करना उसकी प्रिय चालें थी।

जापानियों से मुक्ति के समय उसका दल तथा बनाल रेजिमेन्ट की अन्य टुकड़ियाँ ही केवल वे 'हुक' थे, जिन्हें सरकारी तौर पर अमरीका ने मान्यता दी थी। लड़ाई के बाद उसने अपने आदमियों को विघटित होने के लिए कैम्प मर्फी भेज दिया। उनमें से कुछ बाद में पहाड़ों में तथा 'हुकों' के पास लौट आये। मेरिया ने बगियों के अमरीकी सैनिक अस्पताल में काम किया और जब वह बन्द हो गया, तब वह रहने के लिए मनीला चली आयी। वह शान्तिपूर्वक और अनजान ही रहना चाहती थी। जब जापानी हार गये थे, तभी उसका लड़ने का जोश समाप्त हो गया था। युद्धोत्तर 'हुक'-विद्रोह में भाग लेने की उसे तनिक भी इच्छा नहीं थी।

लेकिन एक दिन मनीला नगर के बाहर क्विआपो चर्च के पास उसके एक पुराने सिपाही ने उसे पहचान लिया। फलतः एक 'हुक'-द्वारा चालित एक जीप वहाँ पहुँची और मेरिया से उस पर चढ़ने के लिए कहा गया। आदमी बड़े दृढ़ संकल्पवाले थे; वे उसे वापिस लाकर दल का संचालन उससे कराना चाहते थे। यह निर्णय करना एक बड़ा कठिन काम था। कई वर्षों के रक्तपात के बाद वह शान्ति चाहती थी, लेकिन वह उन मित्रों का आग्रह भी कैसे टाल सकती थी, जब उन्हें उसकी आवश्यकता थी? दूसरे मेरिया इस बात से डरती थी कि वह अस्वीकार करेगी, तो हुक उसे मार डालेंगे। फलतः मेरिया फिर कमान्डर 'लूसिंग' हो गयी।

तीन वर्ष तक और गुरिल्ला-लड़ाई चलती रही। और तब, फरवरी, १९५१ में एक दिन जब उसके आदमी गश्ती पर गये थे और वह जंगल में एक पेड़ के नीचे अकेली बैठी हुई 'हुक' सदर मुकाम को एक रिपोर्ट लिख रही थी कि जिस गुप्त आक्रमण का उन्होंने आदेश दिया था, उसके लिए सेना चाहिए थी। इस समय अचानक वह घेर ली गई और सेना के एक दल-द्वारा बन्दी बना ली गई।

बाड़े में फिलिपाइनी सेना के आदमियों ने उस पर कितने ही अपराध करने का अभियोग लगाया। जब उसने अपराधों को अस्वीकार किया, तो उसे थप्पड़ मारे गये और पीटा गया। एक बार प्रश्नकर्त्ता ने उसे बर्फ की एक बड़ी पेटी में तब तक रखा, जब तक वह बेहोश हो गयी। जब होश आया तो उसे रेत से

ढँक दिया गया। सेना के एजेण्टों ने उसकी प्रतिरोधात्मक शक्ति तोड़ने के लिए उसे किसी चीज़ के इन्जेक्शन भी लगाये। इस घटना के एक महिने बाद तक वह सीधी होकर चल भी नहीं सकती थी।

जंगल के अंदर 'एडकोर'-फार्म पर मेरिया को शान्ति और सन्तोष मिला है। वह अब रोबीले व्यक्तित्व की तो नहीं है, फिर भी वह दिन-भर परिश्रम करती है। उसका उत्पादन वहाँ के किसी भी दूसरे निवासी के बराबर रहता है। वह कहती है, "मैं अतीत को भूल जाना चाहती हूँ। सम्भवतः कुछ वर्षों बाद, जब मैं खेती करने के योग्य नहीं रह जाऊँगी, तब मेरे पास इतना धन बचा होगा कि उससे एक छोटी-सी दूकान खोल सकूँ।"

कमान्डर लूसिंग, अपने अन्य देशवासियों की ही भाँति, जापानियों के प्रति विरोध-भाव के कारण ही 'हुक' आन्दोलन की ओर खिंची। उस समय की युद्धकालीन मित्रता और कम्यूनिस्ट-शिक्षा के प्रभाव के कारण वे युद्धोत्तर-आन्दोलन में भी सक्रिय रहे। मेरिया कम्यूनिस्ट-सिद्धान्तों को समझती है और अब भी 'हुकों' के सुधार-कार्यक्रम के बारे में उसकी सहानुभूति है। लेकिन वह सिद्धान्तवादी कम्यूनिस्ट नहीं है। दल के आदेशों की अपेक्षा उसमें स्वतः की वफादारी कूट-कूट कर भरी हुई है। पिछली यातनाओं और वर्त्तमान वीरोचित प्रयत्नों के कारण, बुल्डोन का प्रत्येक निवासी और सिपाही, पुरुष और स्त्री उसकी प्रशंसा करता है।

ये लोग एडकोर के निवासी हैं। वे चौंतीस प्रान्तों तथा मनीला से आये हैं। अधिकांश निवासी (६१ प्रतिशत) लूज़न के हैं। उसके बाद सर्वाधिक लोग (२४ प्रतिशत) पनाय से आए हैं। प्रान्त के हिसाब से, सबसे अधिक इलोइलो से आये हैं और उसके बाद न्यूवा इकीजा दूसरे नम्बर पर, लीटे तीसरे नम्बर पर तथा पम्पाङ्गा और पंगासिनन चौथे नम्बर पर आते हैं।

शिक्षा की दृष्टि से निवासियों में अनपढ़ों से लेकर कालेज के स्नातक तक हैं, हालाँकि कालेज-स्नातक केवल एक है और २८ प्रतिशत ने तो कभी स्कूली शिक्षा प्राप्त ही नहीं की। ६० प्रतिशत लोगों को तृतीय श्रेणी या उससे कम की शिक्षा मिली है। केवल १५ प्रतिशत ने हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की है। यद्यपि इन आँकड़ों से वहाँ के निवासी कम शिक्षा-प्राप्त लोगों का समुदाय लगते हैं; फिर भी उनमें कई ऐसे हैं, जिन्हें बिल्कुल साधारण स्कूली शिक्षा मिली, लेकिन उनमें आश्चर्यजनक योग्यता और नेतृत्व-शक्ति है।

असन्तुष्ट लोगों के आन्दोलन में मिलने से पहले निवासियों के धन्धों के

बारे में देखें, तो ६९ प्रतिशत खेती करते थे। इनमें से ४६ प्रतिशत काश्तकार थे; ४४ प्रतिशत अपने काश्तकार-पिता की सहायता करते थे; ८ प्रतिशत छोटी-छोटी जमीनों के मालिक थे और बाकी २ प्रतिशत घुमक्कड़ थे। भूतपूर्व 'हुक' निवासियों का बाकी ३१ प्रतिशत भाग दूसरे दूसरे व्यवसायों में लगा था, जैसे बस-ड्राइवर, मछलीमार, मोची, घड़ीसाज़, साइनबोर्ड पेन्टर, लकड़ी की मिल में काम करनेवाले, फोरमैन, पुलिसमैन, घरेलू नौकर, सड़क पर काम करनेवाले, दर्जी, विद्यार्थी आदि, और कुछ तो बेकार थे या आंशिक रूप से काम पर लगे हुए थे।

वहाँ के निवासी अधिकतर नवयुवक हैं। 'एडकोर' की स्थापना के दो वर्ष बाद, १० प्रतिशत लोग अभी भी २१ वर्ष या इससे कम उम्र के हैं। वहाँ के निवासियों की औसत उम्र ३२ वर्ष है, केवल दो निवासी ६० वर्ष से ऊपर के हैं।

वहाँ के निवासियों के परिवार के सदस्यों की औसत संख्या—पति, पत्नी, बच्चे तथा अन्य आश्रितों को मिला कर—पाँच है। फिर भी, मिंडानाओ आने के समय २० प्रतिशत निवासियों के कोई आश्रित नहीं था। ४४ प्रतिशत लोगों का तीन या कम व्यक्तियों का परिवार था।

बुल्डोन और कपाटागान के 'एडकोर'-फार्मों पर निवास के लिए आने वाले प्रत्येक १० व्यक्तियों में से ४ अविवाहित थे। फलतः शासन के सामने एक बड़ी समस्या यह उपस्थित हो गयी कि इन नवजवानों की क्या व्यवस्था की जाये, जहाँ विवाह-योग्य स्त्रियों की उतनी ही कमी है जितनी कि पक्की सड़कों की।

इस प्रकार यहाँ जवान और बूढ़े, 'हुक' और संदिग्ध, नागरिक और सिपाही, शिक्षित और अशिक्षित, विवाहित और अविवाहित, सभी तरह के लोग आकर बसे। क्या किसी विशेष उद्देश्यवश इतनी सारी विभिन्नताओं को एक साथ स्थान दिया जा सकता था? यदि गणतन्त्र यहाँ पर सफल हुआ, तो अवश्य ही इसके निर्माताओं को उत्साह मिलेगा।

अध्याय ५

वन से संघर्ष

अधिकांश निवासी मध्य-लूज़न की समतल भूमि या पनाय तट के मैदान से आये। इन क्षेत्रों से जंगल बहुत पहले ही साफ हो चुके थे। वनकौशल की लोक-संस्कृति तराई प्रदेश से, जहाँ किसानों को पीढ़ी दर पीढ़ी धान की फसल जोतनी, बोनी और काटनी पड़ती थी, काफी पहले मिट चुकी थी। धान की खेती के बाद जो लम्बा अवकाश मिलता था, उसमें अगली बरसात तक आदमी, जानवरों और धरती को निष्क्रिय रहना होता था। पुराने प्रदेशों में इस प्रकार की खेती-सम्बन्धी रीतियों का नाम तक न था और मिंडानाओ की अछूती भूमि में वे बहुत थोड़ी थीं। अधिकांश निवासी भविष्य में आनेवाली मुसीबतों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार न थे।

फिर 'एडकोरी'-फार्मों का निरीक्षण हुआ और स्थान-स्थान पर सीमेंट के चिन्ह अंकित कर दिए गए। तब, लाटरी द्वारा जिसमें कि हर निवासी को टोप में से एक संख्या निकालनी होती थी, फार्मों का वितरण कर दिया गया। प्रशासन-भवन में टँगे, निरीक्षण किये हुए क्षेत्र के बड़े नक्शे में अपनी संख्या देख कर निवासी को इस बात का ज्ञान हो गया कि उसका फार्म किधर होगा। फिर सैनिकों और प्रशासकों की देख-रेख में, निवासी अपनी धरती देखने चल पड़े।

जब तराई प्रदेश के लोगों ने जंगल को देखा तो वे चकित रह गये। हल चलाने के योग्य खुले खेतों के स्थान पर उन्हें छोटे-छोटे हरे वृक्षों और लताओं का फैलाव ही दिखायी दिया, जिसको कि 'बोलो' की सहायता से भेद कर ही घुसा जा सकता था। छोटे और बड़े वृक्षों से धरती पटी पड़ी थी और लगभग हर पचास कदम पर एक विशालकाय वृक्ष खड़ा था। भारी और हिलते हुए आधार धरती से पन्द्रह फुट ऊपर उठकर, मुख्य तने की ओर, जोकि स्वयं बारह फुट मोटा होता था, झुक गये थे और इस प्रकार आधार और तनों का विस्तार लगभग बीस फुट के क्षेत्र में हो गया था। आकाश की ओर इन वृक्षों का फैलाव इतना अधिक था कि कोई भी व्यक्ति ऊपर की

डालों पर फुदकती हुई चिड़ियों को देखने में असमर्थ था। ऐसे वृक्षों को आधारों के कारण धरती पर खड़े होकर काटना कठिन था; इसलिए लकड़हारे को पहले मचान बनाना पड़ता था। पन्द्रह फुट ऊंचे इस मचान से वह पहले तने को मेहनत के साथ काटता था। वृक्षों की लकड़ी बड़ी मन-मोहक होती थी; लेकिन वह आदमी, जो अपनी छोटी-सी कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता था, उसकी शोभा को निरखने में समय नहीं गँवाता था। कई दिनों के कठिन परिश्रम के बाद 'सेल्यूलोस' का यह पहाड़ उतनी जोर से गिरा कि सारी पृथ्वी हिल उठी। फिर उसकी शाखाओं को काटने और छोटी-छोटी डालियों को जलाने का काम निरन्तर चलता रहा। और आदमी के वश का इससे अधिक कुछ न हो सकता था। भारी लट्ठा जो आदमी या जानवरों से वर्षों में भी नहीं हिल सकता था, वहाँ पड़ा-पड़ा, दीमक लगने से सड़-गल कर नष्ट हो गया।

अधिकांश निवासी इन वृक्षों को पहली बार देखते ही बैठे कर रोने लगे। मनुष्य अपनी छोटी-सी कुल्हाड़ी और 'बोलो' से इस जंगल में क्या कर सकता था! निरुत्साह ने उनके हृदय में डर और निराशा को जन्म दे दिया। उनमें से कुछ तो घर बैठ गये और कुछ बगीचों में काम करने लगे। फार्म-प्रशासन द्वारा अत्याधिक समझाने-फुसलाने और धमकी देने पर निवासी दूसरी बार अपनी धरती पर आये और सफाई करने लगे।

'एडकोर' ने इस समस्या को हल करने के लिये निवासियों को सहायता दे कर बड़ी बुद्धिमानी का परिचय दिया। जो निवासी अपनी धरती की सफाई न कर सकता था, उसे दो हेक्टर प्रतिवर्ष के लिए ६० 'पेसो' प्रति हेक्टर के हिसाब से सहायता दी जाने लगी। यह रकम वृक्षों के काटने और छोटे-छोटे पौधों को साफ करने के कठिन कार्य में मज़दूर लगाने के लिए काफी थी। इस तरह खर्च की हुई रकम निवासी के खाते में लिख दी जाती थी, जिसकी अदायगी बाद में तब होती थी जब उसके फार्म में उपज होने लग जाती थी।

१९५३ के सितम्बर और नवम्बर मासों में लेखक ने 'कपटागान' और 'बुल्डन' के आधे 'पुराने-हुकों' तथा संदिग्ध लोगों में से यों ही चुने हुए निवासियों से नमूने के रूप में मुलाकात की। प्रत्येक निवासी से, अन्य प्रश्नों के उत्तरों के अतिरिक्त, अपनी समस्याओं और 'एडकोर'-जीवन के प्रति असन्तोष, यदि उसे हो तो, प्रकट करने के लिए कहा गया। उनमें से ३१ प्रतिशत ने अपना जीवन आनन्दमय और संतोषजनक बताया अथवा असन्तोष व्यक्त करने में उन्होंने लज्जा अनुभव की। बाकी ६९ प्रतिशत ने बहुत-सी समस्याएँ गिनाई

जिनमें उनकी फसल पर बंदरों के उत्पात से लेकर पत्नी न मिलने की कठिनाई तक सम्मिलित थी। निवासियों द्वारा वर्णित कठिनाइयाँ, इस अध्याय का एक बड़ा अंश है।

कपटागान में निवासियों का पहला दल आने के दो वर्ष बाद और बुल्डेन में पहली फसल के थोड़े ही दिन बाद, वनों की सफाई और धरती को फार्म-योग्य बनाने की समस्या प्रमुख-रूप से निवासियों के मस्तिष्क में थी। सरकार के विरुद्ध उनकी लड़ाई ने अब वन से संघर्ष का रूप धारण कर लिया था। अपने दुःखों की चर्चा करते समय, निवासियों ने कितनी ही बार धरती साफ करने के लिए 'बुल्डोज़रों' की आवश्यकता का उल्लेख किया। वृक्षों के गिरने पर भी ठूँठ और लट्ठे तो धरती को घेरे हुए थे। जड़ों के कारण हल चलाना कठिन ही नहीं असम्भव हो गया। जिन थोड़े निवासियों के पास 'कैराबाओ' और हल थे, उन्हें भी लगा कि उन वस्तुओं का उपयोग असम्भव है। एक प्रमुख निवासी की पत्नी ने कह ही दिया—"जिन साधनों का वचन हमको दिया गया था उनके न मिलने से हम बहुत निरुत्साहित हैं। परिणामस्वरूप हमें पुराने औजारों और पुराने तरीकों से ही खेती करनी पड़ेगी। जड़ों के कारण हमारा 'कैराबाओ' काम नहीं कर सकता और हमें ज्ञात हो चुका है कि इन जड़ो के सड़ने में चार वर्ष लगेंगे। इस बीच हम पर कर्ज़ भी बढ़ता जा रहा है; लगभग २००० 'पेसो' तो अभी ही है। हम इसको किस प्रकार अदा कर सकेंगे?"

अधिकांश निवासियों को विश्वास था कि यदि सफाई हाथ से ही करने दी जाती तो बड़ा जोखिम था। एक 'पुराना-हुक' बोला—"मैं अपने कैराबाओ और हल का उपयोग नहीं कर सकता और अपने परिवार का पोषण भी हाथ से खेती करके नहीं कर सकता। मुझ को सहायता की जरूरत है।" 'खुरपी लिए हुए मनुष्य' वाला प्राचीन-संसार का चित्र वन के इन दर्शकों को अच्छा लगेगा। उसे देखकर यह लोग कहेंगे, "कम से कम वह साफ धरती पर तो काम कर रहा है।" दूसरे 'पुराने-हुक' ने कहा, "अब हमारी समस्या ठूँठों और लट्ठों को साफ करना है, लेकिन यदि मैं अपने हाथ से यह काम करूँगा, तो मेरी हड्डियाँ तक चटक जायेंगी।"

धरती की सफाई की इस समस्या का उत्तर आसान नहीं है। 'एडकोर'-प्रशासन के पास सड़क बनाने के लिए बुलडोज़र हैं, न कि बड़े-बड़े लट्ठों और ठूठों की सफाई में काम आनेवाले शक्तिशाली व भारी यंत्र। इन साधनों

की कीमत निवासियों के बूते के बाहर है। 'एडकोर' का बजट वैसे ही सीमा पार कर चुका है। क्या यह ऐसा व्यय है, जो सरकार को करना ही चाहिए? क्या धरती की यांत्रिक-सफाई के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं हैं? कुछ निवासियों ने स्वयं ही इसका उत्तर ढूँढ़ निकाला है। लकड़ी के गिरने पर, वह उसे वहीं छोड़ देते हैं; और गर्मी में जितनी सूख जाती है, उतनी जला देते हैं। जली हुई राख क्षारयुक्त धरती को सुधारने में समर्थ होती है। तब वे पटसन, केला, पपीता, मक्का और काफी, लट्ठों और ठूँठों के बीच में बोते हैं। प्रशासन इस प्रकार की खेती चाहता है, किन्तु यह बड़ा कठिन कार्य है कि तराई प्रदेशों में धान की खेती करनेवाले एकदम मौलिक-रूप से खेती करने लगें।

'लीटे', 'समार' और कुछ हद तक लूज़न के किसानों को, समुद्री आँधी, टिड्डियों और पौधों की विभिन्न प्रकार की महामारी से जो विनाश होता है, उसका अनुभव है। इन विनाशक-तत्वों ने मिन्डानाओ में कोई कष्ट नहीं दिया, किन्तु निवासियों को नये शत्रुओं से भिड़ना ही पड़ा। वे थे जंगली सूअर, चूहे और बन्दर। चूहे धान के खड़े हुए पौधों को नीचे से कुतर लेते और बाद में नीचे गिरे हुए अनाज को खा जाते थे। जब कभी भी फसल अरक्षित रह जाती, बन्दर अपने दल को लेकर शान के साथ आते और अधपके धानों को खा जाते थे। सबसे भयानक शत्रु तो जंगली सूअर थे। एक ही रात में वे शकरकन्द का पूरा खेत उजाड़ डालते थे। धान व मक्का के पौधों के अलावा वे नारियल के छोटे-छोटे पेड़ों को भी गिरा डालते थे। उनकी प्राण-शक्ति बड़ी तीव्र थी। उनके सामने छुप कर चलना कठिन था। आक्रमण में भी वे बड़े साहसी होते थे। टिन के डब्बों और बाँस के चिरचिराने की आवाज़ सुन कर चाँदनी में बन्दरों के भागने की सम्भावना थी, किन्तु जगली सूअरों के लिए मजबूत उपाय की आवश्यकता थी। उनको फँसाना भी मुश्किल था। यदि कोई साहस और कौशल काम में लाता था तो वे कुत्तों से घेर लिये जाते थे और भालों से मार डाले जाते थे। उनसे छुटकारा पाने का सबसे उत्तम उपाय तो उनका बन्दूक से शिकार करना था, किन्तु ऐसा करने से पहले पुराने-हुकों को इस बात का सन्तोष हो जाना आवश्यक था कि बारूद का उपयोग मात्र जंगली जानवरों के मारने के काम में ही होगा। बन्दूक से शिकार, केवल सैनिक ही कर सकते हैं। चहारदीवारी बन सकती है, किन्तु इसमें व्यय बहुत होता है। निवासियों को आशा थी कि वे नियमित देख-भाल रख कर फसल

का अधिकाँश भाग बचा सकेंगे और अन्त में जंगल की सफाई हो जाने पर जंगली सूअर उस क्षेत्र में नहीं रहेंगे।

बहुत-से निवासियों को कष्टप्रद भूखण्डों का भी सामना करना पड़ा। 'कपटागान' में बहुत सी सपाट धरती जो गर्मी में आदर्श दिखाई देती, वही वर्षाकाल में छः फुट गहरे पानी से दब जाती और फार्म की सड़कें दलदल बन जाती। फार्म-प्रशासन ने सैंकडों 'पेसो' खर्च करके खाइयों को पाटा है और अब सड़कें भी चलने के योग्य बन गयी हैं। इस प्रकार किनारे की खाइयों द्वारा फार्म की धरती पर फैले हुए पानी की सतह इच्छित-सीमा तक कम हो जाएगी। यद्यपि समस्या असाध्य नहीं है, किन्तु अभी ध्यान देने की आवश्यकता है।

'बुल्डन' के कुछ फार्मों में बड़ी-बड़ी चट्टानें भरी पड़ी हैं और बेचारे निवासियों के हिस्से में ढालू धरती और पहाड़ियाँ आयी हैं। एक निवासी ने तो यहाँ तक शिकायत की कि वह अपने फार्म से पाँच-गुना नीचे ढकेल दिया गया है; किन्तु सभी फार्म ढालू नहीं हैं। आरम्भ में जब लाटरी पड़ी थी, तब हिस्से में आये बेकार भूखण्डों के स्थान पर काम में आ सकने वाली धरती दी गयी थी। बुल्डन में काफी आधारभूत स्थायी फसल बतायी गयी है। ढालू पहाड़ियाँ इसकी खेती के लिए बड़ी अच्छी हैं, किन्तु समतल धरती वालों को यह समझने में देर लगेगी कि पहाड़ी-खेती में अपने गुण भी निहित हैं।

नगर और फार्म-स्थानों के बीच की दूरी तथा नदी पार करने की कठिनाई से भी निवासियों को बड़ा कष्ट अनुभव होता है। विशेषकर 'बुल्डन' में यह कठिनाई प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है, जहाँ सिमुए नदी, नगर और फार्मों के बीच एक बड़ी दरार उत्पन्न कर देती है और फिर पूर्व दिशा की ओर उमड़ती हुई दूर के फार्म-स्थलों को दुबारा विभाजित कर देती है। उस क्षेत्र का एक निवासी तो पिछली फसल के बाद डूबते-डूबते बच गया। लकड़ी का एक भारी पुल नगर के पास स्थित क्रासिंग पर बनाया गया है, लेकिन उसके फार्म के पास नदी पर अभी भी पुल नहीं बना है। वर्षा के बाद पानी बढ़ने लगा और भयंकर नाद करता हुआ नालियों में बह निकला। अपने पड़ोसियों की सलाह के विरुद्ध, सिर पर अनाज का बोरा रख कर उसने पैदल ही नदी को पार करना चाहा। अनाज तो नदी में बह गया, और बेचारा निवासी बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा सका।

बुल्डन का पुल भी किसी समस्या से कम नहीं है। मिन्डानाओ में इन पहाड़ी नदियों के आरपार बना लकड़ी का पुल २-३ वर्ष तक चलता है।

बुल्डन के 'एडकोर'-फार्म का पुल झुक गया है; पिछली बाढ़ में लहरों के ज़ोर से ऊपर का भाग भी गिर गया था। बाढ़ के दिनों में, नदी क्यारियों में पत्थरों को लुढ़काती हुई लाती है। पत्थर पुल के स्तम्भों से टकराते हैं। लट्ठे और झाड़ियाँ पुल से चिपक जाती हैं और वहाँ पर पानी का अत्यधिक दबाव हो जाता है। पुल के लट्ठे सड़ने लगते हैं और कमजोर हो जाते हैं। उनकी अवधि भी सीमित रह जाती है। इसका स्थायी हल लोहे के पुल का निर्माण है, किन्तु निर्माण में काफी व्यय होता है।

पास के क्षेत्रों के लिए आगमन के साधन बिना फार्म बेकार है। बुल्डन-फार्म में नगर तक भारी बोझ ले जाने के लिए स्थायी पुल चाहिए। बाहरी फार्मों तक पहुँचने के लिए एक छोटे पुल की भी आवश्यकता है, जिस पर होकर 'कैराबाओ' और गाड़ी जा सके। फार्म की आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा का स्थायित्व इन पर ही आधारित है। निवासियों ने कहा था, "इस स्थान पर स्थायी रूप से बस जायेंगे, किन्तु यदि सरकार ही पीछे हट जायेगी तो हम कैसे रह सकेंगे।" पुल के बह जाने पर निवासी कर ही क्या सकते थे? लट्ठों की नाव बिलकुल बेकार सिद्ध होती है; क्योंकि पानी की सतह में बड़े-बड़े पत्थर पड़े हुए हैं।

'कपटागान' और 'बुल्डन' दोनों ही जगहों पर फार्म शहर के एक ही ओर हैं। जो सीमा के पास रहते हैं, उनके लिए घर से काम पर जाना बड़ी मेहनत का काम है। एक निवासी ने शिकायत की, "मुझे अपने स्थान पर पहुँचने में आधा दिन लग जाता है। जब मैं पहुँचता हूँ तो पसीने में तर और थका हुआ होता हूँ। थोड़ी देर आराम करने के बाद फिर घर वापस लौटने का समय हो जाता है। मैं काम कैसे कर सकूँगा?" बहुत से निवासियों ने अपने-अपने फार्मों पर ही आश्रय का प्रबन्ध कर लिया है, जिससे वे रात वहीं बिता सकें। इस प्रकार आने-जाने की मेहनत बच जाती है। किन्तु यदि परिवार के बच्चे स्कूल जाते हैं तो पत्नी को शहर में ही रहना पड़ता है। पारिवारिक जीवन में बाधा पड़ती है, फार्म के कार्य में पारिवारिक सहायता की मात्रा कम हो जाती है और शहर में सौजन्य का मूल्य भी घट जाता है।

जब फार्मों की स्थापना हुई थी तब अपर्याप्त औज़ारों की भी समस्या थी। उदाहरणस्वरूप निवासियों के पहले दल के आने के दो महीने बाद भी उपयोग के लिए पर्याप्त 'बोलो' तक उपलब्ध नहीं थे। यह अड़चन तो अब दूर हो गयी है और अब काफी छोटे-छोटे औज़ार हैं। आजकल निवासियों की सबसे बड़ी आवश्य-

कता 'कराबाओ' (भैंसे) और हल है। २५ प्रतिशत तो जमीन की सफाई के लिए भारी मशीनों की आवश्यकता समझते हैं। इनके अतिरिक्त ३३ प्रतिशत 'कराबाओ' और हलों को आवश्यक समझते हैं। १९५३ के अन्त में कई निवासियों के पास 'कराबाओ' नहीं थे। उनमें से एक ने कहा—"जब हम यहाँ आये थे तो समझते थे कि हमें 'कराबाओ' दिये जायेंगे। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। हमको सारा काम हाथ से करना पड़ता है। पता नहीं प्रशासक अपना वचन निभायेंगे या नहीं।" अच्छे प्रशासक का नाम 'कराबाओ' और हल की प्राप्ति के साथ जुड़ गया। बुल्डन में फार्म-प्रशासक के पास ३९ 'कराबाओ' २०० निवासियों को देने के लिए थे। जिनकी भूमि पर काँटेदार घास होती थी, उन्हें प्रथम अवसर दिया जाता था; क्योंकि घासवाली जमीन को जोतने के लिए हल बड़ा उपयोगी होता है। जिनके पास 'कराबाओ' थे, उन ३९ में से से केवल २२ के पास हल थे।

'एडकोर' प्रशासन इस समस्या के प्रति पूर्णरूपेण जागरूक है। महीनों पहले 'कराबाओ' और हल खरीदने के लिए स्वीकृति दे दी गयी थी, किन्तु तब तक धन नहीं आ पाया था। वर्ष के अन्त में भी इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए धन नहीं था।

१९५४ के प्रारम्भ में राष्ट्रपति मैग्सेसे ने राष्ट्र का पशु-बल बढ़ाने के लिए 'कराबाओ' का वध बन्द कर दिया तो सरकार के पास लगभग सौ जानवर हो गये। उन्हें 'एडकोर' भेजने का आदेश दे दिया गया। जब 'कराबाओं' के आने की घोषणा की गयी, निवासी एकत्रित हो कर अंधकार छटने तक उनकी प्रतीक्षा करते रहे। आखिरकार, वे आये, लेकिन कमजोर और लम्बे सफर से आधे भूखे। दूसरे दिन, एक निराश निवासी अपना 'कैराबाओ' फार्म-प्रशासक के पास ला कर बोला—"साहब, मैंने इसकी पीठ पर हाथ रखा था कि यह गिर पड़ा।" 'एडकोर' के सामने अभी भी काम के जानवरों का मिलना एक समस्या है। पुराने हुकों ने वन को काट-काट कर बिना निजी पूँजी लगाये और ऐसी सरकार की सहायता से फार्म बनाने की चेष्टा की है, जो उनके लिए काम तो काफी कर रही है किन्तु उसके पास धन की व्यवस्था सीमित है।

आर्थिक समस्याओं के अतिरिक्त निवासियों को सामाजिक ढंग की गम्भीर समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। यदि घर में अन्य कोई सम्बन्धी न हो, तो एक नवयुवक के परिवार में, जहाँ पत्नी शिशुओं और बच्चों की देखभाल में ही लगी रहती है, बेचारे पति को ही फार्म का काम करना पड़ता है। अकेले

आदमी को भी, परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से वञ्चित रहने के कारण फार्म पर बड़ा कष्ट होता है। यह समस्या सहकारी श्रम-विनिमय द्वारा आंशिक रूप से हल हुई है। सफाई और फसल-कटाई के समय जब सामूहिक परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है, मित्र और पड़ोसी एक दूसरे की सहायता करते हैं।
विधवा रोमैनो की एक विशेष पारिवारिक समस्या है। उसके ७ बच्चे हैं, सबसे बड़ा १६ वर्ष का है। वह स्कूल नहीं जाता और फार्म पर काम करने योग्य है। सबसे छोटा दो वर्ष से कम का है। वह और उसका पति, युद्ध के पश्चात् हुकों में मिलने से पूर्व, इलोइलो में किसान थे। एक वर्ष बाद, १९४९ में वह भी असन्तुष्ट लोगों में मिल गयी। उच्च सेनापति कैपेडोशिया ने उसके पास सन्देश भेजा कि उसे उसकी आवश्यकता है। कुछ तो डर के कारण और कुछ साहसिक कार्य की भावना के कारण वह चली गयी।

तीन महीने पहले वह अपने पति को देख सकी थी। इस बीच उसने एक हुक प्रशिक्षण-केन्द्र में सिद्धान्तवाद का अध्ययन-क्रम पूरा कर लिया था और वह एक संगठन समिति की प्रमुख-कार्यकर्त्री बना दी गयी थी। वह अपनी समिति के साथ गाँव-गाँव फिर कर नये रंगरूटों को भरती करती और सामग्री इकट्ठी करती थी। बाद में उसने पहाड़ों पर उत्पादन-केन्द्र में काम किया।

मई १९५१ में, एक दिन सुबह चौकी का एक रक्षक डेरे में घुस आया और चिल्लाया कि सरकारी सेना ने घेरा डाल दिया है। हुकों के भागने से पूर्व ही गोली चलने लगी। रोमैनो के पास लेटी हुई एक लड़की मारी गयी। गोली चलना बन्द होते ही, जो बाकी रह गये थे, वे पास की घनी झाड़ी में घुस गये। रोमैनो खून में लथपथ थी और मूत्राशय के आरपार उसे गोली लगी थी। थोड़ी देर में ही सैनिकों ने उसे ढूँढ़ लिया और वह बन्दी बना ली गयी। उसका पति भी, जो इस आक्रमण के समय अनुपस्थित था, कई महीनों बाद पहाड़ों में इसी प्रकार के मुकाबले में मारा गया।

घाव भर जाने पर रोमैनो ने मिंडानाओ में स्थित 'एडकोर' जाने की इच्छा प्रकट की। बुल्डन के 'एडकोर' फार्म में उसके बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण हो रहा है, किन्तु परिवार अभी तक आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है। इस बार उसकी धान की फसल जंगली सूअर नष्ट कर गये, क्योंकि रात में खेती की देखभाल के लिए कोई नहीं था। मिंडानाओ की ऐसी प्रमुख बस्ती में एक निर्धन विधवा के लिए सफलता का क्या अवसर है? न जाने कितने वर्षों में उसके बच्चे बड़े होकर आत्मनिर्भर होंगे और फार्म का काम करेंगे। सरकार का

ऋण अदा करने में उसे कितने ही वर्ष लग जायेंगे। क्या प्रशासन ऐसे परिवारों को बसाने से मना कर दे? या फिर पुराने हुक-परिवार के निवास और उसके बच्चों की शिक्षा पर सरकार द्वारा व्यय किया हुआ धन उचित है?

बुल्डन का ५५ वर्षीय पौलिनो डैल्फिन, सबसे अधिक आयु का है। उसके स्त्री और बच्चे नहीं हैं, किन्तु वह अपने भतीजे के साथ रहता था, जो उसे फार्म के काम में तब तक सहायता करता रहा, जब तक कि उसे घेर कर पड़ौसी मोरो ने मार न डाला। तनाव बढ़ता गया। पुराने हुकों के लिए धरती-सम्बन्धी समझौते के सरकारी प्रयोग मोरो-ईसाई-संघर्ष के कारण चूर-चूर हो गये होते।

बुल्डन में जब फार्म-स्थलों का निरीक्षण हुआ, तो उनमें से कुछ पर तो मोरों ने परम्परागत परिवारिक अधिकार सिद्ध कर दिया। इन अधिकारों को स्वीकार कर लिया गया और 'एडकोर' प्रशासन ने मोरो को धरती-सम्बन्धी अधिकार-पत्र दिलाने तक में सहायता की। ईसाइयों और मुसलमानों में सदा से ही अस्थिर रहनेवाले सम्बन्ध शान्तिपूर्ण लगने लगे। एक मामले में फिर भी गलती हो ही गयी और एक एडकोर निवासी को मोरो द्वारा अधिकार-सिद्ध धरती दे दी गयी। यह भाग डैल्फिन के बराबर का था। फार्म-प्रशासक ने निर्णय दिया कि अधिकार उचित था और निवासी को दूसरी धरती दे दी गयी। इसके अतिरिक्त मोरो को धरती-सम्बन्धी अधिकार पत्र भी देने का वचन दे दिया गया। सप्ताह पर सप्ताह निकल गये। किन्तु अधिकार-पत्र नहीं बना। मोरो से जब कहा गया कि इन मामलों में कभी-कभी एक या अधिक वर्ष लग जाता है तो इस बात का उस पर बिल्कुल असर नहीं हुआ क्योंकि उसे कानूनी ज्ञान तो था ही नहीं। वह केवल इतना ही जानता था कि उसकी धरती गड़बड़ में पड़ गयी थी और घृणित ईसाई सब दिशाओं में अपने पैर फैला रहे थे।

अप्रैल १९५३ में मोरो ने अपनी बन्दूक ली और पास के खेत में काम करनेवाले एक निवासी के दल के पीछे चुपके-चुपके चल पड़ा। अन्धाधुन्ध गोली चलाने से, एक भी निवासी को चोट न आयी; हाँ एक निवासी की सास अवश्य घायल हो गयी। मोरो करीब दो सप्ताह तक दिखायी नहीं पड़ा। २ मई को वह चोरों की तरह डैल्फिन-फार्म में घुसा और गोली चला कर उसने पौलिनो के भतीजे को मार डाला।

इस घटना ने निवासियों और उनके मोरो-पड़ौसियों के बीच गृह-युद्ध की

आशंका उत्पन्न कर दी। मोरो-समस्या में निपुण, मेजर वैलिनोवा ने स्थिति पर क़ाबू पा लिया और हिंसात्मक विद्रोह न उभर सका। समय बीतने पर वातावरण शान्त हो गया, किन्तु वह मोरो अभी भी फरार है। विशेषकर वे निवासी, जो मोरो-फार्मों के पास रहते हैं अभी भी आक्रमण की आशंका से भयभीत रहते हैं। कुछ तो बिना सशस्त्र रक्षक को साथ लिये अपनी धरती पर जाने से अभी तक इनकार करते हैं। इसलिए शायद धरती के शान्तिपूर्ण विकास के लिए आवश्यक सुरक्षा प्रदान करने को सेना की आवश्यकता कई वर्षों तक रहेगी।

हाथ के औजारों से जमीन की सफाई करना, बिना 'कराबाओ' या हल के खेती करना, आवश्यक पूँजी की कमी होना, कठिन पारिवारिक परिस्थितियों का मुकाबला करना, विशेषकर सेना के चले जाने पर मोरो विद्रोह के भड़कने की आशंका—ये सब १९५४ के आरम्भ में निवासियों को कष्ट देनेवाली समस्याएं थीं।

अध्याय ६

प्रशासन की कठिनाइयाँ

फिलिपाइन में, सरकार द्वारा तथाकथित सुरक्षित क्षेत्रों में भी, मनचाही और ऐसी भूमि का मिलना लगभग असम्भव है, जिस पर किसी का दावा न हो। फार्म-प्रशासन की बहुत सी समस्याओं का यह मूल कारण था। ज्यों ही 'एडकोर' निरीक्षण और निर्माण दलों ने अपना कार्य आरम्भ किया, मोरो लोगों के पैत्रिक और दूसरे फिलिपाइनों के अनधिकृत दावे शुरू हो गये। युद्ध से पहले के वर्षों में विस्थापितों ने 'कपटागान' के मैदान में जा कर छोटे-छोटे फार्म बना लिए थे। किसी ने धरती-सम्बन्धी अधिकार-पत्र नहीं लिया था। युद्ध के अशान्त दिनों में उन्हें खदेड़ कर बाहर कर दिया गया था और वे दुबारा वापस आने से डरते थे। किन्तु ज्यों ही सेना आयी, नगर की योजना बनायी गयी और स्थायी नगर-रक्षक सेना रखी गयी, अनधिकारी लौट आये और अपने-अपने दावे सिद्ध करने लगे। यद्यपि उनके पास कोई प्रमाण नहीं था, फिर भी अनधिकारियों और मोरो लोगों के अधिकाँश दावे स्वीकार कर लिए गये। कपतगान-योजना के लिए निरीक्षण किये हुए २०५ भागों में से ११ मोरो लोगों को मिले और नगर के पास चुने हुए ६८ भाग अनधिकारियों को मिले। इसका अर्थ स्पष्ट है कि एडकोर के निवासियों को नगर से दूर के फार्म मिले।

यही बात बुल्डन में हुई किन्तु वहाँ पर नागरिकों के दावे बिखरे हुए भागों के लिए थे, न कि सामूहिक रूप से नगर के पासवाले भागों के लिए। सामुदायिक योजना की स्थापना के महीनों बाद भी फार्म-प्रशासन को उन अनधिकारियों की कार्रवाई से बचाव करना पड़ता था जो धूर्त्त वकीलों के उकसाने पर कोटाबाटो प्रदेश के न्यायालयों में मुकदमे दायर कर देते थे।

पहले के दावेदारों को धरती न मिलने से दो महत्वपूर्ण प्रतिकूल परिणाम निकले। एक तो यह कि पुराने हुकों को मिलनेवाले फार्मों की संख्या में काफी कमी हो गयी। दूसरा यह कि हर निवासी पर प्रशासन व्यय बढ़ गया, क्योंकि अलग-संरक्षक दलों के लिए भी उतने ही कार्यकर्त्ताओं और सभाओं की आवश्यकता पड़ती

थी, जितनी कि बहु-संख्यक दलों को हो सकती थी। फिर भी अनुकूल बात यह हुई कि अधिकृत दलों की मान्यता ने आसपास के प्रदेशों में 'एडकोर' के प्रति सद्भावना उत्पन्न कर दी और पड़ोसियों ने नवागंतुकों को शीघ्र ही अपना लिया।

कपतगान में एक अनधिकारी विशेष रूप से दुख और कष्ट का कारण रहा है। वह जून १९५२ में निवासी फ्लोरिंसियो रमीरेज़ के फार्म पर आया और झोपड़ी बनाने तथा धरती साफ करने लगा। रमीरेज़ ने, जो मध्य-लूज़न में हुकों से भिड़ चुका था, अनधिकारी के विरुद्ध और फार्म-प्रशासन में आवाज़ उठायी। कैप्टन ज़ोंग्को ने समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान के लिए उसे दूसरी धरती देने की चेष्टा की, किन्तु वह नहीं माना और उसने न्यायालय में दावा दिया। फार्म-प्रशासन द्वारा बुलाये जाने पर उसने इनकार कर दिया। न बातचीत के लिए, सैनिकों को भेज कर उसको बुलाया गया। तर्क और बुद्धि की सभी चेष्टाएँ असफल हो गयीं। रमीरेज़ फार्म की एक ओर की धरती साफ करने लगा और अनधिकारी दूसरे ओर की। अन्त में जब मामला 'ब्यूरो आफ लैंड्स' तक पहुँचा तो निर्णय रमीरेज़ के पक्ष में हुआ। डाइरेक्टर ने अनधिकारी को धरती छोड़ देने के लिए लिखा। फार्म-प्रशासन ने समझा कि अब झगड़े का अन्त हो गया, किन्तु कितने ही सप्ताह बीत गये, अनधिकारी ने हिलने का नाम न लिया। अक्टूबर १९५३ में भी वह वहीं पर था और अब उसको वहाँ आये १६ मास बीत चुके थे। प्रशासन को कितना धैर्यवान होना आवश्यक है!

इस बात का बहुत ध्यान रखा गया है कि निवासियों और मोरों के सम्बन्ध अच्छे बने रहें। मोरो लोग, विशेषकर बुल्डन क्षेत्र में, अपनी धरती के बारे में बड़े चिन्तित थे। उन्होने सोचा कि उन्हें घेरा जा रहा है। वे सारे वन को अपना ही समझते थे, हालांकि उन्होंने इतने बड़े वन में एक या दो हेक्टर धरती पर ही खेती की होगी। भ्रान्ति को दूर करने के प्रयास के लिए कोटावाटो के राज्यपाल और पारंग के नगरपति, जो स्वयं एक शिक्षित मोरो थे, एडकोर के कार्यक्रम को समझाने और आशकाओं को दूर करने के लिए आये। यह साधारण रूप में सफल रहा। इतने पर भी बुल्डन में एक घटना हो गयी, एक मोरो ने काम करनेवाले कई दलों पर हमला कर दिया और एक निवासी को मार डाला।

कपतगान में रक्तपात तब हुआ, जब ३० मोरो-फरारों के एक दल ने फार्म

से ३ किलोमीटर (लगभग २ मील) दूर सड़क पर एक सैनिक को घेर कर मार डाला। किन्तु इस मामले में अपराधी बाहरी व्यक्ति थे और कपतगान के मोरो उनसे उतना ही डरते और घृणा करते थे, जितनी कि अन्य निवासी करते थे।

मोरो लोगों को सहायता देने से सम्बंधित, प्रशासक के प्रयत्न सदा ही स्वीकार नहीं कर लिये गये। बुल्डन में, मेजर वैलिनोवा ने योजना-सीमा के सभी मोरो-किसानों के पास इस आशय के नोटिस भेजे कि एडकोर-कार्यालय उन्हें धरती-सम्बंधी अधिकार-पत्र प्राप्त करने के लिए आवेदन-पत्र भरने में सहायता करेगा। कुछ लोगों ने तो इस सुविधा का लाभ उठाया किन्तु उनमें से एक ने निश्चय किया कि वह सरकार को फँसाएगा। उसने १०० 'पेसो' पर स्वयं को धरती का स्वामी सिद्ध करने के लिए कागज तैयार करने को एक वकील किया। कुछ सप्ताह बाद मोरो को कागज़ मिल गया और वह उसे मेजर को दिखाने के लिए ले गया। वह तो कर-घोषणा पत्र था। जब मोरो को यह पता लगा तो वह क्रोध से तिलमिला उठा और उसने वकील को मार डालने की धमकी दी, क्योंकि उसके साथ चाल खेली गयी थी। किन्तु मेजर वैलिनोवा ने उसे समझाया—"ऐसा मत करना। तुम्हें जो कुछ चाहिए था वह मिल गया। इस पत्र में लिखा है कि यह जमीन तुम्हारी है और उस पर निम्नलिखित कर लगने आवश्यक हैं। किन्तु यह धरती-सम्बंधी अधिकार-पत्र नहीं है। तुम कार्यालय में आकर धरती-सम्बंधी अधिकार-पत्र के लिए आवेदन-पत्र क्यों नहीं दे देते? यह काम निःशुल्क होता है।" बेचारा मोरो जो इतनी उलझनों के कारण विनम्र बन गया था, बोला—"किन्तु, साहब, मैं तो एक अज्ञानी मोरो हूँ।" मेजर ने उसकी बात को स्वीकार कर उसका बयान ले लिया होता किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। बहुत सी समस्याएँ तभी उत्पन्न होती है जब सीधे-सादे लोग अपनी अज्ञानता के कारण सभ्यसमाज की कानूनी उलझनों में फँस जाते हैं।

एक दिन सुबह को मोरो डाटू (मुखिया) का भाई जिसने बुल्डन में नगर-योजना के लिए जगह दान दी थी, फार्म-प्रशासक के पास आया और अपना काठ-कबार हटाने के लिए सेना का एक ट्रक माँगा। मेजर ने उसे समझाया कि सेना की सामग्री निजी उपयोग में नहीं आ सकती। मोरो हठी था। वह समझता था कि उसे विशेष रियायत मिलनी चाहिए। उसने कहा—"सेना के ट्रक ने डाटू का चावल 'कोटावाटो' पहुँचाया था।" मेजर ने कहा—"हां ठीक है,

लेकिन वह तो नगर तक हमारी नियमित व्यवस्था है, इसलिए सेना को कोई अतिरिक्त व्यय नहीं करना पड़ा था। हमारे पास तेल बहुत कम है और असैनिक कामों के लिए विशेष यात्रा का प्रबंध नहीं हो सकता।" यह देख कर कि मोरो एकदम क्रुद्ध होता जा रहा है, वैलिनोवा ने एक सैनिक-जवान को, जो मोरो था, बुलाया और उससे अपनी भाषा में सारी बात समझाने के लिए कहा। अन्त में उनमें यह समझौता हो गया कि मोरो तेल के 'पेसो' देगा और ट्रक उसका सामान पहुँचा देगा। ऐसी-ऐसी मानवीय समस्याओं का सामना प्रशासन को लगातार करना होता है।

कपतगान के 'एडकोर' फार्म के पूर्व में एक क्षेत्र है, जो आजकल के निवासियों की धरती से दुगना है। यह एक मोरो का है और उस पर उसका और उसके पांच भाइयों का अधिकार है। वे भूमि के थोड़े से ही भाग में खेती-बाड़ी करते हैं। फार्म प्रशासन ने इस बात की कोशिश की है कि मोरो यह धरती एडकोर-योजना को विस्तृत करने के लिए सरकार को दे दे और अपने और पाँचों भाइयों के लिए एक निरीक्षण किया हुआ फार्म रख ले। इससे मोरो लोगों को यह लाभ होगा कि वे एक ऐसे सुविस्तृत योजना-केन्द्र में रहेंगे, जिसमें सड़कें, स्कूल, दवा-पानी के साधन और उनकी फसल के लिए बाज़ार होगा। बातचीत चलती रही। कैप्टन जोंग्को ने मोरो लोगों को स्वयं आकर प्रस्तावित योजना का नक्शा देखने और अपने लिए क्षेत्रों को पसंद कर लेने का निमत्रण दिया। नियत तिथि को पाँचों भाई तो आ गये, लेकिन जिसके नाम धरती थी वह नहीं आया। हर एक भाई अपने-अपने लिए जगह बताने लगा। यदि उनके हिसाब से उनकी इच्छा पूरी कर दी जाती तो एडकोर के लिए कुछ भी न बचता। अतः बातचीत ठप्प हो गयी।

एडकोर-प्रशासन को अपनी योजनाओं के लिए हमेशा आर्थिक तंगी रही है; क्योंकि उसकी योजनाएँ अधिक धन से आरम्भ नहीं हुई थीं और स्वेच्छापूर्वक परिश्रम से ही काम हुआ था। 'कपतगान' के विकास पर पहले छः महीनो में ३,२०,००० 'पेसो' का व्यय हुआ; आइजावेला के नये फार्म पर तो इससे भी कम व्यय हुआ है। कोटावाटो प्रदेश में एक बृहत्तर फार्म की आयोजना हुई है। योजना-केन्द्र तक पहुँचने के मार्ग, अन्य गलियों, फार्म, सड़कों, झोपड़ियों और केन्द्रीय भवन पर, जो पहले केन्द्रों से अधिक परिमाण में रहेंगे, केवल १२,००,००० 'पेसो' ही व्यय होते हैं। यह रकम न्यूयार्क नगर की 'वर्ल्ड-सीरीज़' के एक खेल बेसबाल की आमदनी के बराबर है!

इससे आधी रकम ही एक एडकोर-फार्म को एक साल तक चलाने के लिए काफी होगी, किन्तु वे लोग अपना काम तो बहुत कम खर्च में ही चला रहे हैं।

१९५३ की अंतिम तिमाही में पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था के अभाव के कारण यह आवश्यक हो गया था कि कुछ योजनाओं में कटौती कर दी जाय। 'कपतगान' में पानी के निकास का काम केवल मुख्य सड़कों तक ही सीमित रखा गया था। किनारे की सड़कों पर अभी भी ट्रक नहीं चल सकते थे। निवासियों के लिए 'करावाओ' और हल नहीं खरीदे जा सके थे, हालांकि उनके लिए बहुत दिनों पूर्व ही आर्डर दिया जा चुका था। बुल्डन में दो बुल्डोज़र और एक रोडग्रेडर (सड़क कूटने वाला इंजिन) को चलाने के लिए डीज़ल-आयल भी नहीं था। इधर फार्म-सड़कों की अत्यन्त आवश्यकता थी। सारा सामान बेकार पड़ा था। रसद ढोने वाले ट्रक को चलाने के लिए तेल की कमी थी। फार्म-प्रशासक को आशा थी कि निवासियों के लिए खेती का सामान लाने में तेल काफी दिन चलेगा। मोटर-घर में, जहाँ गाड़ियों की देखभाल की जाती थी, छोटे-छोटे पुरजों की कमी थी।

अन्त में, प्रशासन को निवासियों के राशन-भत्ते में कमी करनी पड़ी। इससे कोई कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि कुछ निवासी तो पूर्ण रूप से आत्म-निर्भर हो चुके थे और कुछ आंशिक रूप से थे। कुछ उदाहरणों में फार्म-उत्पादन सम्बंधी अधिक प्रयत्न करने के लिए, राशन की कटौती अंकुश का काम कर सकती थी। लेकिन कुछ ऐसे उदाहरण भी थे, जहाँ बीमारी के कारण या फसल को नुकसान पहुँचने के कारण परिवार साधनहीन बन गया था। फार्म-प्रशासक को ऐसी संकटकालीन परिस्थितियों में धन की आवश्यकता पड़ती थी।

फार्म पर आने से पहले निवासियों को जो लम्बे-चौड़े वचन दिये गये थे, उनके कारण फार्म-प्रशासक के कार्य में बड़ी उलझन पैदा हो गयी है। नागरिक कार्यों से सम्बंधित अधिकारी, क्षेत्र-नायक, काँग्रेस-सदस्य, समाज-कल्याण विभाग तथा राष्ट्रीय-सुरक्षा विभाग निवासियों को भरती करते थे और उनके आवेदन-पत्र भेजते थे। नयी योजना के उत्साह में वे आशा से अधिक वचन दे बैठते थे। एडकोर-प्रशासन को सब प्रार्थियों से मिलना पड़ता और स्वीकृति देनी पड़ती थी। लेकिन संगठित होने के प्रारम्भिक महीनों में, निवासियों से मिलते समय भी उन बड़े-बड़े वचनों को नहीं सुधारा गया जो उन्हें पहले दिये गये

थे। वास्तव में हाथ से छपा हुआ एक परिपत्र 'एडकोर सामुदायिक योजना' जो सेना के समस्त दलों के पास प्रचार और भरती के लिए भेजा गया था उसने ही उन लोगों में यह भावना पैदा कर दी थी कि खेती यान्त्रिक साधनों से होगी। परिपत्र में लिखा था "एडकोर की फार्म-मशीनरी और उसके कार्यकर्त्ताओं की टैक्निकल सहायता से प्रत्येक निवासी की कार्यक्षमता को ध्यान में रख कर प्रारम्भ में एक से ले कर तीन हेक्टर धरती की सफाई और जुताई की जायेगी। निवासी अपने फार्म पर अधिकार करने के बाद थोड़े से दाम दे कर कृषि-मशीनों की सेवा ले सकेगा।" 'एडकोर' आज तक इस प्रकार की यान्त्रिक सहायता नहीं दे पाया है, किन्तु अधिकांश निवासी इस बात को अभी तक मानते हैं कि धरती की सफाई करने में प्रशासन को उनकी सहायता करनी चाहिए।

एडकोर के नाम पर एक राजनैतिक-नेता ने लोगों को निःशुल्क भोजन, निःशुल्क मकान, साफ की हुई धरती और ट्रैक्टर द्वारा खेती की सहायता का वचन दे दिया। इस आधार पर उसने विभिन्न रूप-रंग के अधेड़ आदमियों तथा प्रान्त के लिए समस्या बने लड़कों को इकट्ठा करके बुल्डन भेज दिया। वन-खेती की वास्तविकताओं को न समझ कर इस प्रकार की बेतुकी बातें करने से ऐसे लोगों को असफलता ही हाथ आ सकती थी।

प्रशासन की सर्वाधिक कठिन समस्याओं का कारण यह था कि उसे निवासी चुनने का पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं था। वह निवासियों के आने से पहले ही उनमें से अयोग्य व्यक्तियों को छाँट नहीं सका और फार्म-जीवन के प्रति उनकी अवास्तविक कल्पनाओं को वश में नहीं कर सका। इन कठिनाइयों से काफी सावधान हो कर कर्नल मीगसॉल ने नई योजनाओं के लिए अधिक सतर्कता-पूर्ण भरती करने और प्रार्थियों की अच्छी तरह से जाँच करने पर जोर दिया है। उसने कहा—"निवासियों को सब कुछ देने का मनोवैज्ञानिक प्रचार अविवेकपूर्ण था। इससे गलतफहमी की भी सम्भावना थी और निवासियों को पूरी चेतावनी भी नहीं मिल सकी। अब हम प्रत्येक प्रार्थी पर अलग विचार करते हैं। हम देखते हैं कि उसके पास कौन-कौन से औज़ार हैं; उसके पास 'कराबाओ' है या नहीं, तथा उसके पास अन्य कौन-कौन से साधन हैं। तब हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति का ही वचन देते हैं, जिन्हें वह पूरा करने में असमर्थ होता है। इस तरह निवासी जान जाता है कि उसको कठोर परिश्रम करना है, क्योंकि उसने अपने निजी साधन भी सामुदायिक योजना में लगा रखे हैं।"

दूसरी समस्या स्थानीय फार्म-प्रशासक के अधिकार से सम्बन्धित है। सेना के आदेशों के अनुसार निवासियों की शिकायतें स्थानीय अधिकारियों को सुनना आवश्यक था। कर्नल मीरासोल ने फार्म-अधिकारियों के अधिकारों को दृढ़ बनाने का भरसक प्रयत्न किया है किन्तु व्यवहार में निवासी मुख्य-प्रशासक से लेकर कैम्प-मर्फी के प्रधान-केन्द्र तक या उससे भी ऊँचे सरकारी अधिकारियों तक पहुँच जाते है। फार्म की एक-दो घटनाओं से निवासियों के मस्तिष्क में यह भर गया है कि उच्चाधिकारियों के पास जाने से उन्हें विशेष रियायतें मिल जायेंगी। उदाहरण के तौर पर, एक सरकारी उच्चाधिकारी, जब फार्म पर आया तो एक निवासी ने उसका बड़ा स्वागत किया। वे दोनों पुराने परिचित थे। हाथ मिलाने और हंसी-मज़ाक होने के बाद निवासी ने उससे 'चिकिन-वायर' और 'इनक्युबेटर' (अंडे सेने का यन्त्र) के लिए कहा, जिससे वह मुर्गी पालने का धंधा कर सकता। फार्म-प्रशासक की ओर मुड़ कर अधिकारी ने कहा—"इनको जो कुछ चाहिए, दे दो। इसमें भूल न हो, क्योंकि मैं एक महीने बाद फिर जाँच के लिए आऊँगा।" यह बातचीत निवासियों के समूह के सामने हुई। फार्म-प्रशासक बड़े असमंजस में पड़ गया। उसके पास इस प्रकार की विशेष योजनाओं के लिए धन नहीं था और निवासियों के साथ किसी भी रूप में वह पक्षपात नहीं करना चाहता था। इस प्रकार की घटनाओं से उनके अधिकार को आघात पहुँचता था।

'एडकोर' को अपने निवासियों में उल्लेखनीय सफलता मिली है। असफलता का सामना कम करना पड़ा है। १९५३ के अन्त तक केवल उन्नीस निवासी (कुल विस्थापितों का ६ प्रतिशत) सामुदायिक नियोजन छोड़ चुके हैं अथवा निकाले गये हैं। इनमें छः चोरी के अपराध में दण्डित हुए थे। पांच ने काम करने और अपने फार्म को विकसित करने से इनकार कर दिया था। तीन छोड़ कर भाग गये थे। दो के पास से गैर-कानूनी गोला-बारूद पायी गयी थी। दो ने अस्वस्थता के कारण त्यागपत्र दे दिया था तथा एक ने सरकार के विरुद्ध उपद्रव खड़ा करने की चेष्टा की थी। इन विभिन्न कारणों से उनको अलग कर दिया गया था।

फार्म-प्रशासक बड़ी अनिच्छा से किसी निवासी को निकालते हैं। वे उसे हर प्रकार का अवसर और प्रोत्साहन देते हैं, क्योंकि वे पुराने हुकों को सुधारने के आधारभूत उद्देश्य में सफल होना चाहते हैं। फार्म प्रशासकों को एक पत्र में कर्नल मीरासोल ने लिखा था—

"यह देखा गया है कि ऐसे निवासियों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिन्हें दुर्व्यवहार अथवा आलस्य के कारण निकाला जा रहा है। यद्यपि ऐसे कार्य वर्तमान नीति के अनुरूप ही है, फिर भी सरकार के हित के संरक्षण और एडकोर सामुदायिक नियोजन केन्द्र के कल्याण के लिए इस प्रशासकीय कार्य को अन्तिम उपाय ही समझना चाहिए।

"वास्तव में, हर बार, निकाले गये निवासी के एडकोर के अंतर्गत पुनर्निवास में असफल होने पर ही, इस प्रकार उसे अलग किया जाता है।

"इसलिए यह आवश्यक है कि समाजशास्त्र-सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जाय, ताकि यदि सम्भव हो तो कोई ठोस हल निकल आये, जिससे कि निवासियों को, विशेषकर पुराने हुकों के पुनर्निवास का काम सफलतापूर्वक किया जा सके।"

जैसा कि ऊपर के कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है, यदि निवासी अपने करार का उल्लंघन करता है तो उसे निकाल दिया जाता है। ऐसे उदाहरणों में, जहाँ निवासी अपने काम में रुचि न दिखाता हो, प्रशासक पहले उसे चेतावनी-पत्र भेज सकता है। जिन १४ व्यक्तियों को ऐसे पत्र भेजे गये, उनमें से आधे लोगों पर इसका प्रभाव पड़ा है। दूसरे लोगों को पुनः चेतावनी-पत्र मिला, जिसके द्वारा उन्हें निश्चित उन्नति दिखाने के लिए तीन महीने की परीक्षा-अवधि दी गयी। उक्त अवधि के अन्त में, जो उन्नति नहीं दिखाते, उनका निरीक्षण होता है। इन परिस्थितियों में निकाले जानेवाले निवासियों की संख्या नवम्बर १९५३ में केवल दो थी। निरीक्षण-समिति द्वारा अयोग्यता का निर्णय मिलते ही निवासी को निकाल दिया जाता है।

कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने, अपने मामले का निरीक्षण होने से पहले ही, प्रार्थना-पत्र दे कर अपने को फार्म कार्य के अयोग्य पाने के कारण अपने-अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की थी। लीटे के १८ वर्ष के एक नवयुवक के सम्बंध में तो वह बात सत्य थी। वह १९५३ में निवासियों के अन्तिम समूह के साथ बुल्डन आया था। उसे एक मकान, मकान बनाने की जगह, नगर से ५ किलोमीटर की दूरी पर एक फार्म तथा १·२० 'पेसो' प्रति दिन के हिसाब से राशन दिया गया था। इसके अतिरिक्त सामुदायिक योजना-निरीक्षक ने उसे सलाह और प्रोत्साहन भी दिया, किन्तु वह काम नहीं कर सका। उसे शिकायत थी कि उसका फार्म बहुत दूर है और बड़ा ऊबड़-खाबड़ है, यद्यपि अन्य निवासी बड़ी अच्छी तरह अपना काम चला रहे थे और उनका फार्म

उससे भी अधिक दूर था तथा पहाड़ी था। उसका ज्ञान अधूरा था और काम में रुचि न थी। छः महीने बाद उसने लौटे जाना चाहा और वहाँ जाकर काम करने और एडकोर के ३२० 'पेसो' के ऋण को वापिस देने का वचन दिया।

एडकोर-फार्म के असफल लोगों में अधिकतर वे नवयुवक थे, जिनकी औसत-आयु २५ वर्ष होती थी। उनमें आधे से कम (४२ प्रतिशत) विवाहित थे और उनके साथ आश्रित व्यक्तियों की औसत-संख्या दो थी। वे कई प्रान्तों से तथा फिलिपाइन के विभिन्न प्रदेशों से आये हुए थे। जो पहले काम कर चुके थे, उनमें किसान, मछुए, आराकस, जहाज पर माल ढोनेवाले, पुलिसमैन और ड्राइवर थे। उनकी औसत-शिक्षा तीसरी कक्षा तक सीमित थी। इन सब विशिष्टताओं में से जवानी और अधूरा ज्ञान, पारिवारिक उत्तरदायित्व का अभाव और एडकोर आने से पहले स्वेच्छाचारिता आदि ऐसी बातें थीं जिनके कारण अधिकांश असफलताएं हुईं।

सहकारिता, योग्यता और उद्योग, आचरण और चरित्र के अनुसार प्रति मास हर निवासी को श्रेणी दी जाती है। उदाहरण-स्वरूप, सहकारिता को लीजिए। पहली श्रेणी—दूसरों के साथ काम करने में असाधारण सफलता पाने पर; दूसरी श्रेणी—दूसरों के साथ कंधे-से-कंधा मिला कर काम करने पर; तीसरी श्रेणी—सहकारिता से ठीक-ठीक काम करने पर; और चौथी श्रेणी—सुधरने में अयोग्य और अ-सहकारी के लिए प्रयुक्त होती है। इसी प्रकार योग्यता और उद्योग तथा आचरण और चरित्र पर एक से ले कर चार श्रेणियां दी जाती हैं। उन संख्याओं को मिलाने के बाद, लेखक ने निवासियों को तीन वर्गों में रखा—उच्च, सामान्य और शंकायोग्य। कुल निवासियों में से १६ प्रतिशत उच्चवर्ग, ७३ प्रतिशत सामान्य तथा बाकी ११ प्रतिशत शंकायोग्य वर्ग में पाये गये। इसके बाद हर वर्ग की विशिष्टताओं की, यह जानने के लिए परीक्षा की गयी कि निवासी सफल कैसे बनता है और किन कारणों से शंकायोग्य हो जाता है।

सर्वाधिक सफल सुधार अधिक उम्रवाले और अनुभवी व्यक्तियों ने किये। उच्च वर्ग की औसत उम्र सैंतीस वर्ष, सामान्य वर्ग की इकत्तीस वर्ष तथा शंकायोग्य निवासियों की २५ वर्ष पायी गयी। स्पष्ट है कि सफलता प्राप्त करने की उम्र ३० और ४० के बीच में ही है।

उच्च वर्ग के कार्य और उम्र का समर्थन विवाह के आंकड़ों ने भी किया है।

इस वर्ग में ८१ प्रतिशत विवाहित थे और सामान्य वर्ग के ६२ प्रतिशत। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वन साफ करनेवाले व्यक्ति के लिए पत्नी का होना आवश्यक है।

और यदि उस पर आश्रित व्यक्तियों की, विशेषकर ऐसे वयस्कों की जो काम भी कर सकें, बड़ी संख्या हो तो उसकी सफलता की सम्भावना और अधिक हो जाती है। आश्रितों की उम्र का ध्यान न रख कर और पति-पत्नी के सम्बन्धियों तथा बच्चों को मिला कर उच्च वर्ग के निवासियों पर आश्रित व्यक्तियों की औसत संख्या पाँच, सामान्य वर्ग की तीन तथा शंकायोग्य की दो थी। परिवार से उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है और जितना ही बड़ा परिवार होगा उतनी ही सुरक्षा की भावना और पारिवारिक नैतिकता अधिक होगी। कम से कम मिन्डानाओ की सीमा पर तो यही परिलक्षित होता है।

यह आम विश्वास तथ्यों से प्रमाणित नहीं हुआ कि निवासियों का चुनाव उन्हीं लोगों में से करना आवश्यक है, जिन्हें फार्म का पूर्व-ज्ञान हो। उच्च वर्ग में से ३८ प्रतिशत को, सामान्य में से २२ प्रतिशत को तथा शंकायोग्य में से १६ प्रतिशत को फार्म का कोई पूर्व-ज्ञान नहीं था। यद्यपि व्यक्तिगत रूप से कुछ अपवाद भी हैं, परन्तु फार्म का पूर्व-ज्ञान 'एडकोर' में सफलता के लिए आवश्यक नहीं था। पुराने कृषि-क्षेत्रों में प्रचलित कठोर लोक रीतियां, सीमा-क्षेत्र में फार्म-स्थापना की विभिन्न पद्धतियों के साथ मेल नहीं खाने देती हैं।

असली बात तो यह है कि सुशिक्षित लोगों ने 'एडकोर' में अति उत्तम काम किया है। उच्च वर्ग की शिक्षा का औसत पांचवी कक्षा, सामान्य का तीसरी कक्षा तथा शंकायोग्य का केवल दूसरी कक्षा तक था। फिर भी तीनों वर्गों ने कुछ ऐसे अशिक्षित भी थे, जो कभी स्कूल गये ही न थे। कालेज के ग्रेजुएट उच्च तथा सामान्य वर्गों में पाये जाते थे। शंकायोग्य निवासियों में कुछ हाई स्कूल उत्तीर्ण भी थे। किन्तु इन सब प्रासंगिक अपवादों के होते हुए भी अधिक पढ़े-लिखे मनुष्य के सफल निवासी बनने की अधिक सम्भावना है।

'हुक'-आन्दोलन से सम्बन्ध की दृष्टि से सर्वोत्तम निवासी कौन हैं? जो 'हुक'-आन्दोलन में गहरी रुचि रखते थे, सुस्थिर लोग, अथवा वे, जो आन्दोलन में भाग लेने का नाम करते थे? एडकोर के अधिकारियों का आम विश्वास था कि 'असली-भूतपूर्व हुक' सर्वोत्तम निवासी हैं। किन्तु, फार्म की

सुधार की दृष्टि से किए हुए निवासियों-सम्बन्धी विश्लेषण से यह बात प्रमाणित नहीं होती। सब निवासी चार वर्गों में विभक्त किये गये थे, सुस्थिर लोग, बन्दी-हुक, आत्म-समर्पित-हुक तथा संदिग्ध। फार्म-प्रशासन द्वारा दी गयी श्रेणियों के अनुसार प्रत्येक वर्ग का औसत ३ से १२ अंकों के आसपास आता है। कम अंकों से ऊँची श्रेणी का पता चलता था। यदि 'असली-भूतपूर्व हुक' अच्छे निवासी पाये जाते तो उनके अंक दूसरों से कम होते। परिणाम इस प्रकार हैं—

स्थिर लोग .... ६·१
बन्दी-हुक .... ७·०
आत्म-समर्पित हुक...... ७·३
संदिग्ध .... ७·३

स्थिर लोगों ने दूसरों की तुलना में उत्तम परिणाम दिखाये। यह तो अपेक्षित था ही, क्योंकि उनका चुनाव ध्यानपूर्वक किया गया था। आंकड़ों के अनुसार ७·० और ७·३ के बीच का अन्तर नगण्य है। परिणाम यह निकला कि चाहे वह बन्दी हो, आत्म-समर्पित हो या संदिग्ध हुक हो, एडकोर फार्मों के सुधार-कार्य में कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता था।

एडकोर-प्रशासन ने अपनी सफलता के लिए कोई लम्बा-चौड़ा दावा नहीं किया है। कर्नल मीरासोल ने कहा—"निवासी के सुखी और समृद्धि-शाली होने पर, हम यह नहीं समझते कि हमारा कार्य पूरा हो गया। असली कार्य तो, यह देखना है कि वह कम्यूनिस्ट विचारों से विमुख हुआ है या नहीं? जो कुछ निवासी कहता है या करता है उसीसे हम निर्णय नहीं कर सकते। अच्छे गुप्तचर ही अच्छे सहकारी होते हैं।" गुप्तप्रणाली के अनुसार निवासियों के तीन वर्ग होते हैं—लाल, सफेद और नीले। लाल वे, जिन पर निगरानी रखी जाय, सफेद वे, जो असंदिग्ध और निर्दोष हैं; और नीले वे, जिन पर संकट-काल में बंदूकें थमा कर विश्वास किया जा सके। लाल वर्ग से नीले वर्ग तक, व्यक्ति के क्रमिक सुधार के लिए 'एडकोर' प्रयत्नशील रहता है।

हुक-एजेंटों द्वारा आसपास के क्षेत्रों में उपद्रव खड़ा करने और योजना में विघ्न उत्पन्न करने का भय बना रहना ठीक भी है। कपतगान फार्म के विरुद्ध भूमितर कम्यूनिस्ट-वर्ग द्वारा किये षड्यन्त्रों का पता चलने पर उनको रोक दिया गया। एडकोर का एक निवासी सरकार विरोधी कार्यों को प्रोत्साहन देने के कारण निकाल दिया गया। ऐसे षड्यन्त्र कम हुए हैं और इनका अधिक फैलाव

भी नहीं है; वास्तव में एडकोर में, जैसी कि आशा थी, राजद्रोह-सम्बन्धी उपद्रव कम ही हुए हैं।

पुराने क्रान्तिकारियों के साथ रहकर एडकोर ने धरती-सम्बन्धी समझौते का काफी ज्ञानार्जन किया है। प्रारम्भ से, कपतगान-फार्म का मार्गदर्शन करनेवाले कैप्टन जोंग्को से जब पूछा गया कि यदि वे अब दुबारा फार्म का काम प्रारम्भ करें तो किन सिद्धान्तों का प्रयोग करेंगे, तो उन्होंने निम्नलिखित १२ सिद्धान्तों को गिनाया :—

१. उपनिवेश स्थापित करने से पहले भूमि का भली प्रकार निरीक्षण कर लेना चाहिए और अनधिकारियों को या तो हटा देना चाहिए अथवा उनके दावों का निबटारा कर लेना चाहिए।

२. नगर लगभग ८० हेक्टर (लगभग १९७½ एकड़) भूमि पर होना चाहिए और मध्य में होना चाहिए जहाँ सब फार्म-मार्ग आकर मिलें।

३. योजना में एल-५ की एक उतरने की पट्टी होनी चाहिए, जिससे समीपतम फौजी अड्डे से सम्बंध स्थापित किया जा सके।

४. निवासियों के आने से पहले फार्म की जगह का ६ हेक्टरवाले प्लाटों में विभाजन का प्रबंध हो जाना चाहिए।

५. निवासियों की भली प्रकार जाँच कर लेनी चाहिए कि वे फार्म-जीवन के अनुकूल हैं या नहीं। उन्हें बता देना चाहिए कि उन्हें जंगल से भरी धरती साफ करनी पड़ेगी। सारी व्यवस्था पहले से ही समझ लेनी चाहिए।

६. यंत्रवेत्ताओं को पानी की व्यवस्था कर लेनी चाहिए और बिजली की रोशनी के लिए पावर-हाउस बना देना चाहिए।

७. औषधालय तथा इलाज की व्यवस्था तुरन्त हो जानी चाहिए।

८. निवासियों को राशन देना चाहिए, परन्तु इस शर्त पर कि वह उन्हें वापस करना है।

९. चावल और मक्के की फसल के साथ-साथ पटुआ और काफी जैसी मूल्यवान फसलें भी लगानी चाहिए।

१०. जब सब निवासियों को अधिकार-पत्र मिल जायं तो फिलिपाइन नेशनल-बैंक को ऋण वसूल करने का अधिकार दे देना चाहिए।

११. सेना के कार्यकर्त्ताओं का बस्ती खोलने में कई कारणों से प्रयोग किया जाना चाहिए। एक तो यह कि सीमा-प्रदेश पर सुरक्षा का काम सैनिक-पुलिस ही कर सकती है; दूसरे यह कि काम करनेवाली सेना, तैयार की गयी

सेना से कम खर्चीली होती है; तीसरे यह कि सेना का हिसाब रखने की पद्धति और नियम, जल्दी ही और फलप्रद होनेवाली उन्नति में सहायक सिद्ध होते हैं।

१२. 'एडकोर' के कार्यकर्त्ता वे अधिकारी तथा अन्य लोग होने चाहिएँ जिन्होंने स्वेच्छापूर्वक प्रचार-कार्य में रुचि प्रकट की हो।

एडकोर के अनुभव ने, उन मार्गों के महत्त्व को कम कर दिया है जो निवासियों को बाहरी समाज से मिलने में सहायक होते हैं। सफलता के लिए जो दूसरी आवश्यक बातें सिद्ध हुईं, वे हैं पर्याप्त पुलिस-संरक्षण से जीवन की सुरक्षा, धरती-सम्बंधी अधिकार-पत्र देने के लिए एक व्यवस्थित, विश्वसनीय पद्धति, स्वास्थ्य, शिक्षा और धर्म की व्यवस्था और निवासी के आत्मनिर्भर होने योग्य सहायता—किन्तु इतनी नहीं कि उसके काम करने की इच्छा ही समाप्त हो जाय।

फिलिपाइन की प्रशासन-बुद्धि का एडकोर में पर्याप्त रूप से प्रदर्शन हुआ है। सम्भवतः अमरीकी निपुणता की कठोर और अवैयक्तिक जाँच द्वारा ये उपनिवेश 'ढीले-ढाले काम' कहलाये जाने चाहिए। सम्भवतः इतनी ही अवधि में अमरीकी योग्यता में निपुण व्यक्ति ने अधिक मिट्टी खोद दी होती, अधिक खाइयाँ खोद दी होतीं, अधिक फार्म-मार्ग बना दिये होते, और वन की काफी सफाई कर दी होती, किन्तु उसने धन भी अधिक व्यय किया होता। जो साधन उनके पास थे, उन्हीं से फार्म-प्रशासकों ने फार्म सामुदायिक योजनाओं को सुदृढ़ आर्थिक स्थिति में रखा है और स्वस्थ प्रजातांत्रिक योजनाओं को बनाने के आधारभूत उद्देश्य को कठोरता से निभाया है। आदमियों के साधन, वातावरण की विभिन्नताएँ, अधिक परिणाम में अशिक्षा, और 'हुकों' की प्राचीनताओं को देखते हुए, जो सफलता मिली है वह उल्लेखनीय है। प्रशासन ने समझ-बूझ, सहानुभूति तथा अथक धैर्य का परिचय दिया है। इन आवश्यक पूर्वी गुणों में वे बाजी मार ले गये हैं।

उत्तरदायी सरकार के अनुभवों द्वारा ही इन प्रशासकीय गुणों व उद्देश्यों का विकास हुआ है। कम्यूनिस्ट क्रान्तिकारियों के कोलाहलपूर्ण दावों और वचनों की समानता में ये अनुभव अनुत्तेजक तथा नीरस भले ही लगें, किन्तु इनसे सच्ची सफलता का आभास होता है। 'हुकों' जैसे क्रान्तिकारी वर्ग पर शासन-सञ्चालन का कोई उत्तरदायित्व नहीं है, किन्तु उसे प्रचार के आवश्यक लाभ हैं। सरकार चाहे समाज-सुधार के कार्य में आनेवाली समस्याओं के बारे में

अपना सर फोड़ती रहे, किन्तु विरोधी लोगों को दोष निकालने, कमजोरियों पर ध्यान केन्द्रित करने और यदि वे शासन के अधिकार में होते तो वे कैसे-कैसे कार्य करते, जैसी डींग मारने के लिए स्वतंत्रता है। विचारहीन नागरिक एक-बारगी विद्रोही के पलायनवादी वचनों की ओर आकर्षित हो सकता है और सरकार के ठोस, किन्तु कभी-कभी धीरे-धीरे होनेवाले विकास की ओर से विमुख हो सकता है। कम्यूनिज्म के विरुद्ध युद्ध के लिए, प्रजातन्त्र को सदा ही क्रान्तिकारी के स्वप्न की छाया के विपरीत ठोस प्रशासकीय प्रयत्न करना आवश्यक है और यही एडकोर का रचनात्मक महत्व है।

अध्याय ७

वर्ग-भेदों का उन्मूलन

पेड्रो मारियानो सदा ही फार्म पर रहा था। उसको वे पुराने दिन याद आ गये जब वह धान के खेतों के पास की सकरी नालियों पर खेला करता और 'कराबाओ' को लाने के लिए कुँए तक जाया करता था। वह अपने इस बड़े और प्रिय साथी को कितना चाहता था! वह, उसकी पूँछ पकड़ कर पीछे से चढ़ बैठता और उसकी चौड़ी परिचित पीठ पर बैठकर घूमता था। 'कराबाओ' अपने कान फड़फड़ाता और उसके साथ इस तरह चलता था जैसे कि उसे छोटे बच्चों की आवश्यकताओं का पूरा ज्ञान हो।

जब पेड्रो बड़ा हुआ तब उसने धान की खेती सम्हाली। जब वह बच्चा था तब धान के छोटे-छोटे पौधों को, बीज बोने की धरती से ले जा कर खेत में लगाया करता था। अब तो वह वयस्क का काम करने लगा था। पौधे लगाने से पहले वह मुलायम और गहरी मिट्टी में हल चलाता, छोटे-छोटे पौधों को लगाता, अनाज के पकने के समय वह उसकी रक्षा के लिए कई बार चक्कर काटता और फसल-कटाई के दिन जुट कर काम करता था। उसके अतिरिक्त, उसके चार भाई, दो बहिनें और माता-पिता भी काम करते थे। उसका पिता अध-बँटाई के हिसाब से काश्तकार-किसान के रूप में काम किया करता था। उसके पास चार हेक्टर जमीन थी जो उस प्रदेश में हरेक काश्तकार को दी गयी दो से तीन हेक्टर औसत धरती से अधिक थी। फिर भी इतनी धरती उसके लिए काफी नहीं थी। क्योंकि यह न तो उसके बच्चों को काम पर लगा सकती थी और न परिवार के लिए पूरी पड़ती थी।

प्रत्येक बुआई के समय, पहले जमींदार काश्तकार को दो बोरे पलाय (बिना भूसी निकले हुए चावल अर्थात् साठीं) बीज के लिए देता था। इसके अतिरिक्त यदि काश्तकार कोई भी अनाज लेता तो वह ऋण के रूप में समझा जाता था जिसकी अदायगी फसल-कटाई के बाद होती थी। परिवार को अपने जीवन-निर्वाह के लिये सदा ही ऋण लेना पड़ता था। उधार लिये गये प्रत्येक पलाय के बोरे के बदले जमींदार फसल-कटाई के समय दूना वसूल कर लेता

था। इस बीच की अवधि में वह पलाय के बढ़ते हुए मूल्य में भी हिस्सा लेता था। अब उसका मूल्य कमी के समय की तुलना में उतना ही दूना हो जाता था जितना कि फसल-कटाई पर वापिस देते समय होता था। इस तरह छः महीने के अन्दर, जमींदार दुगने के स्थान पर चौगुना ब्याज ले जाता था। साल भर में तो यह ब्याज ८०० प्रतिशत हो जाता था। अधिक ब्याज लेने की ही समस्या, मध्य लूज़न में कृषि सम्बन्धी अशान्ति का, महान हानिकारक और दुःखदायी रूप है।

जैसे-जैसे पेड्रो वयस्क हुआ, परिवार पर कर्ज़ भी बढ़ता गया तो उसने घर छोड़ने और नौकरी ढूंढ़ने का निश्चय कर लिया। पहले वह ओलांगैपो के सैनिक-दफ्तर में गया और फिर उसने मनीला के चक्कर काटे। फिर वह निराश होकर अपने फार्म पर वापस आ गया। बाद में उसे मालूम हुआ कि इलोइलो में एक जगह खाली है तो उसे लम्बी और खर्चीली नाव-यात्रा करनी पड़ी। वहाँ भी उसे निराशा ही हाथ लगी। मनीला लौटने पर, एक दिन उसके मित्र ने टोन्डो की गन्दी बस्ती में उसे भोजन के लिए बुलाया। जब पेड्रो ने अपनी असफलताओं की कहानी सुनायी, तो उसके मित्र ने कहा— "तुम्हारे पास काम नहीं है; इस तरह काश्तकार-किसान की तरह गुलाम रह कर कब तक भूखे मरोगे? हुकों में क्यों नहीं सम्मिलित हो जाते?" इस तरह मध्य लूज़न के धान के खेतों के दूसरे आदमियों की तरह, पेड्रो क्रान्तिकारी बन गया। उसने ऐसी प्रणाली के विरुद्ध लड़ने का निश्चय किया, जहाँ मेहनत का फल नहीं मिलता और जिसमें नवयुवकों को कोई अवसर नहीं दिया जाता।

इस प्रकार की कृषि-सम्बन्धी अशान्ति की पृष्ठभूमि में एडकोर-फार्म के ३२ प्रतिशत पुराने हुक हैं। फिलिपाइन-समाज की सामाजिक वर्ग-व्यवस्था में आर्थिक-शोषण की सीधी-सादी बात, प्रत्यक्ष तथा नाटकीय ढंग में पायी जाती है। जैसा कि ३२ प्रतिशत के आंकड़े से पता चलता है, अशान्ति का मूल कारण, जो हुक-विद्रोह का पोषण करता है, बहुत भिन्न और पेचीदा है। आधारभूत समस्या, वह समाज है, जहाँ लोग अलग-अलग वर्गों में तो बिभक्त हैं, लेकिन उन वर्गों के अधिकारों और वेतन में कोई समानता नहीं है। केवल अर्थ-सम्बंधी वस्तुएं ही नहीं, बल्कि मान्यता, प्रतिष्ठा, शिक्षा के अवसर, मतदान की योग्यता तथा न्यायपूर्ण समानता भी जोखम में हैं। 'एडकोर' में पुराने हुकों से मिलने पर यह बात एकदम स्पष्ट हो गयी कि उन्हें सामाजिक दृष्टि से एकदम नीच समझा जाता था, जिसे वे बुरा मानते थे।

फिलिपाइन के ग्रामीण प्रदेश में, जो कुल जनसंख्या का ७६ प्रतिशत है, समाज-प्रणाली में दो मुख्य वर्ग हैं—जमींदार और काश्तकार। साहूकार और ओवर्सियर, जमींदार-वर्ग में आते हैं। फिलिपाइन की सेना और पुलिस का एक तीसरा ही वर्ग है—सिद्धान्ततः यह एक ऐसी शक्ति है जो कानून के अन्दर नागरिकों के समान अधिकारों की रक्षा के लिए है, किन्तु व्यवहारतः उनकी शक्ति जमींदारों के हितों के समर्थन में ही लगायी जाती है। यह बात ठीक हो या नहीं किन्तु मध्य-लूज़न के काश्तकारों के दिलों में, छोटों से ले कर बड़ों तक, पुलिस-दल के प्रति डर और अविश्वास है। यदि किसी से कहा जाय कि वह पुलिस दल की सुरक्षा और हुकों के साथ रहने में से क्या चुनेगा, तो वह अन्तिम को ही अपनायेगा।

जमींदार लोग धनी और आरामपसन्द हैं, जो बड़े-बड़े तथा सुन्दर मकानों में रहते हैं और बड़ी-बड़ी मोटरों में चलते रहते हैं। उनका अधिकांश समय मनीला में ही बीत जाता है या फिर दूर के स्थानों की सैर में बीतता है। वे कई नौकर रख सकते हैं और अपने बच्चों के लिए शिक्षा पर काफी खर्च कर सकते है। दूसरी ओर बेचारे काश्तकार कभी अपने घर से बाहर नहीं जा पाते। उन्हें बहुत कम शिक्षा मिल पाती है या कभी-कभी बिल्कुल ही नहीं; क्योंकि फिलिपाइन के सार्वजनिक स्कूलों में जो कम-से-कम फीस ली जाती है, वह भी उन्हें भारी पड़ती है। वे जी-तोड़ मेहनत करते हैं और उन्हें जल्दी ही बुढापा आ घेरता है। मलेरिया, पेचिश और थोड़े भोजन से कितने ही मर जाते हैं। इन वर्गों में बड़ा अन्तर है। सामाजिक मनमुटाव एक चौड़ी खाई की तरह है।

वर्तमान समाज-व्यवस्था के विकास का एक लम्बा इतिहास है। आजकल के जमींदार स्पैनिश काल के धनी-कुलीनों (कैकीक्स) के वंशज हैं और काश्तकारों की अभी तक वही स्थिति है, जो तत्कालीन किसानों (अपासैंरास) की थी। स्पैनिश-शासन में सिविल-गार्ड को शहरों और गाँवों में आतंक समझा जाता था। पुलिस दल (कान्स्टेबुलरी) में कुछ ऐसी कठोरताएँ आ गयी थीं जो पुराने दल में थीं।

स्पेन-निवासियों के शासन-काल की समाज-रचना पूर्व-स्पेन-काल की समाज-रचना से मिलती-जुलती है, और पूर्व-काल के कुछ तत्वों का इसमें समावेश भी हो गया है। जब स्पेन-निवासी फिलिपाइन में आ कर बसे तब द्वीप-निवासियों की पहले ही से एक समुन्नत समाज-व्यवस्था थी। प्रत्येक गाँव का शासन-प्रमुख, एक दाटू अर्थात मुखिया होता था। उसके परिवार का, जाति में सर्वोच्च

सामाजिक स्थान रहता था। डाटू और उसके परिवार के नीचे तीन वर्ग के लोग रहते थे :—स्वतंत्र, [illegible] और गुलाम। स्वतंत्र लोगों को कोई कर (टैक्स) अथवा अपनी उपज का भाग देने की जरूरत नहीं पड़ती थी, किन्तु उन्हें लड़ाई के दिनों में डाटू की सहायता करना, खेतों को जोतने में और उसके मकान बनाने तथा मरम्मत करने में सहायता करनी पड़ती थी। दूसरे वर्ग के लोगों के अपने मकान थे, किन्तु उन्हें अपनी उपज का आधा भाग मालिक के लिए रखना पड़ता था। तीसरे अर्थात् निम्न वर्ग के लोग अपने मालिकों के मकान में या उनके द्वारा दिये गये मकान में रहते थे। वे बिना आज्ञा के विवाह नहीं कर सकते थे, वे कभी भी बेचे जा सकते थे। लोग कितने ही प्रकार से गुलाम बनाये जाते थे। कुछ तो अन्तर्जातीय लड़ाइयों के बन्दी थे, कुछ गुलामों की सन्तान थे, जो अपने मालिकों के रक्षक समझे जाते थे; दूसरे लोग आजन्म-नौकर थे जो उस कर्ज़ के कारण बने थे, जिसकी अदायगी उनकी मेहनत और पूरी रकम देने के बाद भी पूरी नहीं समझी जाती थी।

स्पेन-निवासियों के काल में तथा उसके बाद, गुलामी धीरे-धीरे समाप्त हो गयी। फिर भी, बहुत से आदमी अपने परिवार का कर्ज़ न दे पाने से आधी गुलामी का जीवन बिताते हैं। संयुक्त राष्ट्र मंडल के युद्धपूर्व के 'सामाजिक न्याय' सम्बन्धी कार्यक्रमों के अन्तर्गत, हाल ही में हुए वैधानिक प्रयत्नों के उपरान्त भी कि काश्तकार की स्थिति में सुधार हो, अभी तक जमींदारों और काश्तकारों के बीच में अधबँटाई की प्रणाली प्रचलित है। स्पेनवासियों के शासनकाल में मध्य-लूज़न के अधिकांश ग्रामवासियों को स्वतंत्र किसानों की स्थिति से हाथ धोना पड़ा था। पहले तो वे 'एन्कोमिएन्डास' (वितरण-सम्बंधी भूसम्पत्ति) पर काश्तकार रहे और बाद में (सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में) उसकी समाप्ति पर चर्च-भूसम्पत्ति अथवा कैकीक्स की भूसम्पत्ति पर काम करने लगे। इस प्रकार कई शताब्दियों तक चलनेवाली समाज व्यवस्था में स्वतंत्र व्यक्तित्व न रहा और उसका स्थान भागीदार-काश्तकार ने ले लिया। इस बीच स्पेननिवासियों ने स्थानीय गाँव के मुखियों को मान्यता दे दी थी और उनका उपयोग वे शासन और अधिकार बनाये रखने में करते थे। फिलिपाइन के शासक परिवारों ने स्पेन-निवासियों के साथ विवाह-सम्बन्ध किये और अन्त में वे भी कैकीक्स (धनी-कुलीन) बन गये। १९०० में अमरीकियों के आने तक तो फिलिपाइन के ग्राम्य-प्रदेश में द्वि-वर्ग प्रणाली बन चुकी थी जिसमें भूमिपति-कुलीन सर्वोच्च स्थान पर थे। अन्याय और कृषि-सम्बंधी अशान्ति से युक्त,

यह विभाजन अमरीकी काल में भी था, यद्यपि भूमि-सुधार की योजनाएँ कई बार बनायी गयी थीं और प्रयत्न भी किये गये।

एडकोर-फार्म भी फिलिपाइन ग्राम्य-समाज की इस समाज-व्यवस्था के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। एडकोर-फार्म में तीन वर्ग हैं : अधिकारी वर्ग—जिनकी स्थिति ठीक जमींदारों जैसी है; विस्थापित वर्ग—जिनकी स्थिति काश्तकार जैसी है; तथा अनुसूचित व्यक्ति, जो पुलिस में हैं। एडकोर की वर्ग-व्यवस्था, बाहर की व्यवस्था के समान तो है, लेकिन उसमें उसी प्रकार की एकरूपता नहीं है। फार्म-प्रशासक, सचमुच ही जमींदार नहीं हैं; निवासी काश्तकार नहीं हैं; अनुसूचित व्यक्ति पुलिस के आदमियों से भी कुछ उत्तम हैं। पिछले समाज में, जो सामाजिक-परिस्थितियाँ थीं, और जिनसे एक दूसरे के प्रति ऐसी भावनाएँ पैदा हो गयी थीं, वे एडकोर में भी आ गयी हैं और उनके कारण प्रजातन्त्रीय ढंग से सामुदायिक योजना के विकास में बाधा पड़ती है। निवासी यह समझते हैं कि उनके साथ काश्तकारों जैसा व्यवहार किया जा रहा है और प्रशासन इस तरह से रहता है जैसे वह कुलीन-वर्ग हो।

मकानों की दृष्टि से, एडकोर में वर्ग-भेद होना कठिन है; क्योंकि सभी मकान लगभग एक जैसे हैं। यह अवश्य है कि तीनों वर्गों के व्यक्ति भिन्न क्षेत्रों में रहते हैं। उदाहरणार्थ, बुल्डन में अनुसूचित व्यक्ति, नगर के प्रवेश द्वार की सड़क के पास रहते हैं। वे ईसाई-बस्ती और समीप के गांवों में रहनेवाले मोरो लोगों के बीच 'बफर' का काम करते हैं। पहली मुख्य सड़क और प्रशासन-भवनों के सामने, अधिकारियों के लिए मकान हैं। इनके पीछे, दूसरी सड़कों पर निवासियों के लिए मकान हैं। वर्गीकरण में थोड़ा शरीर-सम्बन्धी भेद भी अपने-आप ही हो जाता है।

तीनों वर्गों के आपसी सम्बन्ध अच्छे रहते हैं, हालांकि उनमें वर्ग भेद की भावना भी रहती है। कभी-कभी निवासियों की पत्नियाँ, फार्म पर निमंत्रित अतिथियों के सत्कार के समय विशेष भोजन की तश्तरियाँ भेजती हैं। विशेष अवसरों पर टाउन-कौंसिल में निर्वाचित निवासी-अतिथियों से मिलने के लिए अधिकारी भोजन-कक्ष में बुलाये जाते हैं, किन्तु या तो वे खाने से मना कर देते हैं अथवा दूसरी मेज़ लगने तक प्रतीक्षा करते हैं।

अनुसूचित व्यक्ति अधिकारियों का सत्कार करें यह बात तो उचित है, लेकिन उसका भी तरीका है। बुल्डन में एक अनुसूचित व्यक्ति के परिवार ने गौ बलि के समारोह पर, अधिकारियों को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। पहली

बार सर्वोच्च श्रेणी के अधिकारी खाने के लिए बैठे। अन्य अधिकारियों ने इनके बाद, फिर अनुसूचित व्यक्तियों ने और सबसे अन्त में स्त्रियों ने भोजन किया। जब अधिकारी लोग और अतिथि फार्मों पर निवासियों से मिलने आते हैं तो निवासी फल अथवा उबले अंडों से उनका स्वागत करते हैं। ऐसे मोदभरे अवसर हरेक के जीवन में आते हैं, किन्तु अधिकारियों द्वारा निवासियों का ऐसा सत्कार नहीं होता। धार्मिक छुट्टियों के विशेष-समारोहों के अलावा, एड्कोर के वार्षिक स्थापना दिवस, नगर-मेलों और सामुदायिक योजना के कार्यक्रमों में वर्ग-भेद का पालन किया जाता है। केवल अधिकारी वर्ग ही टैनिस खेलता है, जिसकी देखभाल भी उसी वर्ग द्वारा होती है। नृत्य भी अधिकारियों के परिवारों तक सीमित रहता है, कुछ अनुसूचित व्यक्ति ऐसे अवसरों पर बाजे अवश्य बजाते हैं।

निवासियों और अनुसूचित व्यक्तियों में काफी मेलजोल देखा गया है। यहाँ तक कि इनमें आपस में विवाह-सम्बन्ध भी हुए हैं, जबकि अधिकारीगण समाज-भेद और बिलगाव रखते हैं। यदि एक बार वर्दी का डर निकल जाय, तो निवासी तथा अनुसूचित व्यक्तियों में काफी सामानता दिखायी देने लगे। अधिकांश अनुसूचित व्यक्तियों से समान रूप में अथवा अधिक शिक्षित हैं। जमीन के मालिक होने के नाते और सामुदायिक नियोजना में सम्भाव्य पदाधिकारी के नाते निवासियों ने अपना एक ऐसा स्थान बना लिया है, जो अधिकारियों तक की ईर्ष्या का विषय हो गया है। निवासी तथा सिपाही एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी लगते हैं। कुछ निवासी इस बात पर दुख प्रकट करते हैं कि सिपाही अस्त्र ले कर निकलते हैं, जबकि उन्हें उनके उपयोग की मनाही है। दूसरी ओर सिपाहियों को ऐसी योजनाओं में काम करने में बुरा लगता है, जिनसे पुराने हुकों को लाभ होता है, क्योंकि वे वफादार रहते हैं, फिर भी उन्हें बिना मूल्य भूमि नहीं दी गयी है। जैसे-जैसे फार्म उन्नति करते जायेंगे और विस्थापितों की आय सिपाहियों से बढ़ती जायेगी, वैसे-वैसे द्वेष की भावना बढ़ती ही जायेगी।

फिलिपाइन के उच्च और निम्न वर्गों में आपसी सम्बन्ध उदार पैतृकता लिये हुए होते हैं। यदि निम्न वर्ग का कोई व्यक्ति, उच्च वर्ग से कुछ दान माँगे तो उच्च वर्ग का व्यक्ति मना नहीं कर सकता। किसी आदमी की माँग को ठुकरा देने का अर्थ उसकी सामर्थ्य पर सन्देह प्रकट करना होगा और पूरी वर्ग-व्यवस्था पर उंगली उठने लगेगी। गरीब और अमीर दोनों अपनी सामाजिक स्थिति के हिसाब से अपना काम करते रहते हैं। वे चाहते हैं कि उन्हें निम्न ही रहने दिया जाय। वे कठिन और गंदे काम करें और उनकी देख-भाल और

रक्षा होती रहे। यह व्यवस्था तब होती है, जब कोई गरीब पर विशेष कृपा इस प्रकार करता है, जैसे कि देनेवाले की श्रेष्ठता और लेनेवाले की हीनता पर जोर दिया जा रहा हो।

एडकोर के अधिकांश निवासी स्वयं को हीन और श्रेष्ठ वर्ग को दाता समझते रहे थे। फार्म पर, वे प्रशासक के पास अपनी समस्याएँ लेकर उसी ढंग से आते थे, जिस प्रकार अपने गाँवों में वे जमींदार के पास जाते थे। उससे यह आशा रखी जाती थी कि वह कुलीन भूमिपति के अच्छे और उदार प्रतिनिधि की तरह व्यवहार करेगा। जब फार्म-प्रशासक इन आशाओं की पूर्ति नहीं करता था और 'आत्म निर्भरता' के सिद्धान्त को अपनाता था तो काफी उत्पात हो जाता था। यदि अतिरिक्त राशन के लिए माँग होती थी तो उसका प्रतिकार इस प्रकार होता था कि पलाय की फसल कटने पर, मोन्गो की फलियाँ लगाने के लिए कहा जाता था, जिसके कि उत्पादन बढ़ सके और घास-पात न जमे। जब निवासियों ने धरती साफ करने के लिए औज़ार माँगे तो उन्हें औज़ार दिये गये और उपदेश भी दिया गया। वे अपने लिए धरती साफ करने को कार्यकर्त्ता-दलों में संगठित हो गये। उपदेश कठिन थे; क्योंकि वे फिलिपाइन-समाज में युगों से प्रवाहित धारा के एकदम विपरीत थे।

दोनों ओर से गलतफहमी का आरम्भ हुआ। निवासियों ने अधिकारियों पर निष्ठुर और निर्दय होने का आरोप लगाया। कैम्प मर्फी के प्रधान केन्द्र में क्रूर व्यवहार के प्रति विरोध-पत्र भेजे गये। एक अधिकारी पर, निवासियों को काम पर खदेड़ने और उनकी स्वतंत्रता छीनने का आरोप लगाया गया। दूसरी ओर, अधिकारी-गण का यह कहना था कि निवासी आलसी हैं और नियमपत्र के अनुसार अपना काम नहीं करते। जब तक पुरानी समाज-व्यवस्था के अनुकूल व्यवहार रहा, निवासियों तथा अधिकारियों दोनों ने, अधिक से अधिक वैयक्तिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता की विशिष्टता से युक्त प्रजातंत्रीय सामुदायिक योजना को विकसित करना समान रूप से कठिन अनुभव किया।

सामाजिक वर्ग भेदों में विभाजित समाज, स्वतंत्र विचार और पूर्णज्ञान के मार्ग में रोड़ अटकाता है। उदाहरणस्वरूप, बुल्डन का एक अत्यन्त विश्वसनीय निवासी मेजर वेलिनोवा के पास, फसल के समय आया और उसने इस बात की शिकायत की कि जंगली सूअरों ने उसकी पलाय की आधी फसल नष्ट कर दी है—पूरी फसल करीब ४० बोरे होती थी। दुख की बात तो यह थी कि फसल तब नष्ट हुई जब कि दिन-रात उसकी रक्षा को निवासी फार्म पर ही रहा।

मेजर ने एक अधिकारी की ओर मुड़ कर सिपाहियों को निवासी के फार्म पर बन्दूक ले जा कर उस रात रहने और जंगली सूअरों को मारने का आदेश दे दिया। कुछ दिन बाद निवासी से जंगली सूअरों के बारे में पूछा गया, तो उसने कहा—"वे बड़े खतरनाक हैं। हम उन्हें डरा कर नहीं भगा सकते। वे मकान के पास तक चले आते हैं और हमारे पेड़-पौधों और बगीचों को उजाड़ देते हैं। यदि हमारे पास बन्दूक हो तो हम उन्हें आसानी से मार सकते हैं।"

भेंटकर्त्ता ने पूछा—"सिपाही लोग फिर क्या करते हैं? क्या वे अपनी बन्दूक लेकर सूअरों को मारने के लिए नहीं आये?"

निवासी का उत्तर निराशाजनक था—"जी हाँ, एक दिन अंधेरा होने पर आये तो थे और एक-दो घंटा रहे भी थे, लेकिन थोड़ी देर रुक कर और यह कह कर चले गये कि उन्हें मच्छर काटते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि प्रशासन हमें अपनी फसल की सुरक्षा के लिए बन्दूक क्यों नहीं रखने देता? क्या उन्हें हम पर विश्वास नहीं है? हमारे साथ अभी तक अपराधी जैसा व्यवहार किया जाता है। लोगों को परिश्रम करके फसल लगाने और उन्हें जंगली सूअरों से फसल की सुरक्षा के लिए बन्दूक न देने में क्या बुद्धिमानी है? यदि वे आज्ञा दें तो मैं स्वयं एक बन्दूक खरीद लूँगा।"

निवासियों की सुरक्षा और सहायता के लिए सावधानीपूर्वक नियोजित कार्यक्रम किस प्रकार असफल रहा, इसका यह एक सुन्दर उदाहरण है। निवासियों की सच्ची और न्यायपूर्ण माँग थी, जिसे फार्म प्रशासक ने तुरन्त ही मान लिया। सूअरों को मारने का, उसका आदेश निष्कपट था। किन्तु उसकी यह चिन्ता उन दो अनुसूचित व्यक्तियों को नहीं बतायी गयी थी जिन्हें यह काम सौंपा गया था। सामुदायिक योजना की सफलता की चिन्ता अधिकारी वर्ग को भी थी, किन्तु अनुसूचित व्यक्तियों को बहुत कम थी, क्योंकि पुराने हुकों को वे अपना प्रतिद्वन्द्वी मानते थे। प्रशासन के कार्यों को निवासी प्रभावहीन और अविवेकपूर्ण समझता था। अपने वर्ग के बाहर के लोगों का अविश्वास करने का उसने निश्चय कर लिया था। जब तक प्रत्येक वर्ग में सामाजिक भेद रहेंगे, सामुदायिक योजना की उन्नति में कठिनाई पड़ती ही रहेगी।

'एडकोर' के प्रारम्भिक उद्देश्यों में समृद्ध बस्तियों का विकास करना था। इसका अर्थ यह था कि प्रत्येक निवासी को न केवल कठिन परिश्रम ही करना आवश्यक था, बल्कि अपने फार्म के विकास के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण योजना के अनुसार कार्य करना था। कृषिशास्त्र में निपुण व्यक्तियों ने, भूमि के उपयोग की

सुन्दरतम योजना बनायी और लिलगाने के ए अच्छी से अच्छी फसलें चुनीं। आधुनिक कृषि में अनुभव-प्राप्त सेनाधिकारियों ने निवासियों को प्रशिक्षित करने और उनका मार्गदर्शन करने का जिम्मा ले लिया। कभी-कभी सहायता के इन प्रयत्नों में विरोध उत्पन्न हो जाता था; विशेषकर इस बात को समझाना बड़ा कठिन था कि एक बार साफ की हुई धरती को बेकार नहीं छोड़ देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से घास और जंगली पेड़-पौधे निकल आते हैं। चूँकि यह बात अधिकारी तथा दूसरे वर्ग के आदमी द्वारा कही गयी थी, इससे उन्हें यह विदेशी तथा अविश्वसनीय सलाह लगी। 'कपतगान' के सामुदायिक योजना संचालक ने कहा कि दो वर्ष के प्रयत्नों के बाद, वह कुछ निवासियों को मामूली मूल सिद्धांत समझा पाया है। हाँ, जब प्रशासक ने डंडा दिखाकर आदेश दिया, तो बिना किसी सवाल जवाब के मान लिया गया। जब जब उसने निवासियों को शिक्षित बनाने का प्रयत्न किया, वे सन्देह करते थे और उसकी बात नहीं मानते थे। विश्वास और ज्ञान के वातावरण में, वर्गभेद के आधार पर, शिक्षा देना आश्चर्यजनक रूप से कठिन है। वर्गभेद स्वयं विश्वास खो बैठता है। समस्या, विचारों की कठिनाई की नहीं है, बल्कि सामाजिक मतभेद द्वारा उत्पन्न सीमाओं की है। निवासियों में सूचना बड़ी सरलता से नेताओ द्वारा फैलायी जा सकती है और तब विचारों को स्वीकार करने में कोई भी सीमा नहीं रह जाती।

सामाजिक विभाजन से वर्गों में ऊँच-नीच की भावना आ जाती है और अविश्वास उत्पन्न होता है। जब प्रशासन की कई योजनाएँ और सुझाव सफल हुए, निवासियों को इसकी बिल्कुल चिन्ता नहीं थी। यदि किसी आदमी की पटसन की फसल उसके 'कपतगान'-फार्म की दलदली भूमि में सड़ जाती तो इसका पूरा दोष प्रशासन पर मढ़ दिया जाता। कभी-कभी एक मामूली-सी सलाह भी उन्हें इतनी बुरी लगती कि वे आधुनिक-प्रणाली को छोड़ कर प्राचीन विधि से खेती कर निकलते।

वर्गभेद से संदेह उत्पन्न होता है। बुल्डन में एक निवासी को राष्ट्रीय-सुरक्षा-विभाग से प्रति मास नियमित रूप से चैक मिलता था। ऐसी छोटी सामुदायिक योजना में, जहाँ डाक कई आदमियों द्वारा बाँटी जाती थी, इस प्रकार के असाधारण पत्र गुप्त नहीं रखे जा सकते थे। तरह-तरह की अफवाहें फैल गयीं। लोगों को शंका होने लगी कि वह व्यक्ति सुरक्षा-विभाग का गुप्तचर था। निवासियों ने अफवाह फैला दी कि वह उनकी जासूसी कर रहा है। अधिकारी

भी संदेह करने लगे कि कि उसे उनकी गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिए रखा गया है। ये अफवाहें तब जा कर कहीं कम हुईं, जब यह पता लगा कि उस व्यक्ति को विभाग के प्रति पुरानी सेवाओं के लिए धन दिया जाता है।

इन समस्याओं को समझ कर, एडकोर-प्रशासन ने वर्गभेद की सीमाओं को तोड़ने के लिए साहसपूर्ण प्रयत्न किये हैं। कर्नल मीरासोल ने प्रत्येक सामुदायिक योजना स्थल को एक स्मृति-पत्र इस आशय का भेजा कि प्रत्येक निवासी के घर पर अधिकारियों की भेंट मित्रतापूर्ण वातावरण में होनी चाहिए; यह भेंट, जहाँ तक हो सके कार्यालय-समय के बाद ही होनी चाहिए और निवासी पर त सम्बन्धी किसी प्रकार के धन का अथवा वस्तु का भार न पड़े। निवासियों की भावना को ध्यान में रख कर उसने आगे लिखा—"निवासियों के परिवारों को सिद्धान्तवाद की शिक्षा देने के लिए सामूहिक सभाएँ बुलाना, प्रजातंत्रीय उपायों के अनुसार ठीक नहीं है। सामुदायिक योजना की जो समस्याएँ परेशान करनेवाली हों, उनका ढिंढोरा खुली सभाओं में नहीं पीटना चाहिए। 'पी. ए. प्रणाली' के अनुसार निवासियों के सम्बन्ध में घोषणाएँ प्रसारित की जायँ, जिससे विस्थापितों के दिमाग में यह बात न बैठे कि उन्हें सेनाक्रम और सिद्धान्त प्रचार के लिए बुला कर इकट्ठा किया जाता है, जिससे कि कम्यूनिस्ट ढंगों की उनकी याद फिर ताज़ी हो जाय।" एडकोर के प्रत्येक अधिकारी को आदेश दिया गया था कि समस्या का तुरन्त हल कर देना चाहिए, न कि वह दूसरे अधिकारी अथवा अनुसूचित व्यक्ति को सौंप दी जाय।

लोगों को ऐसा संकेत नहीं मिलना चाहिए कि एडकोर के परिवार, वर्गभेद के कारण तितर-बितर हैं; अपितु वास्तविक बात यह है कि वे फिलिपाइनों के प्रयत्नों के सजीव उदाहरण हैं, जो उन्होंने जमींदार और काश्तकार तथा सेना और जनता की विरोधी-भावनाओं के प्राचीन और बहु प्रचलित समाज-व्यवस्था को हटाने के लिए किये हैं। पुरानी समाजव्यवस्था के भग्नावशेष नयी व्यवस्था में रोड़े अटकाते हैं, किन्तु एडकोर के प्रत्येक वर्ग को सन्तोष था कि एक नयी प्रजातंत्रीय सामुदायिक योजना की रचना हो रही है। सार्वजनिक स्कूल अत्यन्त प्रभावशाली हैं। सब परिवारों के बच्चे एक ही कक्षा में बैठते हैं और साथ-साथ खेलते हैं। प्रत्येक माता-पिता का सम्बन्ध पी. टी. ए. से रहता है और निवासी, अधिकारी तथा अनुसूचित व्यक्ति उसमें पदाधिकारी रहते हैं। 'नगर-कौंसिल' का निर्वाचन प्रजातंत्रीय ढंग से होता है। बुल्डन में आयोजित सहकारी-भंडार में अधिकारी, निवासी तथा अनुसूचित व्यक्ति हैं। इलाज की

व्यवस्था एक समान सभी के लिए निःशुल्क है। सारे समाज के लिए एक ही गिरजाघर है। फार्म-प्रशासक भी कोई दूर रहनेवाला नहीं है, बल्कि सबमें मिलने-जुलनेवाला व्यक्ति है। निवासी, उसके पास दिन में, रात में, किसी भी समय जा कर सलाह-मशविरा कर सकते हैं। सहयोगी अधिकारीगण इस बात से बड़े प्रभावित हैं कि मेजर आवश्यकता के समय पीछे नहीं हटते।

असफलताएँ चाहे जितनी हुईं, किन्तु एक बात अवश्य है कि एडकोर-प्रशासन ने अपने कठोर परिश्रम द्वारा, ईमानदारी और शुभेच्छा से निवासियों को संतोष दिया है। पुराने हुकों में से अधिकांश ने बताया—"हमने पहली बार अनुभव किया है कि सच्चा प्रजातन्त्र कैसा होता है।"

एडकार ने अपने निवासियों की आकांक्षाओं को जाग्रत कर दिया है। वे भावी योजनाओं के बारे में बड़े उत्सुक हैं।

"मैं अपनी सारी भूमि साफ करना और समृद्ध होना चाहता हूँ।"

"मैं अपने परिवार का पालन करना और बच्चों को पढ़ाना चाहता हूँ।"

"मैं आराम का जीवन बिताना और विवाह करना चाहता हूँ।"

"मैं अपने बच्चों को पढ़ाना चाहता हूँ, जिससे कि वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें।"

"मैं अपनी धरती को साफ करके स्थायी फसल लगाना चाहता हूँ, जिससे मैं सुख से रह सकूँ।"

"मैं यहाँ अपना स्थायी घर बनाना चाहता हूँ।"

"मैं अपने फार्म का विकास करना चाहता हूँ, जिससे इसे अपने बच्चों को दे सकूँ।"

"मैं थोड़ा धन बचाने के बाद एक छोटा-सा 'स्टोर' खोलना चाहता हूँ।"

"मैं यहाँ सफल होना और अधिक धरती खरीदना चाहता हूँ।"

"मैं अपनी रोजी बढ़ाना और सरकार की सहायता करना चाहता हूँ।"

"मैं अपने दो लड़कों को डाक्टरी और वकालत की शिक्षा दिलाना चाहता हूँ।"

"मैं कठिन परिश्रम करना और आत्मनिर्भर होना चाहता हूँ।"

"मैं यहां का सबसे अधिक धनवान निवासी बनना चाहता हूँ।"

"मैं एक सफल किसान बनना चाहता हूँ।"

"मैं शांति और सुख का जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ।"

ये शोषित कृषकों की भावनाएँ नहीं हैं; ये नवीन स्रोतों की खोज में व्यस्त प्रजातन्त्रीय नागरिकों की आशाएँ और आकांक्षाएँ हैं!

अध्याय ८

नवोदित समुदाय-केंद्र

कालांतर में, एक ऐसे सामुदायिक आवास की नींव पड़ी, जहाँ नव-स्थापित आपस में एक रूप हो कर काम करते हैं। प्रारम्भिक दिन तो ईर्ष्या, सन्देह और कलह से लांछित रहे; किन्तु बाद में जब लोग गम्भीरतापूर्वक जंगल से लड़ाई लड़ कर जीवन-निर्वाह के कार्य में जुट गये, तो उनमें एक-दूसरे के प्रति विश्वास की भावना पैदा होने लगी जिसने अलगाव को सामुदायिक लाभ की भावना में बदल दिया।

पहली बड़ी बाधा थी विभिन्न बोलियों वाले समूहों की जातिगत संकीर्णताओं को खत्म करना। कपतगान के नव-स्थापित अधिकतर लूज़न के तगालोग और पम्पंगेन्यो बोलनेवाले प्रान्तों से आये थे किन्तु उनमें से थोड़े दूसरी भाषा के क्षेत्रों के भी थे। बुल्डन के दूसरे केन्द्र में तो भाषा की भिन्नता और भी अधिक थी। विसायन प्रांतों से आनेवाले अधिक लोग इलोंगो, वाराई-वाराई अथवा सेबुआनो भाषा बोलते थे और लूज़न से आनेवालों में तगालोग, पम्पं-गेन्यो और इलोकानो बोलनेवाले थे। इन छः बड़ी भाषाओं के बोलनेवाले नव-स्थापित विभिन्न दलों में बँट गये थे, जो एक दूसरे के प्रति शंकालु और विरोधी थे। इनमें से दो अत्यन्त विरोधी दलों, इलोंगो और तगोलोगों में खुली लड़ाई शुरू हो गयी। इस विद्रोह का कारण एक आकर्षक इलोंगो विधवा थी जो 'पनाय की लाल ज्योति' के नाम से प्रसिद्ध थी।

उसका जीवन हुकों के साथ २ जनवरी, १९५१ के अपराह्न में इलोइलो प्रांत के एक दूर गाँव में आरम्भ हुआ। 'लाल ज्योति' उस समय तक प्रारम्भिक स्कूल में पढ़ा रही थी और अपनी कक्षा को छोड़ने ही वाली थी। बिना चेतावनी दिए पैंतीस व्यक्तियों ने स्कूल भवन को घेर लिया और उनमें से चार आदमी उसके पास गये और उससे उनके साथ पहाड़ों पर हुक फौजी पड़ाव में चलने के लिए कहा। जब उसने मना किया तो उसे अशिष्टता से पकड़ कर ले गये। कुछ घंटों बाद, वे स्थानीय हुक सरदार के प्रधान केन्द्र पर आये, जो 'कुलाफू' के नाम से मशहूर था। यह नाम एडगर राइस बरोज

के 'टारजन' के समान ही किसी साहसी नायक के लिए प्रयोग में आता था। यद्यपि उन्होंने उस पर कड़ा पहरा रखा कि वह कहीं भाग न जाये फिर भी हुकों ने कभी उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं किया। धीरे-धीरे वह साम्यवादी उद्देश्यों में प्रशिक्षित कर दी गयी और उसे एक चिकित्सा-दल के प्रमुख का भयरहित तथा निर्दोष पद दे दिया गया। कुलाफू की उस पर विशेष कृपा रहती। कालांतर में कुलाफू की कृपा ने उस पर विजय प्राप्त कर ली और वह उसकी पत्नी बन गयी।

सितम्बर १९५१ में कुलाफू पुलिस दल के आदमियों द्वारा मार डाला गया और 'लाल ज्योति' ने समर्पण कर दिया। कई महीनों के पश्चात् जब एडकोर जाने का अवसर आया तो उसने सेना के बाड़े में, नीरस जीवन बिताने की अपेक्षा मिन्डानाओ में एक नये जीवन के अवसर को तत्परता से स्वीकार कर लिया।

जब वह बुल्डन एडकोर फार्म पर आयी, तो अधिकांश नवस्थापित नवयुवक अविवाहित थे। उस आकर्षक विधवा युवती के दर्जनों प्रेमी होते देर न लगी। सारी रात उसकी खिड़की के आसपास वे अकेले अथवा टोलियों में गीत गाते हुए चक्कर काटने लगे। प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र थी कि प्रेमी लोगों ने भाषा के अनुसार टोलियाँ बना ली। पनाय की 'लाल ज्योति' के सगे और चचेरे भाई उसकी रक्षा के लिए उसके पास ही रहने लगे। पनाय के इलोंगो भाषी और लूज़न के तगालोग भाषियों में बेहद तनाव बढ़ गया। लूज़नवाले सोचने लगे कि उन्हें प्रेम करने से बेकार रोका जा रहा है।

एक दिन एक दृढ़संकल्प तगालोग प्रेमी, रक्षक की आँख में धूल झोंक कर, पीछे के रास्ते से 'लाल ज्योति' के मकान में घुस गया। लेकिन जल्दी में वह उसके भाइयों के ऊपर गिर पड़ा। बस, आपस में कहा-सुनी और गुत्थम-गुत्था आरम्भ हो गयी। चाँदनी में हथियार चमक उठे और बेचारी विधवा डर के मारे चिल्लाने लगी। वह आदमी खिड़की के रास्ते नीचे उतर गया और अपने अन्य तगालोग मित्रों में जा कर मिल गया। वे अपनी जाति की आबरू की रक्षा करने के लिए जब वापिस आये तो उन्होंने पनाय की 'लाल ज्योति' की रक्षा में कटिबद्ध इलोंगो टोली को वहाँ पर मुस्तैद देखा।

इसी अवसर पर पहरा देनेवाले कुछ सिपाही वहाँ आ पहुँचे और दोनों लड़ाकू दलों के बीच मोर्चा बनाकर खड़े हो गए। थोड़ी देर में क्रुद्ध भावनाएँ शान्त हो गयीं और सब अपने-अपने घर चले गये; लेकिन कई दिनों तक

वातावरण बड़ा तनावपूर्ण रहा। इस प्रकार के दलीय झगड़े उस अल्पवयस्क सामुदायिक आवास को खतरा पहुँचाने लगे। मेजर वैलिनोवा ने एक सुन्दर तरकीब सोची। एक गिटार लेकर उसने प्रेमियों के मिले-जुले समूह को एकत्र किया जिसमें सिपाहियों, विसायानो और तगालोगों का भी समावेश था। उनके गीतों और उस आकर्षक विधवा से उनकी विनोदपूर्ण मिन्नतों ने तनाव समाप्त कर दिया। पूरी बस्ती में हँसी-खुशी छा गयी। जब वातावरण कुछ और शांत हुआ, तो एक सहज-सरल प्रेम-प्रसंग भी मूर्त हो गया। जिसके फलस्वरूप उस विधवा ने एक सिपाही से विवाह कर लिया और 'पनाय की लाल ज्योति' से वह 'रक्षा-दल के नायक की पत्नी' बन गयी।

सीमाप्रदेश पर जीवन की आवश्यकताओं के सम्मुख दलबंदी अधिक टिक नहीं सकती थी। वहाँ मनुष्य की और मित्रों की आवश्यकता थी। फार्म पर सहयोग और मित्रता ही काम आती है।

फार्म-प्रशासन ने तथा नव-स्थापितों के नेताओं ने इन प्राकृतिक तत्त्वों का लाभ उठा कर सामुदायिक आवास के प्रति एकता और निष्ठा का विकास करने का प्रयत्न किया। यह प्रयत्न खूब सफल हुआ। पुराने हुक और पनाय के भूत-पूर्व उच्चाधिकारी सायमन गोन्ज़ेल्स ने बुल्डन एडकोर फार्म के प्रथम स्थापन-दिवस पर प्रकाशित नव-स्थापितों के सूचना-पत्र में लिखा—"लूज़न और विसायस का नव-स्थापित ज्योंही एडकोर आवास में आता है, तो वह पम्पंगेन्यो, तगालोग, इलोंगो अथवा वाराइ-वाराइ भाषा-भाषी नहीं रहता। वह नियोजना के समुदाय-केंद्र की सदस्यता के कर्त्तव्य निभाने के लिए एडकोर का नागरिक हो चुकता है।"

समुदाय-केंद्र के विकास का सबसे बड़ा प्रमाण इसकी आर्थिक प्रगति के भीतर मिलता है। ४३ वर्षीय यूसेबियो मौन्टेनो का उदाहरण लीजिये। वह अपनी पत्नी और बच्चों को एडकोर में फरवरी १९५१ में लेकर आया था। हुक कार्यक्रम में फँसने से पहले यह मौन्टेनो परिवार मध्य लूज़न में धान के काश्तकार थे। जब वे एडकोर में आये, तो उनकी कुल पूँजी एक कुल्हाड़ी, तीन बर्छे, तन के कपड़े तथा एक जोड़ी बदलने के कपड़े तथा सोने के लिए कुछ चटाइयाँ भर थीं। काश्तकारी के रूप में वर्षों तक कठिन परिश्रम के बाद भी उनके पास न तो रसोई के बरतन थे, न फर्नीचर और न एक पैसा ही था।

युसेबियो परिवार ने अपना कार्य ध्यानपूर्वक संगठित किया। उसके दो बच्चे स्कूल जाते थे; दोनों बड़ी लड़कियाँ घर के काम में अपनी माँ का हाथ

बँटाती थीं, छोटे बच्चे इधर-से-उधर खबर ले जाते थे और खेती के छोटे-मोटे काम कर देते थे। कुछ महीनों बाद उन्होंने फार्म के पास ही अपना मकान बनाया जिससे कि वे समीप रह कर अपनी फसल को जंगली सूअरों से सुरक्षित रख सकें।

सफाई और बुआई क्रम से चलती रही। उतनी ही भूमि साफ की जाती थी जितने में बुआई हो सके और खेती की जा सके। तीन वर्ष बाद मौन्टेनो के आठ हेक्टरों में से पाँच हेक्टर भूमि साफ हो चुकी थी। दो हेक्टर भूमि में काफी की काश्त थी। पपीता और केले के पेड़ भी वहाँ लगे थे, जो काफी के छोटे पौधों को छाया देते थे। दो हैक्टर में धान लगा हुआ था और फसल कटाई के बाद इस क्षेत्र में मोन्गो की सेमें और मूंगफली लगा दी जाती थी। पाँचवें हेक्टर में रैमी (एक पौधा जिसके रेशे से बड़ा सुन्दर कपड़ा बन सकता है) के पौधे, मक्का, और फल के पेड़ लगा दिये गये थे। जब बाकी तीन हेक्टर भूमि साफ हो जायगी उसमें अस्थायी रूप से धान बो दिया जायेगा। साथ ही इमारत के काम के लिए बांस और भी नारियल स्थायी रूप से लगाया जायेगा।

'एडकोर' में दो वर्ष तक रहने के बाद मौन्टेनो आत्म-निर्भर हो गये थे। यूसेबियो कहने लगा,—"लूज़न की अपेक्षा हमारा यहाँ का जीवन अच्छा है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि अब हमारी अपनी जमीन है।" यहाँ सरकार ने उसे एक मकान, रसोई के बरतन, एक कराबाओ और भोजन की सामग्री तब तक के लिए दे दी थी जब तक कि वह अपने परिवार के पोषण के लिए आत्म-निर्भर न हो जाय। उसका पूरा हिसाब देखने पर पता चलता है कि उसे सरकार को २००० पेसो देने हैं। वह आसानी से इस रकम को पाँच वर्ष के अन्दर चुका देगा। उसके काफी के पौधों में, जो कन्धे जितने ऊँचे हो गये हैं, फल लग निकले हैं और इस साल कटाई के लिए तैयार हो जायेंगे। फसल कटाई का खर्च बेचने का और मूल्य-ह्रास को निकालकर भी यूसेबियो अपनी केवल दो हेक्टर की काफी की खेती से ही ४००० पेसो प्रति वर्ष की आमदनी हो सकेगी। इसमें धान, पपीता, केला और रैमी से नक़द आमदनी, शाकभाजी, मुर्गियों और सूअरों से भोजन सामग्री की आमदनी और जोड़ दीजिए तो १०००० पेसों की प्रतिवर्ष आमदनी एडकोर के औसतन नव-स्थापित के लिए सुनिश्चित है।

यूसेबियो के फार्म का मूल्य बहुत अधिक बढ़ गया है। आजकल के मूल्य के

हिसाब से बिना साफ की हुई जंगली भूमि का मूल्य जब उसने अपने फार्म का विकास आरम्भ किया था, २४० पेसो था। जब उससे पूछा गया कि अब उसका क्या मूल्य है, तो यूसेबियो ने थोड़ी देर सोचा और कहा—"मैं ६००० पेसो में भी इसे नहीं दूँगा।" एक पुराने काश्तकार के लिए, जिस बेचारे का कोई सौ पेसो से भी वास्ता नहीं पड़ा था, यह रकम तुलना के लिए पराकाष्ठा ही थी। अपनी भूमि के स्वामित्व की आनन्ददायक स्वतंत्रता में उसका आनंद कितना विरल है।

हुक्लैंडिया के मध्य से आया हुआ अविवाहित नवयुवक नव-स्थापित गार्शिया से पता चलता है कि एक अकेला आदमी और उसका भाई मिल कर क्या नहीं कर सकते! हुक होने से पहले वह अधबँटाई रूप में काश्तकार था। जब वह एडकोर में, १९५२ के वसन्त में, आया तो उसके पास केवल उसके तन पर पहने कपड़े ही थे। उसके पास हथियार, बरतन, बिस्तर, काम के जानवर और नक़द रकम कुछ भी नहीं थी। यहाँ सरकार ने उसे उचित सलाह-मशविरे और प्रोत्साहन के साथ केवल एक कुल्हाड़ी, एक बोलो, एक फावड़ा भर ही दिया था!

गार्शिया ने निर्धनता से उद्धार के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर पाया। चावल का अपना राशन बचा कर उसने उससे एक केरोसीन का प्रेशर लैम्प खरीदा। अब दिन में वह भूमि साफ करता था और शीतल रात्रि में लैम्प की रोशनी में फावड़े से जमीन खोदता था। स्कूल के बाद शाम को तथा सप्ताहान्त में उसका भाई उसके काम में हाथ बँटाता था। जब गार्शिया को कठिन जुताई के लिए कराबाओ (भैंसा) मिल गया, तो उसने सोचा कि मुसीबत के दिन अब खत्म हो गये हैं। आने के १८ महीने बाद गार्शिया बंधु आत्म निर्भर हो गये। दो वर्ष के अन्त तक उन्होंने अपने ८ हेक्टर भूमि में से ६ हेक्टर साफ कर ली थी।

पिछले मौसम में गार्शिया ने अच्छी धान की फसल और मोन्गो सेमें, मक्का तथा मूंगफली की पूरक फसलों के अतिरिक्त तरबूज की भी खेती करके देखी। उसके आनंद का पारावार न रहा। फसल बड़ी अच्छी हुई। उसने पास के ही बाजार में १०० पेसो के तरबूज़ वेचे। यह रकम उसके भाई के खर्च और स्कूल की फीस के लिए काफी दिन चलेगी।

एडकोर के साथ गार्शिया के हिसाब में उस पर १६०० पेसो निकलते हैं। उसको विश्वास है कि यह पूरी रकम तीन वर्ष में सरलता से निबटाई जा

सकेगी। आज कल वह वार्षिक फसलों के उत्पादन में ही आत्मनिर्भर है, अगले वर्ष उसके ५०० काफी के पौधों में फल लग जायेंगे। बाज़ार में बिकने के लिए केले तैयार हैं। रैमी और एवोकैडो (चमकदार पत्तियों का एक अमरीकी पौधा) कुछ वर्षों में तैयार हो जाएँगे। जब उसके फार्म में पूरी गति से उत्पादन आरम्भ हो जायगा तो अपनी आवश्यकता को निकाल कर उसके पास काफी बचेगा भी।

यद्यपि सभी नव-स्थापितों ने यह कर नहीं दिखलाया, फिर भी कुल जमा नतीजे महत्वपूर्ण हैं। दो वर्ष के अन्दर कपटागान के नव-स्थापितों ने अछूते जंगल के ४९५ हेक्टर भूमि साफ की जिसका प्रति नव-स्थापित औसत ५ हेक्टर होता है। उन्होंने पहले वर्ष ३१५९ कैवान (१ कैवान अर्थात् बोरा = ९७ पौंड) पलाय की फसल की; दूसरे वर्ष आंधी द्वारा फसल नष्ट हो जाने पर भी ४३७० कैवान फसल हुई। स्थायी अनाज की फसल के अतिरिक्त नव-स्थापितों ने मक्का, मोन्गो सेमें और मूंगफली की पूरक फसलें कीं। घर के बगीचों से काफी शाक भाजी, केले, पपीते थोड़े ही दिनों की खेती से तैयार हो जाते हैं। उन्होंने काफी संख्या में सूअर और मुर्गियाँ रख कर अपने लिए पूरक भोजन बना लिया।

फार्म विकास का कार्यक्रम प्रशासन द्वारा बड़ी सावधानी से आयोजित तथा निर्धारित किया गया था। नव-स्थापितो को आने के पहले महीने में बाड़ा बनाने और घर के बगीचे लगाने में व्यस्त रहना पड़ता था। उसके बाद फार्म की जगह साफ करनी पड़ती और उसमें से दो हेक्टर भूमि में पहले वर्ष ही धान की खेती करनी पड़ती। धान की फसल कटते ही मक्का लगानी पड़ती और उसकी कटाई के पहले उसमें मोन्गो सेमें और मूंगफली बो दिये जाते थे। इन अस्थायी फसलों के साथ-साथ नव-स्थापितों को स्थायी फसलें—कपटागान फार्म में पटसन और केले तथा काफी और बुल्डन फार्म में रैमी लगानी पड़ती है। दूसरे वर्ष सफाई का क्षेत्र बढ़ा दिया जाता है और इस तरह क्रम से पूरा फार्म विकसित कर लिया जाता और नव-स्थापित एक समृद्ध किसान बन जाता। फसल की बुआई और कटाई के इस चक्र के अनुसार चलने से इन नव-स्थापितों को खेती की आधुनिक प्रणालियों का अनुभव हो गया और जमीन से पूरा उत्पादन प्राप्त करना आ गया। पहले तो कुछ नव-स्थापितों ने इस नवीन ढंग की खेती में बड़ा शैथिल्य दिखाया; किन्तु दूसरे वर्ष में कपतगान में तो उनमें से अधिकांश के विचार बदल गये। अब तो धान के ताज़े कटे खेत में चल कर कोई भी व्यक्ति अगली फसल के बीजांकुर देख सकता था।

बुल्डन के फार्म योजना के अनुसार प्रत्येक नव-स्थापित को ६८० पेसो मूल्य के धान और मोन्गो सेमें का उत्पादन प्रथम वर्ष में करना चाहिए। दूसरे वर्ष उसे धान, मोन्गो सेमें, रैमी और केलों से १६८० पेसो कमाने चाहिए। तीसरे वर्ष उसकी आमदनी काफी की फसल को जोड़ कर ३२८० पेसो होनी चाहिए। चौथे वर्ष नव-स्थापित को आत्मनिर्भर हो जाना चाहिए। किसी भी प्रकार की सहायता के लिए उसे शासन पर अवलम्बित नहीं रहना चाहिए। कपतगान फार्मों की आमदनी आगे चल कर बुल्डन फार्मों के बराबर ही होती है, क्योंकि पटसन और काफी का मूल्य लगभग एक जैसा बैठता है। चालू बाजार में, पटसन की खेतीवाला कपतगान का किसान १०,००० पेसो वार्षिक कमा सकता है। यद्यपि ये आंकड़े अमरीकियों की आमदनी के आगे तुच्छ लगते हैं, किन्तु फिलिपाइन के काश्तकारों की ४०० पेसो औसत वार्षिक आमदनी से ये कहीं अधिक आकर्षक हैं। फिलिपाइन में १०,००० पेसो की यह आमदनी कालेज के प्राध्यापकों और दूसरे धंधेवालों को निश्चय ही लुभावनी लगेगी, जिनकी आमदनी मुश्किल से ६००० पेसो ही होती है।

एडकोर फार्मों की आर्थिक सफलता का सर्वोत्तम प्रमाण कपतगान के फार्मों पर मिल सकता है, जहाँ दो वर्ष से अधिक का कार्य देखा जा सकता है। प्रति वर्ष उल्लेखनीय प्रगति हुई है। यहाँ तक कि कपतगान में पहली फसल कटाई के बाद ८ नव-स्थापितों की आर्थिक दशा इतनी अच्छी हो गयी थी कि उन्होंने अपना राशन लेना स्वेच्छा से छोड़ दिया। इसका प्रभाव सुरक्षा-सचिव मैग्सेसे पर इतना पड़ा कि उन्होंने प्रत्येक को बधाई का पत्र लिखा। पत्र के अन्त में लिखा—"मैं आपकी इस शानदार कार्य-सिद्धि को शान्तिमय और रचनात्मक जीवन व्यतीत करने के आपके प्रबल संकल्प का ज्वलंत प्रमाण मानता हूँ।" १९५३ के सितम्बर तक १०० में से ८७ नव-स्थापित बिना राशन के अपना काम चला रहे थे। फार्म प्रशासन ने बताया कि इन ८७ में से २० अभी तक पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं हुए हैं, लेकिन वे समुदाय-केंद्र में नौकरी करके अपनी कमी की पूर्ति कर लेंगे। बाकी १३ नव-स्थापित अपनी भूमि के उत्पादन पर ही निर्भर रहते हैं और साथ ही वे राशन भी लेते हैं जो आधा या इससे अधिक कम कर दिया गया है। इस प्रकार पूरे दो वर्ष के अन्त में १०० में से ६७ नव-स्थापित अपने फार्मों के उत्पादन के बाहर की आमदनी पर अपना जीवन चला रहे थे। १९५४ के वसन्त में दोनों केन्द्रों की फसल देख कर पता लगता था कि अधिकांश नवस्थापित केवल आत्मनिर्भर

ही नहीं हो जाएंगे बल्कि अपने अपने हिसाब के ऋण में काफी भुगतान कर देंगे।

इन उल्लेखनीय आर्थिक सफलताओं के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में बड़ा प्रभावशाली कार्य हुआ है। बहुत-से नव-स्थापितों की आर्थिक समस्याएं हैं और बहुत-से लोगों का 'एडकोर' के प्रति उत्साह उन प्रजातंत्रीय संस्थाओं से मिलता है, जो योजना समुदाय-केंद्र में हैं। उनमें से एक सार्वजनिक प्रारम्भिक स्कूल है। वे नव-स्थापित, जिन्होंने कभी लिखना और पढ़ना नहीं सीखा, बड़े गर्व के साथ अपने बच्चों को इस स्कूल में भेजते हैं। उनमें से एक ने अपनी निजी ओजस्वी बोली में कहा—"एडकोर-प्रारम्भिक स्कूल लोगों को अशिक्षा के अंधकार से बचाने के लिए स्थापित हुए हैं।" यह तो नव-स्थापितों का अपना ही स्कूल है! किसी क्रियाशील पी. टी. ए. के अधिकारी पुराने हुकों में से चुन लिए जाते हैं। बुल्डन में इन लोगों ने स्कूल भवन की टपकती हुई छत को बदलने तथा गृह-मितव्ययिता के वर्गों के लिए कमरा बनाने के लिए धन का आयोजन किया। दो महीने के अन्दर ही उन्होंने लगभग २०० पेसो इकट्ठे कर लिए।

लोगों के जीवन में धर्म का बड़ा महत्त्व है। धर्म जीवन और मृत्यु को गौरव एवं सार्थकता देता है और यह धर्म-भावना ही है कि समारोहों और त्यौहारों में लोगों के हृदयों में आनन्द की लहरें दौड़ जाती हैं। अधिकांश नव-स्थापित कैथोलिक हैं और गिरजाघर में पूजा करते हैं। सेना ने प्रत्येक समुदाय-केंद्र में एक एक गिरजा बनवा दिया है। सेना के पादरी यहाँ भी आते हैं। वे वहाँ के आदमियों में घुल मिल कर रहते है और उनके भोजन, निवास तथा सुख दुःख में सहकारी बना करते है। किंतु नव-स्थापित धर्म के मामले में बड़ी स्वतंत्रता बरतते हैं। कपतगान के नव-स्थापितों में से प्रोटेस्टैन्ट अपना गिरजाघर बना रहे हैं—यह कोई द्वेप की भावना से नहीं, बल्कि समुदाय-केंद्र के विकसित जीवन में अपना योग देने के नाते कर रहे हैं।

एडकोर के एक भूतपूर्व हुक ने कहा—"अपने जीवन में मैंने यह पहली बार सच्चे प्रजातन्त्र का अनुभव किया है। यहाँ सिपाही हमें सताते नहीं हैं बल्कि वे मित्रता का व्यवहार करते हैं। यदि हमें कोई शिकायत होती है तो हम कभी भी फार्म-प्रशासक के पास जा सकते हैं और हम स्वयं नगर-परिषद (टाउन कौन्सिल) में अपने नेता चुनते हैं।" ऐसे देश में जहाँ स्थानीय सरकार सदा से ही कमजोर रही है, एडकोर में निर्वाचित नगर-परिषद की स्थापना पुराने

हुकों को फिर से शिक्षित करने का सबसे सफल कार्यक्रम हुआ है। फार्म प्रशासक और उसके कर्मचारियों के निर्देशन में, यह परिषद् समुदाय केंद्र सम्बन्धी बातों की देखभाल करती है और वह शिक्षा ग्रहण करती है जिससे समय आने पर अपने सब कार्यों का उत्तरदायित्व स्वयं अपने हाथों में ले सके। इन नव-स्थापितों का कहना है कि एडकोर की सबसे अच्छी चीज़ है उनका अपना प्रशासन! उनमें से एक ने लिखा—"मैं इस समुदाय-केन्द्र का पुलिस-प्रमुख नियुक्त हुआ था। झगड़े और छोटे-छोटे मामले मेरे सामने पेश होते थे। हाल ही में मैं बुल्डन के नव-स्थापितों के प्रशासन-प्रबंध का पार्षद चुना गया। मेरे कस्बे के लोग मेरी इस ऊँची पदवी को देख कर आश्चर्यचकित हैं क्योंकि उनकी धारणा है कि यह एडकोर तो निर्वासितों का शरणस्थल है। उन्हें यह नहीं मालूम है कि इसके विपरीत यह स्वर्ग का एक भाग है।" दूसरे विस्थापित ने लिखा—"एडकोर में प्रजातन्त्र अपनी पूरी सार्थकता में काम कर रहा है और आप अपने अपराधियों को यहाँ शान्तिपूर्ण नागरिक के रूप में—पहले से अधिक शान्ति प्रेमी पाएंगे। पुराने हुकों के लिए तो एडकोर नवयौवन का स्रोत है।"

एडकोर की बस्तियों के समृद्ध होते ही आसपास के क्षेत्र भी उन्नति करने लगे और समृद्ध होने लगे। प्रथम एडकोर दल के कपतगान आने के दो सप्ताह बाद ही मुर्गी के बच्चों का मूल्य ८० सैन्टेवो से बढ़ कर १·०० पेसो हो गया और वही बाद में जाकर १·५० पेसो पर स्थिर हो गया। नव-स्थापितों के आने से और स्थानीय बाजार के बढ़ने के कारण अन्य वस्तुओं के मूल्य भी बढ़ गये हैं। स्थानीय प्रसिद्ध चीनी स्टोर की बिक्री भी १९५१ में ३४,६०० पेसो से बढ़कर १९५३ में ७९१,४७७ पेसो हो गयी। आज़ैमिस नगर से कपटागान तक पहुँचानेवाली लांच (नाव) के मालिक ने एक के बजाय तीन फेरे करने शुरू कर दिये। एडकोर की स्थापना से वह स्वयं को इतना लाभान्वित एवं आभारी अनुभव करता था कि वह सेना के तमाम कार्यकर्त्ताओं को नाव में मुफ्त ले जाने का आग्रह करने लगा।

कपतगान के म्युनिसिपल अधिकारियों को विश्वास था कि एडकोर के कारण ही समुदाय-केंद्र समृद्ध हुआ है। १९५१ से १९५३ के बीच भूमि-कर ५४८० पेसो से बढ़ कर ६४३० पेसो हो गया। व्यवसाय लाइसेंसों की फीस ७९५० पेसो से बढ़ कर १२७९० पेसो हो गयी। निवास सर्टिफिकेटों की फीस १८३० पेसो से बढ़ कर २७२० पेसो हो गयी। यद्यपि एडकोर फार्मों के स्थापन के बाद कोई

जनगणना नहीं हुई है फिर भी आसपास के क्षेत्रों की जनसंख्या में आश्चर्य-जनक वृद्धि हुई है। नये-नये बसनेवाले उस क्षेत्र में आ गये हैं और वे या तो जमीन पर दावा करने की जोखिम लेते हैं अथवा पुरानी भूमि को ही विकसित करते हैं। कपटागान के स्कूल के विद्यार्थियों की संख्या से पता लगता है कि एडकोर के नव-स्थापितों की अपेक्षा एडकोर के आसपास के क्षेत्रों से अधिक विद्यार्थी स्कूलों में आते हैं।

एडकोर के बाहर के फार्मों की प्रगति का एक कारण यह भी है कि सेना ने नयी सड़कें बना दी हैं। एडकोर नगर से कपतगान तक पहुँचने के लिए ११ किलोमीटर (लगभग ४½ मील) लम्बे मार्ग की आवश्यकता थी। १६ किलोमीटर (लगभग ६½ मील) लम्बी सड़कें नगर के अन्दर बनी तथा २४ किलोमीटर (लगभग ९½ मील) सड़कें बनने से बाहरी क्षेत्रों से समुदाय-केंद्र के अन्दर तक आने में सुविधा हो गयी। इसी प्रकार बुल्डन एडकोर फार्म में २० किलोमीटर (८ मील) लम्बी सड़कें और रास्ते बनाने पड़े और इसके अतिरिक्त कुछ पुरानी सड़कें ठीक करनी पड़ीं जिससे उन पर प्रत्येक मौसम में चला जा सके। समुदाय-केंद्र में सड़कों का क्या महत्व है यह यात्रियों और माल को ले जानेवाली बस सर्विस से साफ पता लगता है। पुराने जमाने में तो बस सर्विस को कोई जानता ही नहीं था, लोग जंगल तक पैदल जाते थे या अपने माल को बाज़ार तक कराबाओ गाड़ी (भैंसागाड़ी) पर ले जाया करते थे। अब तो कपतगान फार्म में शहर से किनारे-किनारे चलने के लिए ८ बसें हैं। कोटावाटो राजधानी और बुल्डन के बीच दो बार बस आया-जाया करती है।

आसपास के क्षेत्रों की उन्नति का विशेष कारण सेना की वहाँ तैनाती भी है। उनकी उपस्थिति से लोगों को सुरक्षा मिलती है। जब तक यह सुरक्षा नहीं थी तब तक कपतगान मैदान के अगुआ लोग या तो निष्क्रिय थे या अपने अधिकारों का त्याग ही उनके लिए श्रेयस्कर था। सेना के आते ही उनमें से अधिकांश वापस आ गये और अपने फार्मों का विकास करने लगे है। यहाँ तक कि एडकोर के पास के मोरो निवासी भी सेना की मौजूदगी के प्रशंसक हैं क्योंकि सेना लुटेरों के दलों से उन्हें अपेक्षित सुरक्षा देती है। जहाँ तक उन्हें याद है, यह क्षेत्र हत्याओं और मवेशियों की भागदौड़ से इतना मुक्त कभी नहीं था—इतना शान्तिपूर्ण और समृद्ध नहीं था। बस्तियों के भविष्य के बारे में कैप्टन जोंगको से पूछा गया, तो उन्होंने कहा—"सेना को अपना मुकाम

यहां पर लगभग ५ वर्ष तक रखना पड़ेगा। उसके बाद नव-स्थापित अपनी पुलिस का संगठन कर सकते हैं और अपने मामलों की स्वयं देखभाल कर सकते हैं।"

एडकोर ने आसपास के क्षेत्रों की कई प्रकार से मदद की है। भूमि अधिकार-पत्र के लिए आवेदन-पत्र का काम मुफ्त किया जाता है। एडकोर के अधिकारियों ने खेतीवाड़ी के अपने विशेष ज्ञान से भी लोगों को लाभान्वित किया जिसका फिलिपाइन के गाँवों में अभाव होता है। एडकोर का औषधालय विशेषकर बस्ती के उपयोग के लिए ही है; किन्तु बाहर के लोगों की भी प्राथमिक चिकित्सा एवं दवादारू यहाँ मुफ्त होता है। रोगी से दवाई के दाम उसी स्थिति में लिए जाते हैं जब कि वे दवाएँ औषधालय में नहीं होती हैं। बाहर के लोगों के लिए इस उदार सेवा ने मोरो तक का समर्थन और आभार प्राप्त किया है जिनके लिए दवाई का अनुभव एक नयी बात थी।

१९५२-५३ में बुल्डन में एडकोर फार्म के डाक्टर और नर्स ने ६०४६ रोगियों की सेवा-सुश्रूषा की। इनमें सेना के आदमियों और उनके परिवारों की संख्या शामिल नहीं है। इनमें से कम-से-कम आधे व्यक्ति एडकोर की सीमा के बाहर के थे।

शिक्षण की सुविधाएँ तो वस्तुतः अपरिमित हैं। जहाँ केवल लम्बे-लम्बे वृक्ष थे और जंगल में जाने के लिए केवल एक रास्ता था, वहाँ अब कपतगान के एडकोर बस्ती में एक सार्वजनिक प्रारम्भिक स्कूल है, जिसमें १४ शिक्षक और ५०९ विद्यार्थी हैं। इनमें से ३३० बच्चे तो नव-स्थापितों के परिवारों के बच्चों के अतिरिक्त हैं। समुदाय-केंद्र में अभी हाल ही में दो हाई स्कूल भी खुले हैं। इन सुविधाओं के अतिरिक्त एक वाचनालय है और प्रौढ़ शिक्षा की योजना भी बनी है। इस प्रकार उस क्षेत्र में एडकोर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का केंद्र बन गया है। इसी प्रकार बुल्डन में १२ शिक्षक और ४०७ विद्यार्थियों-वाले नए प्रारम्भिक स्कूल से इस क्षेत्र में पहली बार शिक्षा का प्रसार हुआ है। लगभग एक तिहाई विद्यार्थी तो एडकोर के बाहर के परिवारों से आते हैं। पादरी वाचनालय की देखभाल करता है जहाँ पत्रिकाएँ और किताबें दी जाती हैं।

जहाँ कभी जड़ता और नीरसता का ही अखंड प्रसार था, वहाँ अब एडकोर ने आनन्द और उल्लास के प्रेरणा-स्रोत निर्मित कर दिये हैं। नव-स्थापित और सिपाही दोनों ने मिल कर बुल्डन में नाटक के कार्यक्रमों तथा बुद्धिवर्द्धक आयोजनों के

लिए एक नाट्यशाला बनायी है। बिजली की रोशनी से रात्रि में सभाएं और मनोरंजन के कार्यक्रम हो सकते हैं। छुट्टियों के कार्यक्रम गिरजाघर द्वारा आयोजित होते हैं। सारा समुदाय प्रतिवर्ष एक वार्षिक महोत्सव मनाता है जिसमें मीलों दूर के लोग भी आते हैं। स्कूल द्वारा खेलकूद के कार्यक्रम का भी आयोजन होता है। खुरदरे फर्श वाले हाल में नृत्य का भी दैनिक कार्यक्रम हो ही जाता है। एडकोर की प्रतिष्ठा आनन्ददायक स्थली के रूप में इतनी बढ़ गयी है कि सेना के पास इस विभाग में आवश्यकता से अधिक स्वयंसेवक हैं।

एडकोर के नव-स्थापितों का बहुमत वहीं रहना चाहता है और उसे ही अपना स्थायी निवास बनाना चाहता है। बुल्डन और कपटागान के पुराने हुकों में से केवल ७ प्रतिशत ही ऐसे थे जिन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि यदि उन्हें अच्छा अवसर मिला तो ही वे अपने-अपने घर वापिस जायेंगे। बाकी ९३ प्रतिशत नव-स्थापितों का उत्साह निम्नलिखित सरल तथा प्रभावशाली शब्दावली में अंकित है :—

"यदि सरकार मेरे आने जाने का खर्चा भी दे, तो भी मैं वहाँ (अपने घर) जा कर वापिस ही आ आऊँगा। मेरे पास यहाँ भूमि है; मैं इसे नहीं छोड़ सकता। यहाँ मैं मालदार होने की आशा करता हूँ और अपने बच्चों को शिक्षा देना चाहता हूँ। लूज़न में तो केवल कष्ट ही कष्ट है; यहाँ एकदम शान्ति है।" एडकोर के शान्तिमय जीवन से भूतपूर्व हुक तो स्थायी रूप से प्रभावित थे। उनके उद्गारों से पता लगता है कि जो पक्ष शान्ति और सुरक्षा प्रदान कर सकता है वही जनता के हृदयों को जीत सकने में समर्थ हो सकता है। एडकोर के फार्मों पर सेना वही कार्य कर रही थी।

अध्याय ९

हुक प्रचार

कई महीनों तक चुपचाप सूचना इकट्ठी कर लेने के बाद मिलिटरी इन्टैली-जेन्स सर्विस (सैनिक खुफिया-विभाग) तथा मनीला की पुलिस के २२ दलों ने एक ही समय अक्टूबर १९५० में, मनीला में कम्यूनिस्ट नेताओं के गुप्त स्थानों पर धावा बोला। कम्यूनिस्ट पार्टी की कार्यकारिणी समिति 'पोलिट ब्यूरो' (राजनैतिक विभाग) का घेरा तो वास्तव में, आकस्मिक विध्वंसक तथा एकदम सफल था। इसने समस्त कम्यूनिस्ट आन्दोलन तथा हुक कार्रवाइयों के निर्देशन और एकीकरण का जैसे स्नायु-जाल ही तोड़ दिया। बंदी किये गये लोगों में पार्टी का प्रधानमंत्री जोसलावा भी था, जो एक वकील था और जो मनीला के मध्य में एस्कोल्टा पर अपने कार्यालय से तथा 'मेफ्लावर अपार्टमैन्ट्स' में अपने निवासस्थान से सारे कार्यों का संचालन करता था।

हुक आन्दोलन के बुद्धिनिष्ठ नेताओं में जोसलावा एक था। सुशिक्षित, सुसंस्कृत तथा मार्क्सवादी विचारधारा में ओतप्रोत उसने पार्टी की गतिधारा को फिलिपाइन की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप ढाल दिया था। एक मंजे हुए लेखक के रूप में उसने कई लेख और पुस्तकें लिखी थीं जिन्होंने आन्दोलन को नया रूप दिया और जो हुक रंगरूटों के लिए सैद्धांतिक शिक्षण की पाठ्य पुस्तकें बनीं। उनमें से कुछ के नाम ये हैं :—

"प्रतीक्षावाद के विरुद्ध संघर्ष"

"व्यूहरचना और युक्तियों की रूपरेखा"

"फिलिपाइन में कम्यूनिस्ट पार्टी के इतिहास की विशिष्ट घटनाएँ"

"फिलिपाइन में कम्यूनिस्ट पार्टी के संघर्ष के बीस वर्ष"

"क्रांति में लगने वाले जनता द्वारा प्राप्त तथा व्यय किए हुए धन का हिसाब"

लावा ने अपने मुकदमे की सुनवाई के समय, जिसमें वह आजीवन कारावास के लिए दण्डित हुआ, अपना बचाव करने से इन्कार कर दिया इसके बजाय उसने एक ४३ पृष्ठ का 'फिलिपाइन में असंतोष के कारण और उपाय'

पर एक स्मरण-पत्र दाखिल किया। इसमें उसने बड़े योग्य ढंग से स्पेन के विरुद्ध १८९६ की क्रान्ति से लेकर अब तक के फिलिपाइन के इतिहास का विवरण दिया है। इस स्मरण-पत्र में उसने फिलिपाइन के इतिहास के कम्यूनिस्ट विचार-रेखाओं पर दुबारा लिखा है। इस स्मरण-पत्र में उसने राष्ट्रीय नेता रिज़ाल को एक दुर्बल प्रभावहीन सुधारक के रूप में, एग्युनैल्डो को, जिसने अमरीकियों के आगे समर्पण कर दिया था, एक प्रतिक्रियावादी कठपुतले के रूप में तथा हिंसा में विश्वास रखनेवाले बोनेंफैशियो को जनता के विद्रोह के सच्चे नेता के रूप में चित्रित किया है।

उसका आरोप था कि इस विद्रोह का दमन अमरीकी शस्त्र और कूटनीति के चतुर मिश्रण द्वारा सम्भव बनाया गया। उसने अमरीका को अतिनिकृष्ट साम्राज्यवादी राष्ट्र बताया है। वर्त्तमान वर्षों की घटनाओं के बारे में चर्चा करते हुए उसने अमरीका-विरोधी नीति का ही प्रयोग किया है। वह लिखता है:—

"यह बात निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि आयात और विनिमय के प्रतिबन्धों, मुद्रा-स्फीति, माल के अभाव, बढ़ती हुई बेकारी, कम वेतन और अधिकांश कृषकों और श्रमिकों के आधे पेट रहने की जो आर्थिक स्थिति उत्पन्न हो गयी है, उसका कारण अमरीकी साम्राज्यवादियों की हमारे देश पर लादी हुई साम्राज्यशाही-सामंतवादी अर्थ व्यवस्था रही है और 'बेल् ट्रेड एक्ट' जिसका अवश्यम्भावी प्रतिफल है। जब तक हमारी अर्थ-व्यवस्था का यह रूप अटूट रहेगा तब तक मानवीय और प्राकृतिक साधनों की विपुलता के बीच भी गरीबी बनी रहेगी। और जब तक यह गरीबी रहेगी, तब तक शोषित श्रमिक तथा कृषक वर्ग साम्राज्यशाही-सामंतवादी शक्तियों को उलटने के लिए असन्तोष और आन्दोलन करने और शोषितों के हितों के लिए अर्थ व्यवस्था को पुनः-संगठित करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

बोनेंफशियो द्वारा आरम्भ की गई क्रान्ति को पूरा करने की संभावनाओं के बारे में लावा पूरे आश्वासन सहित अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की ओर इशारा करता है—"चीन में जन-विद्रोह अन्ततः १९४९ में सफल हुआ। अमरीकी साम्राज्यवाद कोरिया में मुँह की खा रहा है, एशिया में तेजी से अस्त-व्यस्त हो रहा है और पश्चिमी यूरोप में उसके प्रति शंकाएँ पैदा हो रही हैं। विश्व साम्राज्यवाद ने हर जगह अपनी पहल खो दी है, यहाँ तक कि स्वयं उसकी अंदरूनी असंगतियाँ उसे छिन्न-भिन्न कर रही हैं! आजकल की तेजी से बदलती परिस्थितियों को देख कर यह बिल्कुल नहीं कहा जा सकता कि समाजवाद और

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की तेजी से बढ़ती हुई शक्तियों के आगे साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपना खोया हुआ प्रभाव वापस प्राप्त कर सकेंगी।" इस बात पर गर्व प्रकट करते हुए कि फिलिपाइन में हुक शक्तियों का बड़ा विस्तार हुआ है, लावा ने कहा—"राष्ट्रीय स्वाधीनता के संघर्ष में कम्यूनिस्ट पार्टी का नेतृत्व अब पूर्ण रूप से मान्य कर लिया गया है।" दण्ड मिलने से पहले यह उसकी अन्तिम टिप्पणी थी। न्यायालय के निर्णय ने ज्यों ही उसे मुटिंग्लूप के राष्ट्रीय बन्दीगृह की मोटी दीवालों के अन्दर एक कोठरी में कैद कर दिया, सशस्त्र विद्रोह से उसका नेतृत्व खत्म हो गया।

जोस लावा और पोलिट ब्यूरो में उसके अन्य बुद्धिनिष्ठ साथियों को दण्ड देते समय जज कैस्टिलो ने कहा—"आप लोगों के इस निराधार विश्वास के बावजूद कि आपकी सरकार अयोग्य है और सुधार के परे हैं और केवल एक ही मार्ग रह गया है कि उसे उलट दिया जाय, सरकार ने आप लोगों के सुधार की आशा का अवसर खोया नहीं है और वह आप लोगों की ईसाई चेतना, कार्य करने की योग्यता और सहकार-वृत्ति पर विश्वास करती है।" सरकार ने ऐसे आदमियों के हृदयों को प्रजातंत्र की ओर फिर से मोड़ने के लिए अभी तक वस्तुतः असफल प्रयत्न ही किये हैं। बंदियों को रचनात्मक दृष्टिकोण के चित्र दिखलाये गये, उन्हें कई प्रकार का साहित्य पढ़ने को दिया गया और प्रौढ़ शिक्षण के अधिकारियों द्वारा उन्हें कई भाषण भी दिये गये। किन्तु तीन वर्ष के इस प्रकार की व्यवस्था के बाद भी इस बात के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिये कि लावा और उसके साथियों ने अपने इरादे बदल दिये हैं। हो सकता है कि दूसरी बार अधिक गहरे प्रयत्न करने से कुछ लाभ मिल सके। किन्तु यह आवश्यक हो गया है कि आगे के ये प्रयत्न जेल में किये जायें, क्योंकि जेल के वातावरण में ही इनकी वृत्तियाँ ग्रहण-शील हो सकती हैं। यों तो अभी तक इन सिद्धांत-रूढ़ कम्यूनिस्टों पर तर्क अथवा आग्रह-अनुरोध का कोई प्रभाव नहीं हुआ है।

सौभाग्य से, व्यक्तियों की मनोदशा में परिवर्तन लाने के लिए संघर्ष केवल इन थोड़े से पराकाष्ठावादियों तक ही सीमित नहीं है। दूसरे क्रान्तिकारियों में कुछ ऐसे भी व्यक्तियों का वर्ग है जो बहुत कम शिक्षित है और जिसके लिए कम्यूनिस्ट विचारधारा अस्पष्ट सिद्धांतों का जाल है। हुकों में उनके सम्मिलित होने के कई कारण थे और वे उन लोगों के बीच इसलिए जमे रहे और संघर्षों में भाग लेते रहे कि यदि हुक विद्रोह सफल हो गया, तो उनका जीवन सुखद हो जायगा। यद्यपि ऐसे लोगों को सरकार के पक्ष में

परिवर्तित करने का काम आसान नहीं है, किन्तु वह पूर्णतया निराशाजनक भी नहीं है।

बुल्डन के एक नव-निवासी इडुआर्डो इस्पैणोला का ही उदाहरण लीजिये। जहाँ तक उसे याद है इडुआर्डो खेत पर अपने पिता के काम में हाथ बँटाता था। उनके पास जमीन थी, लेकिन स्कूल जाने के लिए समय और धन का सर्वथा अभाव था। लड़ाई के दिन आये और चले गये; किन्तु यह नवयुवक उसी ढंग से खेत पर जी-उबानेवाला परिश्रम करता रहा। एक दिन, १९५० में, कुछ आदमी उसके पास आये और उन्होंने उससे हुकों में सम्मिलित हो जाने के लिए कहा। उन आदमियों में से उसके गाँव का एक पुराना शिक्षक भी था; साथ के दूसरे लोग अपरिचित थे और सिपाहियों की तरह वर्दी पहने हुए और हथियार लिए हुए थे। उस समय उसने उन सशस्त्र लोगों के सामने 'नहीं' की अपेक्षा 'हाँ' कहने में ही बुद्धिमानी समझी। गांवों में बेचारे गरीब आदमी सशस्त्र आदमियों के सामने 'हाँ' करने के सिवाय और कर ही क्या सकते थे?

हुकों ने जो वचन दिये उनसे इडुआर्डो प्रभावित भी हुआ। १०० पेसो महीने पर उन्होंने उसे रसोइया की नौकरी दे दी। बेचारे इडुआर्डो ने एक बार में इतनी रकम कभी नहीं देखी थी; अतः उसे यह एक स्वर्ण अवसर ही प्रतीत हुआ। मुफ्त जमीन और आगे चल कर स्वतंत्र जीवन-यापन के अवसर का ही उसे वचन दिया गया। सरकार के साथ लड़ने के बारे में हुकों ने उससे कुछ नहीं कहा और बेचारे इडुआर्डो ने भी यह प्रश्न उठाना ठीक नहीं समझा।

हुक-कैम्प में रहते-रहते सप्ताह और महीने बीत गये, और बेचारा नया रसोइया अब समझने लगा कि वह कहाँ फँस गया है। सुबह तड़के उठना, देर रात तक काम करना, जल्दी से अपना सामान बांध कर एक जगह से दूसरी नयी जगह पर डेरा डालना और हमेशा इस बात का डर कि उसका फरार के रूप में पीछा किया जा रहा है! प्रति दिन यह क्रम चलता रहा और १०० पेसो मासिक वेतन के बारे में किसी प्रकार का जिक्र ही नहीं। अपने लिए जमीन मिलने की बात तो कोसों दूर थी।

जिस हुक-दल में वह था, वह छिन्न-भिन्न होने लगा। उनमें से कुछ बन्दी बना लिए गये; दस्ते के नेता ने आत्मसमर्पण कर दिया। भयभीत और हतोत्साह इडुआर्डो ने भी आत्मसमर्पण कर दिया। सेना के बाड़े में उसने पहली बार मिंडानाओ में 'एडकोर' के विषय में सुना। नागरिक कार्य-अधिकारी

(सिविल अफेअर्स आफिसर) ने जिन अवसरों का उसके सामने वर्णन किया, वे उसे भले लगे और उसने स्वेच्छा से बुल्डन जाना स्वीकार कर लिया।

'एडकोर' उसके और उसीके समान दूसरे भूतपूर्व हुकों के लिए नव-जीवन का वरदान साबित हुआ। कम्यूनिस्ट सिद्धान्त जो कभी भी उनकी चेतना का स्पर्श नहीं कर पाये थे, वे जंगलों के साफ करने के और अपने खेतों के निर्माण-कालीन उत्साह में उन्हें याद भी नहीं आये। सौजन्य और सुअवसरों से प्रोत्साहित इडुआर्डो ने बुल्डन में अपने खेत और अपने परिवार के लिए पूरी योजना बना रखी है और वह अपना शेष जीवन यहीं बिताना चाहता है। इस बेचारे अज्ञानी 'पुराने हुक' के सामने किसी वफादारी की समस्या ही नहीं रही जबकि उसे अच्छी रोज़ी और समाज में शान्तिपूर्वक जीने का मौका मिल गया।

एडकोर के खेतों में भी, वहाँ उन हुकों को नहीं रखा गया है जिनके खिलाफ कई अपराधों के आरोप हैं, जो साम्यवादी षड्यन्त्रों में शामिल रहे हैं, बाकी के नये निवासियों में काफी विविधता है। कुछ लोगों को तो, जैसा कि ऊपर के उदाहरण में बताया गया है, साम्यवादी सिद्धान्तों की बहुत कम अथवा बिल्कुल ही शिक्षा नहीं मिल पायी थी। दूसरों के भीतर मार्क्सवादी सिद्धान्त गहराई से सींचा गया था जिन्होंने लूज़न और पनाय में हुकों के विस्तार-आन्दोलनों का नेतृत्व किया था। हुकों के साथ लोगों के सम्मिलित होने के उतने ही विभिन्न कारण थे जितने कि आन्दोलन के समय लोगो से सम्बन्ध स्थापित करते समय साधनों की चर्चा करने के समय थे। कुछ लोगो ने हुकों का साथ इसलिए स्वीकार कर लिया था कि उन्हें बड़े सुनहरे वचन हुकों ने दिये थे, लेकिन दूसरे लोग परिस्थिति-वश और साथ में रहने के कारण ही उनमें शामिल हुए थे। हुक प्रचार के कुछ अंश एक वर्ग को प्रिय लगे तथा दूसरे लोग कई प्रकार के वादों से प्रभावित हुए। हुकों के प्रचार-अभियान को समझने से पहले हमें हुकों की मंशाओं और आवश्यकताओं, परिस्थितियों और सम्पर्कों, उद्देश्यों और प्रयोजनों की कोई पृष्ठभूमि मान लेनी चाहिए।

हुकों ने किस प्रकार के प्रचार के साधन का उपयोग किया? वे एक समाचारपत्र प्रकाशित करते हैं जिसका नाम 'टिटिस' (ज्योति) है; दूसरा एक मासिक पत्र है—'कलायान' (स्वतंत्रता)। इनके अलावा कई सूचनापत्र, परिपत्र तथा पोस्टर भी वे प्रकाशित करते हैं। यह सारी सामग्री हाथ से छपती है और अधकचरे कार्टूनों से सुसज्ज रहती है। लेखों में राजनीतिक विश्लेषण, समाचार-

समालोचना, निर्दयी जमींदारों द्वारा शोषित किसानों की कहानियाँ, तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन अर्थात् हुकों को समर्थन करने की अपील रहती है। यह सब काम एक साम्यवादी संगठन पीयरा (पोलिटिकल, इकानामिक, इन्टैलिजैन्स एण्ड रिचर्स एसोसिएशन—राजनीतिक, आर्थिक, समाचार तथा शोध सम्मेलन) द्वारा होता है जो सारे समाचार इकट्ठे करता है, लेख लिखता है और प्रकाशनों की योजना बनाता है। फिर यह द्वीप भर में, विशेषकर लूज़न के ग्रामीणों में, बांटे जाते हैं।

हुक-प्रचार की प्रत्यक्ष विशेषता यह है कि यह अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद के निर्देशन का अनुसरण करता है। १९४५ से छपे हुए उनके साहित्य में शायद ही ऐसा कोई हो जिसने साम्राज्यशाही के घाव पर नमक न छिड़का हो। हुक निरन्तर प्रबल अमरीका-विरोधी रहे हैं। अधिकांश प्रचार अन्तर्राष्ट्रीय विषयों, चीन में सफल क्रांति, कोरिया-युद्ध एवं 'युद्ध प्रसारक अमरीकियों' आदि के बारे में रहता है। फिलिपाइनों को कोरिया-युद्ध में भाग न लेने के लिए चेतावनी दी गयी थी, कोरिया युद्ध को वे प्रतिक्रियावादी कठपुतले सिग्मैनरी से मुक्ति पाने के लिए कोरियावासियों का न्यायसंगत प्रयत्न मानते थे। अमरीका और फिलिपाइन के बीच हुए फौजी अड्डे के करार की समाप्ति के लिए भी हुक आवाज़ उठाते हैं। उनका कहना है कि अमरीकी फौजों के रहने से फिलि-पाइन की शान्ति को खतरे हैं। उन्होंने जसमैग (ज्वाइन्ट यूनाइटेड स्टेट्स मिलिटरी एडवाइज़री ग्रुप—संयुक्त अमरीकी फौजी सलाहकार-समिति) का कट्टर विरोध किया जो फिलिपाइन को दी जानेवाली फौजी सहायता की देखभाल करता है। १९५३ के चुनावों के पहले, उन्होंने मैग्सेसे को 'जसमैग्सेसे' कह कर काफ़ी परेशान किया है।

यह बड़े मजे की बात है कि उनके प्रचार के इस अंश का प्रभाव उनके ही अनुयायियों पर बहुत कम था। एडकोर में पुराने हुकों से मिलने पर लेखक को ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि वे अमरीका-विरोधी विचारों अथवा अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर इस प्रचार से प्रभावित हुए हों। हो सकता है कि वे अमरीका-विरोधी भावनाएं प्रकट नहीं कर सके हों; क्योंकि एक अमरीकीने उनसे भेंट की थी, फिर भी पिछली बार फिलिपाइन के अफ्सरों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा उन्हीं लोगों की मुलाकात लेने में अमरीका-विरोधी भावनाओं का कोई पता नहीं लगा। दूसरी मुलाकातों में भी लेखक को अमरीका के प्रति आलोचना को रोकने का कोई प्रमाण नहीं मिला; उदाहरणार्थ, राष्ट्रीय

बन्दीगृह में बन्द पोलिटब्यूरो के उच्च हुक नेताओं को अमेरिका-विरोधी विचार प्रकट करने की पूरी-पूरी स्वाधीनता थी। इन छानबीनों के आधार पर एडकोर में ली गयी मुलाकातों में जो सम्मतियाँ प्राप्त हुईं उन पर विश्वास करना न्यायसंगत है। कुछ और तथ्य भी यह प्रमाणित करते हैं कि अमरीका-विरोधी प्रचार असफल रहा है। मैग्सेसे, जिसकी अमरीकियों के साथ खुली दोस्ती है हुकों के गढ़ पम्पैङ्गा प्रान्त में बहुमत से चुनाव में विजयी हुआ। कम्यूनिस्टों के विरोधी प्रचार के होते हुए भी फिलिपाइनों और अमरीकियों की मित्रता, लड़ाई के समय से पहले की अपेक्षा, अधिक गाढ़ी प्रतीत होती है।

साम्राज्यवाद और विश्व-राजनीति के अतिरिक्त हुकों ने स्थानीय समस्याओं पर भी ज़ोर दिया है। १९४९ के चुनाव में जिस छल कपट का प्रयोग हुआ था, उसका पूरा पूरा उपयोग उन्होने सरकार को बदनाम करने के लिए किया। १९५३ के आंदोलन में उन्होंने एक पत्रिका 'क्विरीनो या मैग्सेसे' निकाल कर दोनों उम्मेदवारों की भर्त्सना की। उन्होंने एक और पत्रिका 'अधिक शक्तिशाली कौन है—कैस्टिलो अथवा ड्यूक?' निकाल कर सरकार में आन्तरिक कलह उभाड़ने की चेष्टा की। जमींदार और साहूकार तो उनके क्रूर प्रचार के सदा से ही लक्ष्य रहे हैं। कितने ही गरीब निरुपाय लोग 'भूमिहीनों को भूमि, बेकारों को काम' के नारे का लोभ संवरण नहीं कर सके।

यह मान कर कि 'एडकोर' की बस्तियों से कृषकों में साम्यवादी प्रचार को बड़ा धक्का पहुँचता है, कम्यूनिस्टों ने सेना की इस योजना को प्रभावहीन बनाने में कोई कसर नहीं उठा रखी है। उन्होंने 'एडकोर' के ही सम्बन्ध में एक पर्चा छपवाया था जिसमें उन्होंने 'एडकोर' फार्मों को फौजी कैदखाने बताया है जो काँटेदार तारों से घिरे हुए हैं, जहाँ सिपाही पहरा देते हैं और जहाँ पुराने हुकों को जंजीरों से बाँध कर रखा गया है। उसमें यह भी लिखा था कि कैदियों से संगीन की नोक पर काम लिया जाता है और उन्हें विश्राम का कोई समय नहीं दिया जाता है। उनकी घोषणा थी कि यह सारा कार्यक्रम, निर्बल और भ्रष्ट सरकार के प्रति जन-विद्रोह को पहले से दबाने का अमरीका का प्रयत्न है। यह प्रचार, वास्तव में पूरे-का-पूरा मन-गढ़न्त है।

इधर जब हुक का श्रेष्ठिवर्ग एडकोर-विरोधी प्रचार कर रहा था, उधर साधारण सदस्य-वर्ग गुप्त रूप से सरकार द्वारा दिये गये प्रस्ताव की चर्चा कर रहे थे। पुराने हुकों ने बताया कि उनके आत्म-समर्पण अथवा गिरफ्तारी के पूर्व भी पहाड़ पर उनके साथियों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ थीं। एक ने कहा

कि अधिकांश टुकड़ी के नेता तथा सदस्य-वर्ग 'एडकोर' से विषय में अच्छी सम्मतियों पर विश्वास करते थे। ऊँचे पद के लोगों का भी इस संस्था में विश्वास हो चला था, किन्तु वे अपना मुँह नहीं खोल सकते थे। कुछ हुक नेताओं ने अपने वक्तव्यों में कहा कि एडकोर तो केवल प्रचार मात्र है, दूसरे लोग यह सोचते थे कि यह केवल अस्थायी है और जैसे ही मैग्सेसे का ध्यान दूसरी ओर गया, एडकोर असफल हो कर खण्ड-खण्ड हो जायगा। कुछ हुक इस डर के मारे गुपचुप बातें करते थे कि समर्पण के विषय में चर्चा करने पर उन्हें गोली मार दी जायगी। एक हुक बोला कि उसके दल के आदमी एडकोर से निराश हो गये हैं, क्योंकि यह समर्पण कराने का प्रलोभन मात्र है। लेकिन दूसरे ने कहा कि उसके सब साथियों ने एडकोर में दी गयी निःशुल्क भूमि की सुविधा का लाभ उठाने का निश्चय किया है। पार्टी के प्रशिक्षकों ने हुकों की भर्त्सना की और चेतावनी दी कि वे एडकोर के प्रचार में विश्वास न करें। उनका कहना था कि जो भी वहाँ पहुँचा वह बस बरबाद हुआ। लगभग इसी विचार की एक और दूसरी धमकी थी—"एडकोर अभी तो अच्छा लगेगा, लेकिन थोड़े दिनों में जब सेना चली जायगी तब मोरो लोग सबको मार डालेंगे।" कुछ हुक कहते थे कि उनके विचार से एडकोर का रचनात्मक कार्यक्रम सच्चा नहीं है क्योंकि लूज़न में फौजी कार्यवाही कर के बहुत से हुकों को सेना मौत के घाट उतार रही है। अधिकृत रूप से एडकोर के प्रति हुकों की नीति स्पष्ट है। वे इसको इस लिए बुरा बताते हैं कि उनकी दृष्टि में यह हुकों के आत्म-समर्पण की एक चाल है और समर्पण का अर्थ है पार्टी की क्षति। बहुत-से हुकों ने इस खतरे की वास्तविकता को प्रमाणित कर दिया। एडकोर के प्रति हुक दलों की विभिन्न प्रतिक्रियाएँ थीं; कुछ के लिए तो एडकोर का कार्यक्रम कपोल-कल्पना ही लगता था।

सेना का पुनर्वास-कार्यक्रम जनता के सामने आते ही हुकों के 'भूमिहीनों के लिए भूमि' नारे की पोल खुल गयी। जब सेना ने भूमि देनी आरम्भ की तो हुकों ने सेना के प्रयत्न को निष्फल करना चाहा। उनके एजेण्टों ने कपटागान योजना को बरबाद करना चाहा, उनके बंदूकचियों ने आइजावेला प्रान्त में नये फार्म पर जानेवाले सेना के इन्जिनियरों को घेर कर मार डाला। हुकों को कृषि-सुधारों से कोई मतलब नहीं था। चीन और रूस के कम्यूनिस्टों की तरह कृषि-सुधार जनता का समर्थन प्राप्त करने की शक्ति छीनने का शस्त्र मात्र था। संक्षेप में, एडकोर को हुक अपने प्रचार के लिए बड़ा खतरा समझते थे और इसलिए उसकी खिलाफत में वे कोई कसर बाकी नहीं रख रहे थे।

एडकोर में पुराने हुकों से भेंट करने पर लेखक ने उनसे पूछा—"हुकों की अपील में सबसे अधिक आकर्षक भाग क्या था? उनके कार्यक्रमों अथवा वचनों में से आपको कौन सा भाग सबसे अच्छा लगा?" १०८ उत्तरों में से २३ ने तो कहा कि वे हुकों के प्रचार और संगठन में कुछ भी अच्छाई नहीं पाते हैं। ये वे लोग थे जिन्हें बलात् आन्दोलन में शामिल किया गया था। शेष ८५ के वक्तव्यों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। पहले में वे लोग थे जिन्होंने कृषकों में भूमि-वितरण की घोषणा पर विश्वास किया था; दूसरे में वे लोग थे, जो हुकों द्वारा त्रस्त लोगों का पक्ष लेने तथा समाधान का ढिंढोरा पीटने की बातों से प्रभावित हुए थे, और तीसरे में थे वे लोग, जो हथियार रखने के शौकीन थे, जिन्हें हुक दलों का अनुशासन प्रिय था, तथा जो सरकार में प्रचलित भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना चाहते थे।

हुक-प्रचार में सबसे प्रभावशाली अंश है 'भूमिहीनों की भूमि' का नारा। लगभग ५.४ प्रतिशत पुराने हुकों से भेंट करने पर यह पता लगा कि उनका यह वचन (भूमिहीनों के लिए भूमि) आन्दोलन के साथ जुड़ने का अथवा हुकों के प्रति अपनी वफादारी दृढ़ करने का एक प्रेरक स्रोत था। उन लोगों को अपनी भूमि होने की सम्भावना बड़ी आकर्षक लगी, जो सदा से ही जमीन जोत कर अपनी रोजी कमाते रहे थे और जो वर्ष-प्रति-वर्ष अपनी गरीबी और समृद्धि का हिसाब जमींदारों द्वारा ले लिए गये फसलांश के बाद लगाते आ रहे थे। भूमि-सम्बंधी यह अपील प्रायः अन्य आश्वासनों और योजनाओं से भी जुड़ी रहती थी। कई लोगों के लिए 'बेकारों को काम' का आश्वासन भी काफी आकर्षक था। दूसरे लोग हुकों के निःशुल्क स्कूल और निःशुल्क चिकित्सा के आश्वासनों से बड़े प्रभावित हुए। जो हुक भूमि-सम्बंधी सुधारों के वचनों से प्रभावित थे, उनके मानस में ऐसे न्याय की कामना थी जो उन्हें न्यायालयों में न्याय का समान स्तर दिलवा दे और सूदखोरी बन्द कर दे।

इसके बाद दूसरा सबसे बड़ा वर्ग आता है, जो सम्पूर्ण का २८ प्रतिशत है और जिसके लिए हुक गरीब और दलित जनता के त्राता थे। इस वर्ग के लोग हुकों की त्रस्त लोगों के प्रति सहानुभूति के कारण उनसे प्रभावित हुए थे। कम्यूनिस्टों ने बड़ी कपट-चातुरी से ऐसे आदर्शवादी व्यक्तियों की कोमल भावनाओं का शोषण किया, जो समाज के संत्रस्त वर्ग के प्रति गहरी हमदर्दी रखते थे। हुकों ने अपने को सच्चे रक्षक के रूप में प्रदर्शन करके ऐसे व्यक्तियों की अनुरक्ति और आत्मीयता को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहा जिनकी

अभाव-पीड़ित वर्ग के साथ गहरी सहानुभूति थी। वर्गयुद्ध की नीति का प्रतिपादन करनेवाले क्रान्तिकारी वर्ग के हाथों में ऐसे आदर्शवादी व्यक्ति सदैव ही सहज कठपुतलियाँ बन जाते हैं।

तीसरे वर्ग में वे व्यक्ति थे जो हुक-संगठन की सुदृढ़ व्यवस्था से प्रभावित हो कर उसकी तरफ आकर्षित हुए थे। एक ने कहा कि वह अपनी टुकड़ी की ठोस एकता और अनुशासन को बहुत पसन्द करता था। दूसरे ने कहा कि वह कम्यूनिस्ट विचारधारा के दार्शनिक पहलू से बड़ा प्रभावित हुआ, क्योंकि उसमें समस्याओं को समझाने और उनका हल निकालने की बड़ी गुँजाइशें हैं। दूसरे कई केवल इसी बात से आकर्षित हुए कि उन्हें बन्दूकें रखने का मौका मिलेगा। यह महज़ अप्रौढ़ आकांक्षा ही थी जिसके अनुसार बंदूकें सत्ता एवं शक्ति की प्रतीक मानी जाती हैं और ऐसी स्थिति में व्यक्ति का सामाजिक स्तर भी बढ़ता लगता है। दूसरों को हुक इसलिए पसंद थे कि उन्होंने लड़ाई में जापानी आक्रमकों का विरोध किया था अथवा वे प्रचलित शासन को निर्मल करने के लिए नये प्रजातन्त्र की स्थापना की घोषणा करते हैं। सारे मुलम्मों से रहित यह 'नया प्रजातन्त्र' मार्क्सवादी विचारधारा की प्रोलेटेरियट तानाशाही के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। मगर कभी-कभी मिथ्या अपने नाम बदल कर लोगों को भ्रांत बना ही देती है।

हुक-प्रचार के उपर्युक्त विश्लेषण से यह तो पता चल ही जाता है कि लोगों को उसमें क्या अच्छा लगता था और क्या नहीं, लेकिन आन्दोलन में सम्मिलित होने के प्रयोजन का प्रश्न अधिकाशतः अछूता ही रह गया है। अधिकांश हुक मनचाही विचारधारा अथवा सिद्धांत की खातिर आंदोलन में सम्मिलित नहीं हुए। सिद्धान्त का प्रश्न बाद में आया जबकि वे सक्रिय हुक बन चुके थे। कम्यूनिस्ट पार्टी के केवल बुद्धिनिष्ठ तथा उच्च नेताओं के लिए ही सैद्धांतिक पक्ष सर्वोपरि महत्व रखता था। नीचे के वर्गों के सामने तो भरपेट भोजन का प्रलोभन, पुलिस का भय, हुकों के आग्रह और आकस्मिक सम्बन्ध-संपर्क ही आकर्षण के मुख्य लक्ष्य थे।

अध्याय १०

चेतना का कायाकल्प

एक लाख फिलिपाइनी एक साथ ही हुकों के सक्रिय अथवा उनसे सहानुभूति रखनेवाले समर्थक कैसे बन गये ? किन प्रयोजनों और किन प्रणालियों से वे आन्दोलन में सम्मिलित हुए ? इन प्रश्नो का उत्तर सक्रिय रहे हुए कुछ व्यक्तियों के प्रतिनिधि वर्ग की जाँच करने से भली भाँति मिल सकता है। लेखक ने एडकोर में ऐसे ९५ पुराने हुकों के अनुभवों का बारीकी से अध्ययन किया है, जो विविधता एवं विभिन्नता के लिए यों ही अटकलबाज़ी से चुन लिये गये थे और जिनमें सुशिक्षित नेताओं से ले कर अशिक्षित अनुयायी तक शामिल थे। एडकोर का यह वर्ग कुछ परिपक्व बुद्धिनिष्ठ नेताओं को छोड़ कर, हुकों के विशाल अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है और इससे प्रयोजन की विभिन्न प्रणालियों के तत्सम्बन्धी महत्व का पूरा आभास मिलता है।

स्पष्ट है कि आधे से अधिक पुराने हुक, अधिकांशतः विचारों से प्रभावित हुए बिना ही आंदोलन के सदस्य बन गये थे। केवल १४ प्रसंग ऐसे थे, जहाँ कि आग्रह-अनुरोध, अथवा प्रचार के कारण ही वे लोग आन्दोलन में सम्मिलित हुए थे। इनमें से १० ऐसे थे जो भूमि-वितरण जैसी कृषि-समस्याओं, सूदखोरी की समाप्ति अथवा सताये गये लोगों के लिए समानता और सहायता के प्रति विशेष अनुराग रखते थे। अन्य २६ प्रसंगों में कई प्रकार के 'दबावों' का महत्वपूर्ण हाथ था। उदाहरण के लिए प्रभावशाली साम्यवादी शिक्षण के कारण ही एल्फ्रेडो क्रुज़ 'हुक' का सदस्य बना। १९४५ में वह अपने गाँव के एक युवक-संगठन में शामिल हुआ था, जिसमें साम्यवादी अधिक संख्या में घुस आये थे। गरीबी का तो कटु अनुभव उसे था ही; किन्तु युवक-संगठन में उसने एक नये प्रजातंत्र के बारे में सुना जिसकी स्थापना अत्याचार से संघर्ष कर के हो सकती थी। शोषण को रोकने के लिए दीन-हीनों को संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। इन विचारों पर विश्वास कर के एल्फ्रेडो अन्य युवकों के साथ हुकों को भोजन सामग्री देने में शामिल हो गया। जब सेना ने उनका पता लगा लिया, तो वह अपने गाँव से भाग गया और पहाड़ों में एक लड़ाकू

टुकड़ी में मिल गया। बाद में वह एक विभागीय समिति संगठन का अध्यक्ष हो गया, जहाँ उसे अपने विचारों को व्यक्त करने का मौका मिल गया।

विसेन्ट क्यूवास उस श्रेणी के लोगों में आता है जो प्रचार और परिस्थितियों के कारण 'हुक' में शामिल हुए थे। अपने गाँव में विसेन्ट नेता था, इसीलिए उस क्षेत्र में हुकों के लिए स्थानीय सम्पर्क के काम का आदमी वह हो गया। उसने एक हुक परेड की व्यवस्था की जिसको देखने के लिए शहर के सब लोग आये थे। इस परेड से उत्साहित होकर उन्होंने अपना निजी हुक दल बनाने का निश्चय किया और विसेंट सब लोगों की राय से उसका प्रमुख बना। यदि वह किसी बात के लिए इनकार करता तो उस पर सन्देह हो जाता और वह अपने परिवार और दर्जीगीरी को छोड़ कर भी नहीं जा सकता था। इन घटनाओं के झोंकों की वजह से आन्दोलन में प्रविष्ट विसेंट ने स्टैलिन विश्वविद्यालय में जा कर मार्क्स, लैनिन, स्तालिन, लिंकन और जेफर्सन (ध्यानपूर्वक सम्पादित और चुने गये) ग्रंथ के सिद्धांतों एवं राज्य, फौजी चालें, प्रजातन्त्र (रूसी शैली का) और क्रान्ति सम्बन्धी जानकारियों का अध्ययन किया। इस प्रकार उसने साम्यवादी सिद्धान्तों को बड़ी गहराई से हृदयंगम कर लिया और वह पार्टी के प्रचार का समर्थक बन गया। उसको दृढ़ विश्वास हो गया कि वर्तमान फिलिपाइन सरकार भ्रष्ट है और इसमें परिवर्तन होना ही चाहिए; भूमि कृषकों में बाँट देनी चाहिए और सूदखोरी समाप्त हो जानी चाहिए। उसका कहना था कि साम्यवादियों के पास एक बड़ा तगड़ा मुद्दा न्याय के लिए जमींदारों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने का है। इस सिद्धान्त को मानकर कि श्रम ही उन्नति का साधन है न कि पूँजी, विसेंट ने मुनाफे में श्रमिकों के अधिक भाग मिलने का समर्थन किया। इस प्रकार क्रान्तिकारी कार्यों में निमग्न वह हुक-नेता मंडल में उन्नत पद की आकांक्षा कर ही रहा था कि मार्च १९५१ में वह पकड़ लिया गया।

इस प्रचलित धारणा के बावजूद कि हुक अधिकतर लुटेरे और सामाजिक दृष्टि से अभद्र हैं, हुक कार्यकर्त्ताओं का अध्ययन करते समय इसके प्रमाण प्रायः नहीं मिलते। इसके विपरीत हुक लोगों का एक नैतिक स्तर है और उन्होंने कई सदस्यों को अपराध करने पर या तो निकाल दिया अथवा उन्हें समाप्त कर दिया है। हुकों का कानून के प्रति द्रोह राजनीतिक है—राज्य के विरुद्ध अपराध करना, क्रान्ति के समय हिंसा-कार्य आदि। इन बातों से कम्यूनिस्ट अपने को व्यक्तिगत अपराध की भावना से काफी बचा भी सके, फिर भी वे

डाके-चोरी और हत्या के अपराधों से कहीं अधिक खतरनाक हैं। इसी तरह इस बात का समर्थन भी कम ही मिलता है कि हुक आन्दोलन ऐसे व्यक्तियों के लिये पलायन है जिनकी व्यक्तिगत समस्याओं का हल नहीं हो पाया है। एडकोर में केवल चार ही प्रसंग ऐसे थे जिनके हुक में शामिल होने के कारण व्यक्तिगत थे और इन प्रसंगों में भी जो कठिनाई थी उसे आलस्य, उत्सुकता अथवा बेचैनी ही कह सकते है, जीवन-प्रणाली की अस्त-व्यस्तता नहीं। अधिकांश प्रसंगों में कारण सामाजिक ही थे—कहीं निकट के मित्रों अथवा सम्बन्धियों का आग्रह-अनुरोध, कहीं जापानियों के दुर्व्यवहार से पीड़ितों को अश्वासन, कहीं सरकारी कुप्रबंध था अथवा न्याय-क्षति-विफलता (कुनीति) या काश्तकारी प्रणाली का दोष—साम्प्रतिक ये ही कारण मुख्य थे।

थोड़े लोगों का हुक में शामिल होने का एक ही—यहाँ तक कि कृषि समस्या भी नहीं—प्रयोजन नहीं था। यदि किसी भी वर्ग को कृषि-सुधारों के ही आश्वासन पर क्रान्ति में शामिल होना चाहिए था, तो वे लोग एडकोर में थे जिनकी दिलचस्पी भूमि की प्राप्ति में थी और जो स्वेच्छा से मिन्डानाओ आये थे। फिर भी केवल १० व्यक्ति ही ऐसे थे जो भूमि की इच्छा के कारण, बेचारे काश्तकार की मुसीबतों के कारण या इससे कुछ मिलते-जुलते क्रान्ति की घोषणा से प्रभावित हो हुकों के साथ शामिल हुए थे। दूसरे १८ व्यक्तियों के भूमि-सम्बन्धी समस्याएँ महत्वपूर्ण कारण थीं। इसके साथ एडकोर में पुराने हुकों की संख्या के लिए २९ प्रतिशत ही थी। इस प्रकार प्रायः यह सोचना पड़ जाता है कि नये रंगरूट पकड़ने में भूमि-सम्बन्धी असंतोष ही कम्यूनिस्टों का मुख्य अस्त्र था, न कि प्रचार ! एक बार दल में पहुँच जाने पर नया सदस्य भूमि-वितरण के सुनहले वचनों से इतना प्रभावित हो जाता था कि वह सदैव हुकों का ईमानदार अनुयायी बन कर रहने लगता था। इससे भी अधिक मार्के की बात यह है कि नये रंगरूट बनाने और उन्हें सिद्धांतों में प्रशिक्षित करने के अलावा कम्यूनिस्टों ने भूमि-वितरण-सम्बन्धी समस्याओं को ऐसा कल्याण-कर रूप दिया है कि क्रान्ति के सारे पक्ष आकर्षक हो उठे।

हुक नेताओं ने काफी पहले इस बात को समझ लिया था कि आग्रह और मुक्त निर्णय की धीमी प्रणाली द्वारा नये रंगरूटों को भरती करने का काम रोका नहीं जा सकता। एडकोर में जिन पुराने हुकों से भेंट की गयी थी उनमें से १९ तो ऐसे थे जिन्हें बन्दूक दिखा कर अथवा उनके परिवार के प्रति हिंसा की धमकी देकर शामिल किया गया था। १२ ऐसे थे जिनमें अन्य प्रसंगों के साथ

बल का प्रयोग सर्वोपरि था। इस प्रकार एडकोर में स्थित पुराने हुकों को, रंगरूट बनाते समय साम्यवादियों ने कृषि-सुधार की अपील की अपेक्षा बल-प्रयोग का ही विशेष रूप से आश्रय लिया था।

युवक फैलिक्स टैन्डुए के अनुभव से पता लगता है कि परिवारों पर उनके आदमियों को हुक-दल में शामिल होने के लिए कितना दबाव डाला जाता था। पनाय द्वीप में हुक कार्रवाइयों के विस्तार के दिनों में हुक कमान्डर कैपेडोशिया ने प्रत्येक गाँव से तीन चुस्त, मेधावी लड़कियाँ पहाड़ों में स्थापित स्तालिन विश्वविद्यालय में भेजने का आदेश दिया था। फैलिक्स के गाँव के हुक-मुखिया ने इसके लिए फैलिक्स की बहिन को चुना। टैन्डुए-परिवार बड़ा दुखी हुआ। मना करने का साहस वे नहीं कर सके; क्योंकि हुकों के आदेश-पालन से इनकार करने पर पड़ोस के गाँवों में कई व्यक्ति मार डाले गये थे। इधर परिवार सोच ही रहा था कि क्या करना चाहिए, तब तक फैलिक्स शहर से, जहाँ वह हाई स्कूल का विद्यार्थी था, गाँव लौटा। जब उसने अपनी बहिन को रोते हुए देखा और हुकों का आदेश उसे मालूम हुआ, तो अपनी बहिन के एवज में वह स्वयं पर्वतों में जाने के लिए तैयार हो गया। यद्यपि इससे उसकी पढ़ाई में बाधा पड़ती थी, किंतु इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा चारा ही नहीं था। इस प्रकार हुकों को एक ऐसा युवक मिल गया जिसने अपने परिवार की रक्षा के लिए, चाहे स्वेच्छा से नहीं, उनका काम वफादारी से किया।

कभी कभी लोग सरकारी सेना के उपद्रव और आतंक से बचने के लिए भी हुकों में शामिल हो जाते थे। एडकोर के १९ प्रतिशत पुराने हुकों के विषय में यही बात थी। यों कहिये कि, सशस्त्र विद्रोह को दबाने के सेना के प्रयत्नों के कारण ही उन्हें क्रान्तिकारियों की शरण लेनी पड़ी थी। उदाहरणार्थ, १९४६ में असन्तुष्ट आन्दोलन को बलपूर्वक निर्मूल करने के प्रयत्नों में, फ्रांसिस्को डालमार नागरिक रक्षकों द्वारा पकड़ लिया गया। उस पर हुक होने का संदेह करके, उसे पीटा गया और ठोकरें मारी गयीं। किंतु जब उसने कुछ भी कबूल नहीं किया तो उसे छोड़ दिया गया। जला-भुना वह बदला लेने के दृढ़ निश्चय के साथ हुक टुकड़ी में शामिल होने चला गया। पहाड़ों की ओर जाते हुए उसे एक दल-नायक मिला जिसने उसे संगठन में नियुक्त कर दिया। दो सप्ताह तक निरीक्षण में रखने के बाद उसे एक बन्दूक दे दी गयी और वह एक सक्रिय हुक बन गया।

कभी-कभी ऐसे सिपाही भी हुकों में शामिल हो गये थे जो युद्ध में

सक्रिय गुरिल्ला रहे थे और पूर्व वेतन न मिलने के कारण सरकार से क्षुब्ध थे। यह बात एडकोर के ८ प्रतिशत पुराने हुकों के सम्बन्ध में ठीक थी। बहुत से वफ़ादार गुरिल्ला लड़ाकुओं को एन्टोनियो सारंगापा की भाँति ही निराशा का शिकार होना पड़ा। जापानी-अधिकार के समय वह संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा मान्य 'यूसेफ़' दल के साथ लड़ा। १९४५ में लड़ाई समाप्ति के बाद जब विघटन का समय आया तो उसके दल के सब आदमियों ने पूर्व वेतन के लिए आवेदन किया। एक के बाद दूसरे को 'चाचा साम' की सेवा के पुरस्कार-स्वरूप मोटी रकमों के चेक मिले; किन्तु एन्टोनियो को एक धेला भी न मिला। अन्त में, अर्थ-विभाग के एक अफ़सर ने उसके पास आकर उससे कहा कि यदि वह कुछ 'फ़ीस' दे तो उसके पूर्व वेतन का प्रबन्ध किया जा सकता है। जब सारंगापा ने कि कहा कि वह एकदम फटे हाल है, तो अधिकारी ने उसके सामने ही उसके आवेदन-पत्र को फाड़ डाला। घृणा और क्रोध में एन्टोनियो प्राणों की बलि चढाकर भी सरकार के भ्रष्टाचार का उच्छेदन करने के लिए, हुक-दल में शामिल हो गया। गुरिल्ला लड़ाकुओं को पिछला वेतन देने का कार्यक्रम यद्यपि शुभ था, किंतु भ्रष्ट शासन के कारण सरकार की प्रतिष्ठा को इस प्रसंग में क्षति ही भोगना पड़ी।

एडकोर के ८ प्रतिशत पुराने हुकों के असन्तुष्ट लोगों के आन्दोलन में शामिल होने का मुख्य कारण मित्रों के प्रति व्यक्तिगत अनुग्रह-मात्र था। वैयक्तिक सम्बन्ध की ऐसी ग्रंथियाँ फिलिपाइन समाज में, तथा विशेषकर परिवारों में, बड़ी व्यापक हैं। अतः वहाँ किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की प्रार्थना को 'न' करना असम्भव होता है। पश्चिम के लोगों को यह अजीब-सा लगता है, क्योंकि उनके समाज के घटक परस्पर इतनी दृढ़ता से सम्बद्ध नहीं हैं। किन्तु पूर्व में, मित्र की प्रार्थना को स्वीकार कर उसे अनुगृहीत करने की भावना अभी तक सुदृढ़ है। कम्यूनिस्ट नये रंगरूट भरती करने में इस प्रणाली का पूरा लाभ उठाते हैं, किंतु इसके बाद जैसा कि चीन की फिलहाल की घटनाओं से स्पष्ट होता है, कम्यूनिस्ट परिवार को तानाशाही राज्य का खतरा समझ कर उसका पूरी तरह विघटन कर देते हैं!

मित्र के प्रति अनुग्रह की दृढ़ भावना का एक रोचक उदाहरण निकानोर हर्नैन्डीज़ के प्रसंग में मिलता है। वह पहले-पहल १९४२ में 'हुक' में शामिल हुआ; क्योंकि उसे उनके उद्देश्यों में विश्वास था। १९४५ के मुक्ति-आन्दोलन में उसे मलेरिया हो गया और स्वास्थ्य-लाभ के लिए वह अपने

घर चला गया। जब वह स्वस्थ हुआ तो युद्ध समाप्त हो चुका था। उसने पड़ोस कि एक सुन्दर लड़की से विवाह कर लिया और अपने खेत के काम पर जुट गया। लेकिन अगले साल हुक फिर सक्रिय हो गये और उसके कई मित्र उसमें फिर शामिल हो गये। हर्नैन्डीज़ अपनी नयी पत्नी को और घर के शान्त बातावरण को छोड़ना नहीं चाहता था। लेकिन जब उसके मित्रों ने आग्रह किया तो उसे जाना ही पड़ा। उसने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा—"मैं मना नहीं कर सका। मैं उन्हीं में से एक था। अतः मैंने जो कुछ किया, मित्र के प्रति कर्त्तव्य-निर्वाण के लिए ही किया।"

लोग हुक आंदोलन में क्यों और कैसे शामिल हुए, दोनो बातें अलग नहीं हैं क्योंकि हुक बनने के प्रयोजन में उनके कार्य भी शामिल थे न कि केवल कारण ही अथवा केवल हुक-प्रचार के आकर्षक पक्ष ही। हुक में शामिल होने का अर्थ है एक दूसरे से गुथे हुए श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रमों में से गुज़रना। सामान्यतः आंदोलन में पहला प्रवेश दबाव, अकस्मात् घटना अथवा मैत्री सम्बन्ध से ही होता था। बौद्धिक स्वीकृति और सिद्धान्त शिक्षा का तो क्रम बाद में आता है। यद्यपि यह क्रम प्रायः स्थायी नहीं होता था, किन्तु अधिकांश हुकों के अनुभवों द्वारा इस विशेषता का स्पष्टीकरण हुआ था।

एडकोर के नव-स्थापितों में से दो उदाहरण ऐसे थे कि वे व्यक्ति हुक आंदोलन में शामिल हुए और धीरे-धीरे अन्त में हुक-विचारधारा में उनके मानस ढलते गये। एक युवक सिसीलियो लेपैन्टो नगर के बाहर अपने खेत पर पिता के काम में हाथ बँटाता था। एक दिन हुक उसके मकान के पास से गुज़रे और उससे उनका सामान ले जाने के लिए कहा। यह आदेश बड़े नम्र शब्दों में दिया गया था और चूँकि वे लोग सशस्त्र थे, अतः उसे जाना ही पड़ा। अनिच्छुक वह नहीं था, क्योंकि कुछ हुक उसके मित्र थे। बाद में जब वे लोग पहाड़ों में पहुँचे, हुकों ने लेपैन्टो से कहा कि तुम्हें यहीं पर रह जाना चाहिए क्योंकि यदि कास्टे पुलिस दल को यह पता लग जायगा कि तुमने हमारी सहायता की है तो वे तुम्हें परेशान करेंगे। दिन बीतने पर हुकों ने अपना कार्यक्रम उसे बताया। बाद में उन्होने कहा कि यदि क्रान्ति सफल हुई तो तुम्हें तथा अन्य किसानों को मुफ्त जमीन मिलेगी, जो अभी गरीबी में दिन गुजार रहे हैं, उन्हें काम मिलेगा और कई सुख-सुविधाएँ मिलेंगी। लेपैन्टो ने इन वचनों पर विश्वास कर लिया और वहीं पहाड़ों पर सक्रिय हुक बन कर

रहने लगा। इस प्रकार अबोध-सा यह निष्कपट सम्पर्क अन्त में जा कर राजनीतिक विश्वास द्वारा प्रेरित स्वयं सेवा में परिवर्तित हो गया।

विक्टर बैनीडिक्टो का व्यक्तित्व आकर्षक है और अपनी शिक्षा के कारण एक सामान्य व्यक्ति से उसका मानसिक स्तर कहीं ऊँचा है। लड़ाई के दिनों में वह लूज़न में एक गुरिल्ला दल में रहा, लेकिन जब राजनीतिक दाव-पेंचों के कारण उसको उचित मान्यता और पिछला वेतन नहीं मिल पाया तो वह लैगूना प्रान्त में एक बस ड्राइवर बन गया। एक दिन उसकी बस एक हुक दल ने रोक ली और उसे बरबस पकड़ कर वे अपने कैम्प में ले गये। यद्यपि उसे बन्दी बना कर रखा गया, किन्तु उसके साथ उन्होने व्यवहार बहुत अच्छा किया और उसे निरन्तर हुक-प्रचार की प्रणाली के पाठ पढ़ाये गये। अपने अनुभव का वर्णन करते हुए उसने कहा—"मुझे हुकों के नेक इरादे, उनके द्वारा दुष्ट सरकारी अधिकारियों का विरोध, न्याय के लिए उनका संघर्ष, और उनके कठिन परिश्रम से मैं बड़ा प्रभावित हुआ। मैंने जो कुछ देखा और सुना उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मैं खुशी-खुशी उनके दल में शामिल हो गया।" पहले वह पकड़ा गया, बाद में उसने शामिल होने का निश्चय किया। बौद्धिक विश्वास को कम महत्वपूर्ण नहीं समझना चाहिए; क्योंकि प्रत्यक्ष कार्य में ही उसकी उपलब्धि है और कम्यूनिज्म की यह सैद्धांतिक दृढ़ता ही क्रांति को स्थिरता देती है। व्यक्ति भूले-भटके अथवा जबर्दस्ती आन्दोलन में शामिल होते हैं; वे वहाँ अडिग रहते हैं और गुरिल्ला युद्ध के तमाम संकट सहते हैं—इस आशा में कि साम्यवाद ही न्याय और समानता लायेगा और जनता को सुखद जीवन देगा।

यह मान कर कि एक व्यक्ति और हुक के प्रारम्भिक सम्बन्ध, एक क्रांतिकारी के जीवन-चक्र में महत्वपूर्ण हैं, लेखक ने एडकोर के पुराने हुकों से आन्दोलन से उनके प्रथम सम्पर्क के बारे में पूछा। परिणाम इस प्रकार निकला—३८ प्रतिशत व्यक्ति निजी मित्रता के कारण दल में शामिल हुए; २० प्रतिशत शस्त्र-दर्प से शामिल हुए और प्रायः इतने ही अपहृत अथवा बन्दी किये ये थे। केवल ११ प्रतिशत स्वेच्छा से शामिल हुए। कुछ थोड़े लोग आन्दोलन में शाखा संस्थाओं द्वारा अथवा किसी अधिकारी के प्रभाव के द्वारा अथवा निःशस्त्र हुक संगठनकर्त्ताओं के कहने पर शामिल हुए थे।

हुकों के इन विभिन्न प्रयोजनों, इच्छाओं, रुचियों और अनुभवों की पृष्ठभूमि में पथभ्रांत नागरिकों का विश्वास फिर से प्राप्त करने के सरकारी प्रयत्नों का

सुविधापूर्वक मूल्यांकन हो सकता है। इस बात का पता लगने के बाद कि व्यक्ति किस प्रकार हुक बना, अब ऐसे क्या उपाय किए जाने चाहिए जिससे वह समाज में आ कर प्रजातन्त्रीय नागरिकता प्राप्त कर ले? हुक नये रंगरूट भर्ती करने में मुख्यतः अपनी शक्ति पर निर्भर करते हैं; उसी प्रकार सेना भी उनकी पुनः प्राप्ति में शक्ति का उपयोग करती है। दोनों ओर शक्ति लगाने में काफी आदमियों की आवश्यकता होती है, किन्तु केवल शक्ति से ही नागरिकों की वफादारी प्राप्त नहीं की जा सकती; उससे तो उल्टे हुकों की लोकप्रियता ही हज़ारों फिलिपाइनों में बढ़ जाती है। जिनसे व्यक्ति प्रजातन्त्रीय सरकार में विश्वास करने लगे और जो उसे साम्यवाद से अलग रखे, ऐसे सूक्ष्म उपायों का पता उन लोगों से चलता है जो हुकों के दलों से भाग आये हैं और जिन्होंने सेना के आगे समर्पण कर दिया है, न कि उन हुकों से जो फौजी संघर्ष में पकड़े गये हैं।

एडकोर फार्मों पर पुराने हुकों से मिलने पर पता चला कि उनमें से ६० ऐसे थे जिन्होंने समर्पण कर दिया था। प्रत्येक से पूछा गया कि ऐसा क्यों और कैसे हुआ? प्रत्येक समर्पण में कभी-कभी बहुत से कारण थे जिस प्रकार कि हुकों में शामिल होने में थे। कारणों को ४ वर्गों में विभक्त किया जा सकता है प्रथम पहाड़ों का कठिन जीवन; दूसरे हुक संगठन की असफलताएँ तथा निराशाएं; तीसरे सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाएं और चौथे समर्पण करने के लिए परिवार का आग्रह।

चीन, उत्तरी कोरिया अथवा हिन्दचीन के साम्यवादी गुरिल्लों की अपेक्षा फिलिपाइन के हुक गुरिल्लों का जीवन कई दृष्टियों से कठिन है। इस अन्तर का कारण है वहाँ का भूगोल। उन देशों के कम्यूनिस्ट क्षेत्रीय युद्ध लड़ने और ऐसे भूमि-क्षेत्रों की रक्षा करने में समर्थ हुए हैं जिन्हें फौजी अड्डा बनाया जा सकता है। इधर फिलिपाइन के छोटे और ऊबड़-खाबड़ द्वीपों में इस प्रकार के शरण स्थान हुक के लिए बनाना सम्भव नहीं था। यहाँ तराई में आबाद जगह पर सेना का अधिकार है और समय समय पर हुक गुप्त स्थानों को नष्ट करने के लिए सेना पहाड़ों पर अपने दस्ते भेजा करती है। इस तरह से फिलिपाइन के गुरिल्लाओं के लिए केवल एक ही रास्ता रह जाता है कि वे लुकते-छिपते अथवा भागते-दौड़ते ही रहें। जिन आदमियों ने समर्पण कर दिया, उनमें से ६१ प्रतिशत ने यही कहा कि उनके समर्पण करने का मुख्य कारण पहाड़ों का कठोर जीवन है। एक-एक करके वे अपने

दल-नायक से शिकायत करते रहते थे की उन्हें ठंड लग जाती है, खाना कम मिलता है और पूरी नींद नहीं आती है। इस प्रकार की बहुत-सी कठिनाइयाँ तो प्रायः सशस्त्र दलों के आक्रमण के कारण होती थी। दो से छः वर्ष के गुरिल्ला जीवन बिताने के बाद अधिकांश पुराने हुकों ने कहा—"मैं भगेडू जीवन से तंग आ गया था। मैं शान्ति पूर्ण जीवन बिताना चाहता था।"

४५ प्रतिशत समर्पण करनेवाले लोगों ने जो दूसरा कारण बताया, वे थीं हुकों की असफलताएं। कुछ को हुकों का कठोर अनुशासन बड़ा खला और कुछ इसलिए नाराज थे कि उन्हें अप्रिय आदेश—पालन के लिए विवश किया जाता था। उन्होंने यह भी व्यक्त किया कि हुकों द्वारा प्रचारित क्रान्ति आगे नहीं बढ़ रही है; वह असफल हो कर समाप्त हो जायगी। विजय की इस निराशा ने जीवट को खत्म कर दिया और फलस्वरूप निरुत्साह और आत्म समर्पण की स्थितियाँ पैदा हो गयीं। महीनों तक प्रयत्न करने के बाद भी कोई लाभ न निकलने से कुछ हुक विश्वास करने लगे कि उनके नेताओं के वचन असत्य थे। कुछ ऐसे भी उदाहरण थे जिनमें नेता ने अपने साथियों के साथ-साथ ही समर्पण किया था, कुछ में ऐसा था कि जब नेता मारा गया तो आदमियों ने समर्पण कर दिया।

समर्पण करनेवाले लोगों में से २३ प्रतिशत, सरकार के प्रति, उसके द्वारा दिए गये वचनों और अवसरों के कारण आकृष्ट हुए। एक महत्वपूर्ण कारण मुफ्त भूमि थी, किंतु सरकार की यह घोषणा भी कम महत्वपूर्ण नही थी कि जो व्यक्ति समर्पण कर देंगे, उन्हें सताया नहीं जायगा। कुछ लोगों को काम मिलने का प्रलोभन था, कुछ को हथियार समर्पण करने पर दी गयी रकम का; किंतु बहुत-से लोग इस उदार नीति से आकर्षित थे कि उन लोगों को मुक्त कर दिया जायगा जिनके विरुद्ध कोई अपराध नहीं है।

६० समर्पण करनेवाले हुकों में से केवल २७ ने ही समर्पण के पहले, एडकोर के विषय में सुना था। वे ९ व्यक्ति जिन्हें सेना के नये कार्यक्रम के विषय में बता दिया गया था, पूर्णतः अथवा अंशतः इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने समर्पण कर दिया। निम्न वाक्यों से उनके उद्गारों का पता चल जायगा :—

"एडकोर के समाचार से हममें नये जीवन की आशा जगी।"

"इसने मेरी समर्पण-भावना को बड़ा उत्साहित किया और मैंने मिन्डानाओ आने की योजना बना ली।"

बहुत-से लोगों ने कहा—

"मेरे आत्म-समर्पण में एडकोर द्वारा दी गयी भूमि की आशा और सहायता महत्वपूर्ण कारण थे।"

"एडकोर के विषय में सुनने के बाद ही हमने आत्मसमर्पण करने का निश्चय कर लिया।"

"मैंने एडकोर के विषय में पर्चे पढ़े, जो हवाई जहाज़ से गिराये गये थे और आत्म-समर्पण का निश्चय कर लिया।"

"आत्म समर्पण के बारे में मैं विचार कर ही रहा था, तभी मुझे एडकोर की जानकारी मिली। बस मेरा इरादा पक्का हो गया।"

"जब मेरे माता-पिता तथा भाई ने एडकोर के बारे में बताया तो मैंने उन पर विश्वास कर लिया और आत्म-समर्पण कर दिया।"

"हमने परस्पर तर्क किये ओर परिणाम निकाला कि एडकोर में जीवन, हुकों के साथ-साथ लड़ने की अपेक्षा अच्छा होना चाहिए और इसीलिए हमने समर्पण कर दिया और एक बस्ती में जाने के लिए आवेदन किया।"

केवल ५ प्रतिशत ऐसे थे जिन्होंने पारिवारिक दबाव के कारण सम्पर्क किया था। इसके कितने ही स्वरूप थे। कुछ मामलों में ऐसा हुआ कि जब अपराधी को अदालत में पेश करने का नियम स्थगित हो गया, तो सेना ने परिवार के लोगों को हुकों के साथ षड्यंत्र करने के अभियोग में बन्धक बनाकर रखना शुरू कर दिया। कभी-कभी सम्बन्धी भी हुक के व्यक्ति को समर्पण करने की सलाह देते थे और परिवार के भरण-पोषण के लिए भी घर पर काम करने की प्रायः उसकी ज़रूरत पड़ती थी। यदि अधिकांश हुक अविवाहित न होते और उन्हें बहुत कम पारिवारिक उत्तरदायित्व न होता, तो इस प्रकार के दबाव वास्तव में काफी अधिक महत्वपूर्ण होते।

बन्दी किये हुए अथवा समर्पण करनेवाले हुकों का यहाँ-वहाँ मुक्तभाव से घूमना-फिरना बड़े महत्व का है; लेकिन इसके अर्थ ये नहीं हैं कि उनके विचारों में परिवर्तन आ गया है। अभी भी कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो पहाड़ों के कठोर जीवन से तंग आकर आत्म-समर्पण कर देते हैं, किंतु उनका यह विश्वास अभी भी पूर्ववत् अखंड है कि हुकों के विचार ठीक हैं। इस बात को ध्यान में रख कर, सरकार ने प्रजातन्त्र की शिक्षा के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाया है। इनमें सार्वजनिक स्कूल, प्रौढ़-शिक्षा के कार्यक्रम तथा नागरिक कार्याधिकारियों द्वारा आयोजित विशेष प्रचार शामिल हैं। एडकोर ने पुराने हुकों के विचार-परिवर्त्तन

का कठिन काम अपने हाथ में ले लिया है। यह काम केवल 'मतिशुद्धि' से एकदम भिन्न है। यह प्रणाली भी प्रजातन्त्रीय ही है। इसके अनुसार पुराने हुकों को उनके अपने ही समुदाय में रखा गया है, अपने आसपास के जगत से अलग नहीं। उन्हें अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता और काम के अवसर दिये गये तथा उत्तरदायी और ईमानदार नागरिक बनने की दिशा में उन्हें प्रोत्साहन दिया गया। यह कार्यक्रम कितना सफल हुआ है, यह नव-स्थापितों के स्वयं के अमल-व्यवहार से स्पष्ट हो जाता है।

मिन्डानाओ के एडकोर फार्मों के बारे में नव-स्थापितों को सबसे अच्छी क्या बात लगती है? वे किस बात से सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं और सरकार के प्रति सहानुभूति रखने लगे हैं? इन नव-स्थापितों से मिलने पर लेखक ने उनसे ये प्रश्न किये थे—'एडकोर' में जीवन-यापन के विषय में आपके क्या विचार हैं? क्या आपने अपने परिवार तथा मित्रों को पत्र लिखे हैं? आपने उन लोगों को एडकोर के विषय में क्या बताया? क्या आप को किसी प्रकार की शिकायत अथवा कठिनाई है? आपकी भावी योजनाएं क्या हैं? छः को छोड़ कर बाकी सब मामलों में इन प्रश्नों के उत्तरों से 'एडकोर' के फार्म-जीवन के प्रति सुनिश्चित और अनुकूल उत्तर मिले थे।

आशा के अनुकूल, अधिकांश ५८ प्रतिशत, मकान, घर की जगह, भोजन और फार्म के सामान के रूप में सरकारी सहायता से प्रभावित हुए थे। लगभग ५१ प्रतिशत मुफ्त भूमि के कारण प्रभावित हुए थे। जब इन नव-स्थापितों से एडकोर के जीवन के प्रति अपने विचार प्रकट करने को कहा गया तो उनके मुख, यह उत्तर देते समय, खिल उठे—"यहाँ हमारे पास भूमि है।" एक ने अपने भाई को पत्र में लिखा—"मेरे पास फार्म की बड़ी अच्छी जगह है। बच्चे यहाँ खूब स्वस्थ हो रहे हैं और मनीला की भाँति बीमार नहीं रहते हैं।" भाई ने उत्तर में लिखा—"तुम्हारे पास जमीन है; दरअसल तुम मुझसे सुखी हो।" एक नव-स्थापित जिसके मुख पर हुकों के साथ रहने के दिनों में कष्ट और चिंता के कारण झुर्रियाँ पड़ गयी थीं, कहने लगा—"लाटरी में प्रथम पुरस्कार जीतने वाले से भी अधिक मैं भाग्यशाली हूँ क्योंकि यहाँ मेरे पास भूमि है जो चुराई नहीं जा सकती। मुझे लूज़न में कभी भूमि नहीं मिल पाती। मैं मिन्डानाओ की जगह में बड़ी शान्ति और आराम से जीवन बिता रहा हूँ और मैं यहाँ जीवन-पर्यन्त रहना चाहता हूँ।"

४१ प्रतिशत नव-स्थापित तो एडकोर के शान्तिपूर्ण जीवन से प्रभावित थे।

साधारण नागरिक तो इसे स्वीकार ही करता था, किंतु उन हुकों के लिए जिन्हें कई वर्षों से शान्ति नहीं मिली थी, इस प्रकार की शान्ति वस्तुतः अमूल्य थी। इक्लैडिया के लोग युद्ध के आतंक से इतने त्रस्त हो चुके थे कि सुखी जीवन की इस स्थिति से वे सरकार के प्रति बड़ी कृतज्ञता प्रकट करने लगे। कार्लोस बार्बेरा का द्रोहमय अनुभव एक साम्प्रतिक प्रतीक था। जापानी अधिकार के प्रारम्भिक दिनों में १९४२ में वह हुकों में शामिल हुआ। १९४५ में लड़ाई समाप्त होने पर कार्लोस अपने घर के फार्म पर वापिस चला गया, लेकिन कुछ महीने बाद, उसके पुराने साथियों ने उसे वापिस हुक दल में बुला लिया। अगले वर्ष क्षमादान की चर्चा के दिनों में वह चुपके से अपने फार्म पर भाग गया और १९५१ तक अनिश्चित नागरिक जीवन व्यतीत करता रहा। उस वर्ष समीप के एक गाँव में हुक-आक्रमण के कारण पुलिस-दल ने उस क्षेत्र के सारे सन्दिग्धों को गिरफ्तार कर लिया। कार्लोस बार्बेरो भी उनमें एक था। बाड़े में वह पीटा गया और उसे सख्त सज़ा दी गयी। उसके लिए तो एडकोर जेलखाने की अपेक्षा एक सुखद वरदान ही था। एक बार वह फार्म पर लग जाय तो उसके स्वप्न पूरे हो जायं। वह बोला—"मुझे यहाँ बड़ा अच्छा लगता है। यहाँ कितनी शान्ति है! मेहनत करनेवाले को यहाँ भोजन-अनाज की कमी नहीं है। अतीत खत्म हो चुका है; मैं पिछली बातें भुला दूंगा। एडकोर एक बुद्धिमत्तापूर्ण योजना है जिससे गरीबों को लाभ हो रहा है। सबसे अधिक लाभ तो यहाँ का शान्तिपूर्ण जीवन है।"

कुछ पुराने हुक लूज़न में अपने पूर्व जीवन को एक दुःस्वप्न समझते हैं। एक ने कहा—"मैं लूज़न की अपेक्षा यहाँ रहना इसलिए पसन्द करता हूँ कि यहाँ सुरक्षा अधिक है। यहाँ तो हमें केवल मोरो लोगों से ही वास्ता पड़ता है। लूज़न में अपने पुराने हुक साथी गोली मार देंगे और यदि उन्होंने रियायत भी कर दी, तो नागरिक रक्षा-दल से कब्र तक बच सकेंगे?" एक दूसरा व्यक्ति जो हुक दल से भाग आया था, बोला—"यहाँ भविष्य दिखाई देता है, यहाँ शान्ति है। मैं लूज़न में अपने घर लौटने का साहस नहीं करूँगा।"

एडकोर के खेतों पर जो अवसर प्रदान किये जाते थे उनके प्रति लगभग ३५ प्रतिशत नव-स्थापित आकर्षित हुए। उनके उद्गार लगभग इस प्रकार के थे—"लूज़न की अपेक्षा यहाँ का जीवन श्रेष्ठ है। भूमि बड़ी उर्वरा है। ठीक तरह से काम और देखभाल करने से इसमें बड़ी अच्छी फसल पैदा होती है। यहाँ हमें समृद्ध होने का अवसर है। मैं यहाँ स्वतंत्र हूँ। मैं जो कुछ भी भूमि में लगाऊंगा, वह मेरा ही है।" कभी-कभी इनमें से कोई नव-स्थापित

उत्साह के आवेश में सच्चाई को बढ़ा-चढ़ा कर बताता था। एक ने अपनी माता को लिखा—"यहाँ की स्थिति बहुत ही अच्छी है। यहाँ मनुष्य आसानी से धनी बन सकता है।" एक आठ हेक्टर भूमि पर कोई धनी नहीं बन सकता था; किन्तु उन लोगों को जिन्हें इस प्रकार के अवसर कभी प्राप्त नहीं हुए थे, उनके लिए कल्पना का यह अतिरेक असंगत नहीं था।

मुलाकात किये हुए २४ प्रतिशत नव-स्थापित ऐसे थे जो सेना के अच्छे व्यवहार और आनन्दमय जीवन की परिस्थितियों के कारण प्रभावित थे और सरकार के पक्ष में उनकी भावनाएं दिन-प्रति-दिन अनुकूल ही होती गयी थीं। उदाहरण के लिए, जुआन कोनानन जो कृषक संगठन (पी. के. एम.) का सदस्य था और जो समय-समय पर हुकों को सहायता देता था, १९५१ में सेना द्वारा पकड़ लिया गया और उस पर हुक एजेण्ट होने का आरोप लगाया गया। जब उसने स्वीकार नहीं किया, तो उसकी खूब पिटाई हुई और बन्दूक के कुंदे से भी उसे मारा गया। इस प्रकार सेना के प्रति कटुता लेकर वह एडकोर आया। किंतु दो वर्ष बाद वह कहने लगा—"मुझे यहाँ अच्छा लगता है, मुझे दिये गये सद्व्यवहार के कारण मैं अपनी पुरानी यातनाएं भूल गया हूँ। मेरा यहाँ के लोगों से भाई-चारे का सम्बन्ध है।"

साल्वेडन मोरेनो भी कृषक संगठन का सदस्य था जो हुक सेना को सामान पहुँचाता था। खाद्य-सामग्री इकट्ठी करते-करते थक कर वह अपने-आप को हुकों के पंजों से छुड़ा कर भागा; किन्तु पड़ गया सेना के हाथों में। वे उसे बाड़े में ले गये। समर्पण करनेवाले एक हुक ने उसकी ओर इशारा कर के कहा कि वह हुक सदस्य है। जब उसने स्वीकार करने से इनकार किया तो वह इतना पीटा गया कि बेसुध होकर गिर पड़ा। सात बार ऐसा किया गया और अंत में अपने को बचाने के लिए उसने सब कबूल कर लिया। जब उससे मुलाकात हुई तो मोरेनो बोला—"मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं सेना द्वारा किसी प्रकार के सद्व्यवहार की अधिक आशा लेकर एडकोर नहीं आया था। उसके बाद, मैंने अपनी राय बदल दी। मैं सोचता हूँ कि जो कुछ हुआ उसमें सेना की गल्ती नहीं थी, बल्कि उस हुक की गल्ती थी जिसने उन्हें गलत सूचना दी। मैं भूत को विस्मृत करने को तैयार हूँ। मेरी सारी आशाएँ मेरे फार्म में रखी हुई हैं।"

डोमिन्गो आल्वरेज़ १९५१ में पकड़ा गया था। वर्षों तक वह गुरिल्ला टुकड़ी के साथ "देश के प्रति वफादारी का अर्थ हुक के प्रति वफादारी"

समझ कर लड़ता रहा। एडकोर पर रहने के प्रथम वर्ष बाद उसने अपने पिता को 'सरकार द्वारा सद्व्यवहार, अपने मकान, अपनी स्थिति और फार्म' के विषय में लिखा। उत्तर में पिता ने लिखा—"मैं जानता हूँ कि जो कुछ तुमने लिखा है वह सच नहीं हो सकता है, लेकिन 'बाड़े' में तुम इस प्रकार का व्यवहार करना जिससे तुम दण्डित न हो।" डोमिन्गो को अपने माता-पिता को अपना तथा अपने परिवार का अपने मकान के सामने खिंचे हुए चित्र की एक प्रति, एडकोर की वास्तविकता के प्रति उन्हें विश्वास दिलाने के लिए, भेजनी पड़ी। हुक के प्रति उसकी भक्ति की भावना को बदलने के लिए डोमिन्गो को दिया गया एक वर्ष तक सद्व्यवहार पर्याप्त था।

बहुत-से लोगों को 'एडकोर' में दिये गये सद्व्यवहार का रूप था—बच्चों के लिए निःशुल्क सार्वजनिक स्कूल, चिकित्सा प्रबंध, और नव-स्थापितों को अपने काम में रुचि रखने के अवसर। एक नव-स्थापित ने कहा—"यदि कोई एक हजार पेसो भी दे तो भी मैं लूज़न वापिस नहीं जाऊँगा, मैं वहाँ घूमने तक न जाऊँगा। यहाँ रहकर हमें सच्चे प्रजातंत्र के दर्शन होते हैं।" दूसरा, जिसे करीब-करीब मरणांतक यंत्रणा दी गयी थी, बोला—"यहाँ आने के पहले मैं सरकार को नहीं चाहता था, अब मुझे सच्चे प्रजातंत्र के अनुभव हुए हैं। मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है।" एक पुराने हुक ने जिसने, एडकोर में आने के पहले चार महीने नजरबन्दी में बिताये थे, कहा—"यह ऐसी जगह है जहाँ प्रजातंत्र अपने पूर्ण वैभव में प्रकाशित है। सरकार प्रत्येक नव-स्थापित को आवश्यक सहायता देती है और उन्हें अपने जीवन को फिर से आरम्भ करने के लिए हर प्रकार के मौके देती है।"

जो लोग सक्रिय कम्यूनिस्ट रहे हैं उनमें एडकोर के कार्यक्रम के कारण सरकार में विश्वास लौट रहा है। यद्यपि इस भगीरथ प्रयत्न में केवल कई सौ आदमी ही लगे हैं, फिर भी इसका परिणाम बड़ा प्रभावशाली रहा है। सरकार इस अनुभव को वैचारिक पुनर्जन्म के और भी व्यापक संघर्ष में लगाने में शैथिल्य नहीं दिखा रही है। सेना द्वारा फौजी शिक्षा के लिए 'फौजी सूचना' का एक अंक पूरा एडकोर के बारे में ही होता है। सब फौज़ों को यह पढ़ने का आदेश था कि सेना पुराने हुकों को नये तौर पर स्थापित करने के लिए क्या-क्या कर रही है, जिससे वे दूसरे लोगों की इस सम्बन्ध की पूछ-ताछ का उत्तर दे सकें। नागरिक कार्य-अधिकारियों ने एडकोर के बारे में सचित्र पोस्टर तथा बुलेटिन सब नगरों और गांवों में बाँटे। सेना के वायुयानों ने हुक-ओत-प्रोत

प्रदेशों पर एडकोर के पर्चे गिराये। संयुक्त राज्य-सूचना सेवा (यू एस आई एस) की [illegible] गाड़ियों ने एडकोर के बारे में चल-चित्र दिखाये और इस प्रकार के कार्यक्रमों से सम्बन्धित सार्वजनिक चर्चाएं द्वीपों के बहुत-से गाँवों में कीं। 'यू एस आई एस' का एक सचित्र पर्चा 'फिलिपाइन अपनी साम्यवादी समस्या हल करता है' एडकोर के बारे में ही था। इसकी प्रतियाँ हजारों लोगों द्वारा फिलिपाइन और उसके बाहर बांटी गयीं। विदेशी पत्रकार एडकोर फार्म देखने को आये और अमरीका की लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं में साम्यवादी समस्याओं के नये दृष्टिकोण-प्रेरित दलों पर लेख लिखे गये। एडकोर के विषय में प्रचार उस समय बहुत बढ़ गया जब फिलिपाइन की एक फिल्म-कंपनी एल. वी. एन. ने तगालोग भाषा में 'हुक' नाम का पूरा चित्र तैयार किया जिसमें पुराने हुकों का एडकोर में जीवन दिखाया गया था। इसका अंग्रेजी में भाषान्तर अमरीका के सिनेमा-घरों में काफी रोचक रहा।

इस सारे प्रचार का लक्ष्य दोहरा था। हुकों की दिशा में इसका लक्ष्य यह था कि हुक लोग अधिक संख्या में समर्पण कर देंगे और जनता की ओर इसका लक्ष्य इस आशा से पूर्ण था कि उसमें प्रजातन्त्र में विश्वास उसके भीतर जाग्रत हो जाय! परिणाम एकदम स्पष्ट है। यातना देनेवाली पहले की सेना 'सामाजिक चेतनासंयुक्त सेना' बन गयी; भूमिपति कुलीनों की सरकार अब जन-कल्याण की सरकार हो गयी और 'एडकोर' के जनक, रैमन मैग्सेसे फिलिपाइन गणतन्त्र के अगले राष्ट्रपति बने।

अध्याय ११

विजय की ओर

१७ मई, १९५४ की सुबह मध्य लूज़न के अत्यंत लोकप्रिय हुक नेता लुई टारुक ने 'विद्रोह त्याग दिया'। उसे 'आत्म-समर्पण' शब्द अप्रिय था। सरकार ने भी उसकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाने के उद्देश्य से इस अर्थ के किसी भी शब्द को स्वीकार कर लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध में जापानियों के विरुद्ध हुक-गुरिल्ला सेनाओं का प्रमुख, दलनीति निर्धारण करनेवाले साम्यवादी 'पोलिट ब्यूरो' का प्रभावशाली सदस्य, लुई टारुक अन्ततः सरकार के हाथ था। उसने 'मनीला टाइम्स' के सम्वाददाता बेनिग्नो एक्विनो को कहला भेजा कि मुझे सरकार की शर्तें स्वीकार हैं और मैं समर्पण कर दूँगा। महीनों से हुक-सम्पर्ण से सम्बन्धित बातचीत में यत्नशील एक्विनो अपनी गाड़ी से तत्काल ही मिलन-स्थल पर गया। उसे फिलिपाइन सेना की फौज़ों में से हो कर जाना था जो उस क्षेत्र के चारों ओर कड़ा पहरा तैनात किये हुए थीं। सड़क के किनारे से कई किलोमीटर दूर टारुक तैयार और प्रतीक्षा में खड़ा था। गाँव के कुछ बुज़ुर्ग लोगों के अतिरिक्त वह अकेला ही था। पहले की भाँति चुने हुए सशस्त्र रक्षक इस समय नहीं थे। अधिक बातचीत न करके और केवल यह कह कर 'मैं स्वीकार करता हूँ' एक्विनो के साथ गाड़ी में बैठ गया और गाड़ी फिर वापिस मुड़ी। सेना की चौकी पर उनके साथ एक खुफिया अफसर हो लिया, जो उन्हें मनीला के समीप सेना के प्रधान केन्द्र तक सुरक्षित ले गया। एक घण्टे के अंदर टारुक को बन्दीगृह में जाने से पहले डाक्टरी जांच के लिए भेज दिया गया।

संवाददाता बन्दी का चित्र उतार सकते थे, किन्तु उससे बातचीत नहीं कर सकते थे। पिछले अनुभवों से सरकार को ज्ञात था कि टारुक प्रचार के लिए समाचार प्रकाशित कराने में बड़ा चतुर है। सरकार टारुक का इस प्रकार का प्रचार होने देना नहीं चाहती थी जिसमें कि लोगों की सहानुभूति की पात्र बन कर टारुक लोक-नायक माना जाने लगे। प्रशासन ने हुकों के लिए क्षमादान की बातें यह कह कर तुरन्त बंद कर दीं कि टारुक को क्षमादान नहीं मिलेगा और

उस पर मुकदमा चलाया जायगा। सप्ताह के अन्त तक सरकारी वकीलों ने ऐसे २६ अभियोगों की सूची बना ली जिनमें से हर एक के ऊपर यदि सज़ा हो तो मृत्युदण्ड अथवा आजन्म कारावास हो। न्यायालय के लिए मामला तैयार था। मई १९५४ के तीसरे सप्ताह में इन घटनाओं का क्रम बड़ी तेज़ी से चल रहा था। इन प्रसंगों को समझाने और उनकी विस्तृत व्याख्या के लिए उन घटनाओं की जानकारी आवश्यक है जो पांच महीने पहले आरम्भ हुई थीं।

जनवरी १९५४ में मैग्सेसे प्रशासन के सत्तारूढ़ होने के बाद हुकों ने क्षमादान के बारे में बातचीत करने के प्रयत्न किये जिसके अनुसार वे पहाड़ों को छोड़ कर शान्ति से रह कर एक वैधानिक कम्यूनिस्ट पार्टी के रूप में कार्य कर सकें। टारुक ने लिखा कि वह कृषकों को संगठित करके मैग्सेसे के ग्राम-सुधार के कार्यक्रम में सहायता देने को तैयार है। मुक्ति मिलने और सहानु-भूति प्राप्त करने के उद्देश्य से उसने इस काम के लिए अपनी अवैतनिक सेवाएँ भी अर्पित कीं। सरकार ने इस प्रलोभन में फँसने से इनकार कर दिया। क्योंकि इन लोगों के साथ मैदान में लड़ने की अपेक्षा इनका छद्म प्रवेश और फिर तोड़फोड़ तो और भी बुरा था। कई सप्ताह पर्यन्त समर्पण-शर्तों पर बेकार चर्चा होने के बाद सरकार द्वारा निश्चित तिथि बीत गयी और सेना ने विद्रोहियों को पकड़ने के लिए अपने प्रचंड अभियान आरम्भ कर दिये। हुकों का पीछा पहाड़ों से लेकर दलदल तक तथा एक गुप्त स्थान से दूसरे गुप्त स्थान तक किया जाता। उनके पैर उखड़ गये थे। हमेशा, कुछ दिनों बाद, मुठभेड़ों में कुछ मारे जाते; दूसरे लोग या तो पकड़ लिये जाते या आत्मसमर्पण कर देते और ऐसे आदमियों से सेना के 'बाड़े' की संख्या बढ़ने लगी।

सेना ने नागरिकों के साथ मैत्रीपूर्ण और उदार व्यवहार करके उनका सहयोग प्राप्त कर लिया और इससे सेना के गुप्त सूचना-विभाग को बड़ी सहायता मिली। हर बार जब भी हुक इधर-उधर जाते, कोई-न-कोई सेना को खबर दे दिया करता और वह उनके पीछे पड़ जाती। एक ही महीने में टारुक के चुने हुए रक्षकों में से कई साफ हो गये थे। ऐसे लोगों में उसके कई विश्वस्त अनुयायी तथा पूर्ति-विभाग का प्रमुख भी था। ये सब लोग सेना द्वारा ही पकड़े गये थे। जिस समय उसने आत्मसमर्पण किया, टारुक के दल में मुट्ठी भर थके, फटे-हाल और असंगठित व्यक्ति बाकी रह गये थे। एक दिन पहले, सैनिक उस

मकान तक भी पहुंच गये थे, जहाँ टारुक छिपा हुआ था। उस दिन वह बाल-बाल बचा। सेना ने उस क्षेत्र को घेर लिया और दिन-रात बड़ी सरगर्मी से वहाँ खोज-खबर शुरू हो गयी। घेराबंदी और दृढ़ कर दी गयी। टारुक ने, असल में, अपनी जान बचाने के लिए समर्पण करना ठीक समझा था। उसने यह कभी व्यक्त नहीं किया कि उसके विचार बदल गये हैं। उसकी योजना थी कि न्यायालय में अपने वाक्चातुर्य के बल कर वह फांसी से छूट कर स्वतंत्र होने की चेष्टा करेगा।

टारुक की आत्मसमर्पण-सम्बन्धी कुछ और भी घटनाएं हैं जिन पर विचार कर लेना आवश्यक है। कई महीने पहले सेना के हाथ कम्यूनिस्ट नेताओं का वह पत्र-व्यवहार पड़ गया था, जिसमें लिखा था कि टारुक को दल के आदेशों को कार्यान्वित न कर सकने के कारण ताड़ना दी गई है और उसे 'पोलिट ब्यूरो' से निकाल दिया गया है। उसी पत्र-व्यवहार में यह भी कहा गया था कि टारुक के भाई, पेरिग्रीनों को भी दल से बहिष्कृत कर दिया गया है, क्योंकि उसने तीन व्यक्तियों की सचिव कार्य-समिति के साथ प्रचार-कार्य का हिसाब साफ नहीं किया है। यह पत्र-व्यवहार 'अधिकृत' लगता था; लेकिन एक सामान्य हरकारे के पास इसके पाये जाने से यह सन्देह होने लगा कि यह 'षड्यंत्र' भी हो सकता है। कदाचित् टारुक के समर्पण और क्षमादान के लिए, दल एक स्वीकार करने-योग्य आधार तैयार कर रहा हो। अत्यंत लोकप्रिय हुक नेता और साम्यवादी होने के नाते यदि वह जनता में स्वच्छन्द फिरे तो वह पार्टी के लिए बड़ा मूल्यवान काम कर सकता है और जब इसके विरुद्ध कोई प्रमाण भी नहीं मिला तो उसे अस्वीकार भी नहीं किया गया।

सेना के प्रधान केन्द्र में टारुक के आते ही एक सेना सूचनाधिकारी ने कहा—"वह अभी तक कम्यूनिस्टों की तरह बातचीत करता है।" उसके आत्म-समर्पण के बाद उससे जो कई दिनों तक बातचीत हुई उसके आधार पर राष्ट्रीय सुरक्षा के अवि-सचिव जोस क्रिसोल ने कहा—"हम दोनों आपस में एक-दूसरे के विचार-परिवर्तन की चेष्टा कर रहे हैं; मैं नहीं कह सकता कि कौन जीत में है।" यह बात उसने मज़ाक में कही थी; किन्तु इससे पता चलता है कि सरकार टारुक के समर्पण के मामले में आवश्यक सतर्कता बरत रही थी।

यह बात महत्वपूर्ण है कि टारुक के समर्पण की शर्तें, मध्य लूज़न के हुक-संगठन के उसके अधिकांश सेनाध्यक्षों के बन्दी होने के बाद ही तैयार हुईं

थीं। इनमें से एक कमान्डर लाबन था जो हुकों में १९४१ से जापानी आक्रमण-कारियों से साथ लड़ने के लिए शामिल हुआ था। पिछले कुछ वर्षों से वह कन्डाबा के दलदली क्षेत्र का नगराध्यक्ष था जिसका क्षेत्रफल १०५ वर्ग मील है। यह क्षेत्र बरसात में पानी से भरा रहता है और गर्मी में सूख जाता है। इस दलदल के द्वीपों और लम्बी-लम्बी घासों में हुक अपने छिपने की जगह रखते। कमांडर लाबन का काम इस दलदल के चारों ओर के गाँवों के निवासियों और हुक लड़ाकू दलों के बीच सम्पर्क कायम रखना था। वह भोजन-सामग्री एकत्र करता और ऐसी व्यवस्था करता कि हुक सेनाओं को भरपेट खाना मिलता रहे। आरम्भ में तो लोग मिलन-स्थल पर खुशी-खुशी सामान ला कर इकट्ठा करते थे; किन्तु थोड़े दिनों से वे इस बारे में अनिच्छा और असहयोग ही प्रदर्शित कर रहे थे। अतः लाबन और उसके आदमियों को, घूम-घूम कर और कभी-कभी बल प्रदर्शन द्वारा सामान इकट्ठा करना पड़ता था।

मई के आरम्भ में एक दिन कमान्डर लाबन का भाई कन्डाबा दलदल के पूर्वी किनारे पर स्थित सेना की चौकी में आया। यहाँ संयोग से सिपाही अस्थायी तौर पर उसी स्कूल में ठहराये गये थे, जहाँ टारुक ने प्रारम्भिक शिक्षा पायी थी। कैप्टन टैक्सन से बात कर के भाई ने कहा कि लाबन समीप के सैन मिगूल के एक नगरोत्सव में जाने की तैयारी कर रहा है। शहर की ओर जानेवाली सड़क पर कैप्टन ने एक जाँच-बिन्दु बना दिया और उस ओर के यातायात पर चौबीस घण्टों की निगरानी रखी जाने लगी। तीन दिन के बाद आधी रात को रक्षक ने एक बैल-गाड़ी रोकी और तलाशी शुरु की। आगे की सीट पर जो आदमी बैठा था, उसने चुपके से कहा कि गाड़ी के अन्दर सोनेवाला आदमी कमान्डर लाबन है। रक्षक ने कैप्टन टैक्सन को बुलाया। कैप्टन ने आदमी को झकझोरते हुए पूछा—"क्या तुम कमान्डर लाबन हो?"

उसने कहा—"नहीं, आपको भूल हुई है।"

लेकिन उसकी पत्नी ने कहा—"जी हाँ, यह कमान्डर लाबन हैं और मेरे पति हैं।"

कैप्टन टैक्सन बोले—"ठीक है, अपनी बन्दूक हवाले करो; हुकों के साथ तुम्हारे दिन अब समाप्त हो गये।"

लाबन ने उत्तर दिया—"मेरे पास बन्दूक नहीं है।"

इस पर उसकी पत्नी फिर बोली—"जी हाँ, इनके पास बन्दूक है—देखिये, यह है।" ऐसा कह कर उसने घास की गाँठ के नीचे से एक पिस्तौल खींची और कप्तान के हवाले कर दी।

कमान्डर लाबन बन्दी बनाया गया अथवा उसने स्वयं समर्पण कर दिया? सेना का गुप्तचर-विभाग परिस्थितियों को देख कर इस प्रश्न को सुलझा नहीं पा रहा था। हो सकता है कि वह आत्म-समर्पण चाहता हो, किन्तु हुकों के प्रतिशोध से डरता था। अतः दिखलाना चाहता था कि उसे बन्दी बनाया गया है। अस्तु कमान्डर लाबन सेना के साथ अन्य हुक नेताओं से सम्पर्क कायम करने के बारे में सहयोग देता प्रतीत हुआ। खुफिया विभाग द्वारा कई दिनों तक पूछताछ करने के बाद कैप्टन टैक्सन ने आदेश दिया कि लाबन को सेना के साथ रहने देना चाहिए जहाँ कि सूचनाओं की प्राप्ति में उसका तात्कालिक उपयोग हो सके। इस स्थिति में रहने पर लाबन ने बताया कि कई महीने तक नीचे के स्तरों के हुक-कमान्डरों तथा सदस्यों ने टारुक से सरकार के साथ संधि करने के लिए कोई आधार बना लेने का अनुरोध किया था। लाबन ने बताया कि वे सब रात-दिन लड़ाई एवं पीछा किये जाने से तंग आ गये थे। वे एक बार फिर शान्ति से रहना चाहते थे। लाबन के वक्तव्य हाल में ही समर्पण करनेवाले अथवा बन्दी बनाये गये हुकों का वक्तव्यों से मिलता था। सरकार के साथ संधि की इस इच्छा के कारण ही टारुक ने समर्पण करने का निश्चय किया होगा। उसने अपने को सेना से घिरा हुआ ही नहीं पाया, बल्कि उस पर यह भी स्पष्ट हो गया था कि स्वयं उसके आदमी भी अब लड़ने की इच्छा नहीं रखते हैं। अपने अनुयायियों के खोने की बात टारुक के लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण थी जितनी कि सरकारी फौजो द्वारा दबाब की स्थिति।

हुक-आन्दोलन के टाँके टूट रहे हैं। यह फूट वहाँ और भी अधिक स्पष्ट होती जा रही है जहाँ लोकप्रिय कृषक-आन्दोलन कम्यूनिस्ट पार्टी से गठबन्धन किये बैठा था। दल के आन्तरिक नेतृत्व में फूट के चिह्न प्रकट हो रहे थे—कृषकों के साथ निकटतम सम्पर्क रखनेवाले टारुक बंधुओं, तथा पार्टी विचार-निर्णय के प्रति दृढ़ आरूढ़ता रखनेवाले 'पोलिट ब्यूरो' के अन्य सदस्यों में मतभेद के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। उनका व्यापक जन-समर्थन केवल समाप्त ही नहीं हो गया, बल्कि कई प्रसंगों में सरकार के पक्ष में हो गया

है और उससे हुक लड़ाकुओं को पकड़ने में सरकार को स्पष्टतः सहायता भी मिली है।

हुकों के विरुद्ध सरकार के अभियान की विजय तो १८ अक्टूबर, १९५० की तारीख से मानी जानी चाहिए; जिस दिन उसने 'पोलिट ब्यूरो' पर अधिकार किया था। गत चार वर्षों के अनुभवों का सिंहावलोकन करते हुए इस सफल अभियान में बहुत-सी महत्वपूर्ण बातें सामने हैं—जैसे, प्रथम सरकार द्वारा की गयी सुदृढ़ और कारगर फौजी कार्यवाही, दूसरे सरकार द्वारा जनता को अपने पक्ष में करना; तीसरे साम्यवादी विचारों का भंडाफोड़ और प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों का प्रचार, तथा चौथे कम्यूनिज्म के मर्म-पक्ष पर कठोर प्रहार।

इस अभियान की सफलता का सबसे प्राथमिक तत्त्व है, प्रजातन्त्रीय जीवन-प्रणाली के प्रति आस्थावान योग्य राष्ट्रीय नेताओं का एक वर्ग। इन नेताओं ने देखा कि केवल फौजी शक्ति ही हुक आन्दोलन को नहीं दबा सकती है। प्रजातंत्र के लिए मौखिक प्रचार भी पर्याप्त नहीं था। अकेला भूमि-सुधार (यहाँ तक कि साम्यवादी पोलिट ब्यूरो के सदस्यों के मतानुसार भी) सशस्त्र विद्रोह को नहीं रोक सकता। हुकों के विरुद्ध सफलता तब ही मिल सकती थी, जबकि उनके विभिन्न मोर्चों पर एक साथ ही धावा बोला जाय।

फौजी कार्यवाही विशेषकर उसी समय सफल हुई जब कि उसके साथ जनता का अधिकाधिक समर्थन प्राप्त करने की चेष्टा भी थी। जब तक सेना हलेंडिया में लोगों के विरुद्ध समय-समय पर हिंसात्मक कार्य में लीन रही, वहाँ के नागरिक विमुख ही नहीं, विरोधी भी बने रहे। किंतु जब मैत्री का संदेश लेकर चलनेवाली सेना ने नागरिकों को हुक आक्रमणों तथा भोजन-सामग्री इकट्ठी करने के विरुद्ध संरक्षण प्रदान किया, तो उसने नागरिकों के हृदय जीत लिये। सरकार को पता लग गया कि यदि उसकी सेना दिन रात शान्ति और व्यवस्था में लीन रहेगी तो वहाँ के निवासियों की राजभक्ति उन्हें प्राप्त होती रहेगी। जिन क्षेत्रों में सेना ने जनता को सुरक्षा प्रदान की, वहाँ वैचारिक युद्ध में सरकार-पक्षीय प्रचार को बड़ी सफलता मिली। इस प्रकार, प्रचार का अभियान भी फौजी कार्यवाही के साथ-साथ चलता रहा।

निर्मम एवं निरंतर प्रहार करनेवाली सेना के आगे हुकों के पैर उखड़ते ही रहे। निरन्तर दबाव ने उनके गुरिल्ला जीवन को कठिन और श्रांत बना दिया। इस फौजी कार्यवाही के बिना समर्पण करने वाले हुकों की संख्या निःसन्देह

बहुत कम होती। हालांकि फौजी शक्ति निषेधात्मक थी, किन्तु जब जनता का ध्यान आकृष्ट करनेवाला कार्यक्रम भी उसके साथ में हो गया तो वह बड़ी कारगर सिद्ध हुई। एडकोर जैसे विधेयात्मक कार्यक्रम भी अकेले हुक-आन्दोलन को भंग करने में कामयाब न होते; उसमें वे ही पुराने हुक आते जो हुकों से अलग हो गये थे और उन्हें योग्य नागरिकता प्राप्त करायी जाती।

ज्यों-ज्यों हुक संख्या में क्षीण, उत्तरोत्तर विशृंखल और उत्साहहीन होते गये, उन्होंने सीधी लड़ाई के बजाय संतरियों को छिप कर मारना प्रारम्भ किया। सेना के समझदार व्यक्तियों को इस स्थिति को समझने में देर न लगी। मई १९५४ में तो सैनिक, अन्तिम उपाय के रूप में ही हुकों पर गोली चलाते थे। मध्य लूज़न में ऐसे भी कुछ उदाहरण थे, जहाँ कि सिपाहियों ने भागते हुए हुकों का खुले खेतों में पीछा किया। उस क्षेत्र में सेना की ख्याति, व्यर्थ का रक्तपात न करने के कारण और भी बढ़ गयी। यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि नागरिकों में कितने ही हुकों के नाते-रिश्तेदार भी थे। कारण कुछ भी हो, अपने देशवासी का मारा जाना लोकप्रियता की बात नहीं थी।

कितने ही वर्षों से मध्य लूज़न के कृषि-क्षेत्रों में सरकार और जनता के बीच कोई सम्पर्क नहीं था। युद्ध के पूर्व, सरकारी ओहदों पर ज़मींदार-वर्ग के लोग ही थे और वहाँ का शासन-प्रबंध भी उसी वर्ग की हित-सिद्धि के लिये चलता। कृषकों को अपने ही पैरों पर खड़े रहना, अपने दुखड़े वे अपनी गुप्त सभाओं में ही रोते; उनकी सुननेवाला कोई नहीं था। जापानियों के अधिकार के समय फिलिपाइन सरकार ने उन्हें कोई संरक्षण प्रदान नहीं किया। फलतः युद्ध के बाद कृषकों ने सरकार का समर्थन करने अथवा हुकों के विरुद्ध संघर्ष करने में, सरकार के प्रति श्रद्धालु रहने के लिए कोई आवश्यकता नहीं समझी।

ऐसी स्थिति में, जनता की भावनाओं को अपने पक्ष में करने के लिए मौखिक प्रचार के अतिरिक्त और कुछ भी करना आवश्यक था। वे मात्र वचनों से कुछ अधिक चाहते थे; वे इस बात के स्पष्ट प्रमाण चाहते थे कि सरकार न्याय का पक्ष लेगी और जन-कल्याण के हित में कार्य करेगी। पिछले वर्षों में सरकार के उन्नत कार्यक्रम ने हुकों के विरुद्ध अभियान को बल प्रदान किया है। उदाहरणार्थ, धान-काश्तकारी-भाग-विधेयक, (राइस शेयर टेनेन्सी एक्ट)

जो वर्षों तक चालू नहीं रहा, हाल ही में, औद्योगिक न्यायालयों (इन्डस्ट्रियल रिलेशन्स कोर्ट्स) द्वारा काश्तकारों की शिकायतें सुनने के लिए आधार बन गया है। जैसे-जैसे काश्तकारों को, उनके मामलों को इस कानूनी उपाय से सुलझाने का पता चलने लगा है, वैसे-वैसे न्यायालयों में अधिक संख्या में ऐसे मामले आने लगे हैं। जन-साधारण में कानून के प्रति नया मूल्यांकन जागृत हो गया है। स्वस्थ प्रजातन्त्र के विकासार्थ यह मौलिक विशेषता है। एडकोर की पुनःस्थापन-योजना, यद्यपि भूमिहीन किसानों और कृषकों की निर्धनता की समस्याओं का पूरा हल नहीं हैं, फिर भी वह जनता की सहायता करने की सरकार की इच्छा का महत्वपूर्ण प्रदर्शन है। इन हार्दिक प्रयत्नों को देखकर वे लोग, जो हुकों से सहानुभूति रखते थे अथवा क्रान्तिकारियों के हाथ में पड़ने ही वाले थे, पुनर्विचार करने लगे। क्योंकि वह सरकार जिसे जनता के हितों की हार्दिक चिन्ता हो, जन-समर्थन की निश्चय ही अधिकारिणी होती है।

१९५१ और १९५३ के निष्पक्ष चुनावों ने जनता का समर्थन प्रजातंत्रीय सरकार के पक्ष में और भी व्यापकता से कर दिया। १९४९ के चुनावों में जो छलकपट हुआ था, उससे कम्यूनिस्ट पार्टी को यह घोषणा करने का बड़ा उपयोगी अवसर मिल गया था कि देश में क्रान्ति की स्थिति उत्पन्न हो गयी है और वह क्रान्ति को सम्भव करने की दिशा में बढ़ रही है तथा नवम्बर ७, १९५१ में वह सरकार को उलट देगी। दल की योजनाएं और क्रान्ति की नियत तिथि का पता पोलिट-ब्यूरो के उन कागजात से लगा, जो १९५० में पकड़े गये थे।

मैग्सेसे के नए शासन ने, जो १९५३ के चुनावों में अभूतपूर्व बहुमत से निर्वासित हुआ था, राष्ट्रीय-विकास की एक विशाल योजना आरम्भ की है। उन्होंने अपना कार्यक्रम बड़े-बड़े गाँवों से आरम्भ किया। नयी सड़कें, साफ कुएँ, अधिक स्कूल, जहाँ मलेरिया की समस्या है वहाँ मलेरिया विरोधी अभियान, उधार देनेवाली सहकारी-समितियों द्वारा छोटे-छोटे किसानों को आर्थिक सहायता, तथा कृषि-विस्तार सेवा (एग्रिकल्चरल एक्स्टैन्शन सर्विस) द्वारा उन्नत खेती के लिए सहायता आदि, बातें इस कार्यक्रम में शामिल हैं। एडकोर फार्मों के अतिरिक्त, हजारों भूमि-विभुक्षित (भूमि-हीन) व्यक्तियों के लिए भूमि देने का एक महान विकसित कार्यक्रम बन रहा है। कई सरकारी विभागों की सेवाओं के सतर्कतापूर्ण अध्ययन और सेवाओं के उन्नत ज्ञान से अधिक

कुशलता और विश्वास उत्पन्न होगा। आधारभूत औद्योगिक विकास की अर्थव्यवस्था के लिए फिलिपाइन कांग्रेस ने अभी हाल ही में एक करोड़ पेसो के सरकारी 'पत्र' (बांड) निकालने की स्वीकृति दी है। राष्ट्र को संतुलित अर्थव्यवस्था प्रदान करने और बेकारी की समस्या को हल करने के लम्बे कार्यक्रमों का यह एक अंश है। जिस सरकार को उन्होंने पदारूढ़ किया है उस पर उन्हें अभिमान है; और उन्होंने इन उपायों के किये जाने पर काफी उत्साह दिखाया है।

सरकारी फार्मों के संचालन में लगे रहने पर भी, फिलिपाइन, साम्यवाद द्वारा दी गयी सैद्धान्तिक चुनौती के प्रति विमुख नहीं रहा है। साम्यवाद केवल उन श्रमिकों और कृषकों में ही नहीं फैलता है, जो बेचारे सामाजिक और आर्थिक बुराइयों की मार सहते हैं; बल्कि यह समाज के उन नेताओं में भी फैलता है जो विचारों को अधिक महत्त्व देते हैं—जैसे, वकील, शिक्षक, डाक्टर और बुद्धिजीवी लोग।

प्रजातन्त्र के पक्ष में जो स्थायी बौद्धिक तथा नैतिक लाभ है उसकी अपेक्षा हितकर नहीं। मार्क्सवादी तर्क-प्रवीणता की जो युक्ति-रंजित सूक्ष्मताएँ हैं उनका पलड़ा प्रजातन्त्रीय जीवन के यथार्थ एवं प्रत्यक्ष सत्यों के सम्मुख कभी भारी नहीं हो सकता। कोई भी राष्ट्र हो, उसकी प्रजा किसी आदर्श, प्रयोजन अथवा उद्देश्य की चुनौती का प्रत्युत्तर अवश्य देती है। प्रत्येक पीढ़ी को इस बात की शिक्षा देनी चाहिए कि प्रजातन्त्र का अर्थ जीवन-यापन के उच्च स्तर का श्रेयस्कर जीवन ही नहीं है, बल्कि सुअवसरों के देश में मूलभूत रूप से स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना है—ऐसा जीवन जहाँ योग्यता पुरस्कृत होती है, जहाँ ईश्वर में आस्था रखने पर व्यक्ति दण्डित नहीं किया जाता और जहाँ जीवन के सारे महत्वपूर्ण निर्णय उन मुट्ठी भर व्यक्तियों के आदेशों पर नहीं होते हैं, जो एक राजनीतिक दल के सर्वेसर्वा हैं। यही प्रजातन्त्र की चुनौती है। इसीके लिए फिलिपाइन की प्रजा लड़ रही है; इसीके लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने कोरिया में युद्ध किया। कभी-कभी यह लड़ाई शस्त्रों द्वारा भी होनी चाहिए; किन्तु संघर्ष का अधिकांश उन शब्दों और विचारों द्वारा होना चाहिए जो साम्यवादी नियंत्रण के समस्त अमानवीयतापूर्ण अत्याचारों के स्पष्ट विरोधाभास हैं और जो अपनी समस्त गौरवपूर्ण सम्भावनाओं में स्वतंत्र लोकतंत्रीय जीवन-प्रणाली को चित्रित करते हैं।

फिलिपाइन के अनुभव से पता चलता है कि हुकों के विरुद्ध जो निरन्तर सफलता मिलती गयी उसका कारण साम्यवाद का परिपूर्ण ज्ञान था। केवल फौजी कार्यवाही के रूप में अभियान को प्रारम्भ हीं नहीं किया जा सकता था, बल्कि फौजी कार्यवाही के साथ-साथ वह सदा ही विचारों का संघर्ष भी रहा है। सरकारी नेताओं को यह सीखना पड़ा कि साम्यवाद क्या है और इसकी कार्यप्रणाली कैसी होती है। हुकों को किसी क्षेत्र-विशेष के बगावती व्यक्ति नहीं माना जा सकता था; उनका सम्बन्ध दूसरी जगह के साम्यवादियों से था और वे अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट निर्णयों के अनुसार ही अपने स्थानीय कार्य चलाते हैं। उनके द्वारा प्रस्तावित युद्ध विराम, क्षमादान अथवा समर्पण की वार्ताएं इन्हीं निर्णयों की प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करनेवाली चालें थीं जिनको लेकर पनमुनजाम में इतना भोगना पड़ा। फिलिपाइन में सरकारी नेताओं ने अंततः समझ लिया था कि आत्म-समर्पण की वार्ता हुक लोग अपने ही निहित उद्देश्य के लिए करते हैं। यथार्थ समर्पण असम्भव है, क्योंकि साम्यवादी विचारधारा में समर्पण का अर्थ दल की अवैधानिकता होता है। एक साम्यवादी व्यक्तिगत रूप से दल को छोड़ सकता है अथवा निकाला जा सकता है; परन्तु दल-सदस्य के रूप में उसे सदा क्रान्तिकारी रहना ही चाहिये। उनका चरम लक्ष्य सरकार को उलटना है जिसके लिए दल सशस्त्र शक्ति को अत्यावश्यक समझता है। हुक में शामिल होनेवाले अमरीकी साम्यवादी विलियम पामेराय ने बताया कि उसने ऐसा इसलिए किया था कि वह ऐसी स्थिति में काम करना चाहता था, जहाँ क्रान्ति की परिस्थितियाँ घर की अपेक्षा अधिक परिपक्व अवस्था में थीं।

कम्यूनिज्म का मूल्यांकन केवल इसी आधार पर नहीं किया जा सकता कि उसके नेता क्या कहते हैं और उस समय वे क्या कर रहे हैं; उसका निर्णय उनके निहित उद्देश्यों को देखकर ही किया जा सकता है। किसी समय पार्टी की प्रणाली 'शान्ति और सहयोग' की होगी। इस प्रकार की चालें आन्दोलन को चालू रखने और एक कदम और आगे बढ़ाने के लिए होती हैं या विरोधियों को चक्कर में डालने के लिए उन्हें गढ़ा जाता है। साम्यवादी को निश्चित कार्यक्रम से बांध रखना वैसा ही कठिन है जैसा मुंह उठाये एक ऐंठन में पड़े हुए सांप की गर्दन पर वार करना।

साम्यवादी आक्रमण से कई वर्ष तक लोहा लेते रहने के अनुभव से सरकारी नेता विरोधी आन्दोलन की कार्य-प्रणाली को अच्छी तरह समझ गये हैं। साम्य-

वादी चालों की फिसलन-भरी गतिविधि से भली प्रकार परिचित होने के फल-स्वरूप, फिलिपाइनी सेना के चीफ आफ स्टाफ मेजर जनरल जीसस वर्गास ने मनीला में दिये गये एक भाषण में श्रोतागणों को निम्न शब्दों में चेतावनी दी:—"हमारा यह समझ बैठना बुद्धिमानी का काम नहीं होगा कि हमारी साम्यवादी समस्या टारुक के समर्पण से हल हो गयी है अथवा दूसरे साम्यवादी नेताओं के बन्दी होने, मारे जाने अथवा समर्पण करने से समाप्त हो जायेगी। कम्यूनिस्ट प्रथम से लेकर अंत तक कम्यूनिस्ट ही रहते हैं। वे आवश्यकता के अनुसार ही प्रत्यक्ष कार्यवाही से भूमितर आन्दोलन में सरक जाते हैं। जहाँ वे शक्ति से शत्रु को उलटने में अपने को असमर्थ पाते हैं, वहाँ वे नवीन प्रजातंत्रों में रक्तहीन क्रान्ति का प्रचार करते हैं। शान्ति प्राप्त करते ही हमारे यहाँ भी साम्यवादी नेता इसी प्रकार की क्रान्ति का दौर शुरू करेंगे। वे अच्छे उद्देश्यों से अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहेंगे। वे दल के भ्रमपूर्ण नाम रखेंगे और गठबन्धन करेंगे, किंतु वे अपने दल का संगठन सदैव सुदृढ़ बनाये रखेंगे। वे घृणा को उत्तेजित करेंगे और हड़तालें तथा हिंसात्मक कार्य करायेंगे। वे तोड़फोड़ पर उतर आयेंगे। वे हम लोगों में फूट पैदा करायेंगे। वे सरकार, विश्वविद्यालयों, नागरिक संगठनों यहाँ तक कि गिरजाघरों में भी घुसेंगे। यह सामान्य प्रचलित साम्यवादी आदर्श है। साम्यवादी नेता हमारे तथा जनता के बीच फिर आ गये हैं और इसी समस्या की ओर हम जागरूक हैं। साम्यवाद को इस प्रकार अपने असली रूप में अगर हमने नहीं समझा तो उनके सशस्त्र विद्रोह पर हमने अभी जो विजय प्राप्त की है वह इन 'समर्पण करनेवालों के, अंदर घुसने की व्यूह-रचना से निरर्थक हो जायेगी, जिन्हें दल द्वारा 'वैधानिक संघर्ष' जारी रखने के लिए आदेश है। इस सम्भावित भय को रोकने के लिए सरकार टारुक के मामले पर बड़ी सावधानी से विचार कर रही है।

परिपक्व साम्यवादी जो मार्क्स-लैनिन स्टैलिन-माओवादी सिद्धान्तों में भली प्रकार से प्रशिक्षित हैं, वे आग्रह अथवा साहित्य के द्वारा लोकतंत्रोन्मुखी विचारों की ओर कभी प्रवृत्त होंगे, उनके अनुयायियों द्वारा चाहे उनका बहिष्कार हो जाये। सामान्य जनता को हुकों के जाल से बचाने, सामान्य हुक-सिपाहियों और हुक कमान्डरों को जो अधिकतर 'एडकोर' फार्मों के नव-स्थापितों में हैं, उन्हें पुनः बसाने में सरकार बड़ी सफल हुई है। जनता के समर्थन के अभाव ने सर्वोच्च साम्यवादी नेताओं को बड़ी कुटिल परिस्थिति में रख दिया। वे पार्टी की नीति की समीक्षा करते-करते आपस में ही लड़ने

लगते हैं। असफलता के कारण कुछ तो उनसे अलग हो जाते हैं और कुछ साम्यवाद से ही संन्यास ले लेते हैं और कुछ पार्टी का अनुशासन भंग करने के कारण निकाल दिये जाते हैं। भूतकाल में ये सब बातें फिलिपाइन की कम्यूनिस्ट पार्टी में बीत चुकी हैं, आजकल का आंतरिक विग्रह भी इसकी पुनरावृत्ति का आभास देता है। सशस्त्र विद्रोह के पूर्ण दमन के बाद, जो थोड़े-बहुत कट्टर साम्यवादी बच रहे हैं वे जनता के समर्थन के बिना जंगलों में ही सड़ जायेंगे।

साम्यवादी नेताओं के चंगुल से जनता को छुड़ाना और कट्टर कम्यूनिस्टों को जन-समर्थन-विहीन और तंग हालत में अपनी मौत मरने देना, फिलिपाइन के इस कम्यूनिज्म-विरोधी अभियान की मुख्य विचारभूमि रही है। जनता से की गयी प्रजातंत्रीय अपील प्रभावशाली हो सकती है। किंतु ऐसी अपील उस समय और भी अधिक प्रभावशाली होती है जबकि वह प्रजातन्त्रीय योजनाओं में प्रतिनिधित्वपूर्ण सरकार के लोगों के अनुभवों से वह पोषण पाती है और केवल भाषण और पर्चेबाजी तक ही सीमित नहीं रहती हैं। 'एडकोर' हुक-विरोधी अभियान में केवल इसलिए सफल नहीं हुआ कि उसने वैचारिक भूमि पर हुकों के भूमिहीनों के लिए भूमि के नारे का उच्छेदन कर दिया, बल्कि मुख्यतः इसलिए कि वह भूमि-सम्बन्धी समस्याओं को हल करनेवाला वास्तविक कार्यक्रम था, जहाँ प्रजातंत्रीय सामुदायिक योजना फली-फूली। असली प्रजातंत्र का अनुभव ही साम्यवाद के विरुद्ध असली शस्त्र है।

फिलिपाइन को साम्यवाद के विरुद्ध अपने संघर्ष से जो सबक मिले वे सरलता से प्राप्त नहीं हुए हैं। वे द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद आठ वर्ष के लम्बे गृह-युद्ध के रक्तपात और वेदना से रंजित हैं। किन्तु इन संघर्षों के फलस्वरूप सरकार ने कम्यूनिज्म को अच्छी तरह समझ लिया है और इस धारणा के आधार पर अपनी प्रजातन्त्रीय संस्थाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए सशक्त कार्य-क्रम निश्चित कर लिया। फिलिपाइन ने स्वतन्त्र विश्व को विजय प्रदान की; किंतु इससे भी अधिक उसने दिया है विजय का महत्वपूर्ण वह मार्ग जो साम्य-वादी विद्रोह के विरुद्ध संघर्ष में उलझे अन्य प्रजातंत्रों को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा दे सकेगा।

परिशिष्ट

फिलिपाइन के साम्यवादी दल का राष्ट्रीय संघटन

प्राप्ति-साधन : अगस्त १२, १९५१ को लग्रीमास, ट्विन फाल्स, माउंट डोर्स्ट में टास्क फोर्स ' G G " द्वारा अधिकृत प्रलेख, जो केन्द्रीय समिति के मार्च १९५१ के सम्मेलन में " राजनीतिक प्रस्ताव १२ " पर आधारित है।
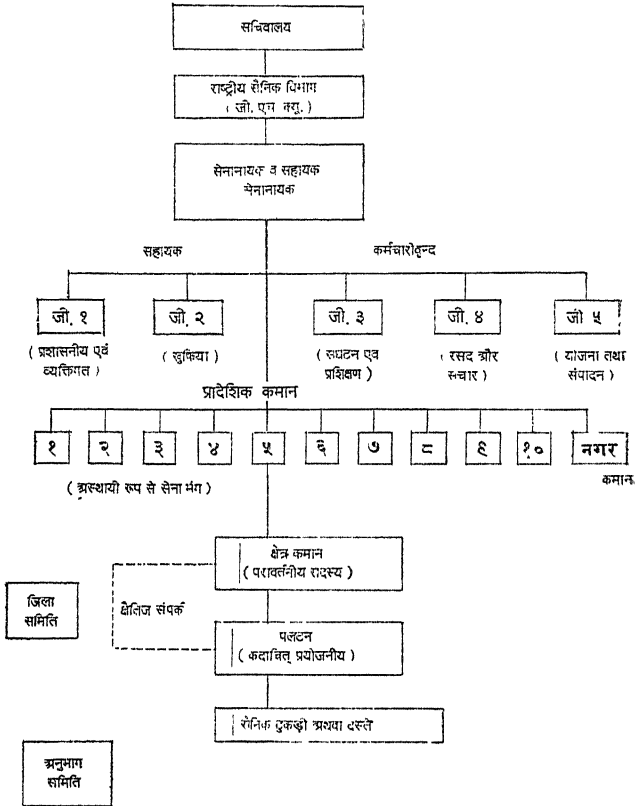
प्राप्ति-साधन : सेन्ट्रल कमिटी द्वारा १५ मई, १९५१ को निर्गत "सैनिक प्रस्ताव"; क्वेजोन प्रदेश के बारियो आबो-आबो, मउबान के पास जुलाई, २५, १९५१ को ८ वीं बटालियन काम्बेट टीम द्वारा अधिकृत प्रलेख।
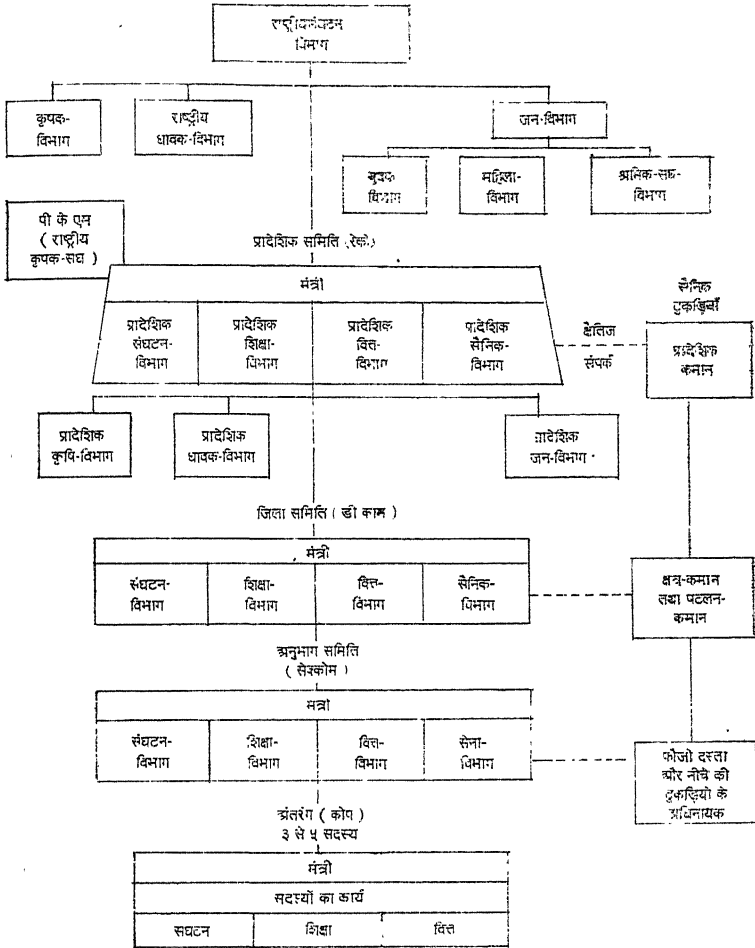
प्राप्ति-साधन : फिलिपाइन सशस्त्र सेना द्वारा १९५१ में अधिकृत आलेख ।

रेखापत्र ४
शिक्षा – विभाग
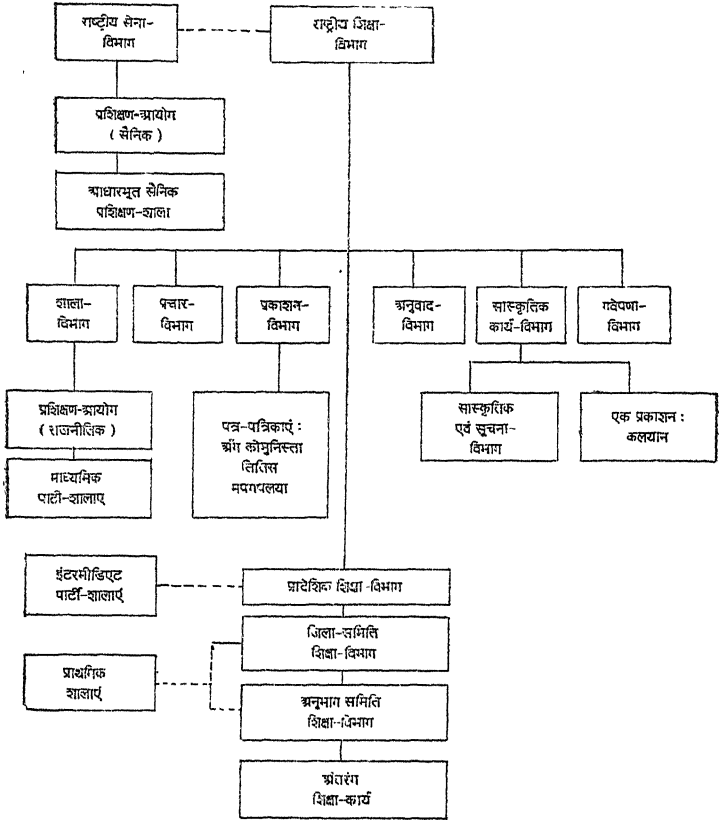
प्राप्ति-साधन : मार्च १९५१ की सेन्ट्रल कमिटी परिषद् का "संघटन-प्रस्ताव ९"।

रेखापत्र ५
वित्त-विभाग

- महामंत्री लेखापरीक्षण-कार्यालय
  - राष्ट्रीय वित्त-विभाग
    - लेखा-विभाग
    - राष्ट्रीय कोपाध्यक्ष
      - लेखाध्यक्ष
      - रोकड़िया
      - मुनीम
      - क्रय-अभिकर्ता
    - संघर्ष-विभाग
      - जब्ती (४ टुकड़ी)
    - आर्थिक उत्थान-विभाग
      - निर्माण-स्थल
      - औद्योगिक
      - वाणिज्यिक
    - प्रादेशिक वित्त-विभाग
      - लेखा-विभाग
        - लेखाध्यक्ष
        - रोकड़िया
        - मुनीम
      - आर्थिक उत्थान-विभाग
        - निर्माण-स्थल
        - औद्योगिक
        - वाणिज्यिक
      - जिला वित्त-विभाग
        - लेखा-विभाग
          - लेखाध्यक्ष
          - रोकड़िया
          - मुनीम
        - आर्थिक उत्थान-विभाग
          - निर्माण-स्थल
          - औद्योगिक
          - वाणिज्यिक
        - संपर्कजन तथा समाहर्त्ता-विभाग
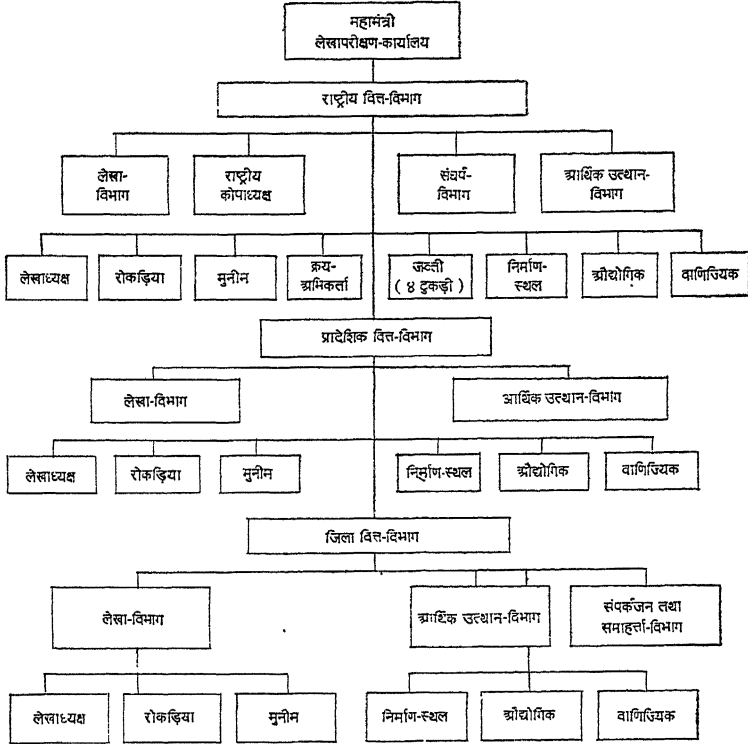
प्राप्ति–साधन : मार्च १९५१ की सेन्ट्रल कमिटी परिषद् का "राजनीतिक प्रस्ताव १०"

रेखापत्र ६

वित्त एवं राजनीतिक समितियों में दलगत संघटन के विभिन्न स्तरों पर अंतर्सम्बन्धों द्वारा दल का वित्त-नियन्त्रण
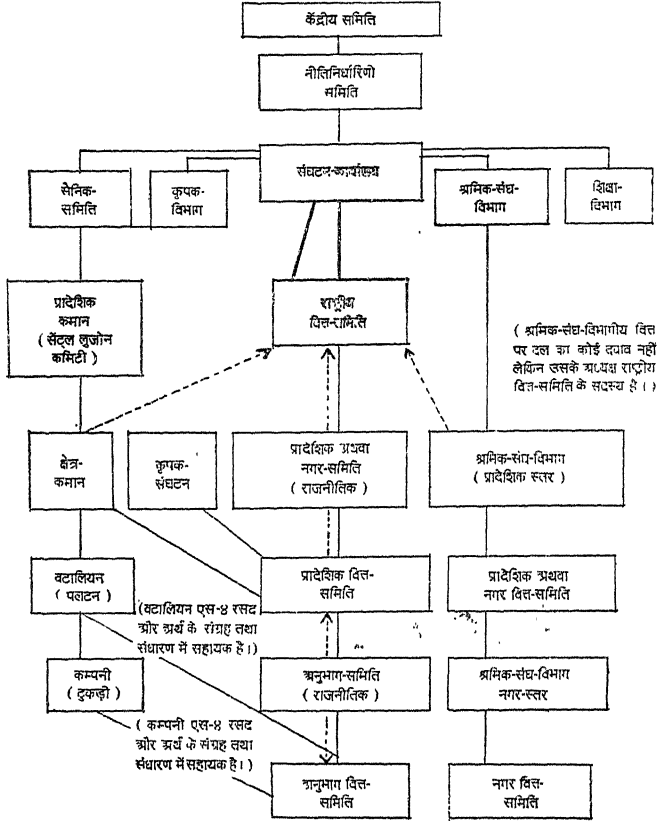
प्राप्ति–साधन : वित्त-समिति के अध्यक्ष द्वारा मूलतः प्रस्तुत तथा फिलिपाइन सशस्त्र सेनाओं द्वारा १९५१ में अधिकृत प्रलेख।